# आज री
# राजस्थानी कहाणियां

# आज री
# राजस्थानी कहाणियां

सम्पादक

रावत सारस्वत
प्रेमजी 'प्रेम'

साहित्य अकादेमी

# विगत

# आज री राजस्थानी वातां

मिनख जद सू मिल-बैठ'र रहण लाग्या तद सू ही बाता भी कही-सुणी जाण लागी। इण भात बाता री बात बित्ती ही जूनी है जित्ती मिनख जात। राजस्थानी भासा में भी बाता, उण रै जलम सू ही चालू है। विक्रम रै तेरवै सईकै नै राजस्थानी में पद्य रचनावा सरू हुवण रो समै मानै। गद्य रचनावा भी उण बखत बणी होसी। पण जिकी रचनावा मिलै है वै चौदवै सईकै री है। बाता रो गद्य तो और भी पछै रो मिलै। इण रो कारण ओ हो सकै कै राजस्थान रै इतिहास मे बारवै सू चौदवै सईकै ताणी रा तीनसौ बरस घणो उथळ-पुथळ रा रया। विदेसी हमला सू अठै री हाथलिख्यो साहित्य घणो बरबाद हुयो। पण वारी छडी-छीछडी बानगी आज भी मिलै। चौदवी सदी उतरता-उतरता लिखीजी 'धनपाल कथा' जूनी बाता रो एक नमूनो है। उणरै पछै पदरवी सदी मे तो बाता री चतराई इत्ती बधगी कै 'वागविलास' जिसा ग्रथ लिख्या गया ज्या मे भात-भात रा वरणना री कारीगरी रा नमूना माड्या गया। जिणी बखत 'अचलदास खीची री वचनिका' मे बात कैवण रो सैजोर तरीको मिलै। धीरै-धीरै 'वर्णक', 'सभा-शृगार' अर 'बातबणाव' जिसी रचनावा सामै आई ज्या मे बाता री न्यारी-न्यारी भाता बताईजी। सतरवी सदी सू आगै तो ख्यात, बात, विगत आद री रचनावा रा भडार भरीज्या अर बाता रा गुटका घर-घर मे पढ्या-लिख्या जावण लाग्या। राजस्थानी बाता री आ जातरा लारला सात सौ नेडा बरसा सू लगोलग चालती आई है अर इणरो लेखो-जोखो अपणै आप मे एक घणो मोटो अर न्यारो-निरवाळो काम है। आज री राजस्थानी वाता रो उण सू कोई खास लेणो-देणो तो कोनी पण उणरी एक झाकी समेप मे दिखाणी इण वास्तै ठीक रैसी कै आज री बाता रा लिखारा भी उण सू कुछ ले सकै अर वा गुणा नै आपरी कलम मे सजो सकै।

बात अर उण रै मिलतै-जुलतै रूप मे जिकी रचनावा लिखीजी वा मे ख्यात, बात, विगत, अहवाल, वृत्तात, हकीकत, पीढी, पटटावली, दफ्तरबही, याददास्त, वचनिका, दवावैत, कथा आद रा नाव खास है। आ सगळी भाता मे 'कथा' या

# आज री राजस्थानी वातां

मनख जद सू मिल-बैठ'र रहण लाग्या तद सू ही वाता भी कही-सुणी जाण लागी। इण भात वाता री बात जित्ती ही जूनी है जित्ती मिनख जात। राजस्थानी भासा में भी बाता, उण रै जलम सू ही चालू है। विक्रम रै तेरवै सईकै नै राजस्थानी मे पद्य रचनावा सरू हुवण रो समै मानै। गद्य रचनावा भी उण बखत बणी होसी। पण जिकी रचनावा मिलै है वै चौदवै सईकै री है। बाता रो गद्य तो और भी पछै री मिलै। इण रो कारण ओ हो सकै कै राजस्थान रै इतिहास मे बारवै सू चौदवै सईकै ताणी रा तीनसौ वरस घणी उथळ-पुथळ रा रया। विदेसी हमला सू अठै रौ हाथलिख्यो साहित्य घणो बरबाद हुयो। पण वारी छडी-बीछडी बानगी आज भी मिलै। चौदवी सदी उतरता-उतरता लिखीजी 'धनपाल कथा' जूनी बातां रो एक नमूनो है। उणरै पछै पदरवी सदी मे तो वाता री चतराई इत्ती बधगी कै 'वागविलास' जिसा ग्रथ लिख्या गया ज्या मे भात-भात रा वरणना री कारीगरी रा नमूना माड्या गया। अिणी बखत 'अचलदास खीची री वचनिका' मे बात कैवण रो सैजोर तरीको मिलै। धीरै-धीरै 'वर्णक', 'सभा-शृगार' अर 'वातवणाव' जिसी रचनावा सामै आई ज्या मे वाता री न्यारी-न्यारी भाता बताईजी। सतरवी सदी सू आगै तो ख्यात, वात, विगत आद री रचनावा रा भडार भरीज्या अर बाता रा गुटका घर-घर मे पढ्या-लिख्या जावण लाग्या। राजस्थानी वाता री आ जातरा लारला सात सौ नेडा वरसा सू लगोलग चालती आई है अर इणरो लेखो-जोखो अपणै आप मे एक घणो मोटो अर न्यारो-निरवाळो काम है। आज री राजस्थानी वाता रो उण सू कोई खास लेणो-देणो तो कोनी पण उणरी एक झाकी ससेप मे दिखाणी इण वास्तै ठीक रैसी कै आज री बाता रा लिखारा भी उण सू कुछ ले सकै अर वां गुणा नै आपरी कलम मे सजो सकै।

बात अर उण रै मिलतै-जुलतै रूप मे जिकी रचनावा लिखीजी वा मे ख्यात, बात, विगत, अहवाल, वृत्तांत, हकीकत, पीढी, पट्टावली, दफ्तरवही, याददास्त, वचनिका, दवावैत, कथा आद रा नाव खास है। आं सगळी भाता म 'कथा' या

'बात' रा तत्व मिलै, भला ही वै लोककथावा रै कैवण ज्यू लिखीजी हो या साहित्यिक वाता रै बणाव-बखाण ज्यू। आ बाता मे सबमू बेसी कथा-तत्व 'ख्यात' अर 'बात' मे ही मिलै। दूजा मे न्यारा-न्यारा प्रसग या खुलासा रैवै।

ख्यात' एक सिलसिलैवार लाबी बात है जिण म कोई राज, वश या जगा, वसत कै आदमी री पूरी जाणकारी रैवै। इण अरथ मे 'ख्यात' आज री भासा मे 'इतिहास' है। ख्यात' री बरोबरी मे 'बात' एक खास घटना या एक खास प्रसग री रचना है। उण म पूरै लेखै-जोखै री जरूरत कोनी। दूजी फरक री बात आ है कै ख्यात' इतिहास रै दायरै री रचना ही है जद कै 'बात' इतिहास री भी हो सकै अर कल्पना री भी। इण वास्तै 'बात' नै आज री कहाणी रै बरोबर मान सका। यू 'कथा' भी 'बात' ही है, पण ओ नाव धार्मिक कथावा सारू रूढ सो होग्यो। साहित्यिक वाता मे बखाण री कारीगरी, तुकात गद्य-खड अर दूजी बारीकिया भी बाकी गद्य री भाता मू उण नै निरवाळी करै। अठै वाता री वा कारीगरिया री थोडी चरचा भी काम री रैसी।

राजस्थानी बाता री सबमू बडी खासियत गद्य रा वै छोटा-छोटा टुकडा है जिका म् बाता रो सिलसिलो आगै बधतो जावै। समास शैली सू दूर, लाबा वाक्या सू हट'र चालती छोटा-छोटा वाक्या री आ शैली वर्णन मे घणी असरदार अर सुफ्ळ समझी जावै। हरेक वाक्य अपणै आप मे पूरो अर एक न्यारो चितराम समटया रैवै। सहायक क्रियावा रो तो अभाव रैवै ही पण कठै-कठै क्रियाहीण प्रयोग भी वडा कारीगरी रा बण्या है। सस्कृत गद्य री आ चूर्णक शैली कैयी जा सकै, पण इण रै विकास म उण परम्परा रो कित्तोक हाथ है आ बात हाल सोचणै-विचारणै री है। 'बात'' री दूजी खासियत उण रै बणाव-बखाण री है जिण मे प्रायकर तुका री भरमार रैवै अर न्यारा-न्यारा विसया री वर्णन-रूढिया माडी जावै। रितुआ रा वर्णन काळा री भयकरता लुगाया रो फूटरापो, मरदा री मरदमी, भात-भात री पोसाका अर बणाव-सिणगार फौजा री बणगट, लडाया रा वर्णन, महला-बागा रा बखाण अर और ही घणी वाता री भरमार रैवै। इण रूप मे राजस्थानी बाता आखै देस री कोई भी भासा सू घणी बढी-चढी समझी जावै। इसी बाता सतरवी सू बीसवी सदी ताई रा च्यारसो बरसा म हजारा री तादाद मे लिखीजी। घणकरी पोथ्या खतम होणै रै बावजूद आज भी सैकडा बाता मौजूद है।

बाता रा पुराणा ठाठ वढ्या-चढ्या हुवता थका भी, आज री बाता, ज्यानै आपा 'कहाणी' नाव सू जाणा, जूनी बाता सू कोई तालको कोनी राखै। आज री कहाणी ज्यू देस री दूजी भासावा मे पिच्छम री नकल पर लिखीजी, बिया ही राजस्थानी म भी लिखीजी। ईस्ट इडिया कम्पनी सू देसी रजवाडा रा समझौता जद सू हुया उण रै पछै धीमै धीमै अग्रेजी रो चलण वढ्यो। राजकाज म अर पढाई-लिखाई मे अग्रेजी री सरूआत हुई। अग्रेजी रै दूजै नबर पर हिन्दी अर उरदू

रैयी। आ दोना राजस्थानी नै राजकाज अर पढाई-लिखाई दोना मू धक्का देय'र निकाळ दी। आपरै खुद रै घर मे इण भात दुतकारी-फटकारी राजस्थानी एक कूणै मे दुबक'र पडी रैयी। जे आ अठै रा करोडा लोगा री जीती-जागती जबान नी होती तो आज राजस्थानी रो ठोड-ठिकाणो भी कोनी लाधतो।

अग्रेजी री 'शार्ट स्टोरी' जद हिन्दी अर दूजा प्रदेसा री भासावा मे 'कहाणी' या इसा ही दूजा नावा सू अपणाईजी, तद लोग पाछा 'कहाणी' या 'बात' कानी ध्यान दियो। राजस्थान मे हिन्दी रै मारफत ही आज री कहाणी' या 'बात' चालू हुई, इण मे दो राय कोनी। हा, कुछेक लिखारा जिका घर छोड बगाल, महाराष्ट्र आद प्रदेसा मे कमाई-कजाई खातर गया, वै जरूर वठै री भासावा मे उतरती पिच्छम री इण विधा नै देखी। हो सकै कै वै वा कहाणिया सू प्रेरणा ली हुवै अर आपरी कहाणिया मे वा रचनावा री झलक जाण-अणजाण मे माडी हुवै। इण बाबत हाल खोज होणी बाकी है। पण, आ बात सोळा आना साची है कै वा लोगा री गिणती री कहाणिया या बाता रो आज री राजस्थानी कहाणिया या बाता सू कदे ही कोई भात रो सम्बन्ध कोनी रैयो। फेर भी आ कहाणिया री विसेसतावा बाबत चरचा कर लेवा तो आगै री कहाणिया नै समझणै-परखणै मे मदद रैमी।

प्रवासी कहाणीकारा मे शिवचन्द्र भरतिया, गुलाबचन्द नागौरी, शिवनारायण तोशनीवाळ, छोटेराम शुक्ल, ब्रिजलाल बियाणी अर भगवतीप्रसाद दारूका रा नाव गिणाया जावै। शिवचन्द्र भरतिया घणमुखी प्रतिभा वाळा हा। उपन्यास, नाटक, निबध, कहाणी आद घणी रचनावा वै करी। विश्रात प्रवासी' नाव री बारी कहाणी पडताऊ सस्कृत शैली म लिख्योडी है। नागौरी, दारूका अर शुक्ल भी प्रायकर सामाजिक विसया पर कलम चलाई। दूजा प्रदेसा रा पढ्या लिख्या समाजा रै मुकाबलै प्रवासी मारवाडी परिवारा री हालत न्याऊ हुवण सू हीण भावना रा सिकार अै लिखारा समाज री बुराया री बाता माडी सो ठीक ही हो। ओ ही विसय वारा उपन्यासा अर नाटका मे भी आयो। ब्रिजलाल बियाणी 'रामायण' री कहाणी कैयी। कुल मिला'र सुधार अर उपदेस रै दायरै म सिमट'र अै लोग रचनावा करता रैया। हा, आ रो लिखणै रो ढग पिच्छम री कहाणी री तरज पर हो अर इणी कारण आरी रचनावा नै आज री कहाणिया भेळी मानीजै। पण राजस्थानी री आज री कहाणिया रै सिलसिलै सू अै न्यारी-निरवाळी अर कटी-छटी ही रैयी क्यूकै राजस्थान री साहित्यिक हलचल सू अै लोग वेसी जुड्योडा नी रैया। आरो दायरो प्रवासी लोगा ताई ही सीमित रैयो। प्रवासिया री अै रचनावा सन् १९०४ सू लगा'र १९१८ रै आसपास ताई छपी। ओ बखत ठीक उणरै पहला हो जिणमे राजस्थानी रो नयो आदोलन बीकानेर मे सरू हुयो। इणी दिना टैस्सीटोरी अर ग्रियर्सन रा काम सामै आया अर पुराणै राजस्थानी साहित्य

कानी विद्वाना रो ध्यान गयो। सायद आ दोनां भाता रै वातावरण रो ही नतीजो हो कै लोगबाग राजस्थानी रै भासा रूप नै नया सदर्भा मे देखणो सरु कर्यो।

बीकानेर मे तीन विद्वाना री मडळी (सूरजकरण पारीक, रामसिंह, नरोत्तमदास स्वामी) री चेस्टा सू नयै-जूनै राजस्थानी साहित्य मे जिका प्रयत्न चालू हुया वा मे वै साहित्यिक गोस्ठिया भी ही ज्या मे बीकानेर रा उण बखत रा लिखारा आप-आप री रचनावा सुणाता। इसा ही लिखारा मे हा मुरलीधर व्यास अर श्रीचदराय माथुर। मुरलीधर री कहाणिया रो एक सग्रै 'बरसगाठ' नाव सू छप्यो है। वारा दूजा सग्रै 'जूना जीवता चितराम' अर 'इक्के वाळो' कहाणी विधा सू हट'र है। मुरलीधर रो मानणो है कै वै बगाली कथाकार शरदचन्द्र री रचनावा सू प्रेरणा ली। पण समीक्षक लोग आ बात साबित करै कै शरदचन्द्र री छाया भी वा मे कोनी। वै प्रेमचन्द सू प्रभावित दीखै। समाज रै जिण तबकै री बात मुरलीधर कैयी है वो भी प्रेमचन्द रा पात्रा रो नी हुय'र सहर रै मध्यम दरजै रा लोगा रो है। आ बात जचती भी है क्यूकै व्यासजी बीकानेर सहर मे ही आपरी उमर बिताई अर बठै रा लोगा रा सुख-दुख ही घणा नेडै सू देख्या। व्यासजी री रचनावा विचारप्रधान नी हुय'र घटणा-प्रधान बेसी है। वा म पात्रा रो मनोवैज्ञानिक विश्लेपण, वा रो अन्तर्द्वंद्व अर भावा-विचारा री उथळ-पुथळ उण गहराई ताई नी उतर पाई जिकी दूजी भासावा रा भलेरा लिखारा मे मिलै। पण मुरलीधर ही वै पैलडा लिखारा गिणीजै जिका आज री राजस्थानी कहाण्या री सरूआत करी। एक दूजी खास बात आ भी है कै मुरलीधर कठै भी वर्गभेद नै उण सीव ताई नी उभारयो कै मना मे अूडी खरास उमड आवै। वारा विसय भी घुमा फिरा'र विधवा-जीवण, दायजो, नुक्तो, बेटी रो जलम, गाया पर अत्याचार, बाळ-विवाह आद सामाजिक समस्यावा रैयी है। कई बाता इतिहास री भी है ज्या मे राजस्थान रै जूनै गौरव रो बखाण है। व्यासजी कुल मिला'र आदर्शवादी लिखारा है अर सगळी कडवी साच रै आखर मे भी वै आदर्श री थापना ही समाज रै हित म समझी है।

व्यासजी रै साथ रा ही श्रीचदराय माथुर छोटी-छोटी बाता लिखी, ज्यारो एक सग्रै वारै सुरगवास रै पछै अबार 'मिठाई रो पूतळो' नाव सू छप्यो है। श्रीचदराय री बाता ईसप री कथावा या खलील जिब्रान री छोटी छोटी सूक्तिनुमा रचनावा ज्यू है। वै लघुकथावा आकार मे इत्ती छोटी है कै वा मे कहाणी रो वो रूप भी नीं प्रगट हो सकै जिको कोई भी कहाणी सारु जरूरी है। फेर भी आज सू चाळीस-पैताळीस बरस पैला राजस्थानी जिसी भासा मे इसी कोसीमा करणी अपणै आप मे सरावण जोगो काम हो। आ लघुकथावा मे जिन्दगी रो कडवो साच, वर्णन री चतराई, मायलो व्यग्य अर उपदेस-भावना ही आरी खासियता है। व्यास

र मायुर री अँ कोसीसा १९३६ रै अडगडै सरू हुई अर लावै बखत ताई चालती
यी ।

मुरलीधर व्यास री दूजी पोथ्या 'इक्कै वाळो' अर 'जूना जीवता चितराम'
रेखाचित्र अर हास्य-व्यग्य रा प्रसग है । रेखाचित्रा री आ शैली बीकानेर मे वेसी
लण पायो जिण सू अनेक लिखारा इण शैली मे लिखणो सरू करचो । श्रीलाल
न० जोशी, ब्रजनारायण पुरोहित, मोहनलाल पुरोहित, भवरलाल नाहटा, शिवराज
छगाणी आद लिखारा रेखाचित्र लिखणवाळा ही है । आ मे मोहनलाल, भवरलाल
अर श्रीलाल न० जोशी दूजी भात री कहाणिया माडी है । भवरलाल जैन कथानका
रै भडार सू कुछेक सादा प्रसग लिख्या है । पण श्रीलाल न० जोशी कथासाहित्य मे
अनेक आछी रचनावा दी है। रेखाचित्रा री आ री पोथी 'सबडका' नाव सू छपी
अर कहाणिया 'परण्योडी कवारी' नाव सू । ब्रजनारायण पुरोहित री 'वकील
साहब' अर 'अटारवा', शिवराज छगाणी री 'ओळखाण' अर 'उणियारा' अर
भवरलाल नाहटा री 'बानगी' दूजी भात री पोथ्या है ।

श्रीलालजी री कथावा बाबत थोडी चरचा अठै ठीक रैसी। 'परण्योडी
कवारी' मे २० छोटी-छोटी कहाणिया हैं। कहाणिया वास्तै श्रीलालजी नै छोटा-
छोटा प्रसग ही रुच्या है । घणै लावै-चौडै आयाम री जरूरत कोनी पडी । उण एक
ही प्रसग मे वै पात्रा री समूची पिछाण करावण री चेस्टा करी है अर उण सामा-
जिक या निजू स्थिति नै भी चौडै करी है जिण सू वै पात्र बध्योडा है। श्रीलालजी
री कहाणिया मे जथारथ अर आदर्श रो मेळ सो है। कठै तो वै घोर जथारथ रै
चीला आखर ताई चालता दीखै अर कठै-कठै झट सुखात परिणति कर'र कथा नै
समेट लेवै या आदर्श रो लेबल लगा'र 'एग्मार्क' ज्यू सीलबद कर देवै। आदर्श घणो
सुहावणो अर रुचिकर तो लागै पण इण सू आम आदमी नै जिंदगी नै सरळ अर
सो'री समझणै रो भरम हुवै जिण सू सघर्षा सू जूझणै रो हौसलो कम हुवै । अर फेर
दुनिया इत्ती भली अर रोमास भरी है भी कोनी । इण वास्तै जित्तो कठोर जथारथ
खोल'र बतायो जावै बित्तोई ठीक है। श्रीलालजी मे उण रो बखाण करण री
खिमता है।

राजस्थान प्रदेस बण्या पछै जोधपुर क्षेत्र मे भी दो भरपूर जीवट अर दमखम
वाळा लिखारा खडया हुया जिका राजस्थानी कहाणिया नै एक नयो अर ऊचो
दरजो दियो। आ मे पैलडो नाव है नृसिह राजपुरोहित रो अर दूजो विजयदान
देथा रो। नृसिह राजपुरोहित री कहाणिया रा चार सग्रै हाल निकळ चुकया है।
सग्रमू पैलडो है 'रातवासो' अर उण रै पछै रा 'मऊ चाली माळवै' अर 'अमर
चूनडी।' एक और सग्रै 'परभातियो तारो' भी हाल मे ही पुरस्क्रित हुया पछै
छप्यो है। राजपुरोहित री कहाणिया अनेक भात री है। जिकी कहाणिया मे वै ठेठ
मानवी मोला री बात कैयी है, आज रै राज अर समाज मे ऊडै रम्योडै भ्रष्ट

पणो छूट नी पायो है। असल मे वै खुद प्रधान पात्र रै रूप मे है अर दूजा पात्र भी वा जिसा ही भावुकता अर कल्पना री मूरता वण्योड़ा है। इण कारण वा री कहाणिया रो दायरो अवचेतन मन री सींवा तक पूग्योडो है। इण नै समझणै अर सरावणै वास्तै लिखारै री भावभोम ताई पूगणै री चेस्टा करणी जरूरी है। आज री कहाणिया मे इण ढग री अर इण दरजै री कहाणी देखण रो सवाल ही कोनी उठ सकै। जिण तौर-तरीकै पर आज रा घणकरा लिखारा देखादेखी मे रचनावां माडै उण सू घणा दूर रह'र किशोरजी आपरै सहज अर निजू तरीकै सू कहाणिया माडी है अर इण विचार सू आज री राजस्थानी कहाणिया मे आ जिसी दूजी कहाणी सायद ही लाधै। सबसू बडी बात आ है कै तीसा पाना मे लिखेडी एक ही कहाणी मे मुसकल सू एक-दो पाना दूजै किणी पात्र बाबत लिखेडा है। बाकी सगळी बात लिखारै रै अन्तरमन री अर भुगतेडी है। कविता रो सो रस देवण वाळी इसी कहाणी कहाणी-लिखण री कारीगरी मे घणी ऊची गिणीजणी चाइजै। घणै खेद री बात है कै किशोरजी रो एक भी सग्रै हाल छप'र सामैं नी आयो। बीकानेर (डिवीजन) मे कहाणी लिखाणिया री परपरा मे और आगै बढा तो अन्नाराम 'सुदामा', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', सीताराम महर्षि, रामप्रसाद धावलाण, माधव शर्मा, *रामदत्त साकृत्य, करणीदान बारठ, रामनिवास शर्मा, मूळचन्द प्राणेश,* सावर दइया, भवरलाल सुथार अर बी० एल० माळी रा नाव गिणावण जोग है।

अन्नाराम रो एक कहाणी-सग्रै छप्यो है—आधै नै आख्या। फुटकर कहाणिया और भी छापा-पोथ्या मे छपी है। जठै ताई भासा रो सवाल है अन्नाराम ऊचै दरजै रा कारीगर है। भासा मे सुभावीकपणो पूरो है। कैबता-मुहावरा री छटा भी भरपूर है। कमर है तो इसी ही कै उपमावा, कैबता अर मुहावरा घणी बार धिगाणै ठूस्योडा सा लखावै। ऊपर सू आपरै चौतरफा ज्ञान रो बघार लगाणै मू मूळ बात सू परै ओपरी चीजा मे मन अटक-अटक'र भटकण लाग जावै। प्रसगबस उपमावा देणी जरूरी हुवै तो मूळ बात सू रळती-मिलती ही देणी चाइजै जिण सू विसय रो बिखराव नी हुवै। आज री राजनीत रा प्रसगा नै अन्नाराम हर भात रै कथानक मे घुसावण री कोसीस करी है। एक दूजो मोह है वारो अध्यातम कानी झुकाव। वारी निजू आस्था कोई न कोई पात्र मे बड'र वैराग, भगती, अध्यातम-ज्ञान अर दूजी परमातम रहस्य री बाता करण लाग जावै। वै इसै मोकै री तलास मे रैवै जठै वा री आपरै मायलै मन मे घुमडती बरसाऊ बादळा री सी मजबूरी नै मूसळाधार बरसाणै री हूस पूरी हुवै। 'आधै नै आख्या' नाव री कहाणी मे 'घोरै' अर 'खीप' रै प्रतीक सवाद रै मिस वै योगी साधका री सगळी सब्दावळी नै ठूस'र जी सो'रो कर्‌यो है। एक तीजी बात भळै है, अर वा है अणूता सवादा री। कोई बात एक पात्र कैयी तो तुरन्त दूजो पात्र उण रो उथळो देवण नै त्यार है। सवादा री इसी भरमार धिगाणै नाटका रो सो दरसाव खडयो करै। एक तरह सू आ अचभै री सी

बात भी लागै कै अूडै अध्यातम अर पारलौकिक ज्ञान री बात करणिया सुदामाजी सवादा री इसी चटपटाट मे रचि किया राखै। ज्यादातर तो यू देखण मे आवै कै वाचाळ पात्र ही वेसी बोलै जद कै दूजा घणखरा पात्र या तो सुणै, या हा-हू करै अर नी तो थोडो सो बोलै। बरोबर रा सवाद मुआबीक कोनी लागै। जठै सवाद इकतरफा है भी तो बठै राष्ट्र री समस्यावा या अध्यातम रा रहस्या बाबत भासणबाजी वेसी है।

पण अै सगळी बाता होता थका भी आज रै राजस्थानी साहित्य मे बात रो मरम, कैवण रो तरीको, भासा री सुघडाई अर धरती री गध जे किणी लिखारा मे है तो वा मे सुदामाजी सिरै है। वै आपणै गावा री, आपणै समाज री अर अठै ताई कै आपणै मायलै मन री समस्यावा नै भली भात उठाई ही नी है निवेडी भी है। सादै सू सादै पात्र मे बड'र वै उणनै महान बणावण री सुफळ चेस्टा करी है। वै सही अरथ मे मिनख रै माय लुक्योडै असली मिनख नै पिछाण्यो अर परगट कर्यो है। लिखारा जद थोथै वादा रै झमेलै मे पड'र लोगा नै सुहाती लीपापोती करण लाग जावै तो वै आपरै अूचै आसण सू घणा नीचै आ पडै। वरगभेद रा झगडा नै उभार'र समाज मे खरास पैदा करणै सू समस्या रो निपटारो न आज हुवै न काल। समाज री व्यवस्था बदळणै रो सवाल मुख्य है जिको राजनीत सू बेसी जुडयोडो अर बै रै ही बस रो है। लिखारा उण री जरूरत नै अर उण रै मरम नै इणी भात परगट करै कै व्यवस्था नै बदळणै री जरूरत गहरी मालूम देवै। जे वा रै लेखण सू समाज मे अव्यवस्था फैलै अर मार-काट री नौबत आवै तो बिमै लेखण पर भली भात विचार करणै री जरूरत है। सुदामाजी रै दूजै साहित्य मे कठै-कठै इसा सकेत मिलै जिणनै अनेक आलोचक ठीक मान सकै पण वै लोकमगळ री भावना रै मुजब कोनी।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' मूळ रूप मे उपन्यास रा लिखारा है। 'हू गोरी किण पीव री' अर 'जोग सजोग' नाव रा दो उपन्यास आ रा छप्या है। हिन्दी मे घणा उपन्यास लिखणै सू उपन्यास लिखणै री कळा आरी कलम मे रम्योडी है। कहाणिया थोडी लिखेडी है। राजस्थान रै समाज, खास तौर सू गावाऊ समाज बाबत जाणकारी कम हुवण सू आरी कहाणिया मे ठेठ देसी रगत कोनी। भासा भी सहरी अर हिन्दी रै असरवाळी हुवण सू घणकरा दूजा रै मुकाबलै कमजोर पडै। कहाणिया री समस्यावा जठै राजस्थान री धरती सू बारै री है, बठै वै नये जमानै रै रग मे गहरी डूब्योडी है। यादवेन्द्र री देण भासा अर समस्यावा सू कम, उपन्यास लिखणै री कारीगरी सू बेसी सबध राखै।

करणीदान बारठ रो कथा सग्रै 'आदमी रो सीग' नाव सू छप्योडो है। कथावा रा विसय अनेक भात रा है। बारठजी मास्टर अर ठेठ गाव रा रैवणिया। आरी कहाणिया मे भी मास्टरा री जिंदगी री खारी-मीठी आपबीती माडयोडी

है। साथै ही गावा रै चौफेर री जिदगी री झाकी भी है। घर री टाळ पराई लुगाई नै भोगणरी भावना दवी-लुकी ठोड-ठोड पर लाधै। मगळा मू आछी वात तो आ है कै वारठजी प्राय भोग्योडी जिदगी नै ही माडी है। मास्टरी रा दुख-दरद, स्कूला मे नागी नाचती राजनीत, मास्टरा री कामचोरी, अभावा री जिदगी सू जूझतै मास्टर री हीण दसा, छोरा पर हुक्म चलावता बण्योडो अहकार अर माय ही माय दव्योडी वामनावा अर इच्छावा जिवी फुटावा वण'र उघडती दीखै—अै सगळी वाता वारठजी री कहाणिया मे चोखी तरिया अूतरी है। गावा मे वाणिया-व्योपारिया सू हुवण आळो सोसण, वरसा री भागभरोमै रहती हसी-खुसी, गरीवा रा माडा दिना अर गरीबी रो वेजा फायदो उठा'र वा री भैण-वेटिया नै कुगैलै घालता कुमारगी भी आरी कहाणिया म उघड'र सामै आया है। विसया रै इण विखराव मे कोई खास ढग रो जीवण-दरसण तो कोनी उभर कर आवै पण लिखारै री हम-दरदी न्यारा-न्यारा टुकडा मे वटेडी जरूर लाधै। ज्यू वारठजी री भासा मे कोई खास लोच कै जायको कोनी दीखै विया ही वारी कहाणिया मे भी कोई खास चुभती कै मरम नै टटोळती चीज कोनी लाधै। बात कैवण रो थाडी-घणो मुहावरो जरूर ठीक लखावै पण इत्ती सी कारीगरी पर गरब-गुमान भरी कथावा रा महल किया चिणीजै।

रामनिवास शर्मा रो एक उपन्यास ही छप्यो है—'काळ भैरवी' अर उण पर इनाम भी मिल्यो है। कहाणिया रो सग्रै तो नी छप्यो पण खासा कहाणिया छापा मे छपी है। आरी कहाणी 'आतम बोध' मे समाज रा अनेक वरगा पर जिसो व्यग्य है अर वात कैवण री जिकी चतराई है उण सू शर्माजी री कारीगरी री ओळख हुवै। मन री न्यारी-न्यारी हालता री जिकी पकड, वखत-वखत रै रग मे डूब्योडी जिदगी रा जिमा चितराम, समै रै दायरै म फस्योडा लोगा रा जिसा दुख-दरद शर्माजी री कहाणिया म मिलै वा सू वा रै आळस पर तरस आवै अर मन करै कै वा री कलम वयू नी रफ्तार पकडै अर आज री राजस्थानी नै कुछेक और चोखी वानगी देवै।

माधव शर्मा मूळ मे कवि है। इण वास्तै आ री कहाणिया म भी रोमास वेसी है। आदर्श पात्र मिरजणै री धुन मे कथा रै रस रो परिपाक नी हुवण देवै। 'ऊजळो दाग' नाव सू लिखेडै आ रै उपन्याम म भी एक चितेरो समाज सुधारक बण जावै अर एक वेस्या री छोरी सू प्रेम कर बैठै। वो समाज री असली तस्वीर नै अणदेखी कर वेस्या सू व्याह रचा लेवै। ठेठ ताई उण प्रेम नै निभावण री आदर्श बात माड'र शर्माजी कथा रो निवेडो करै।

बीकानेर रा लिखारा म दो जोडा और है—एक मूळचद प्राणेश अर सावर दइया रो अर दूजो भवरलाल सुथार अर बी० एल० माळी रो। मूळचदजी राजस्थानी साहित्य मे ही नी राजस्थान री ठेठ गावाऊ जिदगी मे भी गहरा उतर्योडा है।

आरी कहाणियां सूं केरो लागै कै बाळपणै मूं आगै जवानी रा थोड़ा बरस भी अै गावां नै दिया है। गाव रै समाज नै जित्तो नेडै सूं कोई हमदरद मिनख देख सकै, जित्ती ऊडाई सूं गावां रा दुख-दरद, हंसी-खुसी री थाह नाप सकै, वो हुनर प्राणेशजी मे पूरमल दीखै। आज रा यळी रा गावां री अनेक समस्यावां नै अै घणी चतराई सूं उठाई है अर एक सवालिया ढग मे आपा रै सामैं खड़ी करी है। कोई आदर्श या पडताभू तरीकै सूं वा रो सुळझाव या उथळो खुद कठै भी नी दियो है। अणमेळ ब्याव, दायजै री दाझ, पीढियां सूं भूखा मरता आया अधमाणसिया जीव, वाणिया-ब्योपारियां रो खूनचूसणो सुभाव, बेरोजगारी, पढाई-लिखाई री कमी, दवा-दारू बिना दम तोड़ती जिंदगी, आद घणी बातां है जिकी प्राणेशजी री कलम सूं उभर'र सामैं आई है। लुगाई रै मन अर मरद-लुगाई रै कुदरती सबधा री घणी मरमभरी पिछाण भी प्राणेशजी अनेक कहाणियां म करवाई है। कहाणी कंवण रो ढग भी आरो असरदार है। घटणावां खुद आपरै मूडै सूं सगळा बखाण करती जावै। भलै ही पात्रां रा मना री ऊडाई अर हालता स जूझणै रा लाता-लाया उथपाऊ पाना वै नी रख्या हुवो, पण कथा नै आपरै पूरै मरम रै भावै खुद बिगसणै अर मुकाम पर पूगण देवण मे आ री कलम काई भात री कसर उठा'र नी राखी। 'उकळता आतरा, सीळा सास' अर 'चस्मदीठ गवाह' नावां सूं दो सग्रै प्राणेशजी रा छप्या है। गाव री माटी री जिसी गध आरी कहाणियां मे मिलै वा दूजा, खासकर सहरा-कस्बा रा, लिखारा मे विरळी ही मिलै।

मावर दइया रा भी दो सग्रै छप चुक्या है—'असवाडै पसवाडै' अर 'धरती कदताई घूमैली'। दइया जी सहर रा जीव है अर आरी बातां भी सहर री ही है। एक बिचलै दरजै रो सहरी परिवार, नौकरीपेसा लोग, गळी-कूचै री चौफेर, नया पढ्या लिख्या लोगा रो अहम् अर जूनी मानतावां-परपरावां खातर वा रो रोस—अै ही सगळी बातां दइयाजी री कहाणियां रा विसय है। वा कनै कोई ऊडी समस्या कोनी अर न उण सूं जूझण रो धीरज। फुटकर रूप मे वा पर प्रतिक्रियावां, अर वै भी झूझाळ अर रोसभरी, माडी है। समाज री जूनी मानतावां नै समझण अर बदळण री हूस नी राख'र वारी हासी उडाणी आज रै लिखारै री एक बधी लीक है। एक मानता नै छोड'र दूजी नै पकडण री सी बात है। पण सहरी लोगां रा आपसी सबधा री पोत आरी कहाणियां म चोखी तरियां खोलीजी है। कुल मिला'र दइया जी लिखारै रै रूप म वै ही बातां कही है अर बिसा ही विचार परगट कर्‌या है जिका आज रो पढ्यो लिख्यो कोई भी साधारण सहरी जवान करै। हा, बात कंवण रो आरो ढग जरूर असरदार है। चटपटा सवाल-जवाबा रै मारफत अै आजरै सहरी समाज री असलियत उधेड'र राखदी है। 'गळी जिसी गळी' नाव री आरी कहाणी इण कारीगरी री एक उम्दा बानगी है। दइयाजी कहाणियां म अछूता विसय कै समस्यावां रो नयो रूप दे सकै तो कहाणियां म बेसी दम खम आवै अर

है। साथै ही गावा रै चौफेर री जिंदगी री झाकी भी है। घर री टाळ पराई लुगाई नै भोगणरी भावना दबी-लुकी ठौड-ठौड पर लाधै। सगळा सू आछी बात तो आ है कै बारठजी प्राय भोग्योडी जिंदगी नै ही माडी है। मास्टरी रा दुख-दरद, स्कूला म नागी नाचती राजनीत, मास्टरा री कामचोरी, अभावा री जिंदगी सू जूझतै मास्टर री हीण दसा, छोरा पर हुक्म चलावता बण्योडो अहकार अर माय ही माय दब्योडी वासनावा अर इच्छावा जिकी कुठावा बण'र उघडती दीखै—अै सगळी बाता बारठजी री कहाणिया मे चोखी तरिया ऊतरी है। गावा मे बाणिया-ब्योपारिया सू हुवण आळो सोसण, करसा री भागभरोसै रहती हसी-खुसी, गरीबा रा माडा दिना अर गरीबी रो बेजा फायदो उठा'र वा री भैण-बेटिया नै कुगैलै घालता कुमारगी भी आरी कहाणिया म उघड'र सामै आया है। विसया रै इण बिखराव मे कोई खास ढग रो जीवण-दरसण तो कोनी उभर कर आवै पण लिखारै री हम-दरदी न्यारा-न्यारा टुकडा मे बटेडी जरूर लाधै। ज्यू बारठजी री भासा मे कोई खास लोच नै जायको कोनी दीखै बिया ही वारी कहाणिया मे भी कोई खास चुभती कै मरम नै टटोळती चीज कोनी लाधै। बात कैवण रो थोडी-घणो मुहावरो जरूर ठीक लखावै पण इत्ती सी कारीगरी पर गरब-गुमान भरी कथावा रा महल किया चिणीजै।

रामनिवास शर्मा रो एक उपन्यास ही छप्यो है—'काळ भैरवी' अर उण पर इनाम भी मिल्यो है। कहाणिया रो सग्रै तो नी छप्यो पण खासा कहाणिया छापा मे छपी है। आरी कहाणी 'आतम बोध' मे समाज रा अनेक वरगा पर जिसो व्यग्य है अर बात कैवण री जिकी चतराई है उण सू शर्माजी री कारीगरी री ओळख हुवै। मन री न्यारी-न्यारी हालता री जिकी पकड, बखत-बखत रै रग म डूब्योडी जिंदगी रा जिसा चितराम, समै रै दायरै मे फस्योडा लोगा रा जिसा दुख-दरद शर्माजी री कहाणिया म मिलै वा सू वा रै आळस पर तरस आवै अर मन करै कै वा री कलम क्यू नी रफ्तार पकडै अर आज री राजस्थानी नै कुछेक और चोखी बानगी देवै।

माधव शर्मा मूळ मे कवि है। इण वास्तै आ री कहाणिया मे भी रोमास बेसी है। *आदर्श पात्र सिरजणै री धुन म कथा रै रस रो परिपाक नी हुवण देवै।* 'अूजळो दाग' नाव सू लिखेडै आ रै उपन्यास मे भी एक चितेरो समाज सुधारक बण जावै अर एक वेस्या री छोरी सू प्रेम कर बैठै। वो समाज री असली तस्वीर नै अणदेखी कर वेस्या सू ब्याह रचा लेवै। ठेठ ताईं उण प्रेम नै निभावण री आदर्श बात माड'र शर्माजी कथा रो निवेडो करै।

बीकानेर रा लिखारा मे दो जोडा और है—एक मूळचद प्राणेश अर सावर दइया रो अर दूजो भवरलाल सुथार अर बी० एल० माळी रो। मूळचदजी राजस्थानी साहित्य म ही नी राजस्थान री ठेठ गावाऊ जिंदगी मे भी गहरा उतर्योडा है।

आरी कहाणिया मे वेरो लागै कै बाळपणै सू आगै जवानी रा थोडा बरस भी अै गावा नै दिया है। गाव रै समाज नै जित्तो नेडै सू कोई हमदरद मिनख देख सकै, जित्ती ऊडाई सू गावा रा दुख-दरद, हमी-खुसी री थाह नाप सकै, वो हुनर प्रणेशजी मे पूरसल दीखै। आज रा थळी रा गावा री अनेक समस्यावा नै अै घणी चतराई सू उठाई है अर एक सवालिया ढग मे आपा रै सामै खडी करी है। कोई आदर्श या पडताऊ तरीकै सू वा रो सुळझाव या उथळो खुद कठै भी नी दियो है। अणमेळ व्याव, दायजै रो दाझ, पीढिया सू भूखा मरता आया अधमाणसिया जीव, वाणिया-व्योपारिया रो खूनचूसणो सुभाव, वेरोजगारी, पढाई-लिखाई री कमी, दवा-दारू विना दम तोडती जिंदगी, आद घणी बाता है जिकी प्राणेशजी री कलम सू उभर'र सामै आई है। लुगाई रै मन अर मरद-लुगाई रै कुदरती सबधा री घणी मरमभरी पिछाण भी प्राणेशजी अनेक कहाणिया मे करवाई है। कहाणी कैवण रो ढग भी आरो असरदार है। घटणावा खुद आपरै मूडै सू सगळा बखाण करती जावै। भलै ही पाना रा मना री ऊडाई अर हालता सू जूझणै रा लाबा-लाबा उथपाऊ पाना वै नी रग्या हुवो, पण कथा नै आपरै पूरै मरम रै साथै खुद विगसणै अर मुकाम पर पूगण देवण मे आ री कलम कोई भात री कसर उठा'र नी राखी। 'उकळता आतरा, सीळा सास' अर 'चस्मदीठ गवाह' नावा सू दो भर्त्रै प्राणेशजी रा छप्या है। गाव री माटी री जिसी गध आरी कहाणिया मे मिलै वा दूजा, खासकर सहरा-कस्वा रा, लिखारा मे विरळी ही मिलै।

मावर दइया रा भी दो सग्रै छप चुक्या है—'असवाडै पसवाडै' अर 'धरती कदताई घूमैली'। दइया जी सहर रा जीव है अर आरी बाता भी सहर री ही है। एक बिचलै दरजै रो सहरी परिवार, नौकरीपेशा लोग, गळी-कूचै रो चोकेर, नया पढ्या लिख्या लोगा रो अहम् अर जूनी मानतावा-परपरावा खातर वा रो रोस—अै ही सगळी बाता दइयाजी री कहाणिया रा विसय है। वा कनै कोई ऊडी समस्या कोनी अर न उण सू जूझण रो धीरज। फुटकर रूप मे वा पर प्रतिक्रियावा, अर वै भी झूझळ अर रोसभरी, माडी है। समाज री जूनी मानतावा नै समझण अर बदळण री हूस नी राख'र वा री हासी उडाणी आज रै लिखारै री एक बधी लीक है। एक मानता नै छोड'र दूजी नै पकडण री सी बात है। पण सहरी लोगा रा आपसी सबधा री पोल आरी कहाणिया मे चोखी तरिया खोलीजी है। बुरा मिला'र दइया जी लिखारै रै रूप मे वै ही बाता कही है अर विसा ही विचार परगट कर्या है जिका आज रो पढ्यो-लिख्यो कोई भी साधारण सहरी जवान करै। हा, वात कैवण रो आरो ढग जरूर असरदार है। चटपटा सवाल-जवावा रै मारफत अै आजरै सहरी समाज री असलियत उघेड'र राखदी है। 'गळी जिसी गळी' नाव री आरी कहाणी इण कारीगरी रो एक उम्दा बानगी है। दइयाजी कहाणिया मे *अछूता* विसय कै समस्यावा रो नयो रूप दे सकै तो कहाणिया मे बेसी दम-खम आवै अर

कलम री जीवट भी महसूस हुवै ।

भवरलाल सुथार 'नगादो' नाव सू सग्रै छाप्यो है । आ री कहाणी 'वाता' मे सबधा रो लोगदिखावो अर अमूझता मना री बेबसी जिण खूबी सू उतरी है वा थोडा लिखारा री पकड म आवै । इण ढग री मनोविग्यान रै अूडै तळै म पूगती बाता और लिखी जावै तो हरेक पढणवाळै नै अपणै आप पर हासी आवण लागै अर वो मूडा पर चढायोडा बणावटी चहरा उतारण री सोचै । सुभाव सू मूक रैवणिया भवरलालजी री इसी पकड सुभावीक लखावै । इसी ही कहाणिया मे वै वेसी रम ले सकै तो भली बात हुवै । आरो एक और सग्रै अमूझो वद ताई' नाव सू छप्यो है अर एक उपन्यास 'भोर रा पगलिया' नाव सू ।

बी० एल० माली 'असात' रो एक सग्रै किली किली कटको' नाव सू छप्यो है । राजस्थान साहित्य अकादमी सू इण पर इनाम भी मिल्यो है । आरी कहाणिया मे सरू सू लेय'र आखर ताईं एक ही सुर है अर वो है अूची अर नीची जाता रो । यू मालूम पडै कै लिखारो आपरी कलम सू हजारा बरसा सू चली आती जात पात री जिसी-किसी व्यवस्था नै एक झटकै सू रद्द करणी अर बदळ देणी चावै । चमार रो छोरो सेठ री छोरी सू ब्याव करै ठाकर री कवरी खटीक रै माळा घालै, सेठ रो छोरो भगण सू प्रेम कर बैठै—बस ओ ही चौफेर है जिण म माळीजी री कहाणिया सुसी बैठी है, अर वारा सगळा पात्र चक्करवम हो रया है । कहाणी किया उठाईजै किया ठौड-ठौड पर पात्र आपोआप सू जूझै अर किया कथा रो निवेडो सुभावीक ढग सू हुवै, आ सगळी बाता री अणदेखी कर माळीजी आपरो असात' उपनाव सार्थक करयो है । कथा कैवण री कारीगरी, भासा रो फूटरापो, पढणवाळा रो दिल दिमाग, समाज री भिरख-परख, अै सगळी बाता परै मेल'र समाज-सुधार री धुन मे रगेडा अै पाना कथावा रै रूप मे तो फालतू लखावै । चोखी बात आ हुवै कै वै धीरज अर सयम सू समस्यावा नै देखै, पात्रा रै रूप मे लिखारो खुद उतर'र उपदेस नी बघारै । कथावा री कारीगरी जित्ती आगै बधगी है उण नै देखता इसी कथावा बेतुकी लागै । जे सही ढग सू अर ठीक समझ सू कोसीस करी जावै तो माळीजी चोखी कहाणिया दे सकै, इण म कोई दो राय कोनी ।

बीकानेर जित्ता तो नी पण जोधपुर म भी दो-तीन लिखारा अूचै दरजै री कहाणिया लिखी है । देथा अर राजपुरोहित रै पछै रामेश्वरदयाल श्रीमाळी रो नाव सिरै गिणीजै । 'सळवटा' नाव सू आरो एक सग्रै हाल छप्यो है अर उण पर अकादमी रो पुरस्कार भी आ नै मिल्यो है । काळ रा कमठाणा पर काम करती मजूरण जसोदा, आपरी पाळी-पोसी अर बडै घर ब्याही डावडी नै कावळी रो नेग देती डोकरी समघा, सेठ रिखबचन्द रा टाबरा री ट्यूसन करतो, सेठ रो अूतरयो कोट पैरणियो मास्टर—कुछ इसा पात्र है जिका श्रीमाळीजी री 'सळवटा' मे

सू निवळ'र राजस्थानी कथावा नै ही नी राजस्थान रा मिनखा रै समूचै दरद नै उजागर कर दियो है। पटवारिया अर पुलिसिया रा जुलम, ठाकरां सरपचा री लट्ठाई, व्याजखोर वाणिया रो खूनचूसणो सुभाव, जडा ताई पैरघोडी भ्रस्टाचार अर सुरसा सो मुह बाया खडी डूगर सीडी धी समस्यावा सू जूझण खातर पायचा मारतो एक असहाय छडो जवान श्रीमाळीजी री कहाणिया मे ठौड-ठौड मिलै। इण चौफेर पर रीस करतो लिखारो कदे पात्रा री वतळावण रै बीच बड'र आकासवाणी सी करतो उपदेस देवै अर कदे कोई ओपतै पात्र मे बड'र भैरूजी रै भोपै ज्यू बोलै, तद लिखारै री मुझळ पर हासी आवै। लिखारो जद पहलवानी पर उतर आवै अर पात्रा रै बदळै खुद भिडणो सरु कर दे तो कथा रो सुभावीकपणो किया रह सकै। सुफळ कथाकार तो वो ही जिको वात नै इसै मोड पर घाल देवै कै वा खुद पढण वाळा सू जवाव मागण लागै। पण, इण जोस नै अणदेख्यो कर दूजी वाता पर ध्यान देवा तो श्रीमाळीजी री कारीगरी री कायल हुया सरै।

दूजा लिखारा म पारस अरोडा अर सत्येन जोशी रा नाव लिया जावै। कहाणिया रा सग्रै तो नी छप्या पण दोना रा उपन्यास जरुर छप्या है। कहाणिया भी तादाद मे इत्ती कोनी ज्यासू कोई पूरी तस्वीर उभर'र सामै आवै। दोनू कविता भी करै अर अनुवाद भी। सायद ओ ही कारण है कै वहोत कुछ करणै री फिकर म कहाणिया नै कोई खास दरजो नी दे पाया। उपन्यासा रै मारफत जे कहाणिया री पिछाण करा तो पारसजी हाल बवडया फिलमा म अर सत्येनजी जैसलमेर रा पोकरणा री गळिया मे खोयोडा सा दीखै। राजस्थान रा घणखरा लिखारा रो औ दुरभाग है कै वे बोहमुखी प्रतिभा रा धणी वणण रै चक्कर म एकमुखी भी बण नी पाया। सोचण विचारण अर पढण गुणन री अूडी वाता नै जाण भी देवा तो भी थोडी घणी सामरथ रो ओ बिखराव कोई एक कळा म भी निखार कोनी आवण दे। इण झूठै मोह रो चक्कर छोडै तो कई चोखा कवि, समरथ कथाकार अर उपन्यासा रा लिखारा खडया हो सकै।

जोधपुर रा लिखारा मे एक टाळवा नाव है नद भारद्वाज रो। आ री कहाणिया समस्याप्रधान तो है ही पण मन रै अमूझै नै अरथ देवण वाळी भी है। लिखी तो थोडी ही है पण वानगी सू भी वेरो लागै कै नदजी चेस्टा करै तो गूगा मिनखा नै वाणी दे सकै अर गावा री मौजूदा हालत नै आखरा मे उतार सकै।

जोधपुर अर बीकानेर रा लिखारा म तो कोई भात रो भासा या विसय रो भेद निजर नी आवै पण हाडोती री कथावा पढा तो वा मे एक न्यारी ताजगी अर एक नयो चौफेरो मिलै। प्रेमजी प्रेम, शचीन्द्र उपाध्याय जमनाप्रसाद ठाडा 'राही', नाथूलाल शर्मा 'निडर', दुर्गादानसिंह गौड—अै कुछ नाव है वा लिखारा रा जिका आपरी कथावा दाता म हाडोती री माटी री गध चवळ री लहरा सू सरसतै वायरै री मोरम अर वठै रा जगळा वेना री महक भरी है। हाडोती रा मळा सेळा,

करमा री सादी अर दुराव-छिपाव सू अळघी जिदगी, चढती उमर रा मरद-लुगाया री मीठी बतळावण दूजी राजस्थानी कथावा सू न्यारी निरवाळी अर सुवावणी लखावै। प्रेमजी प्रेम रो उपन्यास 'सेळी छाव खज्यूर की' एक समरथ प्रेम कथा है जिण मे साल दर साल मारवाड सू हाडोती अर माळवा कानी जाती मजूरी री पीड मडी है। प्रेमजी रै कथा सकलण 'रामचद्रा की रामकथा' म भी मिनख रै अगवाडै-पसवाडै बीखरयो दरद समेटयो थको है। इण सभाग रा अनेक कथाकार हाल आपरी रचनावा रै छपण री बाट उडीवै है। प्रेमजी प्रेम री 'सावली का बोल', अर शचीन्द्र री 'डाळ सू छूटया पछी' 'नावा री कहाण्या हाडोती री इण मोटी सामरथ री बानग्या है। दुर्गादानसिंह जिसा कवि, जिका रेखाचित्र भी माड्या है, ठेठ हाडोती रगत मे रग्योडा, जुगा जूना रैवासी, जे आपरै असवाडै पसवाडै री कुदरत, गावाऊ समाज अर आज रै मिनख री समस्यावा नै कथावा मे उतारै तो हाडोती ही नी आखै राजस्थान रै साहित्य खातर वो खुमी रो दिन हुवै।

यू राजस्थान रा न्यारा-न्यारा भागा री बात ही करता जावा तो एक मोटो दायरो है सेखावाटी रो। बोल-बतळावण, रहण-सहण अर ऊठ-बैठ रै ढग सू सेखावाटी री आपरी विसेसता है। अठै रा खास लिखारा मे मनोहर शर्मा, दामोदर शर्मा, सुमेरसिंघ, सोभागसिंघ, उदयवीर, अमोलकचन्द, मोहनसिंघ आद है। एक और ऊचो नाव है नेमनारायण जोसी रो। मनोहर शर्मा घणी भात री रचनावा करै। कहाणिया मे 'कन्यादान' अर 'रोहीडै रा फूल' नाव सू दो सग्रै छप्या है। खालिस कहाणिया तो 'कन्यादान' मे ही है। कस्बा मे सेठ-साहूकारा रै बीच रैवणिया विचलै दरजै रा बामण परिवार आरो खास विसय है। सेठा री बेरहमी री बजाय वारी उदारता पर शर्माजी री निजर बेसी गई है। 'करडी आच' नाव री आरी कहाणी मे अत पत सेठा रै मायतपणै कानी ही सकेत कर'र कथा नै बेसहारै छोड दी है। जिण जिदगी नै शर्माजी नेडै सू देखी है वा भी इसी ही रैयी है। इण सू इत्ती सचाई उण मे जरूर है, पण जिण ऊची धरती पर जूझणै री उम्मीद एक लिखारै सू करी जावै वा आ कहाणिया सू पूरी कोनी पडै।

सुमेरसिंघ सेखावत कोई बेसी कहाणिया कोनी लिखी, पण कुछ कहाणिया इसी बण पडी है कै सगळी धरती रो दरद उडेळ'र मेल्योडो सो दीसै। आजादी सू पैला अर पछै रा बरसा रै मिनखाचारै नै वै एक कथा मे जिण भात उघाड'र राख्यो है वा अपणै आप मे एक घणी मोटी बात है। समाज री मूळ समस्यावा री पकड अर उण नै कथा मे गूथण री कारीगरी आ रै बस री बात बण पडी है।

दामोदर शर्मा रो 'प्रेतात्मा री प्रीत' नाव सू एक सग्रै छप्यो है। आ रा विसय ख्याता रा अर परपराऊ बेसी है। भासा मे भी बोलचाल रो लहजो कम अर साहित्य रो चेस्टागत मुहावरो बेसी है। पण कैवण री कारीगरी सू बाता रो ओपतो निवेडो कर पाया है।

सोभागसिंघ सेखावत पूरमपूरा ख्याता रा आदमी है। जूनै जमानै री बाता जूनै ठाठ सू ही कैवण मे आ री रुचि है। वा बाता मे भी बात ही प्रधान है, दूजी कोई भावना नै ठौड कोनी। गढा-किला रा बणाव, जुद्धा-सस्त्रा रा बखाण, राजपूता री मरदमी, मान मरजाद अर आदर्शां री बाता सोभागजी नै रम आवै अर इण मे ओपती कारीगरी भी अै दिखा पाया है।

उदयवीर शर्मा री कहाणिया छोटी-छोटी बाता है। नयै जमानै रै रहण-सहण पर रीस करतै परपराऊ समाज री हालत रो चितराम आनै रच्यो है। सेखावाटी रा कस्बा री आम बोलचाल मे वो लोच अर रस सायद कोनी जिको साहित्य री रचना मे सहज रूप सू उतर सकै। इण नै पार पाडणै सारू लिखारै मे बेसी दम-खम अर कारीगरी होणी जरूरी है। आ कमी अमोलकचन्द जागिड जिसै चोखै लिखारै रै मारग मे भी आई है। पण वै उण पर खासा काबू करयो है अर सेखा-वाटी रै समाज रा ओपता चितराम माडया है। मोहनसिंघ गावा रै बेसी नेडा है सो गावा रै ढग-ढाळै री बात वा रै निजू ढग सू कैवण मे वा नै बेसी सुफळता मिली है। असल मे राजस्थानी री जडा गावा मे ऊडी गयोडी है। कस्बा-सहरा मे उण मे ओपरो रग मिलग्यो। सो गावा रा ठेठ लोग ही बात नै ठेठ ढग सू कैवण मे बेसी समरथ हुवै। आ सुभावीकता इकसार ढग सू पिछाणी जा सकै, जे लिखारा रै मूळ रैवास नै इण कायदै सू ओळखा। मेवात, ढूढाड अर मेवाड रा इलाका राजस्थानी कथावा रै खातर कोई ध्यान देवण जोगा कोनी बण पाया। ढूढाड मे रामगोपाल विजयवर्गीय एकाध कहाणी ढूढाडी रगत मे लिखी ही अर वो अभ्यास चालू रहतो तो वै सायद चोखी कहाणिया लिख भी पाता, पण बारो मायलो कवि अर चीतारो कथा कैवण मे रस नी ले पायो। बात-बणाव रै ढग सू अलकारा मे बधी बाता माडण वाळा चारण लिखारा भी आपरी कारीगरी दिखाई पण उण सू आज री कथावा रो कोई खास तालको कोनी। मेवाड मे लक्ष्मीकुमारी चूडा-वत रो नाव सिरै मानीजै। माडी तो है अै भी जूनी बाता कै लोक कथावा ही पण आ री सुप्यार बोली अर बात कैवण रो परपराऊ ढग लोगा नै घणो दाय आयो। आ री जूनी बाता मे राजस्थान री धरती, अठै री आन-बान-सान अर जिंदगी रा दूजा पखा रा जिका फूटरा चितराम मिलै वै दूजा लिखारा मे दुरलभ है। 'मांझल रात,' 'कै रै चकवा बात,' गिर ऊचा-ऊचा गढा,' आद कई कथा-सग्रै आ रा छप्या है। मोटो दुख ओ ही है कै इसी कलम री धणियाणी आज रै समाज री समस्या लेय'र कोई आपरी निजू कहाणी कोनी माडी। इण वास्तै मोटी देण बखाण री चतराई तक ही मानीजै। चित्तौड अर उदयपुर मे वेगू रा नदकिशोर चतुर्वेदी, भीम रा सुरेन्द्र अचल अर भीम रा ही वस्तीमल सोलकी नया कथाकारा मे गिणीजै।

अजमेर जिलै मे टाडगढ रा 'मोरपाख' अर अजमेर खास रा विनोद सोमाणी

अर रामनिवास शर्मा 'मयक' मानजोगता लिखारा है। पण आ री कहाणिया मे कोई खास विचार-धारा कोनी। आज री जिंदगी री न्यारी-न्यारी वाता आ री कथावा मे उतरी है। असल मे तो आजकाल रा घणखरा पढ्या-लिख्या लोगा पर हिन्दी कथावा रो बेसी असर लागै। वा रो सोचणो-विचारणो अर लिखणो हिन्दी री नकल पर चालतो सो दीखै। वा मे उण देसी ठाठ रा दरसण नी हुवै जिको राजस्थानी रै लिखारै मे मिलणो जरूरी होणो चाईजै।

राजस्थानी लिखारा री आ गिणती घणी अधूरी है क्यूकै ज्यू-ज्यू छापा-पोथिया निकळती जारी है, नित नया नाव सामै आता जावै है। सिक्षा-विभाग रा सकळना मे इसा घणा सिक्षक लिखारा उभर'र आया है जिका चोखा कथा-कार कैया जा सकै। पण जद ताई आ री बेसी कथावा नी देखी जावै आ बाबत लिखणो मुसकल है।

इण सग्रै मे आयोडा घणखरा लिखारा बाबत चरचा आपा अठै करी है। वारी रचनावा अर कलम री कारीगरी रो मोटो लेखो-जोखो करण री चेस्टा भी हुई है। पण समूचै कथा साहित्य पर भी एक नजर गेरणी ठीक रैसी। आ बात आपा देखी है कै दूजी प्रातीय भासावा री ज्यू राजस्थानी मे भी कथा कैवण री नई शैली अग्रेजी रै मारफत पूगी है। राजस्थान, हिन्दी रै असर मे बरसा सू रहतो आयो है, अर राजस्थानी कदे लिखायी-पढ़ायी अर राज-काज मे नी आदरी-जी जिण सू राजस्थानी मे नई कहाणी लिखण रो रिवाज हिन्दी री नकल पर बेसी चाल्यो। सीधो अग्रेजी या बगला, मराठी आद भासावा सू असर लेवणिया लिखारा भी जो-विरळा मिल सकै। पण प्राय लिखारा हिन्दी री देखादेखी पर ही सरुआत करी। जठै ताई कहाणी लिखण री कळा री बात है, इण नकल या देखादेखी मे कोई आट कोनी, पण जद कहाणी रा विसय अर कैवण रो लहजो भी ज्यूरो त्यू हुवै तो सगळी कहाणी बासी सी लागै। राजस्थान रा सरू-सरू रा लिखारा मे आ कमी देखण मे आई। इण कमी नै बाद भी दे देवा तो विसया रो अछूतोपणो घणो मुसकल काम है। दायजो, अणमेळ ब्याह, नुक्तो, बाणिया रो करचोडो सोसण, राज मे भ्रस्टाचार, मोटयार-लुगाया रा जायज-नाजायज सबध, मजूरा-करसा री जिंदगी रा सुख-दुख, आजादी रै बाद चुणावा री राजनीत, पुलिस रा कुकर्म, ठाकरा री ज्यादतिया, राजनीत रा लोगा री आपाधापी, आद जाण्या-पिछाण्या विसय ही कहाणिया मे आया है। राजस्थान री धरती री निजू समस्यावा, जिया आई साल पडता काळ, पसुआ नै लेय'र सालूसाल मथ्रू जाता परवार, गावा-ढाणिया रा झूपा मे दम तोडती जिंदगी, सिक्षा री कमी, धरम-पाखड अर जूनी लीका पर खुद री बली चढाती भेडाचाल रो मिनख, ठीक इलाज रै बिना बेमौत मरता टाबर अर बडा-बूढा, विग्यान रै दियोडै च्यानणै थर सुख-सुविधावा सू दूर अधैरे मे भटकता लोग—इण भात रा विसया नै सही ढग सू उभारण री कोसीस थोडा लिखारा मे

ही कठै-कठै झलकै। जद ताई इसी चेस्टा नी करी जावै राजस्थानी री कथावा राजस्थान रा रैवासिया रै साचै दुख-दरद नै परगट नी कर सकै। इण खातर जरूरी ओ है कै लिखारा गावा रै समाज नै नेडै सू देखै-परखै अर वा री समस्यावा नै समझणै री कोसीस करै। प्रगतिसीळता रै नाव पर थोथा नारा अर पिच्छम री आधी नक्ल सू न तो लोगा रो भलो हुवै अर न भासा अर साहित्य रो। जठै ताई लिखारा रो सीधो लगाव, भले ही वै सहरा-कस्बा रा रैवासी हुवो कै गावा रा हो, ठेठ गावा सू नी होसी, अर वै उण जीवण नै कोई भात खुद जीर्णै री हालत मे नी वणसी, तठै ताई आज रा कहाणीकारा सू राजस्थान री घरती अर उण रा वासिदा कोई वडी उम्मेद कोनी राख सकै।

दूजी खास वात है भासा री। आ सही है कै राजस्थानी रो सवाल अठै रा लोगा री रात-दिन रै कामकाज री बोलचाल सू जुडयोडो है, पण बोली नै भासा रै आसण पर विठाणै रै मारग मे जिको मोहभग, त्याग अर दिल अर दिमाग रै खुल्यो हुवण री जरूरता है वा नै तो पूरी करया ही सरसी। भासा नै लिखारा बणावै, आ वात कैयी जावै। मोटै रूप मे साहित्य रै दायरै मे आ बात साची भी है। पण आ बात भी भूलणै री नी है कै भासा समाज री चीज है, उण रै लोकव्योहार, सिक्षा-दीक्षा अर राज-काज री। इण वास्तै समाज नै जिण भासा मे ढाळणो हुवै उण मे उण रो राज-काज, लिखाई-पढाई, व्योपार-विणज अर रात दिन रा दूजा काम करणा सरू कर देवै तो आगै-पीछै कुछेक पीढिया मे वा भासा आपरो रग दिखा सकै। ओ साच नी होतो तो फारसी अर अगरेजी आपणी बोलचाल मे इत्तो दखल नी राख सकती। आ ही वात हिंदी मारू भी कैयी जा सकै। हिन्दी आज रै पढे लिखे राजस्थानी री बोलचाल अर लिखाई-पढाई मे इत्ती हावी होरी है कै उणरो सोचणो विचारणो अर माडणो हिन्दी रै मुहावरै सू न्यारो घणो दो'रो चालै। इण दलील रो मतलब ओ भी है कै भासा नै बणाई अर गढी जा सकै। सस्कृत नै व्याकरण रा पडता इसी बाघी ही कै वा सैकडा बरसा सू ज्यूरी त्यू चालती आई है। सो भासा नै गाव-गळी सू निवाळ'र उण नै बोलीपणै सू मुगत करणै री जरूरत है जिण मे लिखारा री जिम्मैवारी सबसू बेसी कैयी जा सकै। इण रै वास्तै बोलिया री खासियता रो निर्वाह करता थका वा रै सगम रो एक निखरयोडो रूप उभारणो है। उण रै विना न्यारी-न्यारी बोलिया मे लिखीजण वाळी रचनावा आपरै ठेठ मीठास रै होता थका भी हरेक राजस्थानी री समझ अर उण सू वाह्-वाही लेवण री हकदार नी वण सकै। थोडी चेस्टा सू ओ काम पार पड सकै।

भासा री इण एकरूपता सू परै इण रो एक दूजो पख ओ भी है कै उण री खिमता नै टटोळण अर उघाडण खातर उणनै उण रै घर म देखणी है। पोथ्या री भासा गावा-गळिया रा मोट्यार-लुगाया अर टाबरा री भासा रै जित्ती नेडै होसी बित्ती ही वा आपरो असर कायम करणै मे समरथ भी होसी। उण मे नया विसया,

नयै चीतवण अर नयै ढग-ढाळै रा तत्सम या तद्भव सबद किया एकजीव कर मिलाया जा सकै आ कारीगरी भी लिखारा रै करण री है। पच्या-पचाया सबद भी लोक सू लिया जाणा चाईजै। पण तत्सम रै नाव पर ज्यूरा त्यू दूजी भासावा रा सबदा अर वारा मुहावरा नै पकड लेणा सुभावीक नी बण सकै।

एक और बडी जरूरत है राजस्थानी गद्य री परपरा नै नयै सिरै सू आजमाणै री। दूसरी प्रातीय भासावा मे, ज्या मे पुराणो गद्य बडी तादाद मे मिलै, राजस्थानी रो नाव मिरै मान्यो जा सकै। पाचसौ बरसा सू भी बेसी जूना गद्य रा नमूना राजस्थानी मे मिलै। बाता, ख्याता, टीकावा आद रा अै नमूना भासा री घणगट, उण रै लोच, सबदा री सामरथ अर कैबता-मुहावरा रो अखूट भडार है। इण रो लाभ तद ही लियो जा सकै जद आनै पढ्या जावै अर प्रयोगा मे आजमाया जावै। आज री राजस्थानी उण जूनी विरासत नै लिया वेसी समरथ होसी इण मे दो राय कोनी। आ ही वात कैवण-लिखण री शैली बाबत कैयी जा सकै। छोटा छोटा वाक्या सू गहरी सू गहरी बात रो खुलासो करण री, मन री गाठा नै सुळझावण री अर चितरामा ज्यू खुद रै चौफेरै नै बखाणन री कळा उण गद्य मे है। उण रो नयो सस्कार कर आज रै साहित्य नै तरोताजा करण सू राजस्थानी गद्य रो भलो ही होसी।

राजस्थान री सस्कृति री आपरी विसेसता उण रो जूनो बखत कैयो जावै। राजस्थानी वीरा री बहादरी, आदर्शां पर मर मिटण री हूस, सतिया रा जौहर अर लोक रै गीत-नाच, पहरण-ओढण अर परब-त्यूहारा मे रस री, रग री जिकी उमगा हिलोळा खावै, वा राजस्थानी रै आज रै साहित्य मे भी थोडी झलकै तो दूजी भासावा रा लोग उण नै समझै-सरावै। आधुनिकता रै मोह मे आपा आपणी धरती री खासियत अर उण री घणी ऊची परपरावा नै दुतकार देवा तो आगली ख्याता आपा नै माफ नी करसी।

आ बारली बाता रै अलावा लिखारै री मायली जरूरता भी कम को है नी। कहाणिया रा लिखारा दुनिया री भासावा मे लिख्योडै उम्दा कथा-भडार नै नी देखसी तो वै ग्यान री लेवादेई रो फायदो नी उठा सकै। प्रतिभा कोई री बापौती तो है कोनी। जे आपा दूजा री उपेक्षा करता रैवा तो आपणो लालबुझक्कडी रूप दूर ताई नी चालसी। इण वास्तै लिखारा ऊचै दरजै रा लिखारा री रचनावा नै जरूर पढै अर वा सू बण पडै जित्ती प्रेरणा लेवै। रचनावा नै लिखणो जित्तो सरळ काम है उण नै माज-माज'र निखारणो वित्तो ही मुसकल है। गुरुआ, दोस्ता, चोखा लिखारा अर चोखा पाठका ताई री राय, सुझाव वगैरा लेवण सू रचनावा मे वेसी निखार आसी अर वो लिखारै री पैठ जमावण मे पक्कायत मददगार होसी। अनेक बार सुधारघोडा मजमून एक बहाव मे भला-बुरा घसीटघोडा मजमूना सू चोखा ही कैया जा सकै।

आज रो जुग अर समाज जित्तो पेचीदा बणतो जावै है वित्ता ही मिनखा रा मन भी उळझता लागै। भागादौड, होड, आसा-निरासा रो पळ-पळ बदळतो घटाटोप, मिनखा रा मना री साती तो खोस ही ली है, पण वा नै कुठावा रा घेरा मे कस भी दिया है, ज्यासू वारी सुभावीक प्रतिक्रियावा बदळगी है अर वै आपरा नया आचार-व्योहार करण लागग्या है। इण मगळै फेरबदळ नै समझ'र कलम मे उतारणै री कळा, घणी मेचळ कर, पात्रा रै मारफत उणा रो खुलासो करणै मे है। पात्रा रा मना री घुडिया नै सुळझावण सारू भासा नै समरथ करणी है।

आखर मे इण सग्रै बाबत भी कुछ अरज करणी है। आ चेस्टा रैयी है कै राजस्थान रा वा सगळा लिखारा री रचनावा भेळी करी जावै ज्यारी कहाणिया पोथी रूप म छपी है। पण पोथी रो आकार अर चुणाव री मो'राई करता कुछ लिखारा छूट्या भी है। इमा लिखारा भी सामल करघा है ज्यारी कोई पोथी तो नी छपी, पण रचनावा चोखी लागी। इसा नया लिखारा भी है जिका बहोत थाडो लिख्यो है पण कारीगरी रै पाण इण सग्रै मे सामल होवण रा हकदार बण्या। फेर भी कुछ लिखारा इसा भी छूट्या है जिका सामल करघा जा सकै हा। इण वास्तै ओ सग्रै आपरी सीमावा रै साथै ही प्रतिनिधि सग्रै कैयो जा सकै। असल मे तो सायद कोई भी सग्रै कदे भी प्रतिविधि मग्रै नी कैमो जा सकै क्यूकै चुणाव री पसद हुवै अर कथावा रो विस्तार बेसी।

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली आपरी राजस्थानी परामर्शदात्री समिति री सिफारिश पर ओ काम करचो जिण सारू अकादमी नै धिनवाद। समिति रा सयोजक डा० हीरालाल माहेश्वरी इण काम मे जिकी निजू रुचि दिखाई अर उण सारू प्रेरणा दी वा वारी पडताई रै ओपती वात है। सपादन मे म्हारा साथी भाई प्रेमजी 'प्रेम' लिखारा रै चुणाव, रचनावा रै निरणै अर पोथी रै सपादन मे बरोबर रा भागीदार बण'र आपरी जिम्मैदारी तो पूरी करी ही पण आपरी सुभावीक आत्मीयता सू काम नै घणो सरळ भी बणा दियो। राजस्थानी रा लिखारा म्हारी अरज पर रचनावा छापण री मजूरी दी उण रो अहसान भी अठै दरसाणो जरूरी है। आगै जद कदे इसा सग्रै कठै ही छपै तो वा मे और किमी वाता रो ध्यान राख्यो जाणो चाहीजै इण बाबत सुझाव देवण री क्रिपा करणिया विद्वान नीचै मुजब ठिकाणै पर कागद लिखै तो उपकार हुवै।

डी २८२, मीरा मार्ग, बनी पार्क,
जयपुर

—रावत सारस्वत

# गळत इलाज

अन्नाराम सुदामा

गोपी म्हाराज री ऊमर पचास सूं एकाध कम ही हुसी, तोही सिर धोळो हुयां नैं दस बरस हुग्या हुसी, अबार तो केस ही रिपियै मे आठाना बच्या है, अर बत्तीसी बापडी मुस्कल सूं ध्यारांना, है बा ही भागरी हालै है। मूंढै पर बधता सळ, अर सळां म सामो। आंख्यां म गूगळापण अर बां मे ऊंचा आवता चिंता रा लूगा तातण। साढी पांचफुटो ओ आदमी, गोडा सूं दो-दो आंगळ नीचै कोरपाण रो जाडो धोतियो राखै। दोवटी रो कुडतियो, फीडी जूत्यां, अर माथो प्राय उघाडो, छठ-वारै मास आ एक ही पोसाक। चनण रो टीको लिलाड मे हरदम राखै, ओ ईं खातर कै कण ही पकडा राखी है कै बामण रो लिलाड सूनो नही चाईजै।

आवजाव घणखरो वाणियां रै घरां मे है। आधी दरजण छोरयां, दो एक भोळी सी छोरा च्यार, दो की कामल, मारयां-कूटयां की ठाठा मजूरी करै इसा, एक, न स्याणो न गूगो, दाय आवै तो की करै, नही तो कठै ही चरभर खेलतो सिझ्यां ताई उठण रो नाव ही को लै नी। छेकडलो है, अधस्यानियो अर रुळेट। बीडी तो सगळा ही पियै पण ओ छोटियो बीडी बुझण ही को दै नी, चिलम हाथ लागगी तो, बी नै ठंडी हुई लोगा ही देखी। लुगाई बाणिया मे दाळदळियो अर हाती-पोळी करती फिरै। कठै सूं ही, ठंडो साग, दो फलका, का दो डळी मीठै री, घर मे की न की ले'र बडै। सिरावणो, दोपारो, की न की चावो-भूको अगलै रै घरे ही, विना माग्यां देवै तो अगलै री मजैदारी, नही जद माग'र लेणो तो दीखै ही है। घर री थाळी पर तो बार-तिवार ही बैठण री जी मे को आवै नी।

छोरयां दो कंवारी है अर दो ही छोरा। छोरयां नै टैम आयां घोरियै चढाणी ही पडसी, छोरा रै फेरा री रात कोई लिख्योडी ही है, तो बात न्यारी है, नही जद कमाई अर उठबैठ देखता मुस्कल है। छोरयां रै ब्याव मे ओजूं तो घणो ताण को आयो नी, विणियाण्यां मे ठाकुरजी बडग्यो, डौळ सारू भूछ आळो चावळ रैयग्यो। आगै-आगै गोरख जागै, गाव पट्टै, कोई धालै कोई नटै, बामण रै बेटै नै मागण रो क्यां रो मैंणो।

गोपी म्हाराज खदण म आघो गिणै न पाछलो जद कठै ही जा र गिस्त रा गाडो चालै तो क्यारो घीमीजै—बडा दारो। म्हाराज बवार म की भोळा पण पइसै रै मुट्ठै म बडो सावचेत। सावचेत ओ ही कै पइसो हाथ म नही आवै जितै कोई बात नी पण आया पछै ताळो ताडनो सोरो बीरी मुट्ठी सू रिपियै री कार देखणी दोरी। गाव स पूर पल्ला मीगो चूठो की लावै तो सीधो रो सीधो घरे मजाल ह भोरो ही छीजण दै। रिपियो एक बापरो चावै पाच बस पडता तो घर आळा आगै बात ही को चलावै नी इया करत ही की सीध वध ज्यावै तो चेस्टा पग रमावण री ही करै। लुगाई पूछलै कदेई आज सठाणी न गाडी चढावण गया हा दा रिपिया तो टूठी हैली।

हा वारै ही पड्या हा दा रिपिया पूण पावलो दियो की वा लोरी भाडै म ही लागग्यो *दोपारियो की करा दियो वा नफै म समझनै। दो-तीन पेटी डब्बै म* न्ने पीपा एक बीटा म ढाया इसा ठा हुतो तो अठै ही पावनै रा पइमा करतो ता सैलो रैवतो। वापडै की कुळी री मजूरी मारी बो सेठाणी कनै सू रपिया च्यार पाच झाडतो इ भाग री ही सेठाणी।

अर काल लालच दजी रै इग्यारस करवाई ही च्यारानी दिखणा री दी बतावै देवो नी तुळ्या री पेटी मगाऊ

जरदो लवण को चाईजै नी।

घरे कदई दिखणा रा पइसा ही को दिखावो नी इया काइ।

कुण म्हारो बाप देवै है दिखणा एक किरचो का दो खाटै री *गोळी* वा ही जे जी मोरै सू देवै तो घणा म समझ। दो धटा नीर ही हाड रोळ तो चावडी रो पाणी ही मसा पावै तनै सूझै है दिखणा।

*पैला आ बात को ही नी रिपियो आठाना बचता बै बिना माग्या ही बो घर* म देवतो। अबार आठ-नव बरसा सू इरी बिरती बदळगी—इसी ही हूगी। असली बात रो ठा न घर आळा नै अर न गाव म ही कीनै ही। खाली ओ जाणै का इ रो गुरू एक सठाणी।

सेठाणी बडी चलती पुर्जी—चलती गाडी रो चक्का काढै इसी। विधवा है गाघ धाकड अर भिनखघटी। विधवा हूगी ही बरस पचासक री ही जद ही। बेटा है दो पोता पोती है। बेटा बीनण्या सू न्यारो ही आपरो हिसाब राखै। पिछो कडै म एक कमरो आपरै ही तल्लैबल्लै है। चाळीस-पचास हजार रो गैणो अर *पच्चै-बीस हजार री रोकड़ाकण व कर्है है। मुणा हा ईं रो धणी इ री आपमताई* सू धाप र ही पूगे हुयो। आपनै भावै जिकी चीज आपरी बोरसी पर थारी ही कर औरा रै हाथ सू न रजै अर न पतीजै। पेट छिटवयोडो अर सरीर पसरयोडो। काम बोरगत रा पण अडाणो पैला और बात पछै। ब्याज ढाई तीन सू न र छव मात ताई—विमसता आ कै पढी लिखी रै नाव पर काळो आखर भस बरोबर।

घणो लेण-देण लुगाया मे ही करै, नैवारो इया, छीदै-माडै मिनख नै ही को वरैनी। थोरी, मेघवाळ, भगी सू ले'र, बामण-वाणियै ताई, सगळा नै देवै, पण आपरो जी मागै जठै ही, अर, ईंरो कोई बेगार काढै बीनै ही। चनणरी टीको, धोळी धोती, गळै मे तुळसी री माळा अर कळाया मे सोनै री दो-दो चूड़चा। न लिखा-पढी, न गवा-साबूत, सगळो जबानी जमा खर्च, वीनै ही गरज हुवै तो लेवो, नही तो जावो, आपरी राधा नै याद करो।

गोपी म्हाराज ईं कनै उठवैठ करै। आ कदेई बीनै वावड़ी रो पाणी पायदै, अमावस-पून्यू कदेई पाव आटै रो सीधो घालदै अर का दो डळी गुड री दे'र राजी कर दै। ओ ईंरो लेडो हैकारो का तगादो करदै, बजार सू सागपात लाय दै, एक रकम बिना महीनै रो हाजरियो समझो ईंरो। पटीडन नै, इत्तो मस्तो, गाव मे दूजो जोयो ही को लाधै नी। पुन रो पुन, लोगा मे कीरती पण आ वीनै ठा'कै, आ ईं सू सौ डोढसौ रिपिया महनो कमावै।

सेठाणी एक दिन म्हाराज नै बोली, "गोपीराम, कैया तनै खारी लागसी पण तू है सफा गधो।"

अचाणचकी अर अणचीती सुण'र बण, सेठाणी री आम्या मे आस्या गडो'र होळै सै पूछ्यो, 'किया मेठाणी मा।"

"हुणै तू गधाखटणी करै जित्तै तो काई लुगाई अर काई छोरा-छोरी थारै सै, चीचड चिपै ज्यू चिपै, घर मे वडता ही थारो सभाळो लेवण नै तैयार। थोडा हाण थस्या फेर, कोई कनैकर ही को निकळै नी, अमूज'र मरज्याए भला ही, हा पाच पइसा जे कनै हुसी तो वैम सू ही चाकरी करदेसी अर मानलै जे नही करै तो तू बीरै मारै, रुपली परनै तो रोही मे ही चल्लै, अबार ममार रो ढाळो ही ओ है— कळजुग है नी, पछै रोए गोडा नै।"

बात म्हाराज रै अगोअग बैठगी। परवार कानी सू बारै बज्योडी बीनै सामी दीसै ही। बोल्यो, "बात तो थे साची कैई।"

'कैई जिकी मे काई गोळ है।" मेठाणी की जोर दे, भळै बोली, रतनलालजी रै च्यार छोरा है।"

"हा।"

"डैण-डोकरी, खुरचण कनै ही जिकी, ठडै दिना बाट दी—बेटा बहुवा नै। लाख-सवा लाख रो तो गैणो ही हुसी, चादी रा रिपिया हा पाच-च्यार हजार दे दिया सै। आज रै भाव मे पचास-साठ हजार रा है वै। दो साल ही पूरा को हुया नी, अबै बो तो कैवै, मा नै तू राख, वो कैवै, बाप नै तू। भाया नै भेळा किया, वा फैसलो दियो, तीन-तीन महीना राखो मा-बाप नै एक एक बेटो बारीसर, पण मनै तो चोडै दीसै है, बारै महीना डोढवरस पछै, आ ही पार को पडैनी। मा-बाप नै तो फेर बिया ही रोणो—जे अबार काळजो की न्यायो हुतो तो, बडोडो

कैंवतो, सेवा हू करस्यू अर छोटोडो कैंवतो, इक म्हारो है थे मागो ही काईं ।"

गोपीराम टुकर-टुकर, सेठाणी सामो देखै हो, अर वाता री उफाळी, बेमार मो होळै-होळै पियै हो। सोचै हो, "देखो, आ वापडी, म्हारी कित्ती हितू है," मन ही मन, सेठाणी रै उपकार सू दब्योडो मानै हो बो आपनै। पण कैयो, "हा सेठाणीजी, म्हारा तो सै ही टीगर अर बहू-बीनण्या इसा है कै मनै जीवतै सट्टै मरघोडो ही को परखावै नी।"

"अरै तू किसी चकारी मे है, आख पसार'र देखलै, सगळै ए ही बीमारी है।" सेठाणी री अै वाता बी दिन सू ही, बीरी चेतना मे घर करगी। राईभर जे कठै ही कसर रैयगी हुवै, तो, वा दोए-च्यारै इं सागी पाठ नै दूजै ढग सू भळै उथळ देंवती—हला-हला'र बीनै पक्को कर दियो।

आठ-दस बरसा मे नही-नही करता पण ढाई हजार नैंडा सेठाणी नै दे दिया अर बा इंनै, साढी बारै रिपिया महीनै का आठाना सदकडै सू, साल भर म डोढ सै रिपिया देवै अबार, पण ओ, सेठाणी नै पच्चीस-पचास कनै सू दे'र, मताईम सौ करण री चिन्ता मे है। वा, आ रिपिया सू चावै कित्तो ही ब्याज कमावो, अगली रा है, म्हाराज रै जी मे एक ही लाग्योडी है कै, जे किया ही तीन हजार जमा कर दू तो पन्द्रै रिपिया महीनै रा महीनै टाचलू। हजार पन्द्रै सै की, छोरचा रै अेढै मे, जरूरत पडी तो उधारा बोल' र ही उठास्यू, बस पड्यो तो आनो ही को उठाऊ नी।

दस सू बारै, बारै सू पन्द्रै अर आगै पच्चीस-तीस, लिसना रो काईं छेडो, जिकै मे गोपी म्हाराज मे एक मोटो रोग और कै, ओल्है-छानै इसो राखू कै चिडी रै बचियै नै ही ठा नही लागै। बो एक दिन दिनूगै आठ-साढी आठ बजी, सेठ सूरज-मल रै पापडा रो आटो ओसण'र गमछियै रै पल्लै पाच-सात लोवा बाध्या, खल्ला घीसतो आपरै घर कानी जावै हो। रस्तै मे, सेठ हजारीमलजी री बहू मिलगी। नवी-नकोर घनुसिया धोती रै ऊपर कर सोनै रो करनोळो हालै, हाथा मे सोनै रा पाटला अर चूडघा, माथै कळकत्तै री एक दाई—बगालण ही कोई। देखता ही बो हाथ जोड'र, एकै पसवाडै ऊभग्यो, बोल्यो, "सेठाणी जी सा, मिंदर पधार आया ?"

"हा म्हाराज।"

"बडभागण हो, बडभागण, मिंदर, देवरो, बामण-स्यामी सगळा नै पोखो, आवो जिती वार की न की बाटो, पुन री जड हरी है सेठाणी, काईं सोभा करू थारी, दिनूगै नाव लेवै जिसा हो, म्हारै लायक सेवा हुवै तो भुळाया करेई, बिरा-जोला अबार तो केई दिन ?"

"नही म्हाराज, कोई दसेक दिन मुस्कल सू। एक सैंकिड रुक'र, भळै बोली, 'जावता, एक पीपो मिरचा कुटवा'र लेजाणी है, कोई कूटण आळी हुवै तो बताया, दो पइसा चरका लागै तो लागो, मसीन रो मसालो थारै सेठा नै कम सदै।"

"चोखो'क नही सदै तो, हू अवार पूछू हू म्हारै घरआळी नै, बीरो और कठै ही हैबारो नही भरयोडो है जद तो, म्हे दोनू हणै कूटक्चिर नाखस्या अर बा नही आई तो हू एकनो ही कूट नाखस्यू किया ही।"

"था एकला सू तो तावै आणी मुस्कल है।"

"काईं बात करो हो आप, आवै क्यू नी तावै, हू धान को खाऊ नी का मनै भूख को लागै नी।"

"तो देख लेया", कह'र बा टुरगी।

गोपीराम आपरी बहू नै पूछ्यो, "आज घरे ही है का न्यूतो है कठै ही काम रो।" बा बोली, "हू तो बाट दळन नै जास्यू अर बीनणी चावळा री बोरी आछी करसी—बडोडी हवेली मे। क्यो।"

"नही इयां ही पूछू हू। वण सोच्यो, मिरचा दस बारै कीला तो नही-नही करता हुसी ही, पाच-सात रिपिया वापरसी ही, अगलै महीनै की ब्याज अर की नगद दे'र, तीन हजार किया ही करदू तो न्याल हूज्याऊ। बो अधघटा बाद ही पूगग्यो हजारीमलजी रै घरे। सेठाणी बोली,

"जीम'र आया का भूखा।"

"दिनूगै थोडो सिरावणो करलियो, पूरो जीभ्या पछै मिरचा को कूटीजै नी।"

पैला गुड तोडया, फेर कूटी, तेरै कीला ही, सिझ्या पडगी। सेठाणी बिचाळै एकर दो फलका अर चाय देदिया। धोबो एक मिरचा रो छाणस बच्यो, जिकै मे घणखरा बीज हा। वण सेठाणी नै पूछ'र, आपरै गमछै रै पल्लै बाध लिया। सेठाणी साढी छव रिपिया अर एक गिंजी देदिया, जावतै नै आधो एक कीलो बाजरी घालदी। गोपी म्हाराज टुरयो जद, दिन घडी एक बाकी हो। रस्तै मे एक छोरै हेलो मारलियो, "म्हारी दादी बुलावै है गोपी बाबा।" गयो तो डोकरी बोली, "खिडक आगै लकडया रो लादो पडयो है, ओ थोडो माय नाखदो, आठाना रा पइसा देस्यू अर गुण मानस्यू।"

'अवार तो थक्योडो हू दादी सा, दिनूगै भोराभोर नाख देस्यू।"

डोकरी गिडगिडा'र बोली, "बन्ना, रात नै कुत्ता बिगाड देसी, नाखो अवार ही जद हुवै।"

सोच्यो, साढी छव रा सात तो हुसी, महीनै रै माय-माय करणा है सवामै-डोढ सै, तीन हजार पूरा हुवै तो एकर तो की सास आवै। काम मे लागग्यो पायचा टाग'र। आध-पूण घटा लागगी। नाखदी लकडया घर मे लेजा'र। बूकिया रै, दोतीन जाग्या करचा री लागगी। किण्या पर राती लीका सी मडगी अर बा पर लोही टाचरग्यो। डोकरी आठानी तो दी ही, सागै सेक्योडो सीरो अर की बूदिया और दिया।

टुरयो जित्तै मिंदरा री आरती हुगी अर तारा आभै मे आछी तरै सू टिमटिमा-

वण लागग्या। रात अंधारी, पून की खाथी, अर गडक गळयां में रह-रह भुसता गुणीजै हा। गिंजी, बाजरी अर बूदिया पर मैं झला दिया अर लवेक सीरै रा च्यार फारा मार, ऊपर आधो लोटो पाणी नाख लियो। बाखळ में एक मचली खडी करी पडी ही, सूई कर'र आडो हुग्यो। ओढण-बिछावण नै इस्टेहर—उनाळै, चौमासै आए गात इया ही करै—करम हुग्या केई। काधा अर बिडतू बोझी तरै सू बुळे हा, तो ही बी सतोस हो कै आज सागै ही रिपिया सात री गोळी करली। ई ढग जे गणेसजी टूठना रैसी तो महीनै सू पैला ही ड्योढसै-दोयसै कर नाखस्यू अर तीन हजार हूता ही दीखसी। दो च्यार साल में ही जे पाच-सात हजार रो थळ हूग्यो तो आपा कीरै ही सारै नी। सोचै हो, "सेठाणी बापडी कैवै तो साची ही है कै, खर्चो हुवै तो खावो, नही तो मरतै कुत्तै आळ दाई आय काढो, कुण पूछै।" छोरो कुमाणस, एक ही इसो को दीसै नी, जिको कम सू कम इत्तो तो पूछै कै जीम्या'क भूखा हो, दाडणो-चीथणो तो कुवै मे पडयो।" इया आपरो चरखलियो वाततै नै नीद फिरगी, दिनूगै वो ही घोडो अर वो ही मैदान।

रडभडतै-रडभडतै इया, रिपिया बत्तीससै करलिया वण, पण परमै-पइसै खातर जी नै रोस्यो अर पेट रै गाठा दी। एकदिन एक बाणियै री छोरी नै पूगावण गयो—कोस वीसेक परिया। सेठाणी रै बारै-छव महीना सू तोळो मासो गड-बड तो चालै ही, पण आ कीनै ठा'ही कै वा अचाणचिकी ही गोपी म्हाराज नै कदेई दोखो देसी। वो गयो बी रात ही, बीरो हार्ट फैल हूग्यो। म्हाराज पाछो आयो जितै बीनै तीसरो दिन हो। सोच्यो, सेठाणी रा बेटा आसी दिसावर सू, जद वानै सावळ कह देस्यू, इया बामण रा रिपिया कुण राखै, पण रह-रह ओ गिर-गिराट भळै उठै कै जे नटज्यावै तो—"तो रळग्यो काळीधार।" जी डिगू-पिचू हुवै अर रात नै नीद कम आवै। घणी करमी तो ब्याज बारै महीना रो को देवैलानी, कुवै में पडो नही सरघो, मूळ तो देसी। आह्वै नी हाडो ले ढैठै गणगौर नै, गाय ही जावै अर मागै गळवडो और, पछो भळै हाल पडो हुवै। इया करता-करता वण दिन पूरा कर दिया। बामण, स्यामी अर भाईपो जीम्या पछै, जा'र दोना भाया नै होळै सै सगळी बात माड'र कैयी कै, 'रिपिया बत्तीस सो म्हारा सुगनी बाई म हा, ब्याज बिस्वो बारै महीना रो देवो तो थारो साइतपणो है, नही तो सागी ही सही।" बा कैयो। थोडा न घणा, बत्तीस सौ।

गोपी म्हाराज होठ धुजावतो होळै सै बोल्यो, "झूठ थोडो ही बोलू हू, रामजी नै जी देणो है बावू।"

"रक्वा है थारै कनै।"

"रुक्को ना तो वा दियो अर ना मैं लियो।"

'म्हारी लुगाया-पताया नै ई बात रो ठा'हुवैलो।"

"मैं तो को कैयो नी, थारी मा कदेई बा सामी बात चलाई हुवै तो पूछो।"

वा पूछ्यो घर मे जा'र। लुगाया वह दियो, "म्हे तो मुसियै रो तीजो पग ही को देख्यो नी।" वै बोल्या, "इया म्हाराज म्हे रिपिया कीनै-कीनै देस्या। थे बत्तीस सौ बतावो, कोई छत्तीस सौ बतासी, रिपिया इया कोई आका रै थोडी लागै है।, म्हारी तो मा इसी ही, नही जद थारै जिसा नै मूढै ही क्यो लगावै —उळो-तळो सगळो लोगा नै खुवा दियो, रिपियो वी कनै निकळचो ही किसो हो।"

गोपी म्हाराज री सास तो खैर को निकळयो नी, पण मरण मे कसर को रही नी। वण एकर आपरो सगळो ज्ञान अर सगळी तावत भेळा कर'र कैयो, "हू जनेऊ री सौगन खा' र कैऊ बाबू, म्हारा रिपिया बत्तीससै है—पइसो ही कम नही पूरा बत्तीस सै, अधभूखो रह-रह मैं भेळा किया है।"

"किया हुसी म्हाराज म्हारै कनै बत्तीससौ हेला ही को है नी।" एकर रोवतै भळे कैयो, "इया राध मे छुरी मत करे, हू बामण हू।" बा मे सू एक भाई गरम हू' र बोल्यो, "थारो डौळ ही है बत्तीससौ रिपिया जोगो। पइसै-पइसै खातर तो रोवतो फिरै है मुलक मे, घरे टक रा दाणा ही को लाधैनी अर थोडा न घणा बत्तीस सौ है ईरा, निकळ अठै सू,' वह र बीनै घर सू काढ दियो।

बीरो सत काईं टूटग्यो, बीनै लागै ही जाणै काळजो बैठसी। वो गूगो सो घर कानी टुरग्यो। रस्तै में एक जणै पूछ्यो, "कीनै गया हा गोपी म्हाराज?" वो गुम-सुम रैयो, को बोल्योनी। एक सेठाणी हेलो मार्यो, "लो आ हाती तो लेजावो टावरा खातर?" वो बहरो सो आपरी धुन मे ही चालै हो। घरे आयो। मचली पर जा'र पडग्यो। "पूरा बत्तीससौ, हरामजादा है छोरा", पड्यो पड्यो ही वो बडबडायो एकर, "अरे मरती-मरती मारगी राड, बत्तीससौ"। लुगाई की सुण-लियो, बा बारै आ'र, बोली, "गाळ की नै काढो हो, इया काईं हुग्यो आज थारै?" को बोल्योनी वो। वण हाथ पकड'र कैयो, "कीनै कैवो हो राड-राड, कुण है हराम-जादा, काई करो हो बत्तीस-बत्तीस, बात काई है, की बतावो तो सरी?" होठ बद, बिया ही गुमसुम जाणै बीरो मन कठै ही ऊडो झल्योडो है। आधी मिट ठैर'र, वण भळे बूकियो आप कानी खीच'र कैयो, "बोलो तो सरी, हू काई गयो थारै?"

बत्तीस रो नाव सुण्यो जद, अचाणचको ही वो बोल्यो, "हा पूरा बत्तीससौ, हू झूठ बोलू हू, बामण हू बामण—तनै ठा'रैणो चाईजै।"

"बामण हो जिको तो मनै ही ठा'है—आई जद मू जाणू हू पण बत्तीससौ किसा?"

'सेठाणी रा बेटा खायग्या, पूरा बत्तीससौ है म्हारा एक पइसो ही कम नही।" एक छोरो आयग्यो अर दो-तीन पाडोसी भेळा हुग्या। बामणी बोली लुगाया नै, "डावडा, आया जद सूं घरे टिकै ही कम अर कार मजूरी कानी ही ध्यान कम। सेठाणी रै घर-बार कर, बिलियोमरी मिन्नी जापै री जाग्या बारकर घेरा घालै जिया घालै, काईं ठा वण इमी आनै काई घोट'र प्या दियो?" एक लुगाई बोली, ~

अर ऊ ''ऊ ''ऊ ''ऊ  करै। कदे छोरा खानी देख'र पूछ हिलावै। पण जी नै जक नी लेवै। घूचरिया घूरी माय कू ''कू '' करै। वै आपरै नान्हा नान्हा पगल्या सू चालै अर मूडो धूड मे रोळै। हाल ताणी वारा दीदा खुल्या कोनी हा सो मा रा वोबल्या बवूडनै आधै चोभै मूडो मारै हा। छोरा छोरिया रो टोळ मन रो पतडो खोलै'र वारो नामकरण सस्कार करै अर काळियो धोळियो, टीकियो अर भूरती री टेर लगावै।

सीपली रै ब्यावणै रो सनेसो सगळै बास मे आग री ज्यू फैलग्यो। मोकळै टीगरा रो धमसाण माचग्यो। वारै रोळै सू कान पडयो सुणै नी। सीपली रा पिराण घियारी म आ रिया। वीरो घुर्राट धूचरिया पर की आच नी आवण देवै। पण एक अणजाण्यै डर सू वीरो काळजो जगा छोड राखी। काळियो छोरा मे आगीवाण हुतो। वो कुत्ती रो मेळो करणरी योजना बणाई। वो बगत एक तगरो ले'र सगळा टाबर आटो, तेल अर गुड भेळो करण नै मागण ढ्हीर हूग्या। सारा टाबर एक ढाळ सू सागै बोलै—"कुत्ती-कुत्ती री मेळो। कुत्ती ब्याई जाटा रै। जाट घाली रोटी। कुत्ती हूगी मोटी। एक घुचरियो मेरो। एक धुचरियो तेरो।" जी जात रो घर आवै छोरा वारो ई नाव लेवै अर जापायत रो जुगाड बिठावै।

वारो मेळो घर-घर जावतो काळियै रै घर री पोळ पूग्यो। कुत्ती रै मेळै री गूज सू सारो घर उठा मेल्यो। टीगर-टीगरया कुचमादी करै अर लड लड मरै। गगलो पोळी माय सू हेलो पाडयो—"ताई! सीपली ब्याई है सो एक गुड री डळी एक मिरियो, तेल अर एक धपसो चून रो घाल।" काळियै री मा वी रामरोळै मे काळियै नै तगरो थाम्या देख र उवळतै पाणी ज्यू खरणाई—"अरै! राम-मारया! नाडीट्टया, तू आ बिगडे तीवणा रै सागै हूग्यो। तै वहोत रोबा घाल्या है। ठैर, आज तेरी सतेवडी घणी जचा'र करस्यू। आ मरज्याणा ऊतरी उतारा रै सायै विना तन्नै ढोई कोनी," यू झाळ पटक नै गडक मारण रो डडूकलो इसडो बायो कै काळियै रो भोबरो फूटतो पण वाळ भर रो आतरो रहग्यो। काळियो तो तगरो छोड नै दी दडी। बाकी छोरा मे एक सरणाटो सो वहग्यो। काळियै री मा दकाल मारी—"निकळो म्हारी पोळ सू। राम रा सुवारचा बरण-बरण रा भेळा हूग्या। जे ओजू पग माडचा तो खोज वाळ न्हाखूगी। थारै मायता रा लोही पीवो। म्हारै क्यू गैल पडो?" ई दकाल सू छोरा री चेतना पाछी बावडी जर पलक झपता वै तेतीसा देग्या।

*थोडी ताळ म काळियै रो बाप पोळ मे बडियो अर बोल्यो—'वो क्यारो रोळो हूरघो है? काळियो ओळमो ल्यायो दीसै।'* "अजी, थारो वो तीवण घणो कुचमादी है। वास रा सगळा टीगरा नै भेळा कर ल्यायो। कैवै, कुत्ती रो मेळो है, तेल गुड घालो। राममारचा नै ओ ठा' कोयनी कै सभो के बगरयो है। काळ मूडो फाड मेल्यो है। बाणियो रिपियै रा तीन पाव दाणा पल्लै नी घालै। दो जूण

दो टीगडा रो जुगाड नी वैठै। मोळ तो धीव सू भूगा हरधा, मन मोस नै पड्या हा। इवकळै सिरकार भी फैमन रो काम नी चलावै। मिनखपणो कीकर रैसी। इया सोच'र म्हारो भीतर भिळ्यो जावै है। टीगरा नै मीरै री मूसै।"

"कालियै री मा! टावरा नै काळ-मुकाळ रो काई वेरो। वारा तो खेलण-रमण रा दिन है, वामू माथा-पच्ची ना करिया कर। थथावस राख। परमातमा सब ठीक करसी। वारो खेल निराळो है। वा चूच दी नै चुगो भी देयसी।" कालियै री मा झरण झरण आसू टळकावती चूलै खानी मुडनै बोली—"कोरो ढाढम आतमा नै ढूकै कोयनी। चुग्गो म्ळग्यो धूड मे" सीळी धूड निराण-हीन—दूसरी बूक सूनी-सूनी "निरजर्ण मू टळगो "वास"।"

कालियै रै बापू रै काळजै नै अणचितया भावा रै भय गे काठ मारग्यो। वारै हिरदै री उगती कमल नै निमासा रो कातरो कुतरतो जावै है। मन रै पाना पर हळवा सरकती-मरकती अणथाक'''।

मोलियै रै वाडै मे टीगरा रो टोळ धूवरिया नै लडावै। आप-आपरै खूजै मे गिचूरेडी सूकी रोट्या रा टुकडा लुका'र ल्यावै अर घूवरिया नै खुवावै। रेसम सा कवळा बाळा पर हाथ फेरै, पुचकारै—लाड करै। थोडी ताळ पाछै गुद्दी पकड र लडावै। कालियो जीत री मोद म मगन नाचै-कूदै तो गमलो हार नै नकारै, जिदवाद करै। कूडी गाळ काढै अर घुळै। दूजा टीगर एक'र साथ बोलै—"अटा-रियो अटकै। बीसियो पटकै, इकीसिये रै मूडै खरगोसियो लटकै।" ईनरियै रा वम नी चालै। के करै। झरळायेडो कालियै नै चिडावै—

'कालियो टीट धडै मे पाजै
घर रा जार्ण झालर वाजै।"

कालियो करडावण मे किरडकाटियै री ज्यू रग बदळै—

"ईनूणी रै कारणै मैं मरू दट्टी मे डूब
गुमगी ईनूणी, आहा गुमगी ईनूणी।"

मायेना रा चवडवोथिया वेसी बढग्या। थापा-मूकी हुवणै वाळी ही कै चाण-चकै सोनली हाफरडै चढी आई अर कालियै री बावा सार नै बोली—"काळू भाया, ओ काळू भाया! सुण! सीपली रै सीरै रो तगरो हुणतो काको लेय नै आपरी कोठडी खानी लुकग्यो।"

'क्यू कै बात होई।" कालियो लिलमिलायो।

'के वेरो। मैं तो उवाच देवण गरमेला ढूढण नै घरै निकळगी। हुणतो काको उठै ई ऊभो हो। चाणचकै ई तगरो उठा'र लुकग्यो।" सोनली सुबकया चढी ई बोली।

'तन्नै राई हाळा गटकाग्या मोनलती! फेर तेरो सिर निर्गं राखै ही।" कालियो वीरै सिर पर एक ठोलो मारती बोल्यो—"आवो रै छोरो! हुणतो काको

सीपली रै तगरै रै काई मागै। एक मिरकली तेल नै जीव निकळग्यो। ऊपर सू मीपली रो मेळो भागण लाग्यो। चानो बीरै टापरै। काळियै री दुवार रै सागै सगळा छोरा ही···ही···रा रोळा मचावता हुणतै री पोठ पूग्या। काळियै दवाल मारी—"ओ हुणता काका! तू म्हारी सीपली रो तगरो कठै लवोयो?"

हुणतै री आख्या पथरीजगी। जावक गूनो हुयो बैठ्यो। छोरां री टोळी नै एक टोर सू निरखै पण मूडै कोयनी। बीरी निजरा आगै काजळियो अधारो पसरयो पड्यो, छोरा नै काई पड़ूत्तर देवै। चुकली री मा नै आज तीजो दिन है जापै मे पडया। अजवाण रा मोया सुपना हुयग्या। एक बखत गुड रै घोळियै री बिद नी बैठी। किया बैठै? घर मे बुठला सूना हुया उदासी मारै। मोटयार तो कडाका काढ लेवै पण जच्चा रो काई हवाल। आजनो निरहार खाली पेट। मिनखपणो रळग्यो। साबूत हाथ पगा रै मिनख री करारी हार। काळजै री अणूती डोर तणी, आ हीमत बाधी फगत सीपली रै तगरै उठावण री। मजबूरी रै घाघरै रो नाडो भरे मिनखा मे खुलग्यो अर वो नागो हुयग्यो। बीरी पत री बोरवानी मरम सू हळाडोब हुयगी। हया सू वेसी काई मरण हुवै!

हुणतो एक'र चेतो करयो अर बोल्यो—"टावरो! मैं नी ल्याओ। थानै बैम हुग्यो हूलो। बावळियो, मैं तगरै रो काई करतो। हुणतै री जीभ ताळवै म खिचीजै। बोल सावळ नी आवई। मोनली हुणतै रै काधै भवभेडा देवती बोली—"क्योंकर कूडो बोलै काका! मेरी आख्या आगै तगरो उठायो।" टीगर ओजू हेला-हेल मारी—' सीपली रो तगरो दे काका, सीपली रो तगरो दे।"

भीतर चुकली री मा नै रोळो सुणीज्यो। वा स्याणी लुगाई ही। लामी सास ले रैयगी। थाळी मे पुरस्योडै सीरै रो डोळ देख'र असल बात जाणगी। झट छोरी रै हाथ धणी नै बुलवायो। हुणतै री फिरती लास भीतर पूगी। जच्चा बोली—"मेरो गोळो दूखै है। की चोखो नी लागै सो ओ सीरो बा छोरा नै बाट द्यो।"

हुणतो भणेडो नी हो पण चुकली री मा रै चहरै रो एक-एक आखर वाचग्यो। हुणतो भाठो हुयग्यो। बीरी सूकी आख्या मे की टोपा निचड नै बारै निकळया। एक भूचाळ सो आयो—जीवण रो आखरी वभूळियो। हुणतो थाळी लेयनै बारै पूग्यो अर बोल्यो—"ल्यो, टाबरियो! कुत्ती नै सीरो पुरसो! तगरै मे नी, कासी री थाळी मे। तगरो फूटग्यो, थाळ मे जिमावो। जच्चा गावो।"

हुणतो पागल सो बरडातो गयो। आखर पोळ री देळी खनै गुडक्ग्यो। टाबर तो परमहस हुवै। खावै-पीवै अर रळी करै। पण हुणतै री पीड नै कुण पीवै। वो खुद परमहस बणग्यो—सुख-दुख री चिन्त्या सू परै बेलाग-बेराग··· सान!

# मास्टरजी

## करणीदान बारहठ

अँ म्हारा मा'ट साहब है म्हारै पडोस में। अँ म्हारा एकला रा मा'ट साहब ही कोनी, पिंकी, मौटू, पप्पू, बटू, सगळा रा मा'ट साहब है। पिंकी म्हारै पडोस मे है तो मौटू पिंकी, रै, पप्पू अर बटू की दूर रैवै है। पप्पू रा पापा तो मोटा अफसर है—एस०पी० है, बटू रा पापा भी मोटा है—कलक्टर है, पण म्हारा पापा मोटा अफसर तो कोनी, पण अफसर है—ए० ई० एन०। पण मा'ट साहब आ सगळा ऊ मोटा है। पापा स्यू मनै डर कोनी लागै, आ री गोदी में बैठ ज्याऊ, आस्यू लड भी ल्यू, मैं डट ज्याऊ तो म्हारो काम कराल्यू। लारला दिना सगळा पतग उडावै हा, मै मम्मी नै कयो—म्हू भी पतग ल्यास्यू, मम्मी मनै डाट दियो, म्हू सीधो पापा कनै पूच्यो, पापा म्हानै पतग ल्यादी। पापा मनै पतग नी ल्या'र देता तो रूस ज्यावतो, रोवण लाग ज्यावतो, पग पीटतो, पापा नै पतग मगावणी पडती। पप्पू रा पापा एस० पी० है, पण पप्पू री बात रोकै कोनी। लारला दिना म्हे खेलता हा, पप्पू बोल्यो—आपा फुटबाल खेलस्या, पण फुटबाल रो ब्लैंडर कोनी हो। पप्पू फट आपरै डैडी नै कयो, फटाक स्यू जीप गई अर ब्लैडर ले आई। पण मा'ट साहब, अरे बाप रे, बडो डर लागै, कै डाटै तो...बस।

पप्पू री कोठी मोटी है, बटू री भी मोटी है, म्हारै कनै छोटी कोठी है। म्हे खेला तो पप्पू री कोठी मे खेलल्या, बटू री कोठी मे खेलल्या, म्हारै अठै भी खेलल्या, पण म्हारै अठै जगा थोडी है। पप्पू रै जीप है, म्हारै भी जीप है, पण बटू रै डैडी कनै कार भी है, जीप भी है। म्हारी मम्मी बतावै है के बटू रा डैडी सगळा ऊ मोटा अफसर है, आखै जिलै रा अफसर है, कलक्टर है, पण मनै तो पप्पू रा डैडी सगळा मे मोटा लागै है—एस० पी०, आ स्यू चोर डरै, डाकू डरै, पुलिस रो सिपाही भी डरै। थाणेदार आरै सामै खडयो होय'र सलूट मारै। पण म्हे तो कोनी डरा, सामै ही खेलता रवा, लडता रवा, रगस भी खाल्या, अँ देखता रैवै, हसता रैवै, पण मा'ट साहब···? आरै सामै आख ऊपर नी कर सका।

मा'ट साहब, आ बात कोनी के अँ म्हारै मारै, जद म्हे डरा···ना···ना···,

अे म्हारै मारै ही कोनी, बडो लाड राखै, पढावै जद प्यार स्यू पढावै, एक बात नै कई बार बतावै, कदे-कदे डाटै भी। मै तो आरी वात फट समझ ज्याऊ, एकर बतावै जद ही समझ जाऊ, बटू दो बार बतावै जद समझ ज्यावै, पण पप्पू डफर है, वो भोत मोडै समझै, पण मा'ट साहब जद ताईं नी समझै, बताता रैवै, मनै रीस सी आवै। पण मा'ट साहब नै रीस कोनी आवै। बै बताता रवै। मै जे मा'ट साहब होऊ तो पप्पू रै दो चट्टू धरदयू, पण मा'ट साहब री तो तोरी भी कोनी चढै, जद मैं समझू, मा'ट साहब भोत मोटा है।

मा'ट साहब म्हारै पापा स्यू मोटा है, मैं बानै एक सवाल पूछ्यो, कोनी आयो, बा घणो ही तरळो मारचो, फेर बोल्या—मा'ट साहब नै पूछज्यो, फेर म्हे पिकी रै पापा कनै आया, बानै की कोनी आवै, बै तो सस्कृत रो माइना भी नी बता सकै। फेर म्हे पप्पू रै पापा कनै आया, बा सवाल गळत बताया उत्तर तो मिला दियो, पण तरीको गळत हो। बटू रै पापा स्यू तो उत्तर ही कोनी मिल्यो। पण मा'ट साहब चटाक स्यू सवाल कर दियो, कित्ता मोटा है मा'ट साहब! फेर तो म्हे हर बात मा'ट साहब नै ही पूछा हा, आ लोगा नै की आवै ही कोनी। अे लोग आखै दिन और ही बात करता रवै—मारणै री, पकडणै री, खावणै री, पीवणै री, पीसै री, टक्कै री, पण मा'ट साहब आखै दिन ध्यान री, ज्ञान री, देस री, परदेस री, गाधी री, नेहरू री, मीरा री, कबीर री बात करै जकी बडी प्यारी लागै, आछी लागै, रस ही टपकतो रैवै आरी बाता मे। मा'ट साहब भोत बडा है।

मा'ट साहब रो घर छोटो सो है—दो कमरा, एक रसोई, एक नहाण-घर। मा'ट साहब रै थोडा-सा कपडा है—दो खादी रा चोळा, दो पजामा। मा'ट साहब रै थोडा-सा टाबर है—एक लडको, एक लडकी। मा'ट साहब रै एक बकरी है। मा'ट साहब गाधीजी-सा लागै है। मनै अे गाधी जी रो पाठ पढावै तो इसा लागै जाणै अे आपरो पाठ पढावै है।

मा'ट साहब जद हिन्दुस्तान रो भूगोल पढावै तो बतावै, ओ हिवाळो है, ईंस्यू बडी-बडी नदिया निकळै, तो मनै इसो लागै जाणै मा'ट साहब खुद हिवाळो है, आस्यू भी बडी-बडी नदिया निकळै है।

मा'ट साहब पढावै—भारत मे समदर है, ई मे मोटा-मोटा जहाज चालै तो मा'ट साहब समदर-सा लागण लागज्या जाणै आम भी बडा-बडा जहाज चालै है।

फेर मा'ट साहब बतावै—गगा म्हारै देस री पावन नदी है तो मनै मा'ट साहब गगा-सा पवित्र लागण लागज्या।

एक दिन बटू री सालगिरह रो दिन आयो तो मैं बटू नै क्यो—तेरी सालगिरह पर मा'ट साहब नै बुलाई, बण हा भो करी, पण म्हे जद बटू रै घरे गया तो बठै **मोटा-मोटा** अफसर हा, जज साहब, एक्स. ई. एन. साहब हा, बडा डाक्टर साहब भी

हा, और भी कई साहब हा, पण मा'ट साहब कोनी हा। मनै भोत बुरो लाग्यो, बटू नैं भी बुरो लाग्यो, बटू रा पापा नैं भी बुरो लाग्यो।

फेर पप्पू रो जलमदिन भी आयो, बठै भी सै साहब हा, पण मा'ट साहब कोनी हा। म्हू सोच्यो—पप्पू स्यू कुट्टी करल्यू। म्हू पप्पू नै पूछ्यो—तू मा'ट साहब नैं क्यू कोनी बुलायो? बो बोल्यो—म्हू पापा नै क्यो हो। पापा बोल्या—मा'ट साहब अफसर थोडा ही है। म्हारो काळजो कळप्यो।

म्हू मन मे पक्की करली के म्हू मा'ट साहब नैं जरूर बुलास्यू।

मेरो जलमदिन भी आयो। म्हू मम्मी नैं कैयो पण मम्मी इसै काम मे पसरी ही के मम्मी नैं याद कोनी रैयो, मैं पापा नैं कयो—पण पापा भी मेरी बात कोनी सुणी। म्हू बोळो फिकर मे पडग्यो—करा तो काई करा, फेर मेरै एक बात सूझ मे आई। मैं झट स्यू एक कार्ड लियो अर मा'ट साहब रो नाम लिख'र बारै घरे दे आयो अर कह आयो—"मा'ट साहब आपनै जरूर आवणो है।"

सगळा लोग भेळा होवण लागग्या। मैं इकलग देखू—मा'ट साहब कोनी आया। मेरो जी और तरिया होवण लागग्यो। मा'ट साहब नै घरे कार्ड देय'र आयो, बानै आछी तरिया कह'र आयो, फेर भी मा'ट साहब क्यू कोनी आया? म्हारै स्यू रीस तो कोनी करली।

अडीकता अडीकता खासा देर होगी। लोग आवै—म्हानै प्रैजेट देवै, पण मा'ट साहब बिना म्हानै कोई प्रैजेट आछी कोनी लागै। सगळा मेज रै सामै भेळा होग्या, केक काटणै री टेम आगी। 'हैपी बर्थ डे'रो गीत सरू होग्यो, म्हू आपरी जगा आग्यो, सगळा री आख्या म्हारै कानी, पण म्हारी आख्या दरवाजै कानी—अर मा'ट साहब आग्या, म्हारो रू रू खिलग्यो, बो ही खादी रो चोळो अर पजामो। मै खडयो होय'र हाथ जोडया, पगा लाग्यो, मेरी बाचा खिलगी। मा'ट साहब मुळक'र आसीस दीनी। अै छण म्हारै सारू भोत कीमती हा।

दूजै दिन मैं मा'ट साहब रै घरे गयो। मा'ट साहब बोल्या—"थारा पिताजी भोत भला आदमी है। भगवान थारो भलो करै। मैं भोत खुस हो।"

एक दिन इसो आयो के पप्पू रै पापा रो तबादलो होग्यो। पप्पू बोल्यो—"म्हारो तबादलो भोत रद्दी जगा होयो" अर पप्पू आपरी कोठी छोड'र चल्यो गयो।

एक दिन फेर आयो के बटू रा डैडी बीच मे ही रिटायर होग्या। बो दिन तो भोत ही भैंडो हो, जकै दिन बटू री मम्मी अर डैडी रोटी ही कोनी खाई।

फेर एक दिन म्हारै सारू भी आयो। म्हारा पापा एक्स० ई० एन० बणग्या अर एक आछी जगा तबादलो होग्यो।

मैं पापा नै जकै दिन कैयो—"पापा, ओ काम मा'ट साहब करायो है। मा'ट साहब आपणै अठै म्हारी सालगिरह पर आया हा, जकै दिन म्हारै मू आ बात कयी

ही—थारा पापा भला आदमी है। थारो भगवान भलो करसी।" पापा आपरै काम मे लागर्‌या हा पण म्हारी बात ध्यान स्यू गुणर्‌या हा। मैं फेर कैयो—पापा मा'ट साहब री सीधी भगवान कनै 'एप्रोच' है। पापा म्हारी बात पर हस्या, मम्मी मनै गोद मे उठा लियो। मम्मी बात स्यात् सावळ समझी ही।

# गीतां रो बावळियो

## किशोर कल्पनाकान्त

"गा ! गा !! गा !!!"

मैं गा उठू । के ठा' कद सू इया गाया जावू हू ! के ठा' कद ताई इया गाया जावूला ! बा आवै, कैवै "गा ! गा !! गा !!!" अर मैं गावण लाग जावू !

आज मैं बयाळीस बरसा रा होग्यो हू । अै बयाळीस रा बयाळीसू बरस म्हारा खुद रा जीयोडा है जिकी इणा री जीवन्तताई आज तकात म्हारै मनै सरजीवण है । अै इतरा सारा बरस तो अेक अेक्र करता बीतग्या, पण इण बीत्योडा बरसा री बिगत म्हारै मनै जीवूला जठा लग टावी रैवैली । इणा मायला कयुईक लेयनै अेक कहाणी जाड नाखू, तो स्यात् म्हारै सू निरवाळो भी कोई ठावोपणो इणनै मिल जावै ! हा, बीत्योडा बरस कहाणी सू वेसी काई बण सकै—इतिहास भी बण सकै, पण इतिहास भी तो अेक भात री कहाणी ईज है । आ तो मै अेक ईज कहाणी सुणावणो चावू हू, वियास म्हारै सावळ चेतै है कै म्हारला इण बीत्योडा बयाळीस बरसा माय अणगिणती री कहाण्या, गीत र छद अर जाणै के के रळ्योडा है । कितराक तो कथीजग्या, कितराक कथीजणो चावै अर कितराक इसा भी है जिका अब कदे भी नी कथीज सकैला ! जिका नी कथीज सकै, उण रो पिसतावो तो कथीज ई सकै कै "मन री बात कथीजै कोनी !" पण कयुई न कयुई तो कयणो ई पडै, क्यूकै "कथना रमना री लाचारी है ।"

उण बखत, जद सू उण रो 'आवणो' म्हारै चेतै आवै, मैं डयोढेक साल रो नैंनो बाळक हो—हा, म्हारै सावळ चेतै है, पूरमपूरो डयोढ साल रो हो । के वेरो क्यू म्हारै इतरै नैनपणै री बिगत-वारता चेतै है ! मिनख रै मायनै कयुई इसो हानो होमी, जिको तिणी बिगत री धरोड नै कदे गमण नी देवै । क्यु भी होवै मनै उण बाळ टमकण ममकण री दरकार कोनी—मैं अेक प्यारै गीत री ज्यू उण नै गा सकू ! दुगरा सकू !

इतरो नैंनो बाळक मानवी भासा नै सावळ के बोल सकै ! बस थोडासा'क सादा मांय समायोडी ओर छोरविहूण सिस्टी अर इण ओर-छोर नै कथण री नैनीसीक

लळक ! म्हारा होठा सादा रा थोड़ा-घणा बचिया रमण लागग्या हा : "अैन्दे, आदी अैन्दे ! चिड़िया-चिड़िया ! चान बोइयो !" बस, इसी ई क्युई दूजी बाता मैं सादा रा इण बचिया सागै खेलतो-रमतो अर ठुमक-ठुमक चालतो घर रै इकलाण कूणै माय जायनै बैठ जावतो अर इण थोड़ासा'क सादा माय ममायोड़ी भासा माय घणा-घणा गीत गाया करतो। पछै थोड़ी'क ताळ नै उदास होय जातो। इणीज गाणै अर उदासी सू जुड्योड़ी है म्हारी कहाणी। वा आय नै 'गा ! गा !! गा !!!' कैती, जणा मैं गा उठतो अर पछै वा चली जाती, जणा उदास हो जातो।

वा कुण है ? क्यू गावण सारू मनै उकसावै अर पछै क्यू चली जावै ? मैं नी जाणू ! पण मैं जद ड्योढ साल रो हो जद सू उण नै ओळखू हू। इण सू पैली रै ड्योढ बरस रै माय भी वा आती-जावती रयी होसी ! चेतै नी आवै। पण लारला माढै चाळीस बरसा माय बरोबर उण सू भेट होवती रयी है। बस, मैं तो उण रै बारै मे इतरो'क जाणू कै वा आवै, जणा मनै कैवै "गा ! गा !! गा !!!"

ड्योढ साल री उमर माय होयोड़ी उण भेट री ओळखाण-विगत आजसुधी म्हारै सावळ चेतै है।

म्हारै घर रै आगणै रै बीचू-बीच अेक ऊचो चिण्योड़ो तुळसी रो बिडलो हो। उण रै नेड़ै अेक घणो घेर-घुमेर लाल कनेर रो बिरछ हो, जिण रा फूल मनै राता-माता घणा फूटरा लाग्या करता। म्हारो भाई कठै सू ई अेक मोटो अकडोडियो तोड ल्यातो, पछै उण अकडोडियै रै अेक कानी तो खूस देतो उण कनेर री लाल-लाल डोडी अर दूजै कानी उणीज कनेर रा तीन लाम्बा-लाम्बा पत्ता टाग दिया करतो। इण भात अेक सूवो बणायनै म्हारा हाथा पर मेल दिया करतो। पछै मा कैया करती "बोल मिट्ठू, राम-राम !" मा रा सादा नै दुसरातो जणा सक्षेप 'आम-आम' रह जाती। उण कनेर रै गाछ रै अेक क्यारी सी बणायोड़ी ही ! उण सू थोड़ो'क आन्तरै पडतो अेक लमटग खेजडो हो। खेजड़ा तो उण दिना म्हारै घर मे दो दूजा भी हा, जिणा मायलो अेक तो अजेस ऊभो है। इण गाछा पर किलकारचा फुदक्या करती, कागला, चिड़चा, मोरिया, सूवा, कमेडिया, कबूतर, अर कदे-कदे बुलबुला, खुडियाखाती'र तूयल्या भी आ जाती। पण इण सगळा सू अबार काई मतलब ! उण कनेर रै गाछ री क्यारी री बात करणी है। हा, उण क्यारी रै सामू साम घर रो परीण्डो पडतो।

उण दिन मैं परीण्डै मे बडतो मा नै बूझचो "पायी नेन्यू ?"

मा बोली "ना लाडी, परीण्डै मे ना जाई। जा, फूल तोडल्या !"

मैं कनेर री क्यारी मे आग्यो। फूल तो के टूटता ! ऊचा हा, जिको मैं फूल तोडण री चेस्टा करतो क्यारी मायलो गाछ री खोय मे ल्हुकग्यो।

अर, जाणै कनेर रो अेक फूटरो फूल आपरी लाली माय सफेदी री झाई मिलाया, म्हारै नेडै सी झुक आयो ! म्हारी छोटी-छोटी आख्या अचम्भै सू काई

देखें'क उण फूल माय सू प्रगटीज'र बा पैली तो धरत्या उतरी अर पछै म्हारै नेडै आयी।

बा म्हारै ई जितरी वडी ही। म्हारी ज्यू ई पगा मे घूघरा री पाजेब पैर राखी। उण रा हाथा मे भी नीजरिया बध्योडा हा। गळै मे म्हारै जिमो रो जिसो मूरता हाळो झालरो झूल रयो। उण रो रूप घणो मोवणो हो। उण री आख्या घणी भाव-भरी ही। मैं उणनै अपलक जोवतो रैयग्यो अर बा म्हारै कानी देख-देख'र मुळकती रयी। उण री मुळक माय अणहद सगीत भरयोडो हो। बिसी मुळक'र बिसो भाव मैं आज लग कठै ई नी देख्यो, बस वा तो कोरी उण रीज तो मुळक है अर उण रो ईज भाव।

बा म्हारै डील सू आप रो डील अडाय नै बैठगी। उण रै परस री सिळाई अकथ है। म्हारी आख्या नीदाळ होवण लागगी, पण पलक झपण रो नाव नी लेवै! बा इसै सुर मे बोली जिणरी मैं ओपती ओपमा भी नी वढावण सकू! के ठा' वीणा-पाणि री वीणा इसीज बाजती होवैली! बा, बस, कोरी इतरीज बोली ही "गा! गा!! गा!!!"

मैं मत्रीज्योडो-सो गावण लागग्यो। पछै के ठा' कितरीक ताळ गावतो रयो। के ठा' वो अेक गीत हो, या सैंमूसैंस गीता रो जलम होग्यो हो! गाया गयो। पण ओ काई…? मैं देखू, तो बा गायब! मैं म्हारै अेवड-छेवड च्यारूमेर घणो ई जोयो, पण वा कठी नै ई ज नी दीमी। बा कठै गयी "? कठै गयी " ?? अब वो कनेर रो फूल भी म्हारै नेडो झुक्योडो को ही नी। वो आपरीज सागी ठोड टग्योडो झूम रयो। आ किसी'क अेक लुकमीचणी होगी! मैं क्यूई सोचण लाग्यो, पण दूरा सू आवती अेक तीतर री बोली मुणीज रयी अर जदे-कदे अेक घुरसळी भी बीच-बीच मे बोल जाती। मैं उण रै जावण सू रोयो कोनी, पण जाबक उदासो पडग्यो हो अर होठा ई ज होठा मे गा…गा "गा "कैवता कैवता, जाणै कद मनै उण कनेर री क्यारी मे नीद आगी।

मा'र बापूजी कैया करता कै उण दिन पछै मैं केई-केई ताळ ताई गाया करतो अर पछै उदास'र रूवासो पड नै सोया करतो। गावण री तो ज्यू री ज्यू म्हारै भी चेतै है, पण गाया पछै सोवण री मा'र बापूजी री कैयोडी याद है। बापूजी उण पैलै गीताळ दिन री अेक दूजी वारता भी बतावता कै उण दिन मैं नीद सू जाग्या पछै भी कई ताळ उणमणो रयो हो। वै लोग मनै विनमावण री घणी ई चेस्टा करी पण निरी देर ताई मैं न तो रोयो अर न राजी हो पायो। बापूजी री गोदी सू उतर नै ताऊजी हाळी साळ सामैं चल्यो गयो, जठै अेक कोयलो पडयो हो। वो कोयलो उठाय नै पैडकाळै तळै पूठ'र छानो-मानो माडण लागग्यो। माडणो माड्या पछै बापूजी नै हेलो मारयो हो 'देनू-देनू!" बापूजी पैनी तो वठै आय नै वै माडणा देख्या हा अर पछै मनै गोदी मे उठाय नै, मा नै हेलो मारता कैयो हो "ओ तो

आपणै काळीदास प्रगट्यो है।"

आज उण वाता नै साढे चाळीस वरस बीतग्या। म्हारै मे काळीदास रै महाकवि नै आरोपणिया भी बीस-बाईस बरसा पैली, जठी नै काळीदास गयो हो, बठीनै सिधाग्या। उणा रै इतरा जलदी जावण रो अेक कारण ओ भी रयो होसी कै वै आपरै आगणै अेक महाकवि नै रमता देख्यो हो, पण जद बीस-बाईस वरसा ताईं भी किणी महाकवि रा गुण प्रगटीजता नी दीख्या, जणा निरास होयनै चल्या गया होसी। महाकवि रा मायेत बणन रै सुपनै नै भी सागै ईं ज लेग्या होसी।

हा, म्हारै म काळीदास, कै किणी महाकवि रा लक्खण तो इण साढे चाळीस बरसा म को प्रगटया नी, पण वा उण दिन पछै बरोबर बिया ई आवै-जावै। आवै, जद मैं उण रै कैवणै सू गावण लाग जावू अर पछै, जद वा छानी-मानी चली जावै, जणा मैं बोलबालो उदास हो जावू। टाबरपणै मे तो उण रै गया पछै मैं रूआसो पड नै सो जाया करतो, पण होळै-होळै उण रै गया पछै मैं रूआसोई पडन लागग्यो। जागतो तो रैवण लागग्यो, पण इण मू उदासी री घडिया भी बधगी। कदे कदे तो दिना दिना ताईं वा उदासी छायोडी रयी है अर कदे -कदे तो वा उणी ज उदासी विचाळै पाछी भी आगी है। दिना लार उण रै सागै आपस री बतळावण भी सरू होगी ही। बाता तो कदे कदे मे करणी चावू, पण उण रै तो अेक ईंज रटना 'गा! गा!! गा!!!" बयाळीस बरस उण रा गीत गाता बीतग्या, पण उणरी गीता री तिसना तो तिसाई री तिसाई ई रयी।

उण सू मिलाप रा म्हारै घणा ई प्रसग है। सगळा बतावण लागू तो कोई अेक जुग जरूर लागै। उण सू मिलाप री काईं-काईं बाता बतावू। मैं आज लग उण रै कैयै कैयै घणा ई गीत गाया है अर गाता गाता जाणै कद गवैयै सू गीतकार बणग्यो! बाळकिया दिना म जिको क्युई मैं गायो हो, वै गीत हा कै कोरी रागळिया ई रागळिया, अर उण गे क्युई अरथ भी होतो कै नी, मैं नी जाणू! जाणै म्हारै गावण रो क्यूई अरथ कोनी! पण मैं उण सू मिलाप रा प्रसगा बाबत बता रयो हो। केई बार तो बा दिना दिना ताईं को आवती नी। मैं उण नै उडीकतो रैता, उडीकतो रैतो। उण नै उडीकती बेळा मनै क्यु भी आछो नी लागतो। म्हारी आख्या बारबार सूत्याड म क्युई जोवती रैती अर मैं म्हारै ओळै-दोळै इकलाण नै सिरजतो रैतो। इकलाण इण वास्तै कै जा दिना वा दूजा रै साम्है जद मैं होता, जणा नी आया करती।

वा केई दिना नी आवै, जणा अब भी मैं उण नै घणो निमळो पडयोडो उडीकतो रैवू। उण री उडीकना रै बीच मे अब भी मनै क्युई दूजी बात आछी नी लागै। अब भी मैं उण रै सारू म्हारै ओळै-दोळै इकलाण सिरजतो रैवू। पण उण नै इकलाण री दरकार का रैयी नी। वा भीड-भडाकै बीच भी म्हारै कनै आ ढूकै। पण उण नै कोरो मैं ई ज देख सकू, दूजो कोई नी देख सकै। हा, उण रै आया पछै म्हारै मूडै

पर जिको क्युं ई आवै-जावै, उण नै दूजा जरूर लख लेवै।

टाबरपणै री अेक'र री बात।

उण दिनां बारा बरसां रो हो। पढ़णो-लिखणो सरू होग्यो हो अर लोगां री निजर में मैं सायेंना टाबरां बिचाळै घणो स्याणो-समझणो अर सूधो गिणीज्या करतो। मा रै 'रामायण' सुणण री घणी लळक रैंती अर मैं 'मानस' रा दूहा, चौपायां'र छंद मुधरा बाळ-कंठां सूं भांत-भांत सुणातो। बास-गळी री दूजी लुगाया भी ठाली वेळा सुणण नै आ जाया करती। म्हारा भीभळ कंठ-सुरां में रळघोड़ी बा रामकथा सुण'र घणकरी'क बार मा अर लुगाया रै आंसूडा बैंवण लाग जाता। पछै वै सगळी जणी म्हारा कोड-चाव करती कै 'ओ तो कोई तपधारी है, के ठा' किया तप टूट'र आग्यो है।" इसो ई अेक असर हो म्हारै ब्यारूमेर म्हारो। क्यूं कै लुगाया नै मैं 'रामकथा' गाय नै सुणा दिया करतो अर इणी ज भांत सायेंना टाबरां नै मैं म्हारी बाळ-कल्पना-सगती रै जरियै के ठा' कितरा'क परीलोक'र जाणै के-के दिखा देतो। पोथ्यां में सूं बाच्योडी अर कत्थकड़ां सूं सुण्योडी बातां म्हारै ज्यूं री ज्यूं याद रैंती। पोथ्यां'स नित नुवी बाचतो ई ज रैंतो। बाकी मन सूं जोड़'र घड़ लिया करतो अर टाबरां नै सुणा देवतो। इण भांत सायेंना टाबरां बिचाळै म्हारो न्यारो रुतबो रैंतो। जा दिनां सगळा सूं बेसी वगत म्हारो बापूजी कनै बीततो। अठै ताईं कै बा रै ई ज सागै सोतो, बा रै ई ज सागै जीमतो अर वै जठै जाता मैं बां रै सागै रैंतो। दिनूगै सिंझ्या तो बां रै सागै संगीत-साधना चालती, जिकी मैं तीन साल रो हो, जद सूं ई सरू होगी ही। सूर, मीरा, कबीर आद रा पद गातो, राग-रागन्या रा आलाप उठातो अर ध्रुपद'र ठुमरयां मैं साधतो। गावणै में म्हारै इसो तन्मैताई आती कै बापूजी खुद बिभोर हो जाता। स्यात् बेटै पर मोह होवण सूं बेसी आछो लाग्या करतो होसी। पण कदे-कदे बां रा कोई भायेला बैठ्या होता, या कोई मैंफल जुड़ी होती जणा लोग कैंता कै 'ओ तो कोई तुम्बुरू रिसी ई ज आग्यो है। किसा'क तो सुरीला कंठ है अर किसी'क चैंदारी सूं हरमनियो बजावै।" इण भांत के ठा' के-के उपमान टाबरपणै में पाया करतो। मैं बापूजी रै घणो हाडा-हिल्योडो हो। तीन बरसां रो हो, जणा बां रै सागै कलकत्तै जातरा कर आयो हो। बापूजी सूं के-के पायो नीं बतायीज सकै। हां, लोग आज कैंवै कै म्हारा सगळा गुणा मे आनुवांशिकताई रळयोड़ी है।

आज मैं सोचूं तो घणो दुख होवै कै मैं उणां माय नै अेक भी उपमान नै सारथक नीं कर पायो। बापूजी भी मनै जिको क्युं ई देणो चावता हा, उण नै खरमखरा धारण नीं कर पायो। न तो मैं कालीदास बण्यो, न तपधारी, अर न तुम्बुरू बण्यो, न दूजो क्युं ई। अेक अजब संजोग ईं कैणो चाईजै कै बापूजी मनै 'नटराज' रै रूप में देखणो चावता अर म्हारा नैंना नैंना पगल्यां में नैंनी-नैंनी घूघराळी पाजेब रै सागै रुणझुण घूघरा बधग्या हा अर तबलै री ताल पर 'तत्-तत् थून् तिगधा-दिग-

दिगु थेई' नाचण लागग्या हा। आख्या'र हाथा री मुद्रावा सागै कमर में लुळक आवण लागगी ही। पण वा तो मनै कयुई दूजो ई ज कगाती जावै ही।

उण दिना, जद मैं बारा बरसा रो हो, जणा अेक दिन सायेना छोरी-छोरा सागै बड-पीपळा कानी खेलतो हो। मैं टाबरा-टीगरा सागै रमतो-मेलतो तो जरूर, पण टाबरा भेळो घणी जेज नी टिक सकतो। के टा'क्यू म्हारो मन उडयो-उडयो सो हो जातो। मेलता-खेलता मैं थोडी'क ताळ पछै ई इकलाण ढूढ लेतो। उण दिन भी मैं 'कुरकाई' खेलता-खेलता के टा'कद माय कर आथूण-कानला धोरा कानी भाजग्यो हो। अै गोरा-गोरा धोरा अर आ उजळी-निरमळ रेत मनै सदीव ई चोखी लागी। हवा रै रथ सू बण्योडी अै ढळाता, अै चढाता अर दूरा-दूरा ताई इकलाण! मैं घणी ई वार अठी नै आया-जाया करतो अर घणी ई जेज ताई मनचीत्या लोटपळोटा खाया करतो, मन रा गीत गाया करतो अर इण धोरा मे म्हारो कयुई गम्योडो होवै, ज्यू ढूढया करतो। मैं आज ताई भी नी जाण पायो हू कै मैं उण धोरा मे काई ढूढया करतो। जद मैं म्हारी सागण ठोड पर पूगग्यो, जणा अेकर च्यारूमेर निजर पसारी। म्हारै नेडै ई ज कोई अेक तितली, अठै-कठै ऊभा आकडा, फोगडा'र खीपडा पर फुदक री ही। मैं उण तितली रै लार भाजण लागग्यो हो। के ठा'कितरी'क ताळ बा तितली मनै आपरी सोनल पाख्या री 'तत् धुन्' पर नचावती रयी। गोरा-गोरा धोरिया री सोनल लहरा पर नेडै-निडास म्हारा खोज ई खोज मडीजग्या हा। उण अणगिणत म्हारा ई ज खोजा रै बिचाळै ऊभो होयोडो मैं उण तितली नै अपळक देख्या जावै हो। बा तितली हवा मे अेकर आपरी पाख्या खोल'र पाछी बैठगी अर मैं देखू कै बठी नै सू अेक बाळक परी म्हारै कानी हळवा-हळवा चालती आ री है।

बा आगी।

वो ई ज सागी रूप, वो ई ज सागी रग। सागण वा रीज वा ही। उण री हेताळ आख्या में गुमान रो तीखो सो काजळियो। उण रा होठा पर भोळी-मुधरी मुळकण। उणरा लैरावता काळा-कवळा केस, उण री नै सू बन्ध्योडी मैमत चाल। म्हारी निजर रो सगळो सोवणापो उण रै रू-रू मे रळग्योडो।

आपसरी मे म्हारी निजरया टकरायी अर बा बोल उठी "गा! गा!! गा!!!" म्हारै च्यारूमेर पडगूजा गूजगी। वायरै री हर थिरकण, धोरा रो कण-कण अर म्हारो खुद रो रू-रू पडगूजा मे इणभात रळग्यो कै जाणै सिस्टी रै अणु-अणु माय सू 'गा-गा गा' गूज उठ्यो है। माय-बारै पडगूजा सैंजोर होवण लागगी ही। मैं सुण रयो हो, जाणै आज तकात रा सिरज्योडा सगळा बाजा बाज उठ्या होवै गा···गा···गा···!

म्हारै मायनै गीत घुमट उठ्या। गळै में सुर घिर आया। मैं गीत को ऊगेरयो नी। मैं जाणै कैवणो चावतो "तू क्यू म्हारो लारो पकड राख्यो है? कुण है तू?

म्हारो गावणो सरू करवायनै तू खुद कठै'न भाग जावै ? क्यू तू मनै इया गीतां री बावळियो बणा राख्यो है ? बता ·· ! बता ++++आज बूझनै रैवूला !!!"

वा मुळकी कै जाणै उण धोरा पर भड़चोडा म्हारै खोज-खोज पर भांत भांत रा राग-रंगीला पै'प खिल उठया होवै। बा अेक इसी निजर सू म्हारी आख्यां मे जोयो कै जाणै म्हारै च्यारूमेर हजारू इन्द्रधनस ई इन्द्रधनस मडीजग्या होवै अर उणरा रगा सू बठै रो सो' की रगीजग्यो होवै। बा म्हारै नेडै आय नै अूभी होगी कै जाणै उण री सासा माय सू म्हारै ओळै-दोळै मैमत मैवारा सरसीजगी होवै। उणरी लाम्बी-तीखी आगळ्यां पैली तो हवा माय कईक मुद्रावा बणायी अर पछै जाणै म्हारी आगळ्यां माय उळझ र पोरवा गिणण लागगी होवै!

वा बोली "मैं जलम-जलमान्तर सू थारै सागै हू। मैं तो थारी सगण-साथण हू! तू गीत गावै, जणा मैं बठै ई नी जावू, मैं तो थारा गीता माय रळ जावू हूं। थारा अे गीत ई म्हारा प्राण-पणमेसर है! गीता रा बावळिया, तू तो कोरो गावण सारू जाम्योडो है अर तनै आखी जूण गाया ई ज सरसी! अबै तू गा!···गा!!· · गा रे!"

मैं उण सूनै मरुथळ माय गीत उगेर दिया। अेक-अेक करता गीत गायीज रया। इया कै ठा' कितरी'क ताळ गावतो रयो अर पछै कै ठा' कियां'र कद रोवण लागग्यो! म्हारा गीत, म्हारी सुबक्या, म्हारा आसू, म्हारी दकलाण अर मैं! सूरज निराण आथम रया अर अेक अपूरब सानी बठै छायोडी ही। मैं करू कै स्यात् इणीज सानी नै इण धोरा माय मैं ढूढ्या करतो! सिंझ्या री अन्धारो जद घुळण लागग्यो, म्हारै घरहाळा अर केई सायना बाळक मनै ढूढता-ढूढता बठै आ पूग्या हा। वै लोग मनै सुबक्या-चढयोडै अर रोवतै नै देख'र जाण्या कै अठै मैं अेकलो डरपग्यो हू, जिको म्हारा बापूजी म्हारै काठी बाथ घाल लीनी अर जाणै काई-काई कैवता बिलमावण लागग्या हा। घरा पूग्या पछै मा'र बापूजी मनै लडावता, मनावता अर धमकावता-क्यू कैयो हो कै "आगी नै सारू क दे अेकलो छोरा कानी ना जायी!" वै पछै घणकरीक तो म्हारी निगैदारी भी राखण लागग्या हा, पण इकलाण माय पूग'र गावण री अर पछै उदासो होवण कै रोवण री म्हारै बाण पडगी ही।

उण दिनां लोग मनै 'कवि' कैवण लागग्या हा। कविता तो स्यात् जो दिनां काई जाणता, पण म्हारै कनै म्हारी अेक कापी ही, जिण माय म्हारा आळा-भोळा गाव गीता रा बाळकिया नै रमाया करता। बिया तो इणीज गाव रै नैनपण सू मगाय नै आज ताई मैं म्हारा ई गीत गावतो चालू, पण कलम'र कापी रै धक्कै ग्यार्‌ भे गीत दस बारा बरसा बीच पडया हा। बा बारम्बार आवती रैवती अर मनै गीता सारू दूणा-दूणो उकसाया करती। म्हारै माय म्हारा बापूजी जिको

दिग् थेई' नाचण लागग्या हा। आख्यां'र हाथां री मुद्रावां सागै कमर में लुळक आवण लागगी ही। पण वा तो मनै क्यूई दूजो ई ज कगानी जावै ही।

उण दिनां, जद मैं बारा बरसां रो हो, जणा अेक दिन मायेना छोरी-छोरां सागै बड-पीपळां कानी मेलतो हो। मैं टावरां-टीगरां सागै रमतो-मेलतो तो जरूर, पण टावरां भेळो घणी जेज नी टिक सकतो। के ठा'क्यू म्हारो मन उड्यो-उड्यो सो हो जातो। मेलतां-मेलतां मैं थोडी'क ताळ पछै ई इकलाण ढूंढ लेतो। उण दिन भी मैं 'कुरकाई' सेलतां-खेलतां के ठा'कद माय कर आथूण-कानला धोरां कानी भाजग्यो हो। अै गोरा-गोरा धोरा अर आ उजळी-निरमळ रेत मनै सदीव ई चोखी लागी। हवा रै रुख सू बण्योडी अै ढळाता, अै चढाता अर दूरां-दूरां ताईं इकलाण! मैं घणी ई वार अठी नै आया-जाया करतो अर घणी ई जेज ताईं मनचीत्या लोटपळोटा खाया करतो, मन रा गीत गाया करतो अर इण धोरां मे म्हारो क्यूई गम्योडो होवै, ज्यू ढूंढ्या करतो। मैं आज ताईं भी नी जाण पायो हू कै मैं उण धोरां में काईं ढूंढ्या करतो! जद मैं म्हारी सागण ठोड पर पूगग्यो, जणा अेकर च्यारूमेर निजर पमारी। म्हारै नेडै ई ज कोई अेक तितली, जठै-कठै ऊभा आकडा, फोगडां'र खींपडा पर फुदक री ही। मैं उण तितली रै लार भाजण लागग्यो हो। के टा'क्तिरी'क ताळ वा तितली मनै आपरी सोनल पाख्यां री 'तत् धुन्' पर नचावती रयी। गोरा-गोरा धोरियां री सोनल लहरां पर नेडै-निडाम म्हारा खोज ई खोज मडीजग्या हा। उण अणगिणत म्हारा ई ज खोजां रै बिचाळै ऊभो होयोडो मैं उण तितली नै अपळक देख्या जावै हो। वा तितली हवा में अेकर आपरी पाख्यां खोल'र पाछी बैठगी अर मैं देखू कै बठी नै सू अेक बाळक परी म्हारै कानी हळवा-हळवा चालती आ री है।

वा आगी।

वो ई ज सागी रूप, वो ई ज सागी रंग। सागण वा रीज वा ही। उण री हेताळ आख्यां में गुमान रो तीखो सो काजळियो। उण रा होठां पर भोळी-मुधरी मुळकण। उणरा लैरावता काळा-कवळा केस, उण री नै सू बन्ध्योडी मैंमत चाल। म्हारी निजर रो सगळो सोवणापो उण रै रूं-रूं मे रळग्योडो।

आपसरी में म्हारी निजरथा टकरायी अर बा बोल उठी "गा! गा!! गा!!!" म्हारै च्यारूमेर पडगूजा गूजगी। बायरै री हर थिरकण, धोरां रो कण-कण अर म्हारो खुद रो रूं-रूं पडगूजा मे इणभात रळग्यो कै जाणै मिस्टी रै अणु-अणु माय सू 'गा-गा-गा' गूज उठ्यो है। माय-बारै पडगूजा सैंजोर होवण लागगी ही। मैं सुण रयो हो, जाणै आज तकात रा सिरज्योडा सगळा बाजा बाज उठ्या होवै गा···गा···गा···।

म्हारै मायनै गीत घुमट उठ्या। गळै मे सुर घिर आया। मैं गीत को ऊगेरचो नी। मैं जाणै कैवणो चावतो "तू क्यू म्हारो लारो पकड राख्यो है? कुण है तू?

म्हारो गावणो मरू करवायनै तू खुद कठीनै भाज जावै ? क्यू तू मनै इमा गीतां रो बावळियो बणा राख्यो है ? बता··· ! बता···भाज बूझनै रैवूला !!!"

वा मुळकी कै जाणै उण धोरा पर मडघोडा म्हारै खोज-खोज पर भात-भात रा राग-रंगीला फॅ'प खिल उठ्या होवै। वा अेक इसी निजर सू म्हारी आख्या मे जोयो कै जाणै म्हारै च्यारूमेर हजारू इन्द्रधनस ई इन्द्रधनस मडीजग्या होवै अर उणरा रंगा मू वठै रो सौ' कीं रंगीजग्यो होवै। वा म्हारै नेडै आय नै ऊभी होगी कै जाणै उण री सासां माय सू म्हारै ओळै-दोळै मैमत मैकारा सरसीजगी होवै। उणरी लाम्बी-तीखी आगळभा पॅली तो हवा माय कईक मुद्रावा बणायी अर पछै जाणै म्हारी आगळ्या माय उळझ'र पोरवा गिणण लागगी होवै।

वा बोली "मैं जलम-जलमान्तर सू थारै सागै हू। मैं तो थारी सगण-साथण हूं। तू गीत गावै, जणा मैं कठै ई नी जावू, मैं तो थारा गीता माय रळ जावू हू। थारा अै गीत ई म्हारा प्राण-पणमेसर है। गीता रा बावळिया, तू तो कोरो गावण मारू जाम्योडो है अर तनै आखी जूण गाया ई ज सरसी। अबै तू गा···गा!!··· गा रै!"

मैं उण मूनै मरुथळ मांय गीत उगेर दिया। अेक-अेक करता गीत गायीज रया। इया कै ठा' कितरी'क ताळ गावतो रयो अर पछै कै ठा' किया'र कद रोवण लागग्यो। म्हारा गीत, म्हारी मुळक्या, म्हारा आमू, म्हारो इकलाण अर मैं। सूरज निराण आथम रया अर अेक अपूरब साती वठै छायोडी ही। मैं करू कै स्यात् इणीज साती नैं इण धोरा माय मैं ढूढ्या करतो। सिझ्या रो अन्धारो जद घुळण लागग्यो, म्हारै घरहाळा अर केई सायेना बाळक मनै ढूढता-ढूढता वठै आ पूग्या हा। वै लोग मनै मुळक्या-चढ्योडै अर रोवतै नै देख'र जाण्या कै अठै मैं अेकलो डरपग्यो हू, जिको म्हारा बापूजी म्हारै काठी बाथ घाल लीनी अर आणै काई-काई कैवता बिलमावण लागग्या हा। घरा पूग्या पछै मा'र बापूजी मनै लडावता, मनावता अर धमकावता-थका कैयो हो कै "आगी नैं मारू कदे अेकलो धोरा कानी ना जायी।" वै पछै पणकरीक तो म्हारी निगेदारी भी राखण लागग्या हा, पण इकलाण माय पूग'र गावण री अर पछै उदासो होवण कै रोवण री म्हारै बाण पडगी ही।

उण दिना लोग मनै 'कवि' कैवण लागग्या हा। कविता नो स्यात् जा दिनां काई आणतो, पण म्हारै कनै म्हारी अेक कापी ही, जिण माय म्हारा आळा-भोळा भाद गीता रा बाळकिया नै रमाया करता। जियां तो इयोइ मारा रैनैनपण सू लगाय नै आज तांईं मैं म्हारा ई गीत गावतो आयू, पण कलम'र कागी रै धर्कै स्यात् अै गीत दस-बारा बरसा बीच पडग्या हा। वा यारम्बार आवती रैवती अर मनै गीता गारू दूणो-दूणो उकसाया करती। म्हारै माय म्हारा बापूजी जिको

अेक 'नटराज' सिरज रया हा, उण नै वा दिनूंदिन गीता रो बावळियो बणावती जा रयी ही।

मैं मांनू हूं कै वो किसा'क अेक अजब संजोग हो कै इतरा साधन अर सुविधावां मनै जिको वयुई बणावण सारू जुटायोजो ही, मैं उण रै उणियार नीं ढळ नै, बिना वयुई आधार रै दूजो ई वयुई बणीज रयो।

अेक छोटै सै कसबै माय तीजै दरजै रै भणाई करतो अेक बाळक, जिको मैं हो, आपरै ओळै-दोळै कवि-रूप माय ओळखीजतो। कवि तो उण दिना मनै लोग आपै ई कैवण लागग्या हा, पण कवि रै सागै 'सम्पादक' मैं खुद आपै ई बणग्यो हो। म्हारा सायना नै मैं कैया करतो कै "मनै सम्पादकजी कैवो!" छोरा विचारा काई जाणता कै सम्पादकजी' काई होवै" छोरा तो छोरा, उण दिना तो बडा-बडा अर पढ्या-भण्या लोग ई को जाणता नी कै 'सम्पादकजी' के होवै है। पण मैं हाथ सूं लिख्योडी अेक पत्रिका रो सम्पादक हो। पत्रिका माय घणकरी'क रचनावां म्हारी ई ज रैती अर सम्पादक री जगा भी म्हारो ई ज नांव रैतो। बिया विविधताई सारू मैं म्हारा अनेक नांव धर मेल्या हा। पत्रिका नै भांत भतीला रगां सूं चित्रामण्या कोर नैं घणी फूटरी-फररी बणाया करतो। स्कूल मांय कै घर माय कठै ई कोई मारग-दरसाव नी, पण के ठा' किया'र कठै सूं, अै सैंग तेवड आवडग्या हा अर किया सम्पादकी उपज आयी ही। हा, दोपारां बापूजी साळ रै बारणै कनै बैठ्या चितराम कोरया करता अर उण माय रग भरया करता, जद उणां री देख्यादेख पैली तो घर अर बाग-गळी री भीता माथै कोरणो सीख्यो अर पछै कागदां नै ई रगण लागग्यो हो। पैली-पैली तो म्हाराज सवाईसिंह रो राजासाही साफो, मूछ्यां री मरोड अर उणां रो उणियारो कोर नाखणो, जाणै म्हारै बांवोई हाथ रो खेल हातो अर पछै म्हातमा गांधी, सुभासचन्द्र बोस अर हर हिटलर रा चित्राम चानतो ई ज किणी भीत पर कोर भाजतो। सैंग जणा म्हारै पर अचम्भो करया करता कै इण 'छिंदामै' नैं अै सगळी कळा-कारीगरयां अर अै भांत भांत रा हुनर कुण सिखा-सिखा नै जावै है! म्हारै डील-डोळ नै तोल-जोख'र बाम-गळी रा लोग भगवान स्रीकिसन रा बाळमीत सुदामाजी सूं म्हारी ओपमा जोड राखी ही। पण मनै ओ सो'को सिखावणियै नै दूजो कोई को जाणतो नी, उणनै तो अेकलो मैं ई जाणता। मैं आपूआप ई ज अै सैंग करितब करण लागग्यो सो। वा इकलाण माय म्हारै कनै आती अर पछै वयुई करण-धरण वास्तै बारूबार उकसाती रैती अर जणा मैं उण रै बतायै मारग पर चालतो रैतो।

वा कैयो हा नी कै "मैं जलम-जलमान्तरां सूं थारै सागै हूं," जिकी मनै सदीव साची लखावै। कदे-कदे तो कम कै मैं इया भरमीज्योडो हूं। जलम-जलमान्तर अेक भरम है, जिको म्हारै टाबरपणै सूं चैठ्योडो है। पण जद भाल-भांत रा संजोगां अर बीत्योडी विगतां पर विचार करण लागू, जणा भरोसो लूठो पडण लागै कै

वा है, जरूर जलम-जलमातरा सू म्हारै सागै है। कदे-कदे इसी भी बीती है कै मैं म्हारा जलम-जलमान्तरा नै याद करण बैठग्यो हू। म्हारा लारला जलमा री आघी विगत-वारतावा तो म्हारै चेतै नी आवै, पण उण री क्युईक झळक्या दामण री ज्यू पळवारा नाख्' सी लखावै। कई बर तो मैं परतख इया करतो रैय जावू कै इया तो मैं पैली बारूबार बोल चुक्यो हू, आ तो म्हारी पैली री मुण्योडी है अर ओ तो म्हारो चिरपरिचित है। मैं अनेकू बार फेर फेर कथण रा भवचक्करिया माय खुद नै भुईजतो सोधू, जिको उण री वा बात साव साची लागै कै मैं कठै ई नी जावू, थारा गीता माय रैवू अर उणीज गीलडला माय रळ जावू।

उण रो आवणो जावणो वाइरियै सू झीणो है। मैं उण रा अनेकू अनोपम अर रूपाळा रूप आज लग बारूबार देख चुक्यो हू। उण सू अनेकू वार मन री वारतावा'र वतळावण कर चुक्यो हू, पण वा आवै, जणा खुद आपरै मन सू आपै ई आवै। मैं बुलावणो चावू, जणा लाख मनवारा करूया ई को आवै नी। घणी ई वार मैं उण नै हेला मार-मार नै धापग्यो हू, पण कदे पानको ई को खुडक्यो नी। उण री तो सगळी ई वाता अणत'र अपार है।

अेकर अेक अजब वारता वणगी।

उण दिना मैं सोळा बरसा रो हो। म्हारै अठै अेक नामी सरकस आयोडी ही। मैं सरकस देखण नै गयो हो। खेल आप रै रीत-नेम मुजब सरू होयो, भात-भात रा इसा अचरज-भरया करतब म्हारी आख्या रै सामै दिखाळीज्या, जिसा पैली कदे म्हारा नी देख्योडा हा। अजब-अजब भात रा अनोखा तमासा देख-देख'र मैं घणो राजी हो रयो। दोनू जोकरा रा ओळ पिचोळा करतब देख'र घणो मजो आ रयो। हाथी, सिंघ, बान्दरा, घोडा अर आणी केई जिनावरा रा करतब मैं आख्या-फाड्या देख रयो। म्हारी अचम्भै माय रळयोडी निजर उण वखत ठग्योडी सी रैगी, जद घेर-घुमेर फाक पैरयोडी आठ छोरया रो झूलरो सामै आयनै आपरा करतब, कदे सामल रळ'र अर कदे न्यारा-न्यारा दिखाळणा सरू करया।

मैं काई देखू कै उण आठू छोरया मायली अेक जणी तो सागण वा री ज वा है। मागी रो सागी उणियारो। सागी रो सागी रग-रूप। सागी री सागी भाव-भरी आंख्या। सागी रो सागी मुघरो मुळकणो। वा तो कैती ही नी कै थारै कनै हू—*थारा गीतामाय अेकूकार।* पछै आ इण सरकस मांय कठै सू आयी? पछै म्हारो मन सरकस रा उण करतवा माय नी रम सक्यो। बारूबार उण री ईज अेकली री घ्यान आवै। मन नै घणो ई समझावण री चेस्टा करू कै आ वा कोनी, ओ तो अेक सजोग भर है। वा होती तो साजी म्हारै कनै नी आ जाती" पण इया भी तो हो सकै कै वा इतरा जणा री भीड माय मनै देख्यो ईज नी होवै। नी "नी, ओ म्हारो भरम है, वा तो म्हारै माय है, आ सरकस माय तो कोई दूजी है।

मनै होम नी कै कद खेल खतम हुयो अर कद मैं घरा आयग्यो। स्यात् म्हारा साथी तमासो पूरो होया पछै मनैं आपरै सागै ले आया होसी। उण दिन रो वो सरकस रो अजब-अनोखो खेल तो पूरो होग्यो हो, पण म्हारनी खिन्नी जूण म अेक खेल सरू होग्यो हो, जिको कई दिना तक चालतो रयो।

दूजै दिन दिनुगै मैं ताल मे तणीज्योडा सरकस रा उण तम्बुवा रै ओळै-दोळै घेरा घालतो घूम रयो। न तो रोटी री सुध अर ना पाणी री तिस। मन करै कै किया उण नै पाछी देखू अर पछै देख्या ई जावूं! जितरा दिन सरकस रयो, मैं नित उण रा खेल देखतो रयो अर आखै दिन उण तम्बुवा रै घेरा घाल्योडा राख्या। कदे कदास उणरै ऊपर म्हारी निजर पड जावती जणा म्हारो काळजो फरक सो उठतो। म्हारै दोस्त-भायेला तो घणा ई हा, पण मैं म्हारै मन री बात कदे किणी नै को बतायी नी। बस इण खातर उणमणो'र उदास होयोडो मैं अेकलो तम्बुवा माय ताक-झाक करण री चेस्टा करतो वठै घेरा घाल्या राखतो। पछै अेक दिन सरकस हाळा आप रा तम्बू उखाड लिया अर मैं हसरत भरी निजरा सू उण रो सामान देखतो रयो। छेवट वा सरकस चली गई। वा सरकस के गई, जाणै म्हारै मायनै सू कयुई निचोड नै लेगी। मैं महीना-ताई उदास, उणमणो अर गुमसुम बण्योडो आवाडूळ रैग्यो।

मैं म्हारै ब्यावर सेर घणी सू घणी इकलाण सिरजण री चेस्टा करतो अर आभै री लीली सून्याड मे उण नै सोधतो थको हेला मारया करतो, पण उण नै तो आवणो होवतो जणा वा आपै ई आ जावती, नीतर हेला मारया काई कां बणतो नी। मैं जाणै सो'की जाणता-बूझता भी काई को समझतो नी।

इण रै पछै, इसा अजब सजोग अनेक बार बणग्या है। अेकर मैं उणनै कलकत्तै री कालेज स्ट्रीट पर आपरी भायल्या सागै जावतो देखी ही। मैं मार्केट रै सामैं अेक सो रूम' सामैं ऊभो जिनमा देख रयो। इया मैं घणोईं बार बिना काम कठैई ऊभो होयनै मूडो फाडण लाग जावू हू, कयूक मन उखडीजण लागै, जणा म्हारा पग भी उखड जावै अर मैं किणी भीड माय कै इकलाण माय अकारण ईज चरयो जावू हू। उण दिन भी कालेज स्ट्रीट कानी अकारण चल्यो गयो हो अर निरी ताळ ताईं घूमता थक'र उण 'सो-रूम' सामैं ऊभो होयग्यो हो। चाणचुकै वा आपरी भायल्या समेत म्हारै सामैं सू नीसरी। म्हारी अजब हालत बणगी ही। मैं उण रै लारै चाल पड्यो। वा म्हारै कानी स्यात् अेकर भी नी देख्यो होसी, पण मैं जाणै किणी म्रिगतिमना रै तूटीजण री आस लिया उण रै लार-लार चालतो रयो। कितरी सडका अर गळया माय भटक्यो अर जद वै अेक घर माय बडगी, जणा मैं बोझल पगा सू खुद रो टूटयोडो सो असबाब ढोवतो पाछो आयो हो। इणीज भात अेकर उण नै बम्बई माय जुहू-बीच पर देखी ही। मैं उणरै लार भी केई ताळ भटकीज सकतो, पण म्हारै सागै म्हारा मीत भायेला हा, वै मनै उण रै लार नी

जावण दियो हो। दूरा-दूरा सू तो केई बार झबका-सा पडता दीख्या है। जद-जद भी मैं उण नै इण भात देखी है, घार उदासी रा समदा माय डूबग्यो हू अर वा उदासी म्हारी तोडी कदे नी टूटी है। फेर मनै इलरो चेतो तो सदीव रैवतो आयो है कै 'आ वा कोनी, उण रै उणियारै री कोई दूजी है। वा तो जलम-जलमान्तरा सू म्हारै सागै है, म्हारै माय है, पण इतरो होवता भी मैं उण नै जठै-जठै भी देखी है वठै-वठै अनेकू वार चकेरिया काटतो रयो हू।

अेकर तो इण मामा लीला माय इसी विचित्र हालत माय फसग्यो हो कै काई बताव्।

दस बरस पैली री बात है। जा दिना कलकत्तै गयोडो हो। अेक दिन मैं न्हावा-धोई करनै म्हारी गिद्दी माय, मैं जठै सोभाराम वैसाख स्ट्रीट माय ठैरचा करू हू, बैठ्यो हो। दोय माळा फेरनै बारै नीसरण रो मतो कर रयो हो कै जितरै तो अेक मामूली-सो जाणकार आ पूग्यो। वो कैवण नै आयो हो कै सिझ्या पडे मनै अेक जगा बुलायो है। कोई म्हारी कविताबा सुणणी चावै है। मैं थोडा-घणा ओदा-खोदा बूझया पछै हामळ भरली ही।

दिन तो काम काज माय नीठग्यो अर सिझचा आयगी। ठीक वेळा सिर म्हारो वो जाणकार म्हारै कनै अेक फूटरी मोटरकार लेयनै आ पूग्यो अर वठै सू म्हे लोग उण कार माय बैठनै चाल पडचा। वो जाणकार म्हारै सू बतळावण करतो भात-भात री मनवारा भी कर रयो। म्हे लोग वडै बजार नै पार करनै धरमतलै पूग्या, जठै वो कार नै थाम'र अेक सिगरेट री पाकेट ल्यायो अर पछै पार्क स्ट्रीट माय केई कार नै थाम दीनी अर बोल्यो "चालो चाय-पाणी करल्या"। मैं मना करघो, पण वो आप वानली खातरया'र मनवारा करण लाग रयो। म्हे लोग अेक मडकोनै रेस्टारेन्ट माय चाय-पाणी करी अर पछै सिगरेटा रो धुवो उपाडता अेक जगा पान गिलाफा माय ठूस्या, अर मोटरकार आपरै मारग चाल पडी।

'लेक' रै अेवड-छेवडलै वास माय अेक फूटरै-फररै अर आधुनिक बगलै माय मोटरकार जाय नै थमगी। वो जाणकार, जिणनै अेक दोस्त ईज कैवणो चाईजै, मनै दो तल्लै रै अेक सज्यै-धज्यै कमरै माय लेयग्यो। वठै म्हारी उडीकना करीज रयी। अजे म्हे उण कमरै माय पूग्या ईज हा कै बुलावो आयो, "आ नै मायनै कमरै माय बुलाया है।"

म्हे लोग मायनै कमरै माय जाय पूग्या, जठै अेक अधेड उमर री लुगाई म्हारो आव-आदर करघो। आखै वातावरण माय मनै अेक भावना री मुधरी मुधरी सी मैकार लखायी।

रात रा कोई आठ-साडे आठ बजग्या हा।

म्हे तीनू-जणा अेक गिदडै पर बैठग्या हा। ओ कमरो उण पैलडै कमरै सू भी बेगी कीमती गिणगारा सू मज्योडो हो। मैं म्हारै खुद माय सिमटीज्योडो हो। मैं

कदे तो कमरै रै सामान कानी देख रयो अर कदे-कदास उण अधेड लुगाई कानी भी देख लेवतो।

बा अधड लुगाई म्हारै सू बतळावण सरू करती बोली, "कुसुम नै थारा गीता रो घणो कोड-चाव है। बा थारी घणी चरचा करया करै।"

मैं काई को समझयो नी कै कुण तो कुसुम है अर कद बा म्हारा गीत सुण्या। मन माय करयो कै कदे कोई सम्मेलन कै गोस्ठी माय सुण्योडी होसी कै कदे किणी छापै-छूपै माय बाच्योडी होसी। स्यात् आ कुसुम इण लुगाई री बेटी होवैली। मैं इण बात रो क्युई उथळो को दियो नी, बस अन्दाजा बाधतो रयो।

उण दिना ताईं म्हारी ख्यात अेक कवि रै रूप माय फैल चुकी ही। भात-भात री म्हारी रचनावा छापा माय छप चुकी ही, अर केई छापा माय म्हारा फोटू ई छप्योडा हा। कविसम्मेलना अर गोस्ठया माय भी म्हारा कितरा ईज रग जम चुक्या हा। इणीज भात उण बगलै माय उण दिन मैं नूतीज्योडो हो।

जद मैं क्युई नी बोल्यो, जणा बा अधेड लुगाई केई भात री बाता करती बतळावण लागी अर पछै हार रै दरजै कयो "कविजी, थे तो सूधा भोत हो! आज रो जमानो सूधापणै रो कोनी।"

म्हारी इकलाण अतरमुखी विरती इसी ईज है कै मैं अणजाण-ओपरा लोगा माय अर नुवो चल्यो जावू तो काठ होय जावू! लुगाया रै सामै तो क्युई बेसी ई सिमट जावू! दोस्त-भायेला म्हारी इण विरती पर आपरै मनोविज्ञान सू भात-भात री टीपणी करया करै।

मैं क्युई बोलणो चावतो कै जितरैक तो बा अधेड लुगाई फेरू बोलगी : 'ल्यो, आ कुसुम भी आयगी!" अर बा कुसुम हाथ जोड नै निमसकार करती म्हारै कनै आयनै बैठगी।

"हे राम, ओ काई!"

मैं उण नै देखता पाण उण ठडै कमरै माय भी परसेवा सू भीजग्यो। अेक बीजळी-सी म्हारी आख्या माय पळकारो नाखगी। मनै लखायो कै जाणै मैं चेतो बिसर जावूलो। मैं खुद सू लडतो सयत रैवण री चेस्टा करी, पण म्हारी सास जाणै उतावळी चालण लागगी ही अर मैं माय ई माय जावक लडखडीजग्यो हो।

म्हारो बो दोस्त बोल्यो "ल्यो, थारो परिचै करावू!"

मैं तो उण कुसुम नै देखतो रो देखतो रैयग्यो, पण बो थोडा सा सिस्टाचार रा सब्दा माय आपस री ओळखाण कराय दीनी।

पछै बो आ कैवतो कै "मनै बाबू सू क्युई जरूरी बतळावण करणी है, आप बैठो!" कमरै रै बारै चल्यो गयो।

अब उण कमरै माय रैयग्या म्हे तीनू जणा—मैं, कुसुम अर बा अधेड लुगाई। मैं उण दो अणजाण लुगाया रै बिचाळै अेकलो हो, पण दो अणजाण लुगाया क्यू? बा

कुसुम तो म्हारा जलम-जलमान्तरा री सगण-सायण ही—सागण जाणै वा री ज बा ! मैं अेक विचित्र हालत माय फस चुक्यो हो—मैं अपणै-आप नै सावळ सभाळण नी पाय रयो, पण फेरू भी आपो गमावण री जगा बा को ही नी। मैं किणी भात म्हारा सगळा भावा नै समेटघा बठै बैठयो हो। मन करयो कै तबियत खराब होवण रो बहानो काढ'र बठै सू भाज जावू, पण कुसुम रो लोभ भी मनै काठो बाध लियो हो। मैं पैली केई बार मन नै समझावण री चेस्टा करी ही, उणीज भात फेरू अपणै-आप नै समझावण लाग्यो कै कुसुम तो कुसुम है गूगा, आ कोई बा थोडी ई है ! इया तो उणियारा मू के ठा' गाव भरचा पडचा होसी !

'कविजी, इया काई सोच माय पडग्या ? फेर मोडो होय जावैलो, आपणो कार्यक्रम सरू कर देवो !" बा अधेड लुगाई बोली।

किणी भात चेस्टा करनै मैं बोल्यो "बा नै तो आवण देवो ?" म्हारो मतलब म्हारै उण जाणकार दोस्त सू हो, जिको मनै अठै ल्यायो हो।

बा बोली "वै कोनी आवै। वै तो व्योपार री वाता माय लागग्या है। थे सरू करो वै आसी तो फेर आ जासी।"

उण रै लार री लार कुसुम भी बोल उठी "हा कविजी, बा नै के उडीकणो पडचो है, थे सरू करो !"

मनै लखायो कै जाणै कुसुम रै रू-रू सू 'गा-गा गा' री धुन उपड रयी है अर जाणै म्हारै रू-रू माय आय-आय नै रळ रयी है। मैं जाणै कुसुम रै उण कमरै माय नी हू, पण जाणै अणजाण्या बनखडा माय बैठयो हू अर जाणै कुसुम कुसुम कोनी, पण अेक परी री ज्यू बायरै पर चढनै म्हारै कनै उतर आयी है। जाणै म्हारै ओळै-दोळै ई कठै कोई झरणा घणी ऊचाया सू झर रया है अर जाणै उण झरणा री लैंकार मनै झिंझोडती कया जाय रयी है' "गा ! गा !! गा !!!"

मैं कुसुम कानी सू म्हारी निजर नी हटावणी चावतो, पण इया किया कर सकतो हो ? इण खातर कमरै री सून्याड माय म्हारी निजर थिर होगी ही। मैं नी चावतो कै उण मायली कोई सी जणी फेरू मनै क्युई कैवै, जिको मैं गावणो सरू कर दीन्यो।

मैं अेक रै पछै अेक करता तीन-च्यार गीत ईज गाया हा कै मनै म्हारा कठ पिघळता-सा लखायीज्या, जाणै मैं सगळो रो सगळो गळ-गळ नै गीता रा सुरा माय बैय जावूला। मनै खुद नै लखाय रयो कै जाणै मैं खुद नी गाय रयो हू। पण म्हारा सुर किणी घोर ऊडाया माय सू उठ-उठ नै आभै माय ऊपर-सू-ऊपर उडता जाय रया है। पण मैं गाया जा रयो हो ! थोडीक जेज पछै मनै लखायीज्यो कै जाणै कोई हळवी-हळवी सी सिसकारचा म्हारै सुर माय रळती जाय रयी है। पण फेरू भी नेचळ गाया जा रयो हो। म्हारा सुर, जठै अेक तरळायी माय सरजीवण होयग्या हा, बठै म्हारी निजर जाणै सून्याड माय अेक पाखाण खड बणगी ही। मैं मन माय

चेतो बपरायो कै कठै अै मिसकारघा म्हारी खुद री तो नी है ? जितरैक तो म्हारी बावोड़ी जाघ पर अेक कवळो-कवळो बोझ-सो पडग्यो हो अर कोई निवाई-निवाई सी तरळाई बूदा म्हारा चरण पखाळण लाग रयी ही अर जाणै म्हारै बावोटै हाथ पर भी कोई रेसमानी तार सा खिडग्या हा। पण मैं गाया जाय रयो अर म्हारो गीत ऊचै मू ऊचो चढ़तो जाय रयो हो। मैं थमणो नी चावतो हो, पण अब म्हारै सू नी गायीज सक्यो। म्हारा कठ रुधीजग्या सा हा। मैं अवार ताई किणी सुपनै माय गाय रयो हो कै साच्याणी जागतो गाय रयो हो ? कठ रुधीजण सू म्हारो गीत अधबीच माय थमग्यो हो। कोई बोलै न चालै, छिणेक मून छायोडो रैयग्यो। मैं पाखाणी मूरत री ज्यू जिया रो जिया बैठ्यो हो। जाणै किणी मायानगरी रो जादूगर मनै मन्तर फूक'र पाखाण बणाय नाख्यो होवै अर कुसुम म्हारी गोदी माय पडी सुबक-सुबक नै रोया जाय रयी ही। मैं तो क्रियाविहूण हो, पण जाणै दूरा सू आवती सी अेक भारी'र-भरभरायोडी सी अवाज मनै सुणीज रयी ही। स्यात् बा अधेड लुगाई कैय रयी "कुसुम, ओ तो एक गीत है। गीत कोई साचा थोडा ई होवै ! उठ, इया बावळी नी बण्या करै !"

पण कुसुम जाणै म्हारी गोदी माय अेकूकार होय जावणो चावती, बा आपरो माथो हळवा-हळवा म्हारी गोदी माय पछाडती वारवार कैया जाय रयी ही "चुप क्यू होयग्या ? कविजी, थे चुप ना होवो ! गावो···गावो ··गावो !"

म्हारै बिरमाड रै अणु-अणु माय 'गावो गावो' री गूजा रा सरणाटा बन्धी-जग्या। पण अबै मैं गा नी सकू, नी गा सकू ! म्हारो गीत अधबिचाळै टूटग्यो हो अर गावण री बळबळती लपटा म्हारै रू-रू सू उपड रयी ही। मैं गावणो तो चावू, पण किण भात गावू ?

अधेड लुगाई कैवती जाय रयी "अै ल्यो, कविजी, थे ई इण बावळी रै सागै रोवण लागग्या !"

बा अधेड लुगाई रोयी तो कोनी, पण उण री आख्या जाणै माय ई माय आसुवा मू भीज चुकी ही अर म्हारी पथरायी निजरा सू साचला ईज झरणा बैय रया हा।

मैं तो चुप हो, पण कुसुम कैवती जाय रयी ही "गावो···गावो···गावो···!" अर म्हारा जलम-जलमान्तरा री धुन म्हारी ई पाखाणी सूरत सू टकराय-टकरायनै जाणै विगळित होया जाय रयी ही।

छेवट, बा अधेड लुगाई कुसुम नै हाथ पकड नै म्हारी गोदी सू उठायी अर बोली "कविजी, अब बस करो !···कुसुम, गैली होयगी के ? उठ'र सावळ बैठी होय !"

उण अधेड-लुगाई री चेस्टा सू कुसुम नै अर मनै थोडो-घणो चेतो हूयो हो अर म्हे दोनू आप-आप रा आसू पूछ लिया हा।

अब म्हारै सू बठै नी बैठ्यो रैयीज सक्तो। इण बात नै स्यात् वै दोनू जडी भी जाणगी ही। मैं बोलबालो ऊभो होयग्यो अर कमरै रै बारै नीसरण लाग्यो, जणा कुसुम बोली ही "फेर कद आवोला।" मैं कैवणो चावतो कै "अबै नी आवूला, नी आ सकूला। म्हारा गीत अठै छोड'र जावू हू। अ गीत म्हारा नी, थारा है अर मैं म्हारा गीता माय बाध'र तनै लेय जावू हू—तू म्हारा गीता माय रळयोडी है!" पण ओ सो' को मैं नी कैय सक्यो—म्हारै मूडै सू बस इतरो'ज नीसरयो . "देखा, कद आवणो बणै, कद वखत मिलै!" जणा वा पाछो कैयो हो "आवणो जरूर पडैलो ' परस्यू !"

वै लोग म्हारै उण जाणकार दोस्त नै बुला दियो अर वा ईज सागण वार मनै म्हारै अेडै सिर घालगी।

रात भर नीद को आयी नी।

पछै केई दिना ताई सोचतो रैयग्यो कै वा तो म्हारै कनै है, फेर कुसुम उण रै जिसी री जिमी किया? सगळी बाता इतरी ठीक किया मिलगी! वा भी आवै जितरी बार 'गा·· गा···गा!' कैवै अर बा कुसुम भी उणरोज ज्यू 'गावो·· गावो ···गावो!' करतो रैयगी। ओ किसो अेक सजोग है।

इण बीच कुसुम रा केई बार बुलावा आया अर केई बार वा खुद टेलीफोन करयो, पण मैं फेर क्दे उण रै अठै नी गयो। मन तो सदीव करतो कै अबार उड'र कुसुम कनै चल्यो जावू, पण मैं मन नै किणी भात बाध लेवतो। मैं फेर उण रै कनै कदे गयो तो कोनी, पण उण नै मैं भूल भी नी सकू हू। उण अधेड लुगाई री बात भी याद आवै कै "ओ तो गीत है। गीत कोई साचा थोडा ई होवै!" मैं उण री बात विचार करण लागू कै काई साच्याणी गीत कोई साचा नी होवै! फेर साचा के होवै? जे गीत साचा नी है, जणा म्हारी तो आखी जिदगाणी ईज झूठी है। म्हारा जलम-जलमान्तर झूठा है! मैं इतरी जूणा झूठ-मूठ ई जीयो। अर बा तो कैया करै कै "तनै गीत गावण सारू फेर-फेर जलम धारणा पडसी? 'नी, आ नी हो सकै, नी हो सकै!' कुसुम उण रै सामै रोयी ही, मैं उण रै सामै गीत बण्योडो बैठ्यो हो, वा खुद गळू-गळू होय रयी ही। बा अधेड लुगाई झूठ बोलै ही। बा अेक परतख साच नै झूठ इण खातर बता दियो कै अेक झूठै आवरण री जूण म्हारै अर उण रै च्यारूमेर लिपटीज्योडी ही। गीत अेक साच है अर जुगा सू अेक साच रै रूप माय सरजीवण है।

कुसुम सू मिलाप री वो अजब सजोग क्युई इसो ठावो असर म्हारै सुभाव प नाख दियो कै जद मैं किणी भी लुगाई नै देखू, जणा म्हारी अेक खोयोडी सी निज उण माय आपरी जलम-जलमान्तर री साथण ढूढण लाग जावै। म्हारी को अणलोकाळ तिमना आपरी तूठना नै हेरण लाग जावै! साच रै ऊपर पड्योड ओ झूठो भरम म्हारै मू नी टूटै। स्यात् मैं उण रै सायत रूप रो कोई चिलकार

# कोरियै घड़ै रो पाणी

## चन्द्रसिंह

कोरियै घडै रो पाणी मा ! जीभ सूकै—रामू बोल्यो। रामू किसनै खाती रो मोभी बेटो। मा रो लाडेसर। घर रो चानणो। साथी सगळिया रै मन-लागतो। ऊमर कोई पदरा-सोळा साल। गाव मे फूटरा मे गिणीजै। गोरो छडछडीलो। बडी-बडी आख। आज तीन दिन सू सुनपात मे।

माचै रै पगाथिया उण री मा उण रै मुह सामी जोवै। काळजो मुह नै आवै। इतरै मे रामू फेर बैलण लाग्यो। दोनू हाथ थाम उणनै जगायो। थोडी देर बाद पाणी माग्यो। रूई उदावडै मे सू बाटकी पाणी घाल उण रै होठा लगाई। पाणी मू मू भर कुरळो कर पाछो थूकता बोल्यो—कोरियै घडै रो पाणी मा ! बेटा, ओ ही आछो, गुटका-गुटका पी। सुणी-अणसुणी कर रामू फेर आख मीचली।

थोडी देर मे, काको कठै मा ! गाया खेत मेळ दियो होसी। पेमै नै मारसू। जोडै मे नहा'र आसू। पाछो बैलण लाग्यो।

रामू रो काको बैद लेय'र नेडलै सहर सू पाछो बावडचो नही। गाव रा स्याणा आप आपरी बुध सारू लूग, दाळ-चीणी, जावतरी दे धाप्या—कोई ऊपरलो बतावै तो कोई कहै टाबर रै निजर लागगी। लोग आवै अर देख जावै।

माचै रै सारै बैठी मा मावडियाजी नै मनावै। खेतरपाळजी नै धोकै। रामदेवजी रै देवरै री पगा जात बोलै। माताजी रा आखा दिखावै। इतरै मे फेर रामू कोरियै घडै रो पाणी माग्यो—मा, मैं मरघो। मा री आख्या मे चोसरा चालै। बाटकी होठा रै लगा'र कैवै—ले बेटा। पाणी पाछो थूकै। कोरियै घडै रो पाणी मा, कह'र पाछो माची पर पडै अर आख्या मीचै।

बापडी मा करै तो के करै। सारा देई-देवता मना धापी। स्याणा झाडा दे धाप्या। बैद आयो नही। हे सावरिया, थारो सरणो। छिणेक मा री आख लागी। रामू री आख खुली। दूर कोरियो घडो दीखै—फुरती कर, डब-डब लोटो भर, गट-गट पी, माचै पर आ सूत्यो। जोर सू बैलण लाग्यो। मा जागी। सामै देखै तो रामू चुप। हाथ लगायो। डील ठडो टीप—धाड मार मा भी उण पर पडी—थोडी देर मे वा भी ठडी टीप !

•

# सुभान तेरी कुदरत

### चन्द्रसिंह

परभात रो सुहावणो पो'र। चोखो चैतवाडो। फोग फूटै। कैर बाटै सू लडालूब। धरती पर पडी ओस जाणै मोती। पवन रा हळका लैरका लोरी सी देवै। धरती री हरी साडी पर ऊगतै सूरज री किरणा कसीदो सो काढै। जगळ मे मगळ।

जगा-जगा हिरणा री डारा। काळा हिरण आगै सिरदार सा चालै। लारै हिरण्या। बाखोट ऊछळै। चट चोकडी साधै तो लाहोरी कुत्ता रा कान काटै। झाड्या रै ओलै लूकडी पूछ रमाती फिरै। स्याळ अर स्याळी रात रा धायेडा, कोरै-कोरै टीबा पर लोटपळोटा खावै, किलोळ करै, रागण्या काढै। कठै सुसिया मखमल सी धास पर रूई रा पैल सा उडता दीसै तो कठै आखरी मे बैठ्या गैळ करै। भात भात री चिडिया चर-चर करै। कैरा पर गोलिया टूट्या पडै। सारी रोही चैचाट करै।

उण समै एक तीतर खेजडी सू उड कोरी सी टीबी पै नीचै उतरयो। सामै दीवळ सू भरयो पुराणो छाणो दीस्यो। डग खुली, नस उठी, चोफेर देख्यो। जगळ मे मगळ देख फूल्यो। आखो जीयाजूण जीवण-सनेसो दियो। खुसी रो अन्त न पार। मगन हो पूरै जोर सू बोल्यो। सारी रोही गूजी—"सुभान तेरी कुदरत"। तीतर रो बोलणो हुयो, ऊपर उडतै लक्कडबाज री आख चट उण पर पडी। पवनवेग, भरसप्प नीचो आयो। पाछो ऊचो चढ्यो तो तीतर बाज रै पजै मे हो, दीवळ छाणै मे। दूसरो तीतर बोल्यो। रोही फेर गूजी—"सुभान तेरी कुदरत"।

०

# कोरियै घड़ै रो पाणी

## चन्द्रसिंह

कोरियै घड़ै रो पाणी मा ! जीभ मूकै—रामू बोल्यो। रामू किसनै खाती रो मोभी बेटो। मा रो लाडेसर। घर रो चानणो। साथी सगळिया रै मन-लागतो। ऊमर कोई पदरा-सोळा साल। गाव मे फूटरा मे गिणीजै। गोरो छडछडीलो। बडी-बडी आख। आज तीन दिन सू सुनपात मे।

माचै रै पगाथिया उण रो मा उण रै मुह सामी जोवै। काळजो मुह नै आवै। इतरै मे रामू फेर बैलण लाग्यो। दोनू हाथ थाम उणनै जगायो। थोडी देर बाद पाणी माग्यो। रूअै उदावडै मे सू बाटकी पाणी घाल उण रै होठा लगाई। पाणी सू मू भर कुरळो कर पाछो थूक्ता बाल्यो—कोरियै घड़ै रो पाणी मा ! बेटा, ओ ही आछो, गुटका गुटका पी। मुणी-अणमुणी कर रामू फेर आख मीचली।

थोडी देर मे, काको कठै मा ! गाया खेत भेळ दियो होसी। पेमै नै मारसू। जोडै मे नहा'र आसू। पाछो बैलण लाग्यो।

रामू रो काको बैद लेय'र नेडलै सहर सू पाछो बावडयो नही। गाव रा स्याणा आप आपरी बुध सारू लूग, दाळ-चीणी, जावतरी दे घाप्या—कोई ऊपरलो बतावै तो कोई कहै टाबर रै निजर लागगी। लोग आवै अर देख जावै।

माचै रै सारै बैठी मा मावडियाजी नै मनावै। खेतरपाळजी नै धोकै। रामदेवजी रै देवरै री पगा जात बोलै। माताजी रा आखा दिखावै। इतरै मे फेर रामू कोरियै घडै रो पाणी माग्यो—मा, मैं मरयो। मा री आख्या मे बोसरा चालै। बाटकी होठा रै लगा'र कैवै—ले बेटा। पाणी पाछो थूकै। कोरियै घडै रो पाणी मा कह'र पाछो माची पर पडै अर आख्या मीचै।

बापडी मा करै तो के करै। सारा देई-देवता मना धापी। स्याणा झाडा दे धाप्या। बैद आयो नही। हे सावरिया, थारो सरणो। छिणेक मा री आख लागी। रामू री आख खुली। दूर कोरियो घडो दीखै—फुरती कर, डब डब लोटो भर, गट-गट पी, माचै पर आ सूत्यो। जोर सू बैलण लाग्यो। मा जागी। सामै देखै तो रामू चुप। हाथ लगायो।डील ठडो टीप—धाड मार मा भी उण पर पडी—थोडी देर मे वा भी ठडी टीप !

# सुभान तेरी कुदरत

## चन्द्रसिंह

परभात रो सुहावणो पो'र। चोखो चैतवाड़ो। फोग फूटै। कैर बाटै सूं लडालूब। धरती पर पड़ी ओस जाणै मोती। पवन रा हळका लैरका लोरी सी देवै। धरती री हरी साडी पर ऊगतै सूरज री किरणा कसीदो सो काढै। जगळ मे मगळ।

जगा-जगा हिरणा री डारा। काळा हिरण आगै सिरदार सा चालै। लारै हिरण्या। बाखोट ऊछळै। चट चोकडी साधै तो लाहोरी कुत्ता रा कान काटै। झाड्या रै ओलै लूकडी पूछ रमाती फिरै। स्याळ अर स्याळी रात रा धायेडा, कोरै-कोरै टीबा पर लोटपळोटा खावै, किलोळ करै, रागण्या काढै। कठै सुमिया मखमल सी घास पर रूई रा फैल सा उडता दीसै तो कठै आखरी मे बैठ्या गैळ करै। भात भात री चिड़िया चर-चर करै। कैरा पर गोलिया टूट्या पडै। सारी रोही चैंचाट करै।

उण समै एक तीतर खेजडी सू उड कोरी सी टीबी पै नीचै उतरयो। सामै दीवळ सू भरयो पुराणो छाणो दीस्यो। डग खुली, नस उठी, चोफेर देख्यो। जगळ मे मगळ देख फूल्यो। आखी जीयाजूण जीवण-सनेसो दियो। खुसी रो अन्त न पार। मगन हो पूरै जोर सू बोल्यो। सारी रोही गूजी—"सुभान तेरी कुदरत"। तीतर रो बोलणो हुयो, ऊपर उडतै लक्कडबाज री आख चट उण पर पडी। पवनवेग, सरसण नीचो आयो। पाछो ऊचो चढ्यो तो तीतर बाज रै पजै मे हो, दीवळ छाणै म। दूसरो तीतर बोल्यो। रोही फेर गूजी—"सुभान तेरी कुदरत"।

०

# कागद रो चिकटांस

## दामोदरप्रसाद

नक्सलपथिया रै उत्पात रै बाद कलकत्ते मे मारवाडी सेठ-बाबुवा री कोठिया, रात रै समै बन्द मिलती। जरूरी काम भी होतो तो भी कोठी रा फाटक नी खुलता। अैरो गैरो नत्थू खैरो, नक्सली कोठी मे घुसपैठ नी कर पावै इण वास्तै बगाली चौकीदारा नै हटाय कर मारवाडी चौकीदार राख लिया। रात रै अन्धारै मे किण रो विस्वास? जदकै हैंड बम्ब सू लाइन रो ट्रासफार्मर ई उडा दियो। पाइपगना रा धमाका तो आम बात ही।

रात रै अधारै मे बरसती बरसात मे, महेस बाबू मोटर-कार लिया रामनारायण बाबू री कोठी पर हाजर। खूब होर्न बजायो अर हेला मारया पण कोठी रो फाटक किसो खुलाया खुल्यो? गनीमत ही, कोठी रै बारणै, खुली सडक पर किणी भलै आदमी रो ज्यादा देर टैरणो भी तो खतरै सू खाली कोनी—इण बात री मरम महेस बाबू नै भी हुई अर चौकीदार नै भी। पण निर्जीव फाटक के समझै? ठेठ राजस्थानी रै ठाठ, झाडसाई लैं'जै मे बोलता देख, चौकीदार रै जीव मे जीव आयो अर दिल म दया भी, फाटक खुलग्यो।

'बाबू! मे' अन्धेरी रात म आप किया?"

"जा-जा! घणो जरूरी काम है, रामनारायणजी नै भेज।"

'भेज तो देस्यू! पण बाबू नीद मे सूत्या है, जरा सोचा तो आ बेळा मिलणै-जुलणै री थोडी ई है? अबार घटै भर पैली तो एक कार लूटीजी…तीन हत्या हुई है।"

"जा-जा! उपदेस मत छाटै, तू के समझै, म्हारै मिलण-मुलायजै नै?"

रामनारायणजी सुपनै री सेजा सूत्या हा। चौकीदार जगायो तो ओझक्या—'जा-जा, डयूटी सम्भाळ। काम चोर! अद चावै आ धमकै।" 'ल्योजी, ओ काम भी टेढो है, आ बाबुवा रो?" चौकीदार बडबडायो पण हिम्मत कर कह्यो—"बाबू, फाटक पर महेस बाबू खडया उडीकै, मे' मे भीजै है, कार भी लेर'आया है।"

स्यात् कृष्णजी सुदामा री नाम सुणकर देर लगावै पण महेस बाबू री नाम सुणकर रामनारायणजी, दुसालो लें'र टार्च री रोसनी में छत्तै री छाया, लॉन मे आया। पाछै-पाछै चौकीदार भी हाथ मे लाठी'र लालटैण लिया "चौकीदार गळै मिलता देख'र चकित।

"अरे यार! गैलो है के? मे' मे क्यू भीजै! कार कोठी में खडी कर'र म्हारै कमरै मे ठाठ सू सो!"

'पण भाई! मै अेकलो थोडो ई हू।"

"तो सागै कुण है यार! देखू तो।"

"......!"

"हो, तो अब समझ मे आयी, भाभीजी है, नींद मे सूत्या है।"

'थारो सिर! हर बात में मजाक सूझै, 'बागला देस' सू आयी, बगाली लडकी है, हेमलता! दुख-दरद सू घायल हुयी बेहोस पडी है।"

'है! सरणार्थी कन्या है?'

'हा!"

-

हियो सिळाय, हेत री दो बात करती, अम्बर सू सोहण साझ 'सोनार देस' री सज्ञा नै सार्थक करती, मानसूनी बादळा री काळी घटा रै घटाटोप मे समायगी। महेसबाबू जल्दी-जल्दी कपडा-लत्ता सम्भाळया अर गगा-घाट री पवित्र पैडिया सू उतरे। गगा-स्नान कर ठिकाणै पूगण नै उतावळ करी। घाट री सीढिया पर सू एक दर्द-भरी आवाज आयी, महेस रो पग किणी रै कवळै गात पर पड'र तिसळग्यो, गळो गिलानी सू भरग्यो, मनडो मुरझायग्यो। महेस टार्च री रोसनी मे जिको दर्दीलो दरसाव देख्यो तो दया सू द्रवित होकर दग रहग्यो। लाल कनारी री सफेद साडी मे जवान जिस्म री लजखाणी लाज सी लपेटया, एक बग देस री बेटी, बेहोस पडी ही। माथै रा काळा-काळा, लाम्बा लाम्बा केस आधा जमीन पर अर आधा मुरझायै मुखडै पर बिखरया पडया हा। आख्या लिलाडी मे दरी जावै ही अर होठा री लाली लजखाणी पड'र पीळापती ही। एक पग री चप्पल पग मे निठ अटकी पडी ही तो दूजी घाट री सीढिया रै मरणै पछाड खाया पडी ही। महेस रो पग पड़णै सू बाळा री दोमेक लट भी टूटगी ही अर खून री बूदा सिवाय मे छोड़गी ही।

महेस अपराधी भाव सू, सन्ना-सून्य सो खडयो। 'बगला देस सहायता समिति' री सदस्यता मूळ सो माले ही। महेस 'बगाल बन्द' मे भाग लियो, नारा लगाया, भाखण झाडया। चन्दो चिट्ठो करयो पण इण सकट रै सामनै दुविधा धारा मे तिरतो डूबतो, बेचैन, पण लाचार।

आभै सू अवळा' आसूडा री झड सी बूदा बरसी। सूती पडी काया मे भी करुणा जागी। हेमलता घायल पछी सी तडफडायी। आख खोल आभै नै अवेखण

लागी। सूनी-सूनी सूज्योडी सी आख्या मे महाशून्य रो सूनापण समायग्यो। महेस नैं झुकता देख'र तो भैभीत हुयी चीत्कार कर दियो, सज्ञा-शून्य सरीर पर लाज रा लुटेरा रैं आक्रमण री आसका सू कापगी। पण महेस तो मुरझायो मुखडो लिया, माटी री मूरत सो, जीतै जी अतव सो खड्यो हो। भान सूनी मगेजण मूसळाधार बरसण लागी। ठौड-ठिकाणै री चिन्ता सतायी। महेस हिम्मत कर हेमलता सू टूटी-फूटी बगला भासा मे बतळायो अर हेमलता नैं 'बागला देस सहायता समिति' री बगला भासा मे लिख्यो बैंज बताय कर हिवळास बधायो। इण हमदर्दी सू हेमलता रैं जीव मे जीव आयो अर करुणा जळधारा सी फूट पडी। मुर्दै सै महेस मे भी मरदानगी आयगी, दुविधा री दीवारा दूर होगी, सरणागत नैं सरण सूप दी।

महेस री मोटर मडक पर खडी मालिक नैं उडीकै ही। महेस मोटर रो फाटक खोल'र हेमलता नैं लिटायी। आन्धै नैं चायै दो आख। महेस री मोटर महानगर रो मजाक उडाती सरपट दौड लगायी।

फुरसत मिली तो महेस हेमलता सू 'परिचय' री पूछताछ करी। हेमलता टेपरिकार्ड सी धारा प्रवाह बगला भासा मे बोलती चली गयी अर महेस मनडै री मरुवाणी मे उतारतो गयो। महेस काना सू कम आख्या सू ज्यादा, 'न्यूज रील' सी देखतो गयो—''''हेमलता, हेमेन्द्रनाथ बनर्जी री लाडली बेटी ही, जिका ढाकानगरी रैं उपनगर रा वासी हा। सत्ता'र सुराज रा भूखा नेता भारत रो विभाजन स्वीकार कर लियो तो देस मे दगा री बाढ सी आयगी। नौआखली जिसडा खून सू भरया अनेक नौटकी नाटक खेल्या गया। लाखा री सख्या मे लोग लाय'र लोही सू उजड'र भारत भाग्याया, पण हेमेन्द्रनाथ मुलक नी छोड्यो, मरणो कबूल कर लियो। बीस-पच्चीस बरसा-बीच अनेक दगा हुया, राजनीति रा भवर, आन्दोलना री आधी आयी भूचाळ भी, पण हेमेन्द्रनाथ हिम्मत नी हारो। पण २५ मार्च री रात रो दरमाव जिको देख्यो तो हिम्मत हारग्या। पाकिस्तान रो फौजी डिक्टेटर याहयाखा बर्बरता रैं बरताव म हूणा नैं हरा दिया, चगेजखा जिसडा मगोला नैं भी मात दे दी। पछमी पाकिस्तान रा पजाबी सैनिक पिसाच, लूटमार, हत्या'र बलात्कारा सू बगला देस नैं बर्बाद कर दियो। दमन-चक्र चालतो गयो अर बगला देस री आजादी रो सखनाद गूजतो गयो। शेख मुजीब आजादी री जोत जगायी अर उणरी अवामी लीग-'मुक्ति-वाहिनी' बण'र छापामार लडाई चलायी। हेमेन्द्रनाथ अवामी लीग रा खासा म सू एक हा। वै सपरिवार ढाका छोड'र 'चौडगा' री छापामार भूमिगत सरकार मे आ मिला। चौडगा री काम-चलाऊ बागला देस सरकार पर हवाई हमलो हुयो, हेमेन्द्रनाथ विमानभेदी तोप चलाता सहीद होग्या। हेमलता महिला टुकडी मे ही, छापो मार कर पाकिस्तान सैनिका रा दात खाटा करती। पण एक वार हेमलता री टुकडी पाक-सेना रैं हाथा

पड़गी तो घायल हुयी हेमलता नै बर्बर बलात्कारी मरघोडी समझ कर भारत री सीव मे फीकग्या।…"

—हेमलता री बोलती बन्द होगी, महेस बाबू री 'रील'कटगी। जाणै विजळी बीच मे बन्द होगी। महेस चौंक कर हेमलता रो मुखड़ो देख्यो तो हेमलता बोली—"अब भी काई बाकी है ?" "हा है, हियै रो हेत भी तो।"—महेस मुळक भर दियो अर हेमलता लजायगी। परिचय प्रेम मे बदलग्यो, प्रेम भी प्रणय मे—ब्रह्म समाज मन्दिर मे जनम-जनम री साख भरीजी, सुहाग रो सपनो साकार हुयो अर हेमलता रै होठा गूजग्यो रवीन्द्र—सगीत—"आमार सोनार बागला…।"

पण इण प्रेम पर गाज गिरी। महेस रो मारवाडी परिवार हेमलता नै अगीकार करणै सू इन्कार कर दियो। कोई मारवाडी बगाली लडकी नै घर मे किया घाल सकै—बगाली भी महेस रो घर घेर लियो। सी० आई० डी० पुलिस नै फोन हुयो—"हेमलता पाकिस्तान री खुफिया एजेन्ट है"।…अर महेस हिरासत मे।

महेस हिम्मत हारग्यो। महेस भावना मे बहग्यो, आदर्सां मे डूबग्यो पण यथार्थ री कठोरता सू दम तोड दियो। महेस काळजै करोत धर कर हेमलता सू हेत तोड़तो बोल्यो—' अब मैं थारी मदद नी कर सकू। भावै आप सरणार्थी सिविर मे जावो, भलाई पूर्वी पाकिस्तान · थारै बगला देस·· ।"

"तो डूब मरण खातर पद्मा सू पवित्र हुगली रो पाणी समझ्यो गयो बे, महेस।" अर हेमलता हतास होकर हुगली मे छलाग लगायगी। पण महेस नै मानवता, हिन्दुत्व अर 'बागला देस सहायता समिति' री सदस्यता रा भाव कागद रै विकटास पर निसळती जळ-बूदा सा लखाया।

●

# बाळू रो आकार

धनराज चौधरी

जम्हाई लेती ऊघ सू सैंठी भरचोर्डी ऊटगाडी घसती घसती खमक गी। आगळिया तोडती हरख, एक हाथ मे बोबो पकडियो गुलाव सूतो है। भवरिया रा खर्राटा हाल ही टैरिया है, वेई हाथ ऊपर कर नै वा आपरा मौर ताणवा लागी। पाडला झाटका नै ढाक री जाळी मे ऊदरो कूदबा लागो, बणती सरकी नजर गूदडा माथै फिरवा लागी, हरखूडी, हरखी, हरख, भवरियो नै गुलाव, नाम बदळिया नै टाबर जलमिया। उण गीली गूदडी माथै हाथ फेरियो—गुलाबिये मूतरियो दीमैं। एक ऊबाई ले'र वा अठी उठी देखती री।

हवेलिया री लैंण, एक-एक टीबा सू होड कर ली, पण एक दाणो सरकतो नी, उणा रै माथै रा खाका वदळता नी—जरैई तो झडकती रै। ऊदरो अलूमीन रा तासळा मे उछळियो, हरख री आगळिया गुलाव रा केमा सू रमबा लागी। लाई रै गूमडिया होयग्या है, खाज ऊठती होवैला। नखा नै चुभण सू वचावती वा आगळिया री पौरा घसवा लागी" अर सहर रो हवा-पाणी सफा गयो-बीतो है। खायाडो ठहरता ई नी। बरम दो बरमा म ई सगळी आतडिया ढीली पडगी। खाता ई बारै आवा वार्म्तै ऊधम करबा लागै। अलिया पेट खाय गया नै कीडा याळ। काई झपूरिया बच्या है, वैई झड जामी नै पछै ओ कपाळ—वा हमण लागी उजाम ऐडो इज होवै ?

झरती रेत माय देखो तो कई रूप नजर आवै। ओट सू धकलो नजर आवै। आथूणै तावडा मे हरखूडी देख री है। गूदी री कामडी जेडी एकवडी देही, माथा सू कडप मागोडी चूनडी रपटती जावै। धक्कै-धक्कै बणती पगा री छापा माथै चालती वेळा देखै कै धणी काख सू पोतियो काढ नै माथा माथै बाध लियो है। मन्दर री धजा देखीजण लागी है। रस्तो पक्को आवता ई धणी रै हाथ री लाकडी मे जडयोडी घूघरया री बाता रै वीच मे एकाधी ठठोळी सुणीजण लागी—हरखूडी माथो झटक्यो, लारै खिसकी ओढणी रो पल्लो माथै खोस्यो।

कोई अणजाण-अणहोणी वह हुवै आ बात नी। सदा रै ज्य हो। तळाव है ना

नाडी है। धरती तप नै मेह आवैला उण रै पैला तळी ऊपर आवैला। तळी ऊपर आवैला तो माटी फूट नै वा आधी होवैला। नीचै री गीली माटी आकरी पडगी—हरखूडी गाय नै टसकारी—सगळो वा खान खोदै, माटी काढिया सू दो काम वणै, बरसात री एक ई टोपो बेकार नी जावै। दूजो, माटी सू वणै ईंटा, कजावो, ईंटा वणती देखी है? फूस री तह जिण रै माथै नीचै मचा मे ढळयोडी काची ईंटा, कोयला रो बूरो नै दुहागण रा रूपडा जेडी बैंठण वास्तै ढळियोडी कुवारी माटी, वावळिया आवडा री चिटक्या, छाणां···ज्यू खेजडा सू ऊचो चोतरो हो जावै, सुळगती सटिया खोता ई लाय लागै, किंतरो धुओ ऊपजै पण माटी रो जातो गीलास नजर आवै? की दिन गरमी रैवै, नाचतो उजियाळो ठण्डो पड जावै नै धुओ आपरी गत ओझल हो जावै।

सो, अठै रो जिसो ई है तिमो तो रैवैला। लू इणी धरती माथै जलमी है, अठै ई चालैला फिरैला। बारै महीना ओ ई पाणी पियो, कदेई तो नी होऊ? काळ परो आयो तो रै—हरखूडी रो मन कीयो के वैठै रैवै पण मन रो कीयोडो दाय नी थायो—आदमी उल्टी की ही, एक उबकाई रै साथै टावर रै मूडा सू बोबा छूटग्या हो। देखता-देखता फेदल्ला पडिया हा। वी देर तक टावर तडफडियो नै तपियोडा मूडा माय छाती घाल नै सोयग्यो। पेट मे पड रह्या आटा नै दबावतो-दबावतो आदमी थाक नै एक कानी पडणो चाहतो हो। पण वो वठै थिर नी रह पाय रह्यो हो। बाहू उठाय नै हरखूडी आख्या पोछी ही। पाणी रो झीणो परदो सरकता ई नजर आयो हो'क मोर री चामडी काळी पडगी है, कठैई कठैई पापडिया नजर आवै है। टाबर नै मरद कनै सुवाण नै वा उठी। रेस्ता मे टेम नी लागती, टेम मेरणो ले। वैदराज पुडकी दीधी·· पण चूनियै नै उण रै बाप बाट नी देखी··· वा किणरी वाट जोवै?

हरखूडी सामै देख्यो, धरती-आभा रै बिचलो मारग माटी सू ओटीज गयो है। मोटर कनै रा टीवा रै लारै देखीजै टीवा सू रेत नीचै आय री है। उण नै हसी ऊठी, टीवा सू उतरयोडो कठै जावै? रेत री लीरया तो रेत मे इज वणै।

मोटर ऊभी हुई। वोहरो ऊपर मू पेटी उतारण लागो। भूगिया कमीज झटकतो कण्डक्टर बारै आयो। कण्डक्टर होठा सू लगाई जिण रै धुआं सू माता रो भरयोडो चैरो ढकीजग्यो। सीट माथै ई ड्राइवर आडो हुयो। उण कण्डक्टर नै आख मारी, जवाब मे पारखी री बत्तीसी झलकगी।

"काई चालै'क?" कण्डक्टर पूछ्यो।

"ना—हिचकोला खाणा पडैला।"

पछै वैटगी।

वा चुप रही।

बारी रै कनै वैठी मुआणी रो जीव दोरो होयो।

कण्डक्टर नैं की मुसाफिरा रा धक्का खाय नैं मोटर चालण लागी। मोटर री तकदीर मे तो चालू होवण वास्तै नै चालता-चालता धक्का खावणा लिख्या है। बा, चालता-चालता ई खटाळो, पण खटाळो आपरी गत चालतो रैवै।

तपतै तावडै मे नीमडी रै नीचै बाळक बिना मौसम रो खेल खेल रह्या है। चा-बडा वाळा रो, साइकिल सुधारण वाळा रो, मोची रो, पान-बीडी वाळा रो, टाबरा भेळो भवरियो ई है। उधार लियोडी दो गोलया हाथ मे है।

हरख गुलाब नैं छिया माय बैठाणै। बारी भवरिया री है। काई गोळिया गिब मे आयगी। बतायोडी मायै गोळी सू निसाण साधै। निसाणो अचूक रैवै। भवरिया रा दोनू ई हाथ गोळिया सू भरीज जावै।

आपरी मा पाडै आय नैं वो मागै—"ओ थारै पैरचोडो म्हनै दे परो। कटै घालू गोळया! झबला नैं चड्डी किणरै ई गूजियो कोनी।"

मा-बेटो दोनू ई देखै झबला रै माथै कितरा ई मोटा-छोटा छेद है पण सगळा आर-पार।

पैरचोडी कमीज री आधी ऊधडयोडी जेब मे हाथ घालती वा हसणो चावै'क कुरता रो पल्लो खीचतो भवरियो कैवै, "दे नी परो, फाटोडो है तो काई पण जेब तो है।"

"म्हू अुघाडी परी होऊला रे, थू बाट परी इणा नैं।"

बीजा टाबर नवी पारी वास्तै त्यार है। वै भवरिया री बाट जोवै।

"वो तो करणो ई पडैला पण भजिया बणण दे।" भवरिया री मैल खडियोडी आगळिया में गोळिया बाजण लागै।

हडबडी मे हरख गुलाब नैं काख मे ले नैं मामैं चाली। पग रफ्तार पकडली। उठी सू एक जोडो आय रह्यो है। दो ई चेहरा माथै हलचल है। मरद लुगाई कानी देख रह्यो है नैं लुगाई परकोटा रै परली कानी पाणी नी मिलण सू सूखती दूब नैं।

"तुम समझती क्यो नही।" मरद लुगाई नैं कैवै, "भई एक और खर्च बढ जायेगा जो अपनी दोनो की आय के बरदाश्त से बाहर है।"

हरख नजीक आवै—"बाबूजी पाच पइसा!"

"माफ कर"—वैवण रै साथै मरद रो ऊठयोडो हाथ लुगाई री चुडिया सू लाग नैं रस्ता मे झकार जलमावतो फेर लटक जावै।

"इनके बरदाश्त का है।" आदमी लुगाई सू कैवै।

लुगाई एक बार मरद कानी देखै जाणै पूछै कीकर"

हरख जमारो देख्यो है, उण नैं ठा है के चाहयोडो यू ई नी मिळै। वा लारै-लारै चालण लागै। उठीनै 'मिल्करोज' री दुकान है। धक्ला नैं ठैरता देख वा ई ठैर जावै।

रसदार दूध रो टोपो पेट माय पडता ई दोना री आख्या एक दूजा मे आप रा निज

भाव सोझण लागै। होठ काटती लुगाई री निजर झुक जावै। आदमी रै हाथ री बोतल सू टोपो पडै। मा रै हाथ सू तासळो खाच नै गुलाब आडो करै पण तासळा सू भारी जमी टोपा नै पैला निगळ जावै।

"बच्चा नै पाच पइसा दे दे रै बाबू।"

"जा न तुझे कह दिया।" मरद झिड़कै।

रोवता गुलाब नै चुप करबा वास्तै हरख बोबो उण रै मूडा मे देवै।

आधो पावडो धक्कै आय नै हरख कैवै—"बाई बच्चो भूखो है।"

"चल यहा से, गन्दी, शर्म नही आती।" मरद फूकारै।

लुगाई रै होठा तक आयोडी बोतल खिसक जावै। मूडा तक आयोडो दूध भीत सार्य नीचै उतरण लागै। मा रै झटका सू लारै आवण सार्थ टाबर रै मूडा सू बोबो निकळ जावै। घुण्डी माथै सू टपक्योडो गुगळो टोपो रेत मे गम जावै। लुगाई घूट लेणी चावै पण दूध गळै माय नी उतरै। वा थूकै, हवळै-हवळै रेती री गीलो गोळो बर्ण।

मगतो रा सूखा बोबा देखता ई आदमी रा ध्यान टूटै। वो झपटै—"हट नही तो पडेगी एक उल्टे हाथ की।"

हरख सरकै। टाबर रोवणो बन्द कर दे। हड़बड़ी मे बटुआ सू नोट निकाळती लुगाई पाटिया माथै बोतल पटक देवै। दुकानदार नै नोट झलावती कैवै—"बाम पैसे लौटाओ।" रेजगारी तामळा मे नाख नै वा धक्कै चालै।

पाटिया माथै पडियोडी बोतला सू हवळै चाल रई नवाई हवा सू पतळी धारा आडी टेडी जाबा लागै। हरख सोचै कै दोना नै एकसागै किया भेळी करै। एक रै नीचै तासळो राखै नै चुल्लु भर भर नै वा दूध गुलाब रै मूडा मे घालै।

●

# समो--कुसमो

## नानूराम संस्कर्ता

बारलो गाव। कूम रा टापरा। टाळवा टोड चवडा खेता खडा है। गाया-भैस्या रा धीणा। अेवड रा छेड अर बाछडा रा वगेला चरै। कूमटा'र कैर खेजडा-रोहिडा रै बिचाळै छाकोटा अेक ढाणी बसै। तळै मे कूइया, पळै मे पाणी। डब्बी सी तळाई भरी हिलोरा खावै। बरसाळो बमकै, लोक-परलोक री छिया पळकै। आपरी रगीली दुनिया मे डबकतो फिरै, मन छाकै नही, पण आज वो उन्नै-बुन्नै झाकै नही। दिल रो दरियाव छोळा चढै। मनडो गह्वर रा गिरथ पड रयो है। नूवै गाणा रो गायबी तथा राग-रागणी रो रायबी!

धान सू भरियो खेत, मतीरा रा मावा, साग-तरकारी री क्यारी जीमणवारा सू सरीर सिकै! रागळी करै अर ताना छेडै! आपरै कठ री किलकारी मे तरास भरै। डील टूटै अर गरब फूटै। गैगद बण्यो बैठो है। मुळक मावै नही। रूप रो म्हैदरो बरसै। वो सदीव सोचै के कोई तरसै। पण आज जी जजमै नही। सुधिया सासरियै सिधावैलो!

खेत मे लारै सोनो चमकै, वै रो गात घणो गमकै। चालतो छिया देखै, जको सिनेमा रील री सोवी सी सरकै! मोवण धारै नूवै, घरू चाल सुवारै तथा आपरै ऊपर सागीडो रीझै! जाणै—"म्हनै घडगी, बा वाड मे बडगी।" जागळू धोरा म अेकलै बगतै रै जी मे न जाणै कठै सू फूटरापै रो घमड घेरा घालै? ऊगती जुवानी रो साचैलो धणी है। इसी ऊजळी अडूड आभा कुदरत कैया कोरी? वो धोरी सैग जगती नै आप सू फोरी जाणै। मन-मन मे ही हसै—"म्है तो म्है ही हू।"

बीच रास्तै खेत मे खडे साळै 'जीजाजी' कैय'र कनै बुलायो। बोल्यो—"ओ खेत आपणो है, था जाणो नी! घरा सझचा चालस्या। तावडो टाळल्यो अर जीमा-जूठो कर ल्यो। दफारो हूग्यो, आडटेड लगायल्यो। पडोसी अडीकै, थारै गावणै रा कोड करै। हणै काम छोड'र आ ढूकसी।"

कनलै खेता सू सैघ साईना आया अर कोई पनर्जा, जीजोजी, कोई

बहनोईजी कँवता घणा हरखाया। कँण ही गजरी री माग राखी, कँण गोपीचन्द चायो। कोई आरसी अर इढूणी री फरमायस ल्यायो। पण पनजी सगळा नैं बडै गरव सू पाछो अेक ही उथळो दियो के—"आथण घरा चाल'र साज-बाज सू सँग भजन थानैं सुणाय'र सागीडा छक्का देस्या! रोही मे काई फोई दाई बोक'र बाको फाडा?"

साळी-साळेली अडीकती रयी। रामी रूस'र जा सूती। आधी ढळगी, पण पनजी की नैं ही वाता नैं पाती नी आयो। बेली अनजी आपरा सैंग भजनी बुला ल्यायो। ढोलक अर जीझा री जोडचा झणझणायगी। पनजी पारवा बोलैं। ऊभा होय'र गावैं। अेक हाथ मे खडताल है अर दूजै मे गमछो। पसेव नैं गमछै सू पूछैं अर हवा लेवैं। बीडिया रा बडळ सभा रै सामणैं घडी घडा फेंकै अर खोपरा री चिटक्या चलावैं। गावतो ही हुक्म करै तथा सामा फरणावैं। चौकी मायँ मिनखा री चैंळ-पैंळ लाग रयी है। घर मे लुगाया री गैंगट्ट माचरी है। पण पनजी रै सासरियो सोखी अनजी सँसू आधूनो है। तीन दिन राख्या, जका गावण मे बीत्या। चौथँ दिन सागी मारग चाल भीर हुया। पण फूटरापै री बडाई सारी पनजी नही, प्यारी रामी भळै करतो वगै। वा डण गाभरू रूप रा वारणा लेवैं अर वारी जावैं। गळै री सरावण मे तो डाढी गैंली वणगी है। पारवी भजना री पीठ थापैं।

दूजी दुनिया मे आवसी वा। अठै कोई सागी अर सैंधो-मैंघो ही नही लाधैं। खेत आपरा सा लागैं। जका मे आवती बखत आखा पाडोसी सुणनै आया। वैं नैं आपरैं धणी रा गुण चेतैं आया अर हिडदै मे ग्यान रो पारस लुकायो। अन्तरपट खुल्या, दे' धूजो! पूरी रीझी ही नही के बालम री बोली आई—

"काई जोवो? फूटरापो या गोरो बणाव! इसी कळा अर बोवार कठै पडयो है। म्हैं जितो रूप अर गुणा रो डळो हू। थारै बाप-मा री सूझ, जको म्हानैं परणाई! टाबरा रो माइत बाजू, पण ओजू ही सुरग री अपसरावा-सी घणी हेला मारती फिरैं। रीस अर ढाब ही म्हारी मोकळी है। सैं लेवणैं सू घर-बाज वणैं तो वणैं, नहीं तो चार घोडी पावलो ही सही। नित नूवा साख जुडैं-सापजैं। चुडलाळी नैं घर-घर नूतो है।"

बोल्या'र बोया, रामी जाण्यो पल्नैं बधगी। वेमाता काई ठा', काईं लिख भाजी? लारलो गम्यो अगलो जम्यो नही! आज रो वरतारो भूडो है तथा आउखो उळझघोडो ऊडो लखावैं। आपरैं गाव रा झुरावा आया। पण हम्मैं पीरै पाछी कँया जाव! कवळा दस्तूर मुडघा, छेवड खूटैं सू आय'र जुडग्या। मोकळा वरसा सू माईता री ओळू आई। 'वा फूटरापै मे पम नैं लाडेसर बेटी नैं अठै परणाई।" भाई अन्नू री रीस ही चेतैं आई। पण कनैं बैठे पनजी पैल्या ही कह नाख्यो के "थारै तो भगवान रा बेटा-बेटी है, म्हारैं भरोसैं किसी पार पडै? म्हे तो फक्कड हा, घरवेगी सूवा लक्कड हा।"

वाळा रा पो'रा, कुममा वग्या ! पाच बरसा सू घरा दाणो नीपज्योडो आंखे नी देख्यो। "जळी ही जथा"—टाबरा रो जजाळ बारकर फिरग्यो। अेक दिन लुक'र भाज भीर हुयो। रामी नावडी अर गाव सू परिया कढतै रा जा पग पकडघा "पाच बरस पीरै रयी, थारो काई धरायो ? आपरी रीत गडका काटता। पइसो तो जापै-मुवाड ही अेक दियो नही।"

बोली—"म्हाना टाबर, लुगाई रो जमारो। सूनै गाव मे अेकली रो बसवो कैया होसी ? गाव रा आखा लोग आप-आपरा बच्या-खुच्या धन-पसु अर टाबर-टीगर साथै लेयर खावण-कमावण नै मऊ गया। थे ही म्हानै साथै ले जावो। दो दिना सू पाणी माथै परचा राख्या है। अेक्ला सूता आख काढै। अन्न तो बाळका जोगो ही नी जुटै। हाचळ खालडै री कारी बण रया है। म्हारो कुण धणी है !"

पण पनजी बोलोवालो पाछो मुड'र घरा आ सोवै। साल भर रो बाळक कनै आ ऊभै अर सूतै बाप रा बोबा पपोळै ! महगी अर मुसकल इसी के धान रा तो दरसण ही दोरा हो रया है। मिलगत टक्कै री नही, काठ तो भाठै सू ही करडी वगै ! पनजी सोचै—"जोवडा रात रै पल्लै सही, जाणो तो है ही।"

सातवो साल है अर पाळणा हुवै। इसी कैबत साची है—"जकै मामलै मे बाप की हिम्मत नी कर सकै, मा बै नै आछी तरा पार घालै।" नागा उघाडा भाजता-फिरता भरचड बण रया है। दो बेटा अर अेक बेटी ! जका वास्तै मावडी रात दिन फफ्ती फिरै। जीवण रै नावै डील री मरी ल्हास ढोवै। धणी विरिया घर रो धणी चेतै आवै। पण आज ताणी की नै ही बतायो नही। आज भीयै दादै नै कैवण वाळी बात ऊकळी है। सुणी है जिसी बता बेसी। बेटी नै साथै लेय'र दादै रै घरा पोचै। बेटी पूछै, "दादा ! मा कैवै—हिम्मटसर वाळा रामेसरजी लखोटिया आसाम सू आया है। बै बठै टाबरा रै बाप नै बतावै। थे आसाम जाय'र पत्तो लगावो। बाळका रै हियाहोट जा रयी, म्हारै सू देख्या नी जावै।"

भीयो दादो बिरादरी रो चौधरी, गाव रो सिरैपच ! मोकळो परकाजू पण माला रो ठोकाकड ! पइसा बिना पावडो धरै नही, मोटो तोगड, फिरतड आदमी ! डाढा झोड-झटा मिटावै अर साख-सबध करावै। खरचै-पाणी रो टक्को ही घर सू लगावै नही, पैला धराय लेवै। पनजी रै कडूम्बै मे सागी काको लागै। बोल्यो—"छोरी, तेरी मा नै कैय दे, लोग पडघा फ्डी उडावै। हम्मैं पन्नो कठै ? हुवै तो जरूर घरा आवै। हिया पछाडी लेल्यो बेटा ! थोडा दिन भळे धाको धिकावो अर भीखो बुळावो। टाबर मोटा हूय्यासी, आखा फोडा भाग देसी।"

मा रोई, लारै-लारै बसबसाट करती छोरी गरळा उठी। लारनै सू दादै रो आख्या भीज गई। रोटी भाई न नीद आई। भूखो धायो पतीजै। पण दूजै दिन पुखता समचार पूछ'र दादै कनै दोनू भळे गई। छोरी बोली, "दादा, मा हिम्मटसर जाय'र समचार पूछ आई। बाबै नै ऊपरली आसाम मे बतावै। दो बरसा पैल्या

मिल्या अर साधू बण्या फिरै हा। थे जाय'र त्यायसो जद ही घरा बडसी। नही तो वा भेख बदळ राख्यो है। वेगा जावो, भळे कठै ही रम जासी।" मा-बेटी दोनू बोलती-बोलती फीस पडी, दादै री छाती नी रयी कडी, बाप-वारा टाबरा रो दुख देख्यो नी गयो। बोल्यो—"बेटा कैयदे तेरी मा नै, आजकल में कोई चोखो वार देख'र कूवो जासू। नासेट नै कूड प्यारो! साधणो तो म्हारै मारै है नही, पण बीस-तीस दिन गोता तथा गवका तो मोकळा खा आसू। काले सौ-पचास रिपिया रो बन्दोवस्त करू, थारै आघो दियो पाछो आवै धन, जद दे दिया। नही तो किसो वैसवै पडू। अेक दादै रा पोता हा।"

दादो गुहाटी टप्यो अर पूछणो सरू करचो—"अेक बिरामण, नाव पन्नाराम, पैतीस-चाळीस रै माय माय! गाव रिडी सू रळतो निकळग्यो। पाच-सात साल सू आसाम मे बोलै, साधू हुयोडो बतावै। कैण ही देख्यो-सुण्यो हुवै तो बतावो।" दादो ढावा ढाबा डोलै अर छत्याती बिरादरी रै लोगा सू घणी पूछताछ करतो फफै! पण, टीगरा रा भाग जागै नही, पन्नै रो पतो लागै नही! छेकड अेक दिन थोडी सुराख लागी। पनजी रै अैनाणा सिवसागर मे अेक साधू ऊघडयो। दादो रातो-रात जा पूग्यो। हटवाडी में मुरगै करणै सू सिवजी रै मिदर मे ठिकाणो पायो। दादै जाय'र मठ रा किंवाड खडखडाया। अगडी अवधूत माय वैठो मस्त माळा फेरै। जटाजूट, काळकूट किंवाडा री भचाभच वाजै। पण मोडो भोगळ खोलै नही। वैठयो ही बूझै—'कूण है? मेरी भगती मे भिजोक पडता है। मदिर खुलेगा नही।"

दादो—"म्हाराज जरूरी कारज है, अेकरसै खोलदयो।"

साधू—"बच्चा अब मदिर नही खुलेगा, कल आणा!"

दादो—"बाबा म्हैं ही सिवजी रो भगत हू, साधू म्हाराज री क्रिपा हो जावै तो दरसण करल्यू। बघो है।"

साधू—"अरे बाबा! तम घरवारी लोग कैसे होते हो? फक्कडो के भजन मे बाधा डालते फिरते हो। तुम तो कुछ करते धरते नही, हमारी कमज्या को उजाडणै आते हो।"

दादो—"साधू म्हाराज रो सही फरमाणो है। पण म्है घणी दूर सू चलाय'र आयो हू। दरसण दिरावो बाप सा!"

साधू—'अच्छा बाबा! फक्त पाच मिनट के लिए मदिर खोल देता हू। मैं हारा तुम जीते!"

भरड भट्ट!! भोगळ खिची खट्ट।"

मोडो धोळो हुग्यो, दादो भोळो बणग्यो। चुपाचुपी बात चौडै आयगी। जद दादो बोल्यो—"पन्ना, ओ के साग है? लुगाई रो-रोय'र डीया फोड लिया। टाबर अडीकता-झोकता आधा हुग्या। बेटी रा बाप, साधू ही जे होवणो हो तो ब्याव क्यू

वाळा रा पो'रा, कुसमा वग्या ! पाच बरसा सू घरा दाणो नीपज्योडो आवै नी देख्यो। "जळो ही जया"—टाबरा रो जजाळ बारवर फिरग्यो। अेक दिन लुक'र भाज भोर हुयो। रामी नावडी अर गाव सू परिया कढतै रा जा पग पकड्या "पाच बरस पीरै रयी, थारो काईं धरायो ? आपरी रीत गडका काटता। पइसो तो जापै सुवाड ही अेक दियो नही।"

बोली—"म्हाना टाबर, लुगाई रो जमारो। सूनै गाव मे अेक्ली रो वसबो कैंया होसी ? गाव रा आखा लोग आप-आपरा बच्या-खुच्या धन पसु अर टाबर-टीगर साथै लेयर खावण-कमावण नै मऊ गया। थे ही म्हानै साथै ले जावो। दो दिना सू पाणी माथै परचा राख्या है। अेकला सूता आख काढै। अन्न तो बाळका जोगो ही नी जुटै। हाचळ खालडै री कारो बण रया है। म्हारो कुण धणी है!" पण पनजी बोलोबालो पाछो मुड'र घरा आ सोवै। साल भर रो बाळक कनै आ ऊभै अर सूतै बाप रा बोबा पपोळै ! महगी अर मुसकल इसी के धान रा तो दरसण ही दोरा हो रया है। मिलगत टक्कै री नही, काठ तो भाठै सू ही करडी बगै ! पनजी सोचै—"जीवडा रात रै पल्लै सही, जाणो तो है ही।"

सातवो साल है अर पाळणा हुवै। इसी कैबत साची है—'जकै मामलै मे बाप की हिम्मत नी कर सकै, मा वै नै आछी तरा पार घालै।" नागा उघाडा भाजता-फिरता भरचड बण रया है। दो बेटा अर अेक बेटी ! जका वास्तै मावडी रात दिन फफ्ती फिरै। जीवण रै नावै डील री मरी रहास ढोवै। धणी विरिया घर रो धणी चेतै आवै। पण आज ताणी को नै ही बतायो नही। आज भीयै दादै नै कैंवण वाळी बात ऊकळी है। सुणी है जिसी बता वेसी। बेटी नै साथै लेय'र दादै रै घरा पाचै। बेटी पूछै, 'दादा ! मा कैवै—हिम्मटसर वाळा रामेसरजी लखोटिया आसाम सू आया है। बै बठै टाबरा रै बाप नै बतावै। थे आसाम जाय'र पत्तो लगावो। बाळका रै हियाहोट जा रयी, म्हारै सू देख्या नी जावै।"

भीयो दादो बिरादरी रो चौधरी गाव रो सिरैपच ! मोकळो परवाजू पण माला रो ठोकाकड ! पइसा बिना पावडो धरै नही, मोटो तोगड, फिरतड आदमी ! डाढा झोड झटा मिटावै अर साख-सबध करावै। खरचै-पाणी रो टक्को ही घर सू लगावै नही, पैला धराय लेवै। पनजी रै कडूम्बै मे सागी काको लागै। बोल्यो—"छोरी, तेरी मा नै कैय दे, लोग पडघा फडी उडावै। हम्मै पन्नो कठै ? हुवै तो जरूर घरा आवै। हिया पछाडी लेल्यो बेटा ! थोडा दिन भळे धाको धिकावो अर भीखो बुळावो। टाबर मोटा हूज्यासी, आखा फोडा भाग देसी।"

मा रोई, लारै लारै बसबसाट करती छोरी गरळा उठी। लारनै सू दादै री आछ्या भीज गई। रोटी भाई न नीद आई। भूखो धायो पतीजै। पण दूजै दिन पुगता समचार पूछ र दादै कनै दोनू भळे गई। छोरी बोली, "दादा, मा हिम्मटसर जाय'र समचार पूछ आई। बाबै नै ऊपरली आसाम मे बतावै। दो बरसा पैल्या

मिल्या अर साधू बण्या फिरै हा। थे जाय'र ल्यायसो जद ही घरा बडसी। नही तो वा भेख बदळ राख्यो है। वेगा जावो, भळे कठै ही रम जासी।" मा-बेटी दोनू बोलती-बोलती फीस पडी, दादै री छाती नी रयी कडी, बाप-बारा टाबरा रो दुख देख्यो नी गयो। बोल्यो—"बेटा कँयदे तेरी मा नै, आजकल मे कोई चोखो वार देख'र वूवो जासू। नासेट नै कूड प्यारो! लाधणो तो म्हारै सारै है नही, पण बीस-तीस दिन गोता तथा गवका तो मोकळा खा आसू। कालै सौ-पचास रिपिया रो बन्दोबस्त करू, थारै आधो दियो पाछो आवै धन, जद दे दिया। नही तो किसो बैसकै पड्। अेक दादै रा पोता हा।"

दादो गुहाटी टप्यो अर पूछणो सरु करधो—"अेक बिरामण, नाव पन्नाराम, पैंतीस-चाळीस रै माय माय! गाव रिडी सू रळतो निकळ्यो। पाच-सात साल सू आसाम मे बोलै, साधू हुयोडो बतावै। कँण ही देख्यो-सुण्यो हुवै तो बतावो।" दादो ढावा ढावा डोलै अर छ्यातो बिरादरी रै लोगा सू घणी पूछताछ करतो फफै! पण, टीगरा रा भाग जागै नही, पन्नै रो पतो लागै नही! छेकड अेक दिन मोटी सुराख लागी। पनजी रै अैनाणा सिवसागर मे अेक साधू ऊधरघो। दादो रातो-रात जा पूग्यो। हटवाडी मे सुरगै करणै सू सिवजी रै मिंदर मे टिकाणो पायो। दादै जाय'र मठ रा किंवाड खडखडाया। अगडी अवधूत माय बैठो मस्त माळा फेरै। जटाजूट, काळकूट किवाड़ा री भचाभच बाजै। पण मोटो भोगळ खोलै नही। बैठयो ही बूझै—"कूण है? मेरी भगती मे भिजोक पड़ता है। मंदिर खुलेगा नही।"

दादो—"म्हाराज जरूरी कारज है, अेकरसै खोलदयो।"

साधू—"बच्चा अब मंदिर नही खुलेगा, कल आणा।"

दादो—"बाबा म्हैं ही सिवजी रो भगत हू, साधू म्हाराज री किरपा हो जावै तो दरसण करल्यू। वधो है।"

साधू—"अरे बाबा! तम घरबारी लोग कैंमे होते हो? फकरों के भजन मे बाधा डालते फिरते हो। तुम तो कुछ करते धरते नहीं, हमारे भजन को [illegible] आते हो।"

दादो—"साधू म्हाराज रो सही फरमाणं है। पण म्हैं [illegible] आयो हू। दरसण दिरावो बाप मा।"

साधू—"अच्छा बाबा! फकत पाच मिनट के [illegible] हारा तुम जीते।"

भरड भट्ट!! भोगळ खिची मट्ट।"

मोटो धोळो हुयो, दादो मोळो [illegible]। [illegible]

दादो बोल्यो—"पन्ना, थो के माग है? [illegible]

अडीकता-झीकता आधा हुया। [illegible]

करयो ! देस चाल अर अबै तरी गुवाडी सभाळ।

सफा नटग्यो। बोल्यो— भेख नै बट्टो नगावू नहा। तपस्या नै धूवो चढावू कैया ? थे जाणो थारा टाबर जाणै ! पन्नै री तो समारी नातो जावक जातो रयो।

दादो बोल्यो— भख तो साधु रो चाखो पण साधू कीनै ही दुख देवै आ बात कठै लिखी है ? भेख भगवो राख पण नातला रो जमारो ही थारै दरसण सू सुधार ! भरथरी तो सातू पीढया तारी ! मा भैण अर लुगाई नै बरोबर बतळाय र भिख्या मागी। अक दो पीढी रो उद्धार तो आज रै साधू म्हाराज रा ही फरज है। घर रा ही नही *आखै गाव रा माणस सवा करसी जोगिया डड-कमडळ उठावो* अर गाव चाल र धूणी धुखावो म्हाराज ! दस म पूजीजा परदेस अर परभोम म अठै कुण जाणै ?

बावै उठायो चिमटो अर झोळो चढग्यो रेल दादो रच रयायो गाव रिडो म मेल ! छेकड तो परवाय र पनाराम कैवा देणो है। घर मे बाड लियो तेज काढ दियो दरसणा वेगी भीड लाग रयी है। बाबो फीको मोया मूयो बैठो है दादो इया कामा म सदा सू सैठो है। सतवारै पाछो बतळावै क पनिया गाभा बदळ र झीटा उतराय ल। की मिनखा रै गाळ हूज्या। बैरीडा म्हानै भाई-परमग्या म हेठा मन दिखाळ। घणा ही ठिठ कर दिया। मिनख अर मिनखा रो जायोडो है ता मिनख बणज्या। मिनखा री कैयी मान अर ओ भेख अळगो बाळ। फक्कड री आखी छिया-अक्कड उतरगी अर घरबारी बणग्यो।

*मरजाम जुटायो सत-सगत राखी। रामी रै जी री कमादणी खिली। गाणै* बजाणै रै कोड म पग नी टिकै। पनजी रा पारवा काळजै मडचा है। चोराण सू पाछा आयोडो धन सो सभाळण-सुणन री धुखण धुख। आमोज री सुवायली बरसा सू सूकी सती पागरी। जमानै री पूरी आस बधी। समै री टूटी लडी पाछी सधी। जाप अनायदै सूता है बारी आया सू गावैला। पैली कनला गावना सू आयोडा सतसगी लोग वाणी बालै। अनजी पनजी सू मिनणो चाव। पण वठै तो भजन पूगै ना कोई बाणी हुसल नै घोडी ल उडी पनाणी। अलख नाव सत है।

रात भर जागरण अर दिनूगै दे रा पा लागणा। घगै भजन-कीरतण रै उछाव म अरथी उठाई अर भजनीक जुलम ढुरचो। टाबरा र फरज अदा हुयो। पण रामी रै लामी ढक बाळ आगी। समो कुसमो हुग्यो।

●

# भारत-भाग्यविधाता

## नृसिंह राजपुरोहित

एक नैनोसीक गामडो। नीठ सो-सवा सौ घरा री बस्ती। रेल्वाई ठेसण आठ सू बारै कोस पडै। बस कठै ई आघी नैडी ई नी चालै। गाम दुसाखियो होवण सू गाम वाळा नै फगत लूण मोल लेवणो पडै। बाकी सगळी चीजा तो उठै इज पाक जावै। गाम मे घणो दूध, घणो घी, कोठिया-कणारा मे ऊन्हो ठाडो धान, राजा राज नै प्रजा चैन। नी कोई दुख अर नी कोई दुआळ। लोगडा प्रभु छाना दिन काढै।

पण उण गाम मे एक नवी बात बणी। उठै राज री स्कूल खुली। जाणै भरिया तळाव मे किणई भाठो नाख दियो अर पाणी हिलोळै चढग्यो। टीपरिया जितरो गाम वात फैलता काई जेज लागै।

'''रामा वापू रै नोहरा मे स्कूल खुलैला—इसकोल नी स्कूल !— राज रो मास्तर आयो है—सरकारी एलकार—पटिया पाडियोडा—धारीदार ढीलो-ढीलो जाधियो नै कुडतो—आख्या माथै चस्मो—डोळा जाणै मारकणी भैंस—ध्यान नी राख्यो ता अवार सीगडो घुमेड दे ला—अळगा रहीजो—राज रो वेली है भाई'''

राजा जोगी अगन जळ, या री उलटी रीत
डरता रहीजै फरसराम, थोडी पाळै प्रीत ''

चिलम भरै जितरी जेज मे गाम रा सगळा छोकरा भेळा व्हैग्या। पाणी जाती पणिहारिया रा पग ठमग्या अर चिलमा पीवता अमलिया री चिलमा हाथ मे इज रैयगी। देखता-देखता रामा वापू रो नोहरो थबोथब भरीजग्यो। काणा घूघटा मे नूरिया पिजारा री बीवी चिसूडी बोली—

—ए मा ! मास्तर रै तो डाढी मूछ ई कोनी, सफा टाबर इज दीसै।

खनै ऊभी बरजू भुआ नै आ बात जची कोनी। बा फाटोडा वास री गळाई भरडा सुर म बोली—कोई मरतग व्हियो व्हैला बापडा रै, जिण सू भद्दर व्हियोडो है। बाकी नैनो कैण रो, घणोई मातो-मणगो है। गाममाऊ पाडो व्है जिसो।

मास्तर मलूकदास तीसरी पास अर चौथी फेल हो। बाप नैनपण म इज मरग्यो अर मा अणूतो लाड राख्यो जिण सू पूत परवारग्यो। घणा वरस ताई तो कीरतणिया

री मडळी मे भरती होयनै—झट जावो चदणहार ल्यावो—घूघट नही खोलूगी—गावतो अर घूघरा बजावतो गाम-गाम फिरतो रह्यो। पण भलो व्हैजो भारत सरकार रो सो मुलक मे पचसाला योजनावा सरू व्हैगी जिणसू मलूकदास नै ई बी० डी० ओ० ऑफिस मे चपरासी री नौकरी मिळगी। मलूकदास, चपरासी मलूकदास बणग्यो।

भाग सू उणरी ड्यूटी बी० डी० ओ० सा' ब रै घरै इज लागी। वो जितरो नाचण-गावण मे हुसियार हो, उतरोई हाजरी साजण मे पण पाटक हो। सा'ब रै पग दबावण सू लगायनै बीबीजी रै पेट मसळणो, अर टाबरा रै ढूगा धोवण तक रो सगळो चाजं उण आपरै हाथ मे ले लियो। अर साल-भर मे तो बी० डी० ओ० सा'ब नै गाळ नै पाणी-पाणी कर दिया। एस० डी० आई० सा'ब री सलाह सू तिकडमबाजी सू बबई हिन्दी विद्यापीठ रो सर्टिफिकेट कबाड नै देखता-देखता चपरासी सू मास्टर बणग्यो।

इण भात पैली तकदीर खुल्यो मलूकदास रो अर अबै इण गाम रो।

बाडा मे भीड घणी होवती देख नै रामो बापू खैखारो करता छोकरा री पलटण कानी देख नै बोल्या—घणा दिन व्हिया है डोकरा उद्धम फिरता नै अबै कावडिया उडैला जरै ठा पडैला। भणतर घणी दोरी हुवै। कह्यो है—धी दोईली सासरो अर पूत दोईली पोसाळ।

इतरो सुणता इज दो एक बीकण छोरा तो हिरण्या रै ज्यू कान ऊचा करनै पड भागा। अर लारली नागी-तडग पलटण पण लटपट-लटपट करती बाडै बूटी थारा कान। जाणै चिडिया मे ढळ पडग्यो।

चिमूडी ही·· ही · हो · करनै हसण लागी—ही· ही·· हो· ही! मास्तर चस्मो उतार नै खरी मीट सू उण कानी देखण लाग्यो। जितरै तो बरजू भुआ चिमूडी कानी देखनै बोली—कोई छोटो गिणै न कोई मोटो अर आखो दिन थोडी री गळाई ओ काई 'ही हो' करणो। लुगाई री जात है, थोडी घणी तो लाज-सरम राखणी चाहिजै।

इतरो सुणता इज चिमूडी छाती ताणी घूघटो ताण लियो अर दूजी लुगाया पण लचकाणी पडनै तळाव कानी रवानै व्हैगी। मलूकदास ई पाछो चस्मो पै र लियो।

दूजोडै दिन इज स्कूल रो सिरीगणेस व्हियो। सुरसत माता रो मिंदर है, खाली हाथ किया जाईजै। टाबर टोळी सवा रुपियो रोकडो अर नाळेर लेय-लेय नै हाजर व्हिया। देखता-देखता नाळेरा रो ढिगलो लागग्यो अर पीसा सू टेबल रो खानो भरीजग्यो।

गाम-वाळा मिळनै विचार कियो—मास्तर परदेसी पछी—आपणै गाम मे आयो है, कुण तो इणरै पीसैला अर कुण इणरै पोवैला। एकलो जीव है—सो

पाचा री लकडी अर एकण रो बोझ। टावर जितरा पढण नैं आवैं, बा रै हिसाब सू वारी बाध दी जावैं। मास्तर घर-घर जाय नै जीम लेमी अर साझ-सवार वारी-मर दूध री लोटी पण मगाय लेसी।

इण भात मलूकदास रै तो मास्तरी फावरै आई पण आई। कठै तो वै बी० डी० ओ० रा ऐंठा-चूठा बासण माजनै लूखा-सूखा टुकडा खावणा अर कठै आ सायबी भोगणी। रोज टेमसर जीमण नै नूतो आय जावतो अर वो बानैं बैठ्योडा बीद रै ज्यू बण-ठण नै नित्त नवैं घर जीमण नै पूग जावतो। टावरा रा माईत सोचता—महीणैं मे एकर बारो आवैं, मास्तर नै चोखी रोटी घालणी चाहिजै। खावैं मूडो अर लाजैं आख। आपणैं टावर माथै पूरी मैंणत करैला, इणारैं पढायोडा इज मुसी अर थाणादार बणैं। कुण जाणैं आपणैं छोकरा रा ई तकदीर खुल जावैं।

इण वास्तैं जिकी मावा पोता रा टावरा नैं तो बिलोवणा बारी रैं दिन पण एक टीपरिया सू वेसी घी मागणैं पर ठोला ठरकावती, वैं इज बारी वाळै दिन मलूकदास नैं ताजा घी मे धपटमा गळगच्च चूरमा करावती। घर मे तो टावर दूध री खुरचण वास्तैं ई कूटीजता पण मास्तर रैं वास्तैं निवाणिया दूध री लोटी जळोजळ भरीज नैं टेमसर पूग जावती। थोडा दिना मे इज मलूकदास रैं डील माथैं पमम आयगी। कपडा लत्ता मे ई फरक आयग्यो अर आदता ई खासी बदळगी। धीरैं-धीरैं देसाई बीडी छोडनैं पनामा सिगरेट पीवणी सरू कर दी। वो मन मे सोचतो—उमर रा पाछला दिन तो फोगट इज गमाया।

रामा बापू रा वाडा मे जठै स्कूल खुली ही, दो मोटा मोटा झूपा हा। वामे सू एक मे स्कूल चालती अर दूजोडैं मे मास्तर रैंवतो। वाडा मे चौगान मोकळो हो, इण वास्तैं एक खूणा मे गाम रा फाटक खातर डीगो डीगो वाड रो एक बाडोटियो बणायोडो हो, जिणरै आगैं एक जगी नीवडो ऊभो हो। वाडा मे मास्तर रैंवण सू रामा बापू रैं फाटक री दैंण मिटगी ही। वाडपच होवता थकाई बापू ठोट हा। इण वास्तैं फाटक मे आयोडा रळियार ढाडा री रसीदा काटण मे वानैं पूरी दिक्कत रैंवती। मास्तर रैं कारण बारी आ दिक्कत मिटगी। मास्तर नैं रसीद बुक सूप नैं बापू तो छुटा व्हैग्या अर मास्तर निहाल व्हैग्यो।

मलूकदास घाट-घाट रो पाणी पियोडो एक छटमी रकम ही। उण देख्यो कै गाम मे तीन-च्यारेक आसामिया इसी है के वानैं "फेवर" मे राखणी घणी जरूरी है। वो आ वात पण आछी तरै सू जाणैं हो कै माखिया गुड सू राजी रैंवैं। उण नीवडा रैं नीचैं चूल्हो बणाय नै चाय रो इतजाम कर दियो अर उनैं ठाटियो भरनैं जरदो पण धर दियो। माखा नैं दूजो चाहिजै ई काई? दिन उगता ई जाजम जम जावती। हाडी भरनैं चाय ऊकळती, अमला री मनवारा व्हैती अर चिलमा सू धूआ रा गोट उठता। गाम री भली-भूडी वाता व्हैती अर आप-सी टटा री पचायता बैठती, डड मूळ घलीजता अर डड रो गामसाऊ हिसाब मास्तर नैं सूपीजतो।

बणणो ह्वै तो एक काम कर।

—काई ?'

—थारा घर सू एक रुपियो लायनै म्हनै दे।

—रुपियो कठा सू लावू यार ! घर सू म्हनै कुण लायण दे। ठा' पड जावै तो काकी म्हारी टाट पोली नी कर दे' यार !

—धीरै बोल ग्गाळा !

—थू रुपिया रो काई करसी यार ?

—बीडी नै माचिस लावूला।

—थु बीडी पीवै ?

—हां, हां, पीवू, करसै जोर।

—छोरां, पावडा जोर-जोर सू बोलनै जिग्यो रै, ए चोथिया, सिट डौन-सिटडौन !

...एक दू दू ..दो दूना च्यार...दो दूना च्यार !

—बीडी मे थनै काई मजो आवै यार ?

—थू बापड काई समझै इण बाता नै। बीडी पीवण मे कई गुण है, देख—

एक तो बीडी पीवण सू मूछा बेगी आवै। दूजो बीडी पीवण सू ताकत बधै अर तीजो टाट वितरो रैवै—अपटूडेट बण्योडा ह्वा—थू दोन्यू आंगळिया रै बीच मे बीडी पकडयोडी ह्वै पैली लाबी फूक खाच नै धीरै-धीरै नाक सू धूओ काढा, पछै मूडो ऊचो अर होट भेळा करनै तलवार कट मूछा रै नीचै सू फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! जाणै अजण आयो।

बुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोलयो—तलवारकट मूछां फैडी ह्वै यार ?

—आपणै मलूकिया माट सा'ब रै फैडी है, दिखै कोनी। पण म्हू मोटो होस्यू जद बढ़ूवाट राखस्यू—देख थू-पछै फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! बुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनै फेर हसण लाग्यो।

—हसै काई रै बोका ! बीडी मे गुण नी ह्वैता तो ऐ मोटा-मोटा आदमी क्यू पीवता ?

—आपणै माट सा'ब तो धोळी बीडी पीवै यार !

—अरै देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीडी, आपां काळी पीवाला। थू रुपियो तो लाव दोस्त, पछै देख थनै फिरट बणावू। बोल लासीव ?

—लावूला !

—पिता री ?

—किसम !

—मिळावो हाथ माई डियर—यू डेमफूल !

—अरै आज हाल ताई दूध री लोटी क्यू नी आई रै ? किण री वारी है ?

—आज राजिया री वारी है सा।

—साला राजिये का वच्चा! दूध क्यू नी लायो रे?

—आज भैंस गुमगी मा, म्हारी मा ढूंढण नै गई है।

—भैंस पड़ी कुआ में अर ऊपर पडी थारी मा। दूध टैममर आवणो चाहिजै। नी तो मार-मार नै टाट पोली कर दूला।

रोज री एक लोटी तो महना री तीस लोटी। वरस रा महीना व्है बारै, अर तीन वरस रा छत्तीस। दिन जावता काई जेज लागै। हाकरता तीन वरस बीतग्या। मूलकदास रै पेट में गाम रो मणावध दूध अर घी पुगग्यो।

पण मलूकदास ई नुगरो नी हो। उण गाम सू जितरो लियो उणसू ई वेसी पाछो देय दियो। लियो जिणरी कीमत तो उणरै पोतारै पिंड ताईंज ही, पण दियो जिणरो थाग पीढिया लग हो। स्कूल में छोरा दो दूनी च्यार सू आगै तीन दूनी छ भताई नी सीख्या व्हा, पण वीडी पीवणी, चोरी करणी, कूड वोलणी अर आगा-पाछी करणी आछी तरिया सीखग्या। परटी फेरता हरजस तो वद व्हैग्या अर फिल्मी गीत गूजण लाग्या" आंखया मिलाके--जिया भरमाके" चले नहीं जाना, हो हो चले नहीं जाना। गाम में दो च्यार मुकदमा ई चालू व्हैग्या, जिणसू लोग-वाग कई दफा रा जाणकार व्हैग्या। कैवण रो मतळब ओ के गाम रो मोकळो सास्कृतिक विकास व्हैग्यो।

पण इतरो किया पर्छई गामवाळा नै सतोख नी हो। नुगरापणा सू लोग मायनै रा मायनै चख चख करण लाग्या---

"'मास्तर आयं बरसाळै मालोमाल खेती करावै, टको एक खरच नी करै अर मणावद धान मुफ्त में कवाड लेवै।

"'मास्तर पाउडर रो दूध वेच नाखै उर टाबरिया टापता रैय जावै।

"'मास्तर एस० डी० आई० नै घी रा पाविया पुगावै अर बी० डी० ओ० आवै जद दारू री बोतल तैयार राखै।

' 'मास्तर एलकारां सू मिळ नै गाम रै नाम सू सिमट अर पतरा रा झूठा परमट कटावै अर ऊपर रा ऊपर पैसा खाय जावै।

"'मास्तर पनरै दिन रोवतो फिरै अर छोरा नै आखर एक नी पढावै।

"'मास्तर गाम मे धोडा घलावै अर मुकदमाबाजी करावै।

'' मास्तर नूरिया पिंजारा रै अठै रात-विरात जावतो रैवै अर आधी-आधी रात ताई बैठ्यो करै। नागडी राड चिमूडी ही टी करनै हसती रैवै अर वो सिगरेटां फूकतो रैवै।

रामा वापू रै जीव नै गिरै व्हैगी। ओ सगै हाथा गाम म वडो दुख घालियो। सूती बैठी डोकरी नै घर म घाल्यो घोडो। इमी ठा' व्हैती तो स्कूल रै लारै पावडै-

पावई घूड बाळता। इसी पढाई पात तो गाम रा छोकरा ठोट रंय जावता तो कोई खोटी बात नी ही। गाडर पाळी ऊन नैं अर ऊभी चरैं कपास। पगरखी मुख नैं पेरीजैं। माथा फोडी करनैं स्कूल खुलवाई तो इण वास्तैं ही के गाम रा टाबर पढ लिख नैं हुसियार वर्णला अर गाम रो सुधारो व्हैला। पण ओ तो जबरो सुधारो व्हियो। अवैं करणो तो काई करणो ? अब तो जबरी दैंण व्ही ?

तीन बरसा मे स्कूल में टाबरा री सख्या घटती-घटती च्यार-पाचेक व्हैगी। वैं ई मरजी पडैं जद आवता अर मरजी पडैं जद छुट्टी मनाय लेवता। स्कूल तिकडम बाजी रो अड्डो वणग्यो। गाम में नेखम दो पाटिया पडगी। व्हैता-व्हैता एक दिन इसो आयो के आपसरी में भिडत व्हैगी। लाठिया बाजी अर दो-तीनेक रा माथा फाटग्या। कहावत है के घर घाचिया रा बळैं जद ऊदरा पण भेळा ई ज सिकैं, सो मास्तर मलूकदास पण लपेटा मे आयग्यो अर बळदा रैं खाधैं चढ नैं सफाखानैं पूग्यो।

रात बीत्या दिन उग्यो। आज स्कूल रो झूपो सूनो पड्यो हो अर लगातार तीन बरस सू बोलतो लोडस्पीकर मूडो लटकाया नीबडा माथैं चुपचाप पड्यो हो। नीबडा री टींग माथैं एक भूडो गिरजडो आख्या मीच्या अर नाड नीची किया बैठ्यो हो। नीबडा रैं नीचैं चाय वाळी हाडी अूधी पडी ही अर चूल्हा री राख मे एक पावरियो कुत्तो सूतो हो।

●

# सुरजो नायक

## नेमनारायण जोशी

सुराज काई आयो, बळीतै तख्‍त रो गाव मे टोटो आग्यो। पो'-माह रै इसै ठारे मे सिझ्या री टेम, मिंदर री झालर बाजवा रै सागै जगा-जगा सिगड्या चेत ज्याती। गार सू बणी लूठी सिगड्या मे जाडी-जाडी कठफाडा पो'र रात गया ताणी बळती रैती जठै जुड'र भाई सैण सुख दुख री बाता करता। आज आखै गाव मातर दोय मोतबिरा रै अठै सिगडी चेतै—कै तो सेठ हीरालालजी री दुकान माथै अर कै जीवण चोधरी रै बारणै। काकड मे रूखडा ई कोनी रया, आवै कठै सू बळीतो ? मुरदो बाळवा खातर भी लकडी रो तासो रैवै। अर बिरखा भी गैल रा बरसा मे फोरी घणी रैयी। इदर बावै रै भी, कै बेरो कै आट फस मेल्ही है! गाव री माळ मे चाळीस बेरा चालता, जिका आज चालै खाली पाच। बावी सैं' खोडा होग्या, मझ ऊनाळै जोड मे घास ऊबी रैती गोडा-गोडा'णी जठै नेडा-नेडा गावा रो धन ढूकतो—वठै आज इण गाव री मडकल गाया जमी सूघती फिरै, तिणकलै रो ई काम नी। अर काई धान निपजतो हो ई रा खेता-आवा मे। छोटा-मोटा करसा रै अठै थळ्यामूडै पड्यो रैतो। आज गार री कोठी भी नी भरीजै। घरा मे जाय'र देखो तो नाज हाड्या मे लाधै। काई जमानो आयो देखता-देखता ई। काई बीजळी पडी है' क' राम ई निकळग्यो इण गाव रो तो। करसण री बढोतरी सारू सरकार बापडी खूब ई कोसीस राखै पण धरती ई ऊतर देवै जद काई हुवै ?

ई भात नान्ही-मोटी कातती परमो ढोली कामळी रो खो'ल्यो ओढ्या चोधर्‌या रो गिराळो पार करै हो। माथै मे ची रै कूकडी बणै लागी ही। जितरै तो डावै पसवाडै सू हेलो आयो—"आव आव दमामी, इया काई चाल्यो परबारो ई ? आव हाथ सेक ने थोडा। ठारी बेजा पडै है।"

परमै री कूकडी रो तार टूट'र माय रो माय ताकलै पर डोडो-बाको लपटी-जग्यो। रूई री पूणी भी, कै बेरो कठी नै बिलायगी। जीवण चोधरी री अवाज पिछाणी तो रस्तो छोड'र मेडो आतो बोल्यो—'ठई काई है चोधर्‌या, नांव बूवै है। म्हारी ऊमर मे तो इसी को'जी सरदी हू को देखी नी।'

'देखतो कठै सू ? बुढीजण तो अबै लाग्यो है। आवती साल तनै ओर वेसी लागसी"—अबकाळै मोवन नाई री अवाज ही।

परमो थोडो सो मुळक्यो। नेडो आ'र देख्यो—सिगडी धप्पड धप्पड बळ री ही। खेजडी रा तीन घोचा की वेमी लावा होण सू नीचै जमी माथै तीन पसवाडै टिक रया हा अर बा रा ऊपरला बूगा राता लाल हुयोडा, माथै सू माथो जोड'र लपट री धजा उडाता माह म्हीनै री ठड सू जूझ रया हा।

सामोसाम बैठ्यो हो जीवण चोधरी—घसक्दार पेच रो धोळो साफो बाध्या अर खाधै पर दोलडी कामळ नाख्या। ओस्था पचास नेडी आयोडी फेर भी चैरै रो रोब-दाब देखणै लायक। काना री लोळ ताणी आयोडी कलमा अर भर्‌योडी डक्दार मूछ्या। मूडै माथै तेल पायोडी डागडी जिसी पळपळाट जो मे कदे कदे साम्ही पडी सिगडी रा धपळका दीसै। जीवणै पसवाडै मूगिया रग रो गोळ साफो बाध्या अर खेसलो ओढ्या बैठ्यो हो मोवन नाई। जीभ पर सुरसती बैठती। पण दारू घणी पीण सू चैरो पतळो अर होठ काळूस खायोडा। ई वखत भी वी रै मूडै सू हळकी खस्बू आ रयी। डावै पसवाडै रातै पोत्यै माथै सपेत बर-साती घुघी ओढ्या बैठ्यो हो सावतो गूजर, चाळीस रै लगै ढगै पण गोरी चाम्डी माथै ओस्था री सळा हाल अूघडी नी ही।

अूक्ड् बैठ'र परमो हाथ खोल्यै सू बारै काढ्या अर सिगडी रा धपळका मे बा नै यू उलट-पुलट करै लागो जाणै हाथ नई, बाजरै री सिट्टया सेक रयो हुवै। थोडो निवाच आयो जद ढोडी टेक'र अराम सू बैठग्यो।

सावतै रो घर पक्को बण रयो हो। बी कानी मूडो कर'र चोधरी पूछ्यो—"थारै कमठै रो काई हाल है ? पट्टया चढगी हुसी आज तो।"

"कठै चढगी चोधरी"—एक घोचै सू सिगडी रा खीरा आघा पाछा करतो सावतो बोल्यो—"आज काल रा मजूर न्याल करै है काई। सूरज मथारै आयो जठै ताणी तो हाथ ई नी घाल्यो पट्टया म, जाणै बा रै लारै साप बैठ्यो हुवै। फेर दोरा सोरा हो'र नीठ आठ पट्टया चढाई जिलरै तो दिन तुम्तुर्‌योक रैग्यो। बोल्यो—हुग्यो आज रो काम तो।"

मोवन नाई सू रैणी कोनी आयो। धोती रा चिल्ला साथळा रै पळेट'र गोडा पर खीवतो अूकड् होग्यो। बोल्यो—'है कठै मजूर ? वै साळा दो तो रैगरा रा छोरा अर दो-तीन भाय्या रा। बा रा बाप भी करी कदे मजूरी ? वै च्यार जणा मिल'र, साकळा घाल'र ऊच लो लेवै पट्टी, पण ले र चालै जद हेठानी पगा रा टाट्या लडै। इल्ल्या है इल्ल्या धान री, ज्या नै पीचो तो पाणी निकळै—रगत रो तो लावलेस ई नी है।"

लकडी रा बूगा बळता-बळता छेती खायग्या हा। बा रा खीरा झाड'र माथा पाछा जोड'र खवास फेर सरू हुग्यो—"अर साची पूछै चोधरी, तो इसा मोका माथै

सुरजो नायक याद आवै। होतो आज बिलालो तो अेकलो ई तीस पट्टया—एक विलम पीवा जितरी देर मे—सर्ड···ऽ···सर्ड···ऽ जद ई सरका देतो।"

"अेकलो पट्टी चढा देतो?" सावतं री आख्या इचरज सू चोडी होगी। मोवन नाई रा गोडा आच सू तपग्या हा। दोनू हाथा सू बा नै पपोळतो बो लारै सरक'र की कैतो जी पैली तो परमो ढोली अूक्ड्‌ हो'र सरू हुग्यो—"ओर नई काई दुकेलो! म्हारै रूवरू री बात है। बा कूट दीसै है क—बा सा'जी सा' री हेली बणरी ही। पटटया चढणी ही। कारीगर सुरजो पट्टी झेलबा खातर भीत पर बैठ्यो हो। हेठै च्यार मजूरया कूकरचा री जिया पट्टो सू उळझ रया हा। उडीकता उडीक्ता कारीगर आगतो हुग्यो। सेवट खाय बूबळ'र हेठै कूद्यायो अर धोती रा खोजा टाकतो बोल्यो—परै हो ज्याओ रै नाजोगा! सात दिना रा उवास्या हो काई।' भाठो ई है, सीसो तो है कोनी! आघी मेल्हो थारी अै साकळा-फाकळा अर बैठ ज्याओ एक कानी।

'डील मे वी रै के बेरो भैरूजी आया कै हडमानजी, आडी पडी जोधपुर री बारा फुटी पट्टी रो एक वूगो दोनू हाथा सू पकड'र बी नै हळै दे सी जमी पर अूभी कर दी। फेर मुड परो'र अूभा हाथा सै पट्टी री कोरा गै'री झाली अर जोर री एक 'हू' रै मागै मगरा रो झालो दे'र अूच ली। आदमी काई हो बजराग हो। नान्हा-नान्हा पावडा मेल्हतो लदाण पर आधो ई कोनी चढ्यो, जी पै' ली पट्टी रो आगलो बूगो उतराधी भीत माथै टेक दियो। फेर पाधरो हुय'र लारलै वूगै नै—चद्दर पकडै ज्यू पक्ड'र दिखणाधी भीत पर मेल्ह दियो। आधी कलाक ताणी बा 'हु'-हु' होती रई अर पट्ट्या सटाक सटाक मिल्हीजती गई। मजूरया सास रोक्या, साप सूघ्योडा सा चिरवळ चिरवळ देखता रया। पूरी बाईस पट्ट्या मेल'र पसीना सू न्हायोडो बो बारलै नीमडै री छिया कानी चाल्यो जद बी री साथळा री फूल्योडी मछल्या रो सळसळाट देख'र लोगा रो जीव धाप्यो। चूनै रा खाली तसळा माथा पर लिया सागै काम करवाळी डावडचा रो मन तो डोलरहीडै चढग्यो।

घर-धणी सा'जी सा' खुद एक सो इग्यारा लबर रो तिलक लगाया मो' की देख रया—ओ 'ऽ डीघो पूजतो अर आ···ऽ चोडी छाती जिको इण बखत सास रै समचै वी'त ऊची-नीची हुयरी, भर्योडै चै'रै पर अै···ऽ मोटा-मोटा आख्या रा डोळा ज्यारा मायला डोरा गै'रा लाल हुयोडा, पीड्या, साथळा अर बूकया माथै जाणै पीड मेल्योडा हुवै, पेट माय बैठ्योडो अर पतळी ना'र जिसी कमर, लीलै भाठै सू कोर'र जाणै मूरत काढी हुवै, जाणै खराद पर चढा'र उतारयो हुवै, इया वो सरूप लाग रयो। आगै आ'र सा'जी सा'बी माथै थुथकी नाखी अर मगरा हाथ दे'र बोल्या—धन है भाई सुरजा तनै। तू इण गाव रै पाणी री लाज है! बडेरा कैता आया है कै नर री पीडी रो मोल नी अर आदमी री तागत रो कूतो नी, सो सुणी तो कई बार पण अरथ आज समझयो हू।

चोधरी भी देख्यो अर तारीफ करी। घी पास हूग्यो।

"लारलै पसवाड़ै सुरजो भी बैठ्यो हो ओग रै सागै। बी सू रैणी कोनी आयो। मगजी सू पूछ्यो—ईं चरी मैं कितरो'क घी है जजमान ? मगजी काल री रीस दाब्योडा बैठ्या हा। मुड परा'र बोल्या—पूणी'क च्यार सेर है। क्यूं'''ऽपीणो है काईं ?

थे कैवो तो पी लेस्या।

दस्ता छूट जायली, दस्ता।

एक'र जाऊ जजमान जिको तो जाऊला ई। दूजी बार लोटो उठाऊ तो हाथ पकड लीज्यो।

ले, पी '''ऽ जद बताऊ।

"सुरजो ऊठ' र आगै आयो। एक करी न दोय, उठा चरी'र मूडो टेक्यो जिको गटक-गटक-गटक'''खाली हुया ईं आघो करयो। बी बखत मगजी रो मूडो देखो तो जाणै थाप खायोडो।"

परमो धुओं छोड'र चिलम मोवन कानी आघी करी। दोनू हाथा मे चिलम ढाब'र मोवन सफ-सफ करतो एक जोर रो सफीड लगायो अर धुअै नै काळजै मे उतार लियो जठै सू बो होळै-होळै, रमतो-रमतो ऊचो आ'र नाक रै रस्तै बारै निकळतो रयो।

चिलम झेलता जीवण बोल्यो—"हू तो रात पडया मेडतै सू पाछो आयो जद सुणी कै सुरजो तो अज दारू पी'र मरग्यो। बो तो इसो पीवतो भी कोनी हो, फेर आ बात बणी किया ?"

"अजी जोग टळै है काईं ? दिनूगै राजी-खुसी कमठै माथै चाल्यो जद कुण जाणी ही कै बी रो आज रो दिन आयैलो नी। घर सू निकळता ई गढ रै दरीखानै मे बैठ्या ठाकर बारी सू ई हेलो पाड लियो— आव रै सुरजा, आव ! कमठै माथै तो रोजीना ई जावै एक दिन नागा ई सई। सुरजो जाणग्यो कै आज तो ठाकर दिनूगै सू ई बोतलडी खोल ली दीसै। गढ री ड्योढी मे बी रा बाप-दादा पीढ्या सू रैता आया जिको बेराजी किया करतो ठाकरा नै ! मझ दोपारा गढ सू निकळ'र घरे आयो तो आख्या रा डोरा राता-लाल हो मेरया हा। क्यू नईं बी बखत ई, वी रै छोरै रै सगपण री बातचीत करण सारू कडेल सू पावणा आ जावै। एक दिन आगै-लारै कोनी आ सकता हा काईं ? पण जोग पीणो हो।"

चिलमडी आटो काट'र फेर मोवन कनै आगी ही सो फूक खींच'र आघी करी अर आधेटै छूटयोडी वात रो तार पाछो पकड लियो।

'भावै ई जोग हू बठी सू निकळयो। सुरजो मनै नेडो बुला'र कयो कै गोळ झूपै मैं दो माचा ढाळ दे अर छान मे अू ल्या'र पाणी री मटकी मेल्ह द। हू अै काम निवेड् जी पैली तो बो कलाळ रै घर सू—नेडो ई तो रैवै है—बोतला नारगी री

लियायो। एक माचै माथै दीनू पावणा बैठग्या अर दूजोडै माथै सुरजो अेकलो। बठी नै छान मे रोटचा री त्यारी हो रयी ही, जठै सू एक बाटदै मे तीन-च्यारेक कादा वट'र आग्या। हू चालवा लाग्यो जद बोल्यो—बैठ बैठ, जावै कठै है? खोल बोतलडी। बोतल खोल'र हू पावणा कानी आघी करी। होळै-होळै मैफल जमगी।''

'एक बोतल निठी जितरै पावणा तो तन्नैट होग्या अर हाथ जोड लिया। म्हारी जीभ भी आटो खावै लागी अर माथै मे चक्रीहीडो चालग्यो। सुरजै री आख्या रा डोळा—अै खीरा है'क मिगडी मे—इसा राता-लाल होग्या। म्हारै कानी देख'र सुरजो कह्यो—खोल रै मोवन दूजोडी, पावणा री मनवार तो हाल करी ई कोनी। हू कयो कै पावणा तो अबै कोनी अरोगै अर थे भी अबै रैवादचो। घी री चरी कोनी है कै '।

'निजर काईं घुमाई, दो बळबळता खीरा म्हारै चैरै माथै मेल्ह दिया। हू माय ताणी धूजग्यो। म्हारै हाथा नै बोतल खोलणी पडी अर पावणा री मनवार करणी पडी, पण बै क्यू पीवा लाग्या? मूडो चेड-चेड'र बोतल सुरजै कनै पुगा दी। आपा बळदा नै नाळ देवा हा'क, जिया बो अूपर सू ई डग-डग-डग आधी'क बातल मूडै मै अूधा ली अर बोतल मनै झलातो बोल्यो—ले पी'' ऽ। तनै थारै मानै जिका री आण है नी पीयी तो। फेर एक बीडी मिलगा'र माचै पर आडो होग्यो अर गाणो गावै लागो। हू देख्यो कै ईं नै नीद चिप ज्यावै तो चोखी, पण कुण जाणै हो कै बो तो बडोडी नीद री उडीक म हो।

"पाछो अूठ'र बैठ्यो होग्यो। कोई की कैवै जी पैली तो बोतल उठा'र बच्योडी दारू भी पधराली अर खाली बोतल नै गुडका दी। म्हे तीनू जणा डरग्या अर म्हारो नसो उतरै लाग्यो। अचाणचकी बोल्यो—अरै मोवन, म्हारै माथै मे ओ ढोमडो चालै है जिको तो ठीक, पण ईं री पाटी बाइपुन्नी आ घडी-घडी में पडै है'क खटी'' ऽड, खटी '' ऽड—ईं नै परी तोड'र बगा रै। म्हे देख्यो कै ओ सीत मे आयोडो हो ज्यू विया बोलै लाग्यो। जितरै तो कुडत्यै नै खोल'र बगा दियो अर बोल्यो—ओ मटकी म्हारै माथै अूधा दे, बळत फूट री है आखै डील मे।

'मटकी रो पाणी माथै पर आवतो नी दीख्यो जद बो माचै सू अूठ्यो पण खा गरणाटो'र पाछो बैठ्यो। फेर अूठ्यो, अर झूपै रै बारणै सू निकळ'र साम्हलै को'र रै बेरै रै कोठै कानी चाल्यो—अधरपगा, डावै-जीवणै हीडा खातो—जाणै बायरै मे रुई रो चूखो उड रयो हुवै—जाणै आधी रा फटकारा मे पाया री मिटोरो गैलो सोध रयो हुवै। कोठो तो कोठो, मेळी ताणी भी कोनी पूग्यो हो कै आख्या पर काच फिरग्यो। सेळी रै बारलै खाबूच्यै रै कादै-पाणी मे गडूरडा रमै हा ज्यारै बीच मे जा पडयो धडी ''ऽम। डरपोडा गडूर कादो उछाळता बारै भाग्या। बा मे सू दोयेक खाबूच्यै रै माकडा अूभा थोडी देर ताणी 'चू चू' करता ग्या जाणै कैवता हो

की ठाम खतम होज्या।"

—' तो अस्यो ऊ थैला में काई धन छो।" एक जणा नैं पूछी।

"म्हा गरीबा को काई धन काई दौलत ! एक सेर आम्बा, च्यार आना का तीन सेलकणा, बीडी का तीन बिंडल, दो दयासळाई।"

— 'तो तीन कोडी की चीजा कै बेई अतनी बार मू माथो का खा री छैं।"

थोडी सीक देर वा की बाता सुणी तो सारी रामकथा समझग्यो। डोकरी एक घटा प्हैली की मोटर में आर बैठी छी। मोटर चालबा कै थोडी सीक बार प्हैली अपणी पोटळी सीट पै धर'र पाणी पीवा उतरी अर मोटर चल दी। ऊ की पाटळी वण्यो थेलो भी ऊ मोटर की लार केयूण की जात्रा प रवाना होग्यो। वा हाका पाडती री अर मोटर कै पाछै भागती री।

—'पाछी आती बगता वा मोटर ईं मोटर सू बीचा में मलै छै" एक जणो बोल्यो, "तो डलेवर सू कहैर मोटर रुकवा लेगा। थारा थेला को काई भी न्ह बगडै तू छानी तो होजा।"

बना कोई कै बताया ई एक मरद नैं डलेवर पै हुकम चलाद्यो, "डलेवर साब ! आवती मोटर नैं रुवा'र पूछज्यो के एक थेलो तो न्ह मल्यो।"

—"कसी बाता करो छो भायाजी।' आगली सीट पै सू एक सजी-धजी सीक लुगाई बोली। 'खावा की चीज नैं कुण छोडै छै।"

डोकरी की आख्या मे पाणी उतरयायो, मूडो रोवणो-सोक होग्यो। म्ह नैं ऊ का मूडा पै ममता की तसवीर दीखी। "धणी हू कर' र पोता पोत्या कै बेई आम्बा लाई छी बना साब।" ई सू जादा वा काई भी न्ह बोल सकी। म्ह नैं आज देख्यो के एक किलो आम्बा भी कोई को सबसू बडो धन हो सकै छै।

धोळी फकूक धाबती पहर्‌या, म्हारी ई नाई एक टाग पै ऊबो एक सेठ सोक दीखवा हाळो आदमी बार बार कह र्‌यो छो 'देखो ई डोकरी नैं ! आठ आना का आम्बा में गळ घाल राख्यो छै। म्हा की ई मोटर में केई बार हजारा रप्या की जेबा कटगी पण कोई न काना कान खबर न्ह होवा दी।"

म्ह नै या वात मल की नाई लागी पण डोकरी नैं ई को बरो न्ह मान्यो। उस्या ई रोवणी सूरत बणा' र बोली, म्हाका आठ आना ई हजार रप्या छै बना साब।" म्ह नै भीतर या दोन्यू तस्वीरा नैं परख' र रोवो आग्या।

—"ऐ ! बना साब ! पाछी आती मोटर नैं रुकवा'र पूछ ज्यो जी भाया," 'वा ऊ सू बोली जी नैं प्हैली डलेवर कै ताई मोटर रुकवाबा को हुकम द्यो छो। डोकरी की आख्या में याचना की अमी झलक छी ज्यो म्ह नै ईं सू प्हली न्ह देखी छी।

—"मल ज्यागो माई" कह'र ऊ अपणी बाता में लागग्यो। आस-पास का लोग अपणी-अपणी रामक्याण्यां मे उळझग्या र्‌या। ई मोटर म गमवा हाळी चीजा का

किस्सा खुलवा लाग्या।

—"परार नै स्याळा में म्हू भैंस्या बेच'र पाछो जा र्यो छो। थेला में कडक नोट छा, साढा तीन हजार। नाडा छोड करबा उतर्यो तो मोटर चाल दी। उठ'र भागवा की कोसीस करी तो धोवती भी भीजगी अर मोटर भी न्ह रुकी।"

—"फेर!"

—"घणी पूछताछ करी पण जद को दन छै अर आज को दन छै। कोडी की भी खबर न्ह लागी।"

—दूसरी लुगाई बोली "केथूण को हटवाडो कर'र पाछी आती बखत एक बार म्हारी एक गाठ जी में कोई डोढमो का लत्ता झीतरा छा, अम्या की अम्या ई सीट पै छूटगी जी का आज दन ताई पता न्ह चाल्या।"

—"हाल तो म्हीना दो तीन की ई बात छै।" एक जणो ओर कहबा लाग्यो। "एक दस किलो खाड को थेलो ईं मोटर में सू गम्यो जे अब ताई न्ह पायो।"

ज्यू-ज्यू एक सू एक ख्याणी सुणती, डोकरी का मन पै एक कील ठुकती जी की पीडा की लकीरा ऊकी आख्या अर ऊका माथा का सळा में उतर्याती। आधा स जादा लोग सोचवा लागग्या छा के डोकरी को आम्बा को थेलो चलीग्यो जे चलीग्यो पण फेर भी बसवास द्वावा हाळा ऊ नै बसवास द्वाता र्या अर मोटर पूरी घर्राटो करती चालती री। बीचा में तीन-च्यार जणा नै कन्डक्टर अर क्लीनर सू भी आवती मोटर रोकबा की बात कह दी।

आज म्ह नै देखी के हजारा रुप्या सू ममता का एक किलो आम्बा कतना महगा छै। डोकरी की आख्या में एक किलो आम्बा कै सस लुटी ममता म्हारा मन नै रुवाणवा लागगी।—आज जद या डोकरी ग्वाडी में पग धरैगी तो आगणा में कलकारी करता पोता-पोती "आगी-बा-आगी।" कर'र नाचबा लाग ज्यागा। "बा काई लाई, बा काई लाई! पूछ-पूछ'र फाटी सीक सावली का खूट हेरवा लाग ज्यागा। "बा म्हारा सेलकणा—बा म्हारा आम्बा" कह'र वै डोकरी कै लूम ज्यागा।

एर सपनो मोर आयो अर म्ह नै डोकरी अपणा पोता-पोत्या सू बधी रोवणी सूरत बणाया आगणा में ऊभी दीखी। माथा की रेखा अर गाला की लूलर्या सू नेर आख्या की ललाई अर होटा का सवळास ताई सारो ममार गम जाबा को गम देख्यो। "बा काई लाई?—बा काई लाई?" करता अर लीरडा-लीरडा होयी माकरी सू लूमता बाळा देख्या।

मोटर नै 'पो पो' की आवाज करी अर एक झटको दे'र ठहरगी। दूसरी मोटर बगल में ऊभी छी।

—"ऐ बना साब! देखा पूछो जी" डोकरी असी उतावळी होगी कै सडकी कै नजीक होवै तो डाक ज्या।

—'क्यू भाई ! कोई छोटो सोक थेलो तो न्ह मल्यो ई मोटर मै ?" ऊठी का डलेवर नै उठी का डलेवर सू पूछी। मिनट-भर बेई सारी मोटर में सुन्न खचगी जस्या जीत हार को फैसलो होणो होवै।

ऊठी की मोटर का डलेवर नै काई क्ही या वात घणाक लोगा कै सुणवा में न्ह आई। अलबत्ता एक जणो हाथ में मछलाद्यो सोक थेलो लेर सामली मोटर में सू आयो, "कुण को छै यो खजानो।"

—"*म्हारो छै बना साब, वह'र डोकरी अधखुली खडकी में सू लपकी।*

मोटरा चाल दी। थेला में आम्बा टटोळती डोकरी म्ह नै असी लागी जस्या साच्याई ऊकै ताई खजानो मलग्यो छो।

●

# चिगळ्योड़ा हाथ

## वी० एल० माली 'अशांत'

' बाबू, आ हाथा नै कुण चिगळ्या जावै है ! पैल्या सू काम जादा करा, फेर भी पैल्या जित्ती चीजा कठै मिलै ! पैल्या सू घटिया मिलै वै ओर ! चोखी चीजा नै राम जाणै कुण खातो जा रैयो है ! काई हुयग्यो इण टेम रै !"

ब्यासजी परमा री बात वात सुण'र उणरै मूडै कानी देखै लाग्या। वा नै अचूमो हुयो कै जिणनै लोग-वाग गैलो कैवै, वो आज काई बात कैयग्यो।

उण रै चैरै मू निजर परी कर'र सोचता थका वै बोल्या, ' महगवाडो है नी परमा, बस ओ ही खातो जाय रैयो है आदम्या रो काळजो अर कर्योडो काम !"

बाता करता थका दिन आथणं लाग्यो। सिरस माथै बोलता चिडी कागला नै देख'र परमो बोल्यो, ' बाबू सिझ्या पडगी। आज तो बाता में बेरो ही कोनी पड्यो।" कैवतो थको वो उठ'र चाल पडयो। सीकरआळी सडक माथै वो लगडातो चाल्यो जावै हो। आगै भगिया रो वास हो, वो उठीनै ही मुडग्यो।

परमो पाच जमात ताई पढ्योडो हो। पण जद वो थोडो सभळवा लाग्यो तो अेक पर अेक मुसीबता आय'र वी नै पाछो नीचै नाख दियो। बिचारो इण दुख में आपरो आपो ही भूलग्यो।

अबै तो उणनै आपरै नाव सू ही चिढ हुयगी ही। वास रा छोरा जद बी नै परमानन्द कैवता तो वो बा रै लारै भाजतो कदे-कदे तो भाठा री भी मार देवतो। लोग वाग बी नै गैलो समझ्या करता।

धोळी-काळी दाढी ! पिचक्योडा गाल ! फाट्योडी गजी जिण रै सत्तर वेज ! अैडी ही फाट्योडी पुराणी टेम री पैन्ट, जिणरै गोडा नीसर्योडा, दोनू कूल्हा पर दो कारी। सिर पर चिडया रै आळा ज्यू उळझ्योडा बाळ, अळसायोडा होठ। अेक पग माय खोड। ओ हो परमानद।

जात सू वो भगी हो पण वो कदे भी मैलो उठावण रो काम नी कर्यो।

बीरी लुगाई तो कद री ही गुजरगी ही। वा मरती टेम अेक छोरी छोडगी ही, जिकी रा लारली साल बीरो भाईफेरा कर दीन्या हा।

जद सूं परमै रो चित्त खराब हुयो, उणरो भाई मिरच्यो ही घर संभाळ्यो। छोरी नैं पाळणैं-पोसणैं सूं लेय'र ब्याव ताईं रो खरचो वो ही कर्यो। आही नी, भाई री रोटी-पाणी री चिन्ता-फिकर भी उणनैं ही रैवती।

परमो आखै दिन गांव में रमतो। भूख लागती तो घरां आय'र रोटी खाय लेवतो अर पाछो बारै चल्यो जावतो। चाय-पाणी रै पीसा खातर वो कदे भी आपरै भाई नैं नी सतावतो। जे कोई सोच परमा नैं हो तो वो फगत चाय-पाणी रो हीज हो।

अमल-पाणी रै पीसा खातर वो लकड़ी फाड़या करतो। वा भी पैंतीस पीसा सूं जादा री नी। पच्चीस पीसा री चाय अर दस पीसा री बीड़ी बी नैं चावै ही। ओ ही परमा रो खरचो। अब जद महंगवाड़ो हुयग्यो हो तो वो की जादा काम करतो। पण पचास पीसा सूं जादा रो नी करतो। जिकी चाय पैल्यां पच्चीस पीसा में मिल जावती, उण रा अबै पैंतीस पीसा लागै लाग्या। दस बीड़यां रा दस री जगा पन्दरा पीसा लागै लाग्या। परमा नैं ओ बडो अखरतो। ब्यासजी कैया करता कै— पैल्यां वो बडो सोकीन हो। मुन्सपालटी में नोकरी करतो, चोखा गाभा पैरतो अर साफ-सुथरो रैया करतो। उण वखत बी नैं देख'र कोई आ नी कैय सकतो कै ओ भगियां रै है। पण आज।···

ब्यासजी कनैं परमा री सदा सूं ही उठ-बैठ ही।
हळवा-हळवा पग मेलतो सांझ चालतो आवै ही। परमो ब्यासजी कनैं बैठ्यो बातां करै हो।

"···बावू, पैल्यां पैंतीस पीसा कमावतो तो चाय भी चोखी मिलती अर बीड़यां में भी जरदो ठीक आवतो, पण आज पचास पीसा में भी वै चीज कोनी मिलै। सास लेय'र वो बोल्यो, "मिलै कठैऊ, वै चीजां अब रैयी ही कोनी। वै आदमी ही कोनी रैया। थोड़ी ठैर'र वो ओजूं बोल पड्यो, "मेरै आ समझ में कोनी बैठै कै ओ पन्दरा पीसा जितरो बधीक काम किणरै वास्तै करणो पड़ै। वो ओजूं ठैरग्यो अर फेरूं बाल्यो, "गिनजी महाराज कैवै कै चाय मैंगी हुयगी, लकड़यां रा दाम पैल्यां सूं जादा लागै, चीणी रा दाम चढग्या · दूध में पाणी आवै लाग्यो···अै बधीक पीसा अर बढिया चीज कठै छूमंतर हुवै, की ठा' नी लागै"। चिलम रा गुल झाड़ता ब्यासजी बोल्या, "तू ठीक कैवै परमा, सारी चीजां नैं महंगवाड़ो खातो जा रैयो है। गायां रो गुवार महंगो हुयग्यो, गिनजी महाराज रो खरचो बधग्यो·· " "मनैं तो बावू, ओ सारो दोस सिरकार रो लागै। आ बात भी है।"

सास लेय'र सूं देणी सी बारै काढतो, वो बोल्यो "मेरै तो जचै, सिरकार आदमी सूं काम ले लेवै अर रोटी-गाभा दे देवै।"

'पण परमा, मोटा आदम्यां रो ओजरको किया भरैलो !"

"लोग कैवै हा नी कै बहुमत रो राज है। आपणै देस में तो गरीब जादा अर

पीसा'ळा कम है, बाबू !" "ओ भरम है, परमा ! अठै तो थोडै मत आळा रो राज है। बहुमत रो तो फगत नाव है। गरीबा कानी कुण देखै रै परमा ! अै राज-वाज करणिया काई गरीब है ! फेर अै गरीब रै वास्तै क्यू सोचै ? बहुमत रो राज गरीबा नै गरीब बणावणै वास्तै बैठ्यो है, परमा ! ऊचा तो पीसा'ळा ही उठैला। गरीब तो गरीबी रै नीचै दबतो जावै है अर दबतो ही जावैलो रै।"

' जद इसी बात है तो सारै गरीबा नै अेक हुय जाणो चाहीजै, बाबू।"

"काईं अेक हू ज्यावै परमा ! टाबरी पाळणै मैं ही टेम कोनी मिलै। रोट्या रो सोच ही सिर सू नी उतरै।"

"जद ही पोल ल्हाद मेली है, बाबू ! पण आ बतावो कै गरीब नै कद न्याय मिलैलो।"

"परमा, बुराई कदे भी घणा दिन नी चाली है। कदे बुराई रो भाडो फूटैलो। कदे मानखो चेतैलो रै परमा !"

परमो की बोलतो, इतरै मे मगतू खटीक आयग्यो। परमै कानी देख'र वो बोल्यो, "थोडी लकडी फाड दे रै परमा ! तेरली काकी लक्डया बिना खोटा भुगतै है।"

"आज नी काका।"

' क्यू रै परमा ?"

"आज री ध्यानगी पकगी कारा, काल फाड देवूला।"

"भूल मतना जाजे।" इतरी कैय'र वो पाछो मुडग्यो।

परमो बोल्यो, "बाबू, आज तो भोत मोडो हुयग्यो।" उत्ती कैय'र वो उठग्यो।

ब्यासजी चिलम रा धुवा उगळै हा।

परमो गिनजी महाराज रो पूगतो गिरायक हो। मेह आधी अूक जावै पण परमो नी अूकतो। गिनजी कनै उण री उधार भी चालती।

लारलै सात आठ दिना सू परमा नै कोई काम नी मिल्यो। वडो उदास रैवै लागो वो। चाय री टेम हुयगी ही। ब्यासजी रै कनै सू अूभो हुय'र वो चाल पडयो।

गिनजी महाराज री दूकान माथै वो मूडो लटकाया आय'र अूभो हुयग्यो। गिनजी महाराज परमै नै दूर सू ही देख लियो हो। कनै आय'र खडयो हुवता ही वै कैयो, "काईं देखै है परमा, जा तेरो कोप उठाल्या।"

चाय पीय'र वो पाछो कनै आयो तो गिनजी महाराज वडळ मे सू दस बीडी काढ'र बोल्या, "लै !"

परमो धोबो माड लियो।

बीडी लेय'र वो लगडातो चाल पड्यो।

गिनजी रा इया करता-करता कोई पाच रपिया चढग्या। पण वै कदे भी नी कैयो कै परमा पीसा दे रै। परमो कदे खुद ही कैय देवतो—आपरै पीसा रो जुगाड बेगो ही करूला, महाराज ! तो गिनजी उणनै कैय देवता—तेरा पीसा कठै जाय है, परमा। ओ छोटो सो पड़ूतर गिनजी उण नै देवता।

दोपारी री टेम ही। परमो डाकखानै आळी गळी सू नीसर'र सीकर आळी सडक माथै आयग्यो हो। सडक रो डामर तप'र पिघळनै सू जूत्या रै चिपै हो। असवाडै-पसवाडै ताती धूळ सू झळ उठै ही। सामै तमतमाट करतो तावडो इया लागै हो जाणै कोई बासते बरस रैयी हुवै। परमो आगै चाल्यो जावै हो। जद वो कानजी सेठ आळी होली कनोकर जावण लाग्यो तो पोळी मे बैठ्यो सेठ उणनै हेलो दियो—"लकडी फाडै है के।"

हेलो सुण'र वो पूठो मुड'र देख्यो तो सामै खाट माथै बैठ्यो सेठ निजरया पडयो' अर उणरो गळो सूखग्यो। वो उणरै कानी देखै हो, जिया भूखो बळद बैरू कानी देखतो हुवै। चाणचुकै उणरै की बात ध्यान मे आई, तो वो चिमकतो सो बोल्यो, "फाड देस्यू।"

सुणता पाण सेठ उठ'र खडयो हुयग्यो। बारलै बाडै पडयोडी लकडया कानी हाथ कर परो बो बोल्यो, "अै है ! देख ले !"

भीत कनै दो बडी-बडी पेडी पडी ही। बीनै वै इया लागी जाणै दो आदम्या नै हाथ-पग काट-काट इण दोपारी म सडक रै छेडै गेर दीन्या हुवै। कनै पडया डाळा बी नै कटेडा हाथ-पग सा लाग्या। वो देख'र बोल्यो, 'काल फाड देस्यू।"

"आज ही फडवाणी है।"

"तो अेक फाड दयू ?"

"फडवाणी तो सारी है।"

"बाकी काल फडवा लीज्यो !"

"आज फाडनी है नो बात कर नही स ओ गैलो पडयो !"

परमा रा नी जाणै क्यू पग टोड ही रपग्या। बो बोल्यो, अच्छ्यो तो खुवाड ले आवू।"

'खुवाड तो पडी है, बता काई लेसी।"

"दे दीज्यो हिसाब देख'र।"

"तू ही बता दे ! हिन्दू कहतो सरमावै, लडतो कोनी सरमावै, सो पैल्या ही खोल'र कह दे।"

"बीस रपिया लेस्यू।"

"राम ! राम ! बीस रुपिया ! च्यार रपिया रो काम कोनी।"

"तो सेठ दस रपिया देस्यू, फडवादे !"

"मनै तो फडवाणी है। बोल फाडै तो रपिया पाच देस्यू !"

"इया मत करो सेठा। भौत मैनत है। थोडो छाती पर हाथ मेलो!"

"तो पावली ओर लेलीजे।"

"थोडो मन मे विचार करो।"

"साढे पाच रुपिया दे देस्यू!"

परमा रै अेकर तो जची कै पाछो मुड जावू पण न जाणै क्यू बीनै बी रा पग साथ नी देय रैया हा। ठेड खडयो ही वो बोल्यो, "अच्छया ठड हुया फाड देवूला।" सेठ *अच्छया* रो नाव सुण'र हसतो थको बोल्यो, "आगै ही साढे पाच रुपिया बोहला दे दीन्या। अवै ही फाड-फूड नक्की कर। अरै ओ पीथा! ओ ऽऽ पीथा! माय सू खुवाड लेय'र आजे।

परमो बीच मे बोल पडयो, "सेठा, इया क्यू तावळ करो हो। मैं अबार ही रोटी खायावू हू, पाछो आय'र फाड देवूला।"

"रोटी अठै ही खाले, परमा, काई फरक पडै है! तेरो ही घर है।" कनै खुवाड लिया खड्ये पीथा नै सेठ कैयो, "जा, माय सू साग अर रोटी ल्यादे।"

परमो बैठ्यो रोटी खावै हो। ज्यू ही पीथो डाळा लेय'र कनोकर नीसर्यो कै गासियो बी रै कठा मे अटकग्यो। उणनै हिचकी आवै लागी। सेठ हिचकी लेवतै नै देख'र बोल्या, "ओ पीथा! पाणी प्या। देख बिचारै रै रोटी अटकगी।"

पाणी पीय'र परमो खडयो हुयग्यो।

मज्झ दोपारी अर कीमी री लक्डी। ठै-ठै री आवाज सू धरती धूजण लागगी, पण सेठ रो काळजो कोनी हाल्यो। उण रै मूडै सू आ भी कोनी नीसरी कै परमा थोडो पाह्रो लै-लै रै।

उणरै माथै सू कळ-कळ पसीनो बैवै हो।

होठा पर फैफडी आयगी ही बी रै। पण वो लक्डया सू बायेडा करतो ही जा रैयो हो अर सेठ दो-च्यार डाळा रो नाव लेय'र चेजो चिणावतो जा रैयो हो।

मुन्सपाल्टी सू आवता व्यासजी री निजर जद पसीनै मू हळा-बोळ अर टूटतै परमै माथै पडी तो वै बोल्या, "क्यू आज मरणै री जचा मेली है के? थोडी टेम-टाळ'र तो बिलगतो? खुवाड री सायरो लेय'र परमो खडयो हुयग्यो पण उणरै मूडै सू जवान नी उपडी।

परमै री आ हालत देख'र व्यासजी सेठ पर जाड पीस'र बोल्या, "ई दोपारी मे बिचारै गरीब री जान लेता तनै सरम कोनी आवै?"

"है है महाराज, मैं काई करू! इणनै पीसा चायेहा।" ओठा परमै कानी देख'र वै बोल्या, "चाल घरा! मर ज्यासी ई दोपारी री लाय मे! थोडी टेम देख'र काम कर्या कर।"

परमो खुवाड छोड'र चालण लाग्यो तो सेठ बोल्या—"कोडी नी मिलैली परमा! लक्डी फाड'र जावैलो जद ही पीसा देवूला।"

"सिझ्या फाड देसी।" व्यासजी बोल्या।

"ईं नै फोडा पडसी, मैं कोई दूजै सू फड़वा लेवूला।"

परमै रा पग ठोड ही रुपग्या। बीरै मूडै सू नीसरयो—"बाबू, मैं फाड'र आवू हू। थे चालो।"

"फाडनी ही पडसी परमा। काई जोर करैलो। इण जियालका दुस्ट लोग ही आदम्या रा हाथ चिगळ्या जावै है।"

आ सुण'र वो पाछो काम मे लागग्यो। चिलचिलातै तावडै मे परमो झाग गेरतो जूझै हो। गिरमी रै मारयै बी री आख्या मीचीजै लागी पण वो आधो हुय'र बिलग मेल्यो हो।

व्यासजी कोई घरा ही पूग्या हुवैला कै परमो तावडै मे तिवाळा खाय'र तडफतै बळद री दाई पडग्यो।

सेठ री निजर पडी तो बो कूक्यो, "अरै पीथा भाज!"

पीथो आयग्यो। जद बी री निजर मूडै मे झाग आयोडै परमै पर पडी तो वो बी कानी भाज्यो अर उठाय'र पोळी मे ले आयो। वो बोल्यो, "बेहोस हुयग्यो, सेठजी!"

"ठीक-ठीक, तू परै रैय। भीटसी।"

पीथो सेठ रै मूडै कानी देख'र बैदजी रै घरा कानी लपक्यो। थोडी ताळ पछै तो वो बैदजी रै लारै-लारै आवै हो।

बैदजी परमा नै देख'र बोल्या, "डरणै री बात कोनी। तावडै मे थक'र पडग्यो।" पेई सू सीसी काढता परा बैदजी फेरू बोल्या, "सेठजी था नै भी तो बिचारै पर तरस खावणो चाहीजै हो। तावडै मे नी बिलगाणो चाहीजै हो। गिरमी री टेम है, ध्यान राखणो चाये। कदे कोई रै की हुयग्यो तो गळै म आज्यावैली।"

दवाई देय'र बैदजी जावण लाग्या तो सेठ गोज्या मे सू पाच रो कडपदार नोट काढ'र बोल्या, "ल्यो बैदजी!"

"रहबादे सेठ, बिचारो गरीब आदमी है।"

"थानै ता मै दे रैयो हू।"

"वो तो ठीक है पण••।"

"गरीब है तो कोई बात नी, अै तो ल्यो।"

बैदजी रै गया पछै परमै नै होस आयो अर वो आख खोली। उणनै देख'र पीथै रो चैरो चमकै लाग्यो। अबै बी रै ज्यान मे ज्यान आई ही। परमो बैठ्यो हुयग्यो। सेठ बी रै हाथ मे पचास पीसा मेल परो बोल्या, घरा जा अर आराम कर।"

"पाच रुपिया।"

"बैदजी लेयग्यो।"

"बैदजी लेयग्यो। क्यू?"

"अबार मर जावतो जणा कुण मेरो बाप उठावतो !"

"तो आ बात है, सेठ !"

"हा।"

"तो ल्यो ! अठन्नी सेठ कानी कर'र वो कैयो—थानै वैदजी नै बुलाणै मे वस्ट हुयो होसी वी री मजूरी !"

परमो अठन्नी खाट पर मेल दीनी अर उठग्यो।

सेठ उठाय'र आपरै गोजियै मे घाल लीनी। पीथो सेठ रै मूडै कानी देखै हो।

# असूलां खातर

## बैजनाथ पवार

होस्टल रै बारणै आगै छोरा री भीड बिचाळै अेक अधखड लुगाई ऊभी। फाटघोडा, कोझा अर सूगला पूर। पगा माय लिपतरा अर हाथा माय काळै रग रा दोय-दोय बिलिया। बीडरघोडी-सी अठीनै-बठीनै जोवै।

कालेज रा छटघोडा छोरा। बापडी डोकरी नै मखोला माय उडाय राखी। उणसू रिगलो करै अर फोटू उतारै। अेक बूझ्यो "ताई अठै कीकर आयी? किणनै बूझै?"

"सावरो कठै।"

'कुण सावरो? काई काम करै बो?"

"मेरो बेटो है अठै कालेज माय भणीजै है।"

"पण अठै तो कालेज माय सावरै नाव रो कोई छोरो कोनी।"

"तो कठै गयो।"···डोकरी उळझाड माय पडगी।

अेक कुचमाधी छोरो सिगरेट रो धुवो काढतो उणरै ओढणियै रै पल्लै नै ऊचो करतो बूझ्यो "ताई, इण पल्लै हेटै काई दाब राख्यो है?"

पल्लै नै काठो करती डोकरी बोली "ओ तो सावरै खातर परोसो ल्यायी हू। आज सावरै रै काकैजी रो मराध है। सावरो घरा पूग्यो कोनी—दिन ढळता-लग तो उडीकती रैयी, पण वो कोनी पूग्यो, जणा आवणो पड्यो। रामजी उण ट्रक हाळै रो भलो करसी, जिको गाव सू बहीर होवता ई आपरै ट्रक ऊपरा चढाय लीनी, नीतर के ठा'कठै-कठै भचीड खावती फिरती।"

छोरा आपोपरी माय देखै-बूझै पण सावरै नाव रो छात्र तो आखै कालेज माय ई कोनी।

इतरै'क तो दोय-तीन छोरा सू बतळावण करतो सुदर्शन बठीनै आयग्यो। सुदर्शन विज्ञान रै छेकडलै साल रो छात्र। आपरै मारग आवणो'र मारग जावणो। किणरी ई दूई मांय कोनी तो किणरी चूयी माय ई कोनी। उणरै तो कोरो भणत सू काम। होस्टल रै दरूजै माय बडतो, जितरै'क उणरी निजर छोरा री भीड

बिचाळै ऊभी लुगायी अूपरा जाय पडी। वो अपूठो बावड'र बा रै कानी आयो तो उणरी मा डरू-फरू होयोडी बावळी-बचकर दाई ऊभी दीसी।

इचरज माय भरीजतो वो झट बूझ्यो "मा, तू अठै कीकर?" अर वो इया कैवतो उणरै पगा धोक खायी।

आखै दिन री आखती होयोडी डोकरी चाणचक ई बेटै नै सामै देख'र हरखायीजी। आपरै लाडेसर रो सिर बुचकारयो अर बूझ्यो "सावरा, लाडी तू इतरी ताळ कठै हो रै? मैं तो सगळा नै बूझती-बूझती थापगी। अठै तो सगळा अेक ई बात कैवै के सावरै नाव रो भणेतू अठै कोई कोनी।"

सुदर्शन मुळकीजतो-थको बोल्यो "मा अठै मनै सैंग जणा सुदर्शन रै नाव सू ई जाणै-ओळखै।"

सुण'र सगळा छोरा ताळीपटको करता बोल्या—"यार सुदर्शन, तू चोखो चकमो दीन्यो। कदे बतायो ई कोनी के थारो दूजो नाव सावरो भी है।"

सुदर्शन हसतो-थको मा रै पल्लै कानी जोवतो बूझ्यो: "मा, ओ काई है।"

खीर री तावणियो अर लापसी रो बाटको दिखाणती डैणी बोली—"आज थारै बाईजी रो सराध है न! तू पूग्यो कोनी, जणा मनै लेयनै आवणो पड्यो।"

मा रै हाथ सू तावणियो अर बाटको लेंवता सुदर्शन कैयो "मा, जद तो आज थारै माय सागीडा फोडा पड्या। चाल अबै कमरै माय चाल'र आराम कर।"

कमरै माय पूग'र लाइट चासी। हाथ-मूडो धोयनै दोनू मा-बेटा खीर-लापसी जीम्या अर सुख-दुख री हताया करी।

बीजळी री जगर-मगर, होटल रा कमरा, फरनीचर अर गुडकै चढीज्योडा पखा रै बिचाळै आपरै बेटै नै देख'र डोकरी घणी हरखायीजी।

सुदर्शन कैयो "मा, अबै घणै सू घणा बारा म्हीना रा फोडा और है। पछै मैं नौकरी लाग जावूला। तू इतरा दुख झेलै अर फोडा भुगतै, सो आखा मिट जासी।"

पण मा रो ध्यान दूजी कानी हो। बा बूझ्या बिना को रैवण सकी नी: "अठै, थे छोरा अर छोरी अेक मार्य ई कीकर रैवो?"

सुदर्शन मा रै भोळैपण अूपरा हास्यो अर पड्‌तर दीन्यो: "मा, जिका नै तू छोरी समझै, वै सगळा छोरा है।"

"जणा वै छोरया री दाई लामा-लामा केस कीकर बधाय राख्या है अर अै घोग्यां क्यू लपेट राखी है।" डोकरी बूझ्यो।

सुदर्शन कैयो—"मा, ओ तो आजकालै रो फैसन है, अर जिकया नै तू घोती बतावै, वै धोती कोनी, पण बा रै सगेगी छालल सूथां है।"

मा कैयो—'अर अै केयो, जिका बावळा-गैला री ज्यू जट बधाया फिरै, अै

कुण है ? मनै तो इस्या ढग चोखा को लाग्या नी।"

सुदर्शन कैयो—"अै भी अठै भणेतू है। आ भी आजकलै री फैसन है। तनै चोखा कोनी लागै, जद ई तो मैं इस्या बाळ को बधाया नी।"

बाता करता करता ई दिन भर री थाक्योडी डोकरी खरडका उपाडण लागगी। सुदर्शन पढणो चावै हो, पण बा पढ को सक्यो नी। पडोसी कमरा माय रोळो-बैदो होय रैयो अर सुदर्शन रा विचारा माय काळो पीळो आधी घुमट रैयी। बो बीजळी री सैचन्नण लाइट माय आपरी मा रै मूडै कानी जोयो तो उणरै रोजणो आयग्यो। घर रो खोरसो करता करता बापडी री आ दुरदसा होयगी। अणमेधा री सळा उळझ रैयी, जबाडा बैठग्योडा अर साकळ सी दूबळी पतळी रा कबाड मिल्योडा। जुवानी माय ई बुढापो आयग्यो। मेरी पढाई रो खरचो, बाप रै औसरै रो करजो अर ब्याज चुकावता-चुकावता पीजर होयगी। भीतर भिळग्यो।

इण मा नै लखदाद है, जिकी बापडी पाणी पीसणो करनै मनै इतरो भणायो। इसी मा रा उपगार कद भूलण जोग है ? मा, तू मा नी, साक्षात् लिछमी है ! बो विचारा माय डूब्योडो सजळ नैण री सरधा सू मा कानी जोयो।

भळै उणनै आपरै सुरगवासी बाप री ओळू आयगी। उणरी थोडी-थोडी याद उणरै चेतै चढ रैयी। बो नीठ च्यारेक साल रो होवैला जद उणरो बाप समायी-ज्यो हो। बाप री अेक बात उणरै सदीव सदीव याद रैवै जिणनै बो कदे विसर नी सकै। मरती वेळा सुदर्शन रै सिर अूपरा हाथ फेरतो उण नै बुचकारतो-बुचकारतो कैयो हो—"सावरै री मा, इण नै सोयरो-सोयरो राखीजे, घणो सारो भणायीजे अर चोखा सैसकार देयीज्यै ।" कैवता कैवता अेक हिचकी आयी ही अर मामा अूपरा चढीजग्या हा। सुदर्शन रै चौसरा चालग्या अर बो सुबक्या चढ्ढीजग्यो। बैठचो वो रैयीज्यो नी, लाइट बुझायनै गुडग्यो।

'सावरा-सावरा' री बोली सुण'र सुदर्शन उठ्यो, आख्या मळ'र जोवै तो मा जावण सारू खाथी होयोडी, उणरै हाथ माय खाली तावणिया अर रीतो बाटको हो।

तीन दिना री छुट्टी लेयनै सुदर्शन मा नै पुगावण सारू गयो हो अर जद बो पाछो आयो, जगा बो आपरा साथ्या नै हडताळ अूपरा बैठ्या देख्या। बूझ्यो जणा ठा' पड्यो क प्रिन्सिपल यूनियन रो चुनाव रोक राख्यो है। चुनाव सारू ई आ हडताळ है। हडताळ केयी दिना लग चाली। छेकड छात्रा रा मायेता अर दूजा नेतावा रळ'र प्रिन्सिपल सू चुनाव करावणो मजूर कराय लीन्यो। हडताळ तूटगी।

अबै तो कालेज अर होस्टल माय आखै दिन चुनावा रो हुडदग। बापडा सूधा अर पढेसरी छात्र चुनाव निर्विरोध करावणा चावै, पण गुडा री दाळ कीकर

गळै। वागला नैं तो खिडावण सूं काम। जे सर्वसम्मत अर निर्विरोध चुनाव होय जावै तो चन्दो कीकर माग्यो जावै अर जे चन्दो नी होवै तो गुडा रा सूट अर होटला रा खरचा कठै सूं आवै ?

भणत माय जावक ठोरड अर नाजोगा छात्र दूजा रो बिगाड करणो चावैं। नी आप भणैं अर नी दूजा नैं भणत करण देवै। कदे वैं गाव अर सहर रैं नाव अूपरा छात्रा नैं भडकावैं तो कदे जातवाद अर सम्प्रदाय रैं नावै जूत बजावै। कदे होस्टल अर-गैर होस्टल रैं विवाळै जहर खिडावै तो कदे क्षेत्र विसेस रो जहर अूगळैं। दूजो कई तावै नी आवै तो फैकल्टी रै नावैं ई वा नैं अळगावैं।

जिकै दिन चुनाव री तिथ पक्की थरपीजी, छात्रा री नींद भूख ई उडगी। कदे होस्टल रा बन्द कमरा माय गोस्ठी होवैं तो कदे कालेज रैं हाल माय आम सभा।

खैर दूजा चुनाव तो किणी भात दोयरा-मोयरा होयग्या, पण यूनियन रैं अध्यक्ष पद सारू घणो तगडो सघर्ष। इण पद सारू इग्यारैं छात्र परचा भर दीन्या। वा इग्यारैं नावा माय अेक नाव सुदर्शन रो भी हो। दूजो हो महेश रो नाव। सुदर्शन चुनाव रैं चक्कर माय कदे नी आवणो चावतो, पण साथिया भाई जबर-दस्ती पोमाय-पोमायनै असूला रैं नाव अूपरा खडया कर दीन्यो।

कैई पढेसरी छात्र महेश रो तगडो विरोध करयो। वैं कैयो के इण नम्बरी गुडै नैं आपा नेता कीकर माना ? वो आवै दिन कालेज री छोरया रै लारैं चक्कर काटै, रातनै दारू अर सिनेमा बिना को रैयीजै नी। शिक्षका री हेठी करण नैं तो वो आपरो जलमसिद्ध इधकार मानै। इणरैं विरोध म आपानैं सुदर्शन नैं वोट देवणा चाईजै। इस्यो पढेसरी, सूधो, चरित्रवान अर देवता-सरीखो छात्र दीवो लेयनै जोया ई को लाधै नी।

अेक छात्र बोल्यो—"भाइडो, म्हारो आ निजू विचार है के सुदर्शन सरीखै भलै लडकै नै चुनाव माय घीस'र क्यूं बापडै रो कैरियर बिगाडो हो। वो बापडो गाय रै सरीखो सूधो है। भणत माय घणो ई तेज पण चुनाव रा छळछिदूदरा सूं जावक अणजाण।"

यूनियन रो चुनाव काई होयो, जाणैं देस रैं प्रधानमन्त्री रो चुनाव होयग्यो। परचा पूठा लेवण रैं दिन घणाई सघर्ष होया। कोईसो ई आपरो परचो पूठो लेवण सारू त्यार नी दीसै। छेवट आखा नेता रळ'र दोय उम्मेदवारा नैं छोड'र सगळा परचा उठवाय दीन्या।

गाव अर सहर रैं नावैं चुनाव हुवारीज्यो।

चुनाव तो कालेज री यूनियन रो हो, पण जिकै रो आखी राजनीतिक पारट्या, विरादरी ई समाजो'र जातीय सगठ अर धरम रा ठेकैदार इण कुरुक्षेत्र माय आय भेळा होया। प्रान्तीय अर सघीय छात्र-सघा रा नेता तो आ कैवता

छात्र किण भात अठूना रैवण सकै ? छानी अपरा हाथ मेल र सोचा तो आपा किस्याक हा···?"

रामसरण अेक हुकारो भर ई नाख सक्यो।

सोहनलाल कैंया जाय रैयो—"हू कोई ? आपा ई जे आज कोई जोगा होवता तो आपणी आ पीढी इण भान को रुळती नी। थोडोक सोचो के आखी युवा-सगती जे अणभणिया नै भणावती तो आज लोग अगूठाछाप लाधता ! जे आ पळटण मिलावटिया, काळै-बजारिया, घूसखोरिया, कमतोलणिया चोरा'र धाडव्या नै धकै लेय लेवै तो आपणै देस माय कोई सी समस्या ऊभी रैवण सकै ?"

रामसरण हामळ भरी—"बात तो साची है मास्टरजी !"

सोहनलाल कैयो "ठीक ईज नी, जे सैंठो'र विसवासू नेतृत्व मिलै तो सडका, नहरा, पुळिया अर निरमाण रा आखा काम इण युवा-सगती रै श्रमदान मात्र सू पूरा होय जावै। इतरो ई क्यू, देस री भूख, गरीबी, बेकारी, बेमारी अर दूजा अभावा नै जे जडामूळ सू मेटणा है तो इण सगती रो सायरो लिया ई सरसी।"

इतरैक तो सामली गळी सू बुलन्द नारा री आवाजा उठण लागी—"जो हमसे टकरायेगा मिटटी मे मिल जायेगा" दोवा री आवतोडै जलूस कानी टोरा बधीजगी।

दोवा कानी वोटर-छात्रा नै डरावणा धमकावणो लाभ-लालच, दवाव प्रेसर बरोबर चालता रैया। वोटर भी दोनू उम्मेदवारा नै डोका चरावता रैया। सुदर्शन जठै गाव अर करसा रै नाव वोट माग रैयो, महेश प्रतिक्रियावादिया रै खिलाफ नारा उठाय रैयो।

चुनाव रै सै-दिन आडोस-पडोस रा केयी कालेजा रा छात्र जीपा माय हाकी-स्टिका अर लाठ्या रा बडल रा बडल भर-भरायनै पूग्या। सहरा'र गावा रा नेता भी कालेज रै इडद-गिडद चक्कर काटण लाग्या। विधायक र सासद तो आखै ई नाटक रा सूत्रधार हा। पुलिस रै घणै करडै पो'रै माय वोट पड्या। वोटा री गिणतकार रै बखत तो दोवू ई दळा रै बिचाळै इस्यो तणाव बध्यो के रिजर्व पुलिस नै बुलावणी पडी।

छेकड, जद चुनाव इधकारी सुदर्शन नै विजयी घोषित करयो, जणा उणरा समरथक घणा राजी हावता उणनै आपरै कधोळै उपरा ऊठाण लीन्यो। जें-जैकार री रोळाट सू काना रा पडदा फाटण लाग्या। गुलाव रै फूला री इसी उछाळ होयी के कदे देखणी माय ई को आयी नी।

महेश री हार रो नतीजो साभळता ई उण-कानला पाच सातक नेता आपोपरी माय सैन करी। भीड सू टळ'र कालेज रै पिछोकडै छचाऊ-म्याऊ होयग्या। हिंसा'र बदळै री तीव्र भावना बा रा मूडा ऊपरा साव लखायीजती।

सुदर्शन रो विजेता जलूस उणरी जै बोलतो कालेज सू चालनै गाधीचौक रै कानी

मुड्यो ई ही के इतरैं'क तो दणदणाट करती तीन गोळ्यां सुदर्शन री छाती नै आर-पार करगी। जलूस माय भाजा-दौड़ मचगी। पकड़ा धकड़ी होयी। पुलिस मौकै रा कागद पत्तर बणाया।

डागधर ल्हास रो पोस्टमार्टम कराय नै उणरा समरथकां नै सम्भळाय दीनी।

वै जीप सू ल्हास नै उणरैं गाव लेयग्या। सुदर्शन री मा उण बखत गाय नै दुयनै हॅथेळी माय गूणियै नै ऊच्या बाखळ माय ऊभी ही। जीप उणरैं फळसै रै आगै थमी। ल्हास नै उतारनै जद आंगणै माय ल्यायीजी, जणा उणनै देखता-पाण ई डोकरी पछाड खायनै पडगी। गूणियो कठैई जावतो पड्यो। आखै गाव माय रिरळो मचगो।

छात्र-नेता मा नै होस माय ल्यावता कैवता सुणीज रैया—"मा, सुदर्शन असूलां खातर मर्यो है, वो मर्यो कोनी, अम्मर होयग्यो है।"

●

मे दिमाग दूणै वेग सू काम करै। वा दिना राजस्थान सरकार आप रै कर्मचारियां नै 'फूडग्रेन लोन' देवणो सरू करयो हो। साढी पाच रुपिया सैंकडा ब्याज री दर सू दस महीणा म पाछा चुकावणा पडता हा। म्हैं ई लोन सारू अरजी लिख दीनी। वेगो ई मजूर हुयग्यो। मिलता पाण ई दो सौ रुपिया हरीश नै दिया। बी तो ऊपरी तौर सू कैयो ई हो कै इत्ती उतावळ करणै री काई जरूरत ही। पण म्हैं कैयो— पइसा तो चुकावणा ई हा, चुका दिया। जरूरत पडघा भळै माग लेसू। जा पछै 'फूड ग्रेन लोन' री खदी हर महीणै बाईस रुपिया रै हैसाब सू कटण लागगी। जद सू ओ लोन अर राज्य बीमा कट-कटा'र एक सौ बाणमें रुपिया मिलै है। पण घरै तो पूरा दो सौ रुपिया इज देवणा पडै। कारण कै लोन तो घर आळा सू छानै लियो हो। इण खातर आठ-दस रुपिया आयला-भायला सू उधार लेय लिवा'र दो सौ रुपिया पूरा कर'र घर आळा नै देवू। अेक'र पूणी दो सौ रुपिया दे'र लारो छोडावण री कोसीस करी, पण पार को पडी नी। घर में कळै हुयगी। काकोजी चैलेंज दे दियो कै घर मे रैवणो है तो पूरा पइसा दिया कर। नईं तो थारै सू निभै कोनी। काळो मूडो कर भलाई अठै सू। आ सोच'र कै बाप है, की ई कैय सकै, म्हैं चुप इज रैयो।

जा पछै अजकाळ रोजीनै ई घर म राड रैवण लागगी। जोडायतनै ई म्हारै सागै विना बात रा ई मैणा-मोसा सुणणा पडै है। मा तो कैवै जिकी कैवै, पण छोटोडो भाई ई जचै जिया कैय देवै। काल बा कैय रैयी ही—मा कैयो है कै छगन नै समझा। वो अूल-जलूल खरचा कठै करै है? थोडो सोच समझ'र चालणै री सीख दे वीनै। छोरी जलमी है, छोरी। पूरी तिणखा देंवतो रैसी तो म्हे ई रो ब्याव म्हारै हाथा कर देसा। नईं तो पछै बो जाणै'र बी रो काम। म्हानै काईं, दावै जियाई करो आगलो। म्हैं तो बीरै ई भलै खातर कैंवू। सुण'र हसी आयगी। कै देखो बापडी छोरी तो डोढ इज बरस री है। अर अबार सू ई ब्याव रो सोच''।

अे स्साळा अूदरा ई हरामी है, खडका करता रैवै ई कोनी। खैर, चोखो ई हुयो पीजरै मे पकडीज'र वी म्हारी विचार तन्द्रा भाग दी। इसी दुखदाई यादा नै तो भूलण में फायदो है। अवै काई पडचो ई रैवूला? आ सोच'र ऊभो हुयो अर अेक गिलास ठण्डो पाणी गळै सू हेठै उतारयो।

भळै, आळस ई आळस। म्हैं बारै नी जाय'र अठै ई कुरसी माथै बैठग्यो हू। चिंतावा ओजू घेरा घाल रैई है।'' की ई फिजूलखरची कोनी तो ई की न की खरचो तो हुय ई जावै। घर आळो बिल तो चुका देसू पण दूजै भायला रो करजो ई होळै-होळै वधई रैयो है। अवै, बो दरजी नै पाच रुपिया देवणा है। तीन महीणा हुयग्या। भळैई बापडो मागै कोनी। पण बो रामा सामा करै या इत्तोई कैवै— और छगन जी' '? बी टैम सरम सू माथो झुक जावै। वो भलाई ना मागो पण'''। लारलै सात-आठ महीणा मू भायला कनै सू आठ-दस रुपिया हर महीणै ले

है। पण देसू कठै सू ? अबै तो फुड ग्रेन लोन री सगळी, रकम चुकती हुया पछै ई सगळा नै होळै-होळै म्हारै हायखरचै माय सू चुका सकूला। म्हारै तो ओ गेवणो इज लिख्योडो है, जिको इया ई चालसी।

हा, काल मा लुगाई नै कैय रैयी ही कै छगनियै नै पूछ तो सरी, वैनै जिका दस रुपिया हाथ खरचै रा मिलै है आखिर करै काईं है, वा रो ? वी रै तो की खरचो कोनी। इत्तो सुस्त क्यो रैवै है, वो आजकल ? गाभा-लत्ता फाटग्या तो दूजा क्या करा लेवै नी।

बाई चास आ रामायण म्हैं ई सुण लीनी। अबै मा नै आ कुण समझावै कै आजकल दस रुपिया री कीमत ई काईं है ? अर कपडा ई आ माय सू ई करवाणा चावै ! हद हुयगी स्याणप री ! जे म्हारो दुखडो किणी नै सुणाय दू तो झट देणो भरोसो ई को हुवै नी वी नै। ओ तो भुगतभोगी ई जाण सकै। न्यारो ई को हुय सकू नी। अेक तो घर री हालत ठीक कोनी अर दूजो छोटोडो भाई हाल ताई कमावै कठै है ? आजकाल तो लुगाई ई कई दफै न्यारो हुवण खातर कैवण लागगी।

अचाणचक कमरै रो फाटक खुल्यो। म्हारो सोचणो झटकै सू बद हुयग्यो। कमरै मे की चानणो हुयग्यो। छोटोडो भाई आयो है। सायत मा मेल्यो हुवैला। हा, आ इज बात है। मनै मा रो सनेसो कैय रैयो है। म्हैं बी रै हाथ म रुपिया दो सौ धर दिया। बो पाछो टुरग्यो। बी नै देख'र होटल रै बैयरै रो चित्राम साक्षात हुय जावै जिको चाय पिया पछै होटल रो बिल लाय'र पलेट म राख दै।

अठै भी तो मईणो पूरो हुयग्यो नी·· ···।

•

# करड़ी आंच

## मनोहर शर्मा

आज नाराणो गद्दी सूं सांझ पडयां बामणवाडो में आयो तो उण रो डील भारी हो अर माथो गरम हो।

*बात इत्ती बणी कै आज नाराणो गद्दी मे पांच-सात मिनट देर सूं पूग्यो अर* उण सूं पहली ई सेठजी आपरै आसण पर आ बिराज्या हा। जद नाराणो गद्दी मे बडयो तो सगळै साथियां री निजर उण पर एक साथै ई पडी कै आज बेरो पडसी— बात करणै मे अर नोकरी करणै मे के फरक है।

सेठ सीतारामजी पोद्दार नाराणै रा मालक हा अर उण रै गाव रा ई नईं, उण रै बास रा भी हा। पण सेठां रो सदा सूं यो पक्को विचार हो कै ब्योपार री बढोतरी रो एक मात्र आधार यो ई है कै बडोडां सूं न्होडिया सदीव डरता रैवै अर दब्या रैवै। वै नोकर पर क्रोध करबा रो एक ई मोको रीतो कोनी जावण देवता।

सेठजी नाराणै नै गद्दी मे बड़ता ई आडै हाथां लियो, 'नाराणिया, आ नोकरी है। कोई भाईचारो कोनी। अठै काम करणो है तो बखत री पूरी पाबंदी राखणी पडसी, नईं तो कोई दूसरो काम देखले।"

नाराणो पहली मुसाफरी मे ई बम्बई आयो हो अर उण नै सेठां रै अपणैस रो भी क्यूं भरोसो हो। बो नरमी सूं उत्तर दियो, "ताऊजी, ये बरखा कानी भी तो देखो—सडक पर कितरो पाणी भरयो पडयो है। अर सात मिनट री ई तो देर हुई है।"

इतरी सी बात कैय'र नाराणो पक्को कानी आगळी करी। पण नये खिलाडी नै यो बेरो कोनी हो कै सेठजी उत्तर कोनी चावै हा, वै तो माफी मागणै री उडीक मे हा। आज गद्दी रै सगळै नोकरां रै स्यामनै ओ छोरो वां नै जबाब दे दियो! ओ तो बडो अपराध है!

सेठां रो पारो ऊंचो चढग्यो अर वै तेजी मे आय'र बोल्या, 'मैं न तो बरखा नै देखूं अर न तन्नै देखूं। मैं तो बस नियम नै देखूं हूं। तन्नै गद्दी मे काम करणो है तो बखत सूं पांच मिनट पहली आया कर, नईं तो काम सूं ई तेरो दूसरो ठिकाणो

दग ले।"

नाराणै नै इसो भरोसो कोनी हो कै बै नै ई गद्दी मे इसी बात सुणनी पडसी। क्रोध तो आयो पण दांत भीचणा पड्या। नाराणो जाणै हो कै ई बाणियै रो बाप गाव मे मामूली सी तेलालूणी री दुकान करतो अर उण रै बडेरा रै आगै आसरीवाद खातर सदा ई हाथ जोड्या राखतो। पण राज सो राज। आज बाणियै रो बेटो मालक हो अर पडता रो बेटो नोकर।

नाराणो चुपचाप आप री ठोड आय र बैठग्यो अर क्यू ई कोनी बोल्या। पोद्दारजी रो पारो ई चुप्पी सू ओर भी चढग्यो अर बै दूजै गुमास्ता कानी देख र बोल्या, "आज भलै रो बखत कोनी। ई छोरै नै बास रो जाण'र रोटिया रळाया तो म्हानै स्यामी मूडै जबाब सुणणो पड्यो। ई नै आप री बी० कॉम० डिग्री रो घमड है। ओ बेरो कोनी कै इसा इसा कागद लिया तो के बेरो गळिया मे कितणा छोरा रुळता फिरै है। आगै सू गाव रै आदमी नै तो कदे राखणो ई नइ।

गद्दी रा सगळा नोकर फेरू एक निजर सू नाराणै कानी देख्यो पण चुप रया। बै जाणै हा कै जे कोई क्यु भी बोल्यो तो सेठजी उण री बात रो न जाणै के अरथ लगावै ?

नाराणै रै मन मे एक उठै ही अर एक बैठै ही। बो कई बर मन म करी कै ई सेठ रै बचियै नै दो बात कैवै पण उण रै मूडै सू जबान निसर कोनी पाई अर बो नीची निजर करया चुप बैठ्यो रयो।

दूजा नोकर आप आप रै कामा मे दिखावू ध्यान दे राख्यो हो पण बा री आख्या बिमकै ही कै गद्दी रै सगळै मुनीम गुमास्ता नै डरपोक बतावणियो ओ पढेसरी आज आप दब्री चुसी बणयो बैठयो है। आगै सू ओ आप रो माजनो पिछाण लेसी अर बडी-बडी बाता कोनी करसी।

आगै सेठ बोल्या कोनी अर गद्दी मे सरणाटो सो छायो रयो। आज सेठ इतरी बार भी अठै नाराणै रै सस्कार सू ई टिक्या हा। ओर दिना तो बै आया, सगळै नोकरा रै काम पर एक सरसरी निजर गरी अर पाछा मोटर म जा बैठ्या। बस इतरी सी बार लगावता। अर बा नै टेम भी कठै ही ? कोई एक काम सिर पर थोडी ई हो। मील सभाळणो कोई मामूली काम कोनी।

जद सेठजी चल्या गया तो गद्दी रा सगळा नोकर नाराणै सागै अपणेस परगट करयो भात भात सू उण नै समझायो अर बखत देख र काम करणै री सलाह दी।

जूना मुनीम राधाकिसनजी सरावगी आपबीती भी सुणाई कै वा नै सेठा किण किण रूप म सिजाय'र बा री करडावण दूर करी।

पण नाराणो क्यु बोल कोनी पायो अर उण दिन चुप सा ई रयो। बो जैया तैया दिन छिपायो अर छुट्टी हुवता बाडी रो गैलो पकड्यो।

बाडी के ही, एक पीजरापोळ ही। बरणी हाळा बूढा बामण अठै पडत बण्या

दूजा पर हुकम चलावै हा। एक बडो कमरो अर एक छोटो कमरो। छोटै कमरै पर पडता रो कबजो हो अर बडै कमरै मे सगळो मरवालो हो। कोई मील मे नोकर हो, कोई गद्दी री सेवा मे लाग्योडो हो तो कोई आप रो धधो दलाली बतावतो। पण इमा भी कई बामण हा, जिका कोई काम धधो कोनी करता अर पुन धरम पर ई आप रो गाडो धिकावै हा। कमरै मे चटाई पडी रैवती, पछै भी कई जणा पैड-बाळै मे पड'र आपरी नीद नै भूळावता।

रसोई न्यारी ही, जठै वारी वारी सू रोटी बणती, किणी री आप रै खातर अर किणी री सीर-साझै मे। रसोई रै एक कूणै मे साझै रो स्टोव भी पड्यो रैवतो, जी पर चाय बणती।

साझ पडया मान-मनीला पछो ई आसरै मे आवता तो एक मेळो सो भरतो अर देस दिसावर री घणी-घणी चरचा चालती। अठै आखर-पीचर रो माडो मदो ब्योपार भी चालतो अर कदे-कदे बोलाचाली झगडे रो रूप भी धारण कर लेवती, पण पच लोग बात नै बणाई राखता।

और दिना नाराणै री जबान मोन चालती पण आज वो चुपचाप आपरी चटाई पर लाडो पसरग्यो अर ऊपर चादरो गेर लियो। वो नवरी कर चुक्यो हो कै भूख मरणो कबूल पण काल सू ई गद्दी मे तो जावै ई कोनी।

एक-दो जणा नाराणै नै सूत्यो देख'र पूछताछ भी करी पण सगळा नै वो एक ई उतर दियो कै उण री तबियत ठीक कोनी।

देवकरणजी मिस्सर बामण-बाडी रा सिरैपच हा। बा री घणखरी उमर ई बाडी मे ई बीती ही अर वै ई धरम-साळा रै सुख-दुख रा कई अवसर देख चुक्या हा। मिस्सरजी नाराणै नै बतळायो तो भी वो उठ्यो कोनी अर मूडो ढक्या ई उत्तर दे दियो कै उण रो माथो जोर सू दरद करै है।

मिस्सरजी आप री चाय सागै नाराणै खातर भी चाय बणवाई अर उण री चटाई पर आ बैठ्या। वै नाराणै रै माथै हाथ फेरयो अर दिलासा देई। वूढै बिरामण नै यो मनोग हो कै छोरै रै ताप कोनी अर मामूली सी दुवाई सू ई माथो ठीक हो सकै है। वै नाराणै नै घणै हेत सू उठाय'र चाय रो प्यालो दियो अर सागै एक गोळी भी देई।

पछै मिस्सरजी नाराणै नै गाभो ओढ'र सोवण री सलाह दी अर आपरै आसण पर चल्या गया।

लोग-बाग खावा-पीवो करी अर आप-आप री ठोड आ बैठ्या। एक-आध पाळी चिलम भी चली पण घणखरा कमावू बीडी सू ई काम काढ्यो।

नाराणो सूतो-सूत्यो सगळी बाता सुणै हो पण बा मे उण रो ध्यान कोनी हो। पछै दूजा सगळा लोग सोग्या जद भी नाराणै नै नीद कोनी आई। वो चालू नोकरी नै छोडणै री सोचै हो पण आगै रो कोई रूप कोनी बण पायो। उण री बम्बई

मे कठै जाण-पिछाण भी कोई खास कोनी ही कै दूजी नोकरी लाग सकै। पण कुछ भी बणो अथवा मत बणो, वो ई गद्दी मे तो अब पग ई कोनी देवै।

करीब एक बजे रो वखत हुयो, नाराणो पेसाब करबा नै उठ्यो। वो देख्यो लोग मजै मे सूत्या पड्या है अर वो एक जणो ई जागै है। ई महानगरी मे के वो एक ई इसो है? ओर भी उण रा भाई इसी ई विपता मे पड्या छटपटाता हुसी। वो मन मे करी कै थोडी देर सडक पर घूम'र रात री घडिया ओछी करै पण बूदा पडै ही।

नाराणो कमरै मे पाछो आय'र आपरी चटाई पर बैठग्यो अर एक सिगरेट सिलगाई। पण सिगरेट सुवाद कोनी लागी तो वो बुझाय'र सडक पर फेंक दी। वो फेर आडो हुयो पण चिन मे चैन कोनी तो पछै नैणा मे नीद क्यू कर आवै?

नाराणो आपरी चटाई पर पसवाडा फेरै हो अर दूजा लोग भात भात रै सुरा मे नाक रो बाजो बजावै हा। ओ भी कोई सोवणो है! आज रो ओझको नाराणै नै यो नाटक तो दिखायो पण जागणियै सू बै सात बर सूल हा।

कदे नाराणै रो ध्यान आपरै उण साथिया कानी जावै हो, जिका पढाई कर्‌या पछै बारलै गावा मे मास्टर बण'र चल्या गया। पण बा नै मास्टरी भी अफसरा रा गोजिया भरणै सू मिली। नाराणै कन्नै ओ हथियार कठै? वो आप री पढाई तो टयूसना सू पार पाडी है।

कदे नाराणै रो ध्यान आपरै घरा कानी जावै हो, जठै बूढी मा, लुगाई अर तीन टाबरा नै छोड'र वो कमावण खातर दिसावर आयो हो। नाराणो आप चोईसवै बरस मे हो पण तीन टाबरा रो बाप बण चुक्यो हो अर उणरै मनिआर्डर सू ई बै सगळा रोटी खावै हा।

नाराणो कालेज री डिबेट माय सदा ई गरीब मजदूरा रो पख लेवतो अर घणै जोर सू गरमावतो-गरजतो। पण आज वो आपरो अधिकार बणायो राखण रो एक ई उपाय कोनी सोच सक्यो। गद्दी रा सगळा छोटा-बडा नोकर पूछ हलावणिया अर हा मे हा मिलावणिया हा। वो कई बर बा नै आप रै अधिकारा री याद दिवाय चुक्यो हो पण बीकणै पर छाट लागै तो बा रै बात लागै। के वेरो बा मायलो कोई सो चुपचाप जाय'र सेठा रा कान भर्‌या हुवै तो भी अचरज कोनी। पण खैर, वो काल सू ई नौकरी पर तो जावै ई-कोनी।

रात बीती अर नयो दिन उग्यो। वाडी रा लोग निमटणै-न्हावणै रै काम मे लाग्या। सगळा उतावळ मे हा। नाराणो भी चटाई छोडी। पण आज उण रो माथा ओर भी भारी हो अर डील मे भी दरद हो।

नाराणो बिरामणा री पूरी मडळी मे बैठ्यो हो पण फेर भी आप नै एकलो सो अनुभव करै हो। वो कई बर सोच्यो कै जठै चाच है, बठै चुग्गो भी त्यार है, पण उण रै मन मे ठाड कोनी आई। फेर भी वो ई निरचय नै काठो पकड राख्यो

हो कै अब वो ई नोकरी पर तो जावै ई कोनी।

देवकरणजी मिस्सर नाराणै कन्नै आय कर उण री तबियत रो हाल पूछयो। नाराणो हाथ आगै सी करयो तो मिस्सरजी उण री नवज देखी। ताप कोनी ही। मिस्सर समझावणी दी कै जे डील भारी है तो वो एक दिन गद्दी मे न जावै अर बाडो मे ई आराम करै—पहलो सुख नीरोगी काया। परदेस माय तो सरीर पर पूरो ध्यान राखणै मे ई सार है। कमावणो तो जिन्दगी भर लाग्यो ई रहसी।

मिस्सरजी नाराणै नै आपरै साथै बिठाय'र चाय प्याई अर दिलासा दी, पण नाराणो मन री घुडी खोली कोनी। पछै मिस्सरजी वरणी करबा नै चल्या गया।

धीरा धीरा बाडी रा घणखरा आदमी जीमजूठ'र आप-आप रै धधै लागग्या, पण नाराणो आप री चटाई पर ई माथो भारी कर्‌या बैठ्यो रयो। वो रात नै क्युई खायो कोनी अर अब भी खाली पेट हो। बस, चाय रो गुटको मिस्सरजी साथै जरूर लियो हो। फेर भी रोटिया कानी उण रो ध्यान गयो कोनी। वो एक सिगरेट चासी। ना जावक फीकी लागी तो सडक पर बिना बुझाये ई फैंक दी।

दस बजे सी डाकियो आयो अर बाडी मे चिट्ठिया गेरी। एक लिफाफै री चिट्ठी नाराणै री भी ही।

नाराणो लिफाफो खोल्यो। चिट्ठी झुझुणू सू आई ही। वो चुपचाप बाचण लाग्यो—

"सिध सिरी बम्बई सुभ सुथान चिरू नाराणै सेती तुमारी मा का आसीस बचणा। हमा अठै राजी हा अर तुमा भोत राजी रैयो अर सरीर रो पूरो ध्यान राखियो।"

"ओर भाया, खरची बेगो भेजिये। तुमा रिपिया भेज्या सो पूरा हो चुक्या है। लारलै दिना तीनू टाबरा रै ताप चढी, जिको डाक्टरजी री दुवाई देई। अब भी खासी तो टाबरा नै आवै ई है अर अग्रेजी दुवाई प्यावा हा। सोई दुवाया रा दाम नावै मडै है।"

"ओर भाया, सराफणी दादी ब्याज खातर फिर-फिर जावै है। सेठाणी कवै है कै ब्याज रा रिपिया तो वखत-सिर देणा ई पडसी।"

"ओर भाया, गोदावरी रै गीगलो हुयो है। बिचारी तीन छोरिया पर छोरै रो मूडो देख्यो है। सोई गीगलै जाये रो नेग हमा भेज दियो है। पण लीलगर रा, बजाजा रा अर गोटै हाळै रा दाम सारा ई देणा बाकी है। सगळा नै हमा कह राख्यो है कै बम्बई सू खरची आवता ई चुकाय देस्या। सो भाया, तनखा आवै जद रिपिया क्यु ज्यादा भेजिये।"

"ओर भाया, ठावा रै भी टीपणी करावणी है। ल्होडिये कोठै री जड ता एकदम ई खजगी है, सो म्हे उण माय तो वडा ई कोनी। बिचारो कोठो मन-मन सू खडचो है।"

"ओर भाया, सुणा हा कै ईं साल बम्बई माय बरखा भोत जोर री है। सो ईं सरीर रो पूरो ध्यान राखिये। मुबादेवी भलो करसी। धिराणी रो पूरो ध्यान राखिये।"

"ओर खरची वेगी भेजिये। मागतोडा म्हारी स्यान लेवै है। ओर चिट्ठी राजी खुसी री वेगो-वेगो दिया कर। तेरी चिट्ठी कोनी आवै जद म्हारै भोत फिकर हुवै। सोई चिट्ठी देवण माय कदे भी सुसती मतना करिये।"

"ओर भाया, सेठा री छाया कदे छोडिये मतना। ईं घर रै खूटै सू एक वर बधग्यो, जिको जलम भर मोज ई करी। सो ईं थोडी लिखी मे ई सारी समझ लिये। ओर चिट्ठी वेगो दिये। मिती···।"

नाराणो पूरी चिट्ठी बाची अर उण रै माथै मे एक झटको सो लाग्यो। ईं झटकै सू माथै रो भार कयु हळको हुवतो सो भी अनुभव हुयो। पछै वो एक-दोय झटका आप खुद खाया अर वेगो सो उठ'र गाभा पैर लिया।

नाराणो बाडी सू बारै आयो अर दुकान पर एक करडी सी चाय पीई। पछै वो वेगो-वेगो गद्दी रै मारग पर चाल पड्यो।

वो सोचै हो कै जे आज भी गद्दी पूगण मे देर हुयगी अर करमजोग सू सेठ पहली ई गद्दी मे आ बैठ्या तो बस पछै नाराणै नै दूसरी ठोड कोनी' पण ईं बात रो भी वेरो कोनी कै सेठा रै हिरदै मे हल हुवै अर वै राधाकिसनजी सरावगी ज्यू सिजाय'र उण री करडावण काढण खातर ई करडी आच देवता हुवै।

नाराणो पग ओर भी उतावळा उठाया। आज उण नै जरूर-जरूर टेम पर गद्दी मे हाजरी देवणी है।

■

# सिरकती झूपड्यां

## मनोहरसिंघ राठौड

आथणकै री बगत पखेरू उड उड रूखा री आसरो लेवै लाग्या। काती रा अधार पख मे धरती काळी-कामळ ओढती जेज नीं करै। सडक रै साव सारै बीसेक झूपड्या, आ मे रोट्या बणै जतै च्यानणो लपलपावै पछै अंधेरो ई बस्ती नै गिट ज्यावै। सगळी झूपड्या रा ओक्सा टोळ। ओछी-ओछी भीता काढ छाना अटकायोडी, बोरया ताण्योडी। पीपा, गूदडा ओर डामर सू खाली हुयोडा ओक-ओक डराम'''ओ ही आ री गिरस्ती रो सामान। कोई-कोई रै बारणै बध्योडा गदेडा ओर ओक दो माचो निगै आवै। मिनखजूण रा आ कीडा नैं आसरो देवण नै ओ पूरो घर।

अदखली सडका माथै सूता अै सोचै—आ सडका सू ओरा नैं फायदो काई ठा'क्द हूई ? आपा रै आज ही काम आवै लागी-सांबा मे साफ जगा क्ती सातरी !

भोमो कैरटा रै लारै अळसेटै माय सू छरड्या काढै हो। बी बगत काळो नाग गिट्टा रै सारै डसग्यो "अरै खायग्यो रै"—अत्तो मूडा सू निकळ्यो। खून री तुर्री छूटगी। खुडातो झूपड्या सारै पूग्यो, लोग सामैं पगा नावड्या।

—"अरै भोमा काई हुयो ?" पेटी सू तूळी काढ बाळी—"अरै ! इं नैं साप खायग्यो।" सगळी लुगाया चूला छोड भाजी, मिनख भेळा हुया—"अब काई करा ?" ओ विचार सगळा रै माथा मे भवळ खावै लाग्यो। अेक जणो बळती छरडी ल्याय साप खायोडा घाव रै अडाई। बी रै माप रा जैर री बासतें लागरी, ईं छरडी सू की ठा' नी पड्यो।

—"ईं नै सैर मे लेय चालो। डागदर हाथूहाथ जैर कम करणै री सुई लगा देई।" सगळा भेळा हुय सडक रै पसवाडै बैठग्या। अेक मोटर रात पड्या अठी हू'र निकळै। थोडी जेज मे मोटर आपरी आख्या रा पळका न्हाखती आवै लागी। सडका बणाती बगत मामूली हाथ रा इसारा मू अै ओड मोटरां दबाता रैवै। सडक बण्योडी ठोड आ मैला-कुचैला मिनखा नैं मोटर डाव कुण बिठावै ? आ पाच-सात मिनखा री ग्यान-गिणती करया बिना मोटर सरडाट करती निकळगी।

सगळा निसकारो न्हाख्यो—"आ बामतें लागणी आज को ढबी नी ! आपा री

जिया छोड धूळ मे भाभडाभूत हुयोडा सगळा ओड, विणजारा पाणी सागै घोळचोडी मिरचा रै लगावण सागै लूखी-पाखी रोटचा गटकावै। मेट, मिसतरी आतरै जाटी री छिया—"भोमा कटोरदान ल्याय दे" कैय नै बैठै वी सू पैली भोमो बा रा कटोरदान ल्याय झिलावै। अेक पग रै पाण खनै ऊबो रैवै। पाणी पकडावै, हाथ धुवावै, पछै जाय रोटचा भेळो हुवै।

ओडा, विणजारा रै मन मे अेक हरख—"देखो आपा रै इसारा मोटरा ढवै। लाल झडी लगायदचा बठै सू पसवाडै मोटरा नै जाणो पडै।"

दोफारा री छुट्टी मे कदे भोमो दो घडी जमना सू बतळावै—'आपा री काई जिदगानी? सडक पसरती जावै ज्यू-ज्यू आपा नै सिरकणो पडै। दुनिया म मजूरी सगळा करै पण रोजीना पूर-गूदडा कोई कोनी लादै।"

—थे क्यू झूठो सोच करो। अै पळकती सडका आपा री मैणत सू बणै। कत्तो मानखो आ सडका सू घरा पूगै 'हेताळू मिनखा मे जाय मिळै, नौकरी पूगै घूमै मोजा करै। आपा नी बणावा जणा आपा रा मिनख लाई दुख पावै। देखो! सगळा स् सातगी वै नैनी नैनी डब्या हुवै ज्यू कारा टीईऽ' ऽकरती फरार्ट निवळ ज्यावै।

दिन गुडता काई ठा' पडै? सडका बणती गी। डेरा लारै-रा लारै सिरकता गिया। बी अधारी रात मे भोमा नै साप खाया सगळा बेखळखातै हुग्या। दूजै डेरै पुग्या। कोई रोटी खायोडो कोई बिन खायोडो गूगाजी रै थान खनै आयग्या। खीयो मतर बोल-बोल काकरी बगावै लाग्यो। तेल रो दीयो जगमगै हो।

अद घण्टा मे—' अरै राम रै" कैय भोमो पसवाडो पलटचो। गूगा पीर रा भजन चालू हा। भोमा री तडफडाट कम हुया फफेड फफेड जगावै हा। भोमा नै जगावण रा पूरा जतन करता थका वी री मीट सदा वास्तै लागगी। भजना रा तार टूटचा। लुगाया हद् देणी नेडी भाजी। कुरळाटो माचग्यो। जमना ऊबी हुया पैली तडाछ खाय पडगी।

भोमा री माटो मुसाणा पुगाय बावडचा दोफार दिन चढग्यो। ठेकादार रो आदमी सारै आय दो-तीन डोकरा नै बुलाया। समझावै लाग्यो—हूणी ही जकी हूयगी। ठाला बैठचा कोई था री पार पडै न म्हारी। आपारी पार पडै काम सू। सगळा काल काम ढूक ज्यावो। जमना ओर इण रा सासू-सुसरा नै ५ ४ दिन बैठा नै आदी मजूरी दे देवा। बापडो भोमो किस्योक सातरो मिनख हो। पण राम आगै काई जोर?

—जमना बारा दिन नी हालै! हा, म्हे काल काम ढूक ज्यावा।

मजूरा नै काम लगावणा हा। ठेकादार पूरो लोभ देय काम सरू करावण री कैयग्यो हो। अै बापडा पैली मानग्या। जमना जमी रै चिप्याडी पडी ही। तीजै दिन स्याणी मिनख रोटचा री घणी जिद करी। मूडै सामी नवा करता पाछो पडै हो। काया नै भाडो देवणो पडै। दूजा री जिद सू काळजो काठो कर नै रोटी गळै

हेटै उतारी। काळजै रा घाव मिट्या नी करै। मरचोडा लारै मरयो भी नी जावै। जमना आपरा काळजा री पीड आडा हाथ दिया धूळ में माथो देय रोट्या रै सतूनै में पाछी लागगी।

धोळी धोत्या, कमीजा जकी गूगळी हूयोडी'''गूछ्या-डाडी, काना री ल्वाळी ओर आम्या री भापण्या धूळ सू धोळी हुया अै सगळा सरक्या, झूपड्या में बावडै। दिन झटकै आथ ज्यावै। चढती रात मगळै चूला छरड्या वळै कणा बुझै। धूवै री डूड अूपडै। फूका मारती लुगाया रा केस विखरै—मोत्या रा, चादी रा झेला झबरकै। भूख-तिस मिटाय दुख-दरद री बाता करै।

अेक झूपडी में जमना रो गुसरो आडो हुयोडो बोलतो जावै। सारै वैठी सासू हुंकारा भरै। चूलै चढायोडो दळियो खदबद-खदबद सीजै। अपूठी वैठी जमना आमूडा ढळकाती जावै। निसकारा भेळै ऊडा ऊडा सास लेवै। छरड्या सरकाती रा हाथ दाझै ओर दाझै वी रो काळजियो—दाझतो ई जावै।

सासू पूछ्यो—बीनणी दळियो सीजग्यो काई ?

आमूडा नै ओढणियै रै पल्लै बाधती हुकारो भरचो। पछै कोई बोल-बतळावण नी हुई। सिलोर रा डबरिया में दळियो घाल सिरका दियो।

जमना रा घूघटा सू झरता आसू देख कदे डोकरो चिड ज्यावै—वो लाई मरग्यो जको मोरो। तू मुरड-मुरड कर नै म्हानै मार न्हाखी। म्हारै काळजै किस्यो दरद कोनी ? आठू पोर ओ काई रवद ?

—"बेटा, दोरो मती मानजे। लाडी, आ रो सवाव काठो गतरस हुयग्यो," इया कैय सासू वात परोटै।

जमना डुमक्या भरती पाणी ल्यावै, पीसै, पोवै तीनू जीव दोरो-सोरो काया नै भाडो देय काम लागै। हफ्तो चूकै। मोटरा वगै। हाजरी भरणिया, मुनीम, अफसर, ठेकादार—"वा रै वा मरदा, जबरो काम कर दियो," कैय ओढणिया रै पल्ला रा रग निरखै। कणा बोदा मिनखा नै झूठी डाटी पावै—"भागू, नेमा, पेमा, जमना थे च्यार जणा काम मोळो करै लाग्या। थारा पीसा काटणा पडसी।"

आ सगळी वाता में माथै रैवता थका मन नी रमै। कणा खदबदीजता दळिया में जेज लागै वी वगत मासू-सुसरा री हलचल सुणती-सुणती जमना कठै आतगी घूम ज्यावै। भोमा रै भेळै बीत्योडा दिन मामै आप ऊबै। मन री पीड मगसगी चढ'र जागै। हारोग्यो हुरगावण री मनस्या हाचळा में कमसमाट जगावै। मादळिया रो याद मन मोळो कर देवै। भोमा री अेक-अेक वात हिडदा रै ओळयू-दोळयू फिरवो करै। भोमा री वोनी माव मारै मुणै। सडक री कावरया रै हेटै मू वा आवाज आवती लखावै—'आपा सगळा नै अठै काम में खटता मरणो पडसी। वडेरा ओ काम भोळायग्या। आपा नै कदे कोई याद करसी काई ?"

जमना नै था आगरी गान चेतै आवै—भोमा री सागती मीट, तडफडाती काया,

अतस री पीड सू हळावोळ हुयोडा गळा री आवाज सुणीजै—"अे मावडी मरग्यो अे।" वै झूपडचा सगळी छिया-मिया हू ज्यावै, अेक अधारै नै आख्या फाड-फाड देखती रैवै। आमूडा ढळकता जावै। सन्ना आगै पसरतो जावै, झूपडचा लारै सिरकती जावै। डेरा कूच करै बठै जमना रा टूटचा-भाग्या मनसूबा री जिया काळी हुयोडी ईंटा रा ढयोडा चूला, आदी बळयोडी छरडचा, की राख रा ढिगला, ढायोडी काची भींता ओर बुहारयोडा आगणा रैय ज्यावै। ओर अेक ठोड बमबा रा सपना मन नै उणमणो कर न्हाखै। सफा अणपढ जमना डेरा छोडबा सू पैली भोमजी भाव खिणायोडा नै लूगडिया री ओट बाचै—डुसक्या भरै। डेरा लद ज्यावै।

•

# वरसगांठ

## मुरलीधर व्यास

मे'-अधारी रात। डाफर चालै। कोढियो सीयाळै रो मास। रात री आठ-ई बजी कोयी नी पण किसो कोई मिनख रो जायो गळी मे दीस जाय। घीसू धूजतो-धूजतो राम-राम करता घर मे बडियो। मोती री मा बोली—"आ ई कोई आवण री वेळा? ओढण नै सरीर माथै पोळियो'र आ सरदी! टैम-सर घर मे आय जाया करो। मोती रोवतो-रोवतो, काका-काका करतो, हणा ई सूतो है।

घीसू बोलियो—"कमठाणै सू तो टैमसर ई छुट्टी हुयगी ही। पण अेक-दो जागा पईसड़ा लावण नै गयो परो। रोजीना आजकल-आजकल करै। पईसड़ा हाथ आय जावै तो मोती रै रूईदार कोट-मूयण कराय दू अर ओढणै मारू मीरख बणावण रो कपड़ो आपणै वास्तै ई लाऊ। अबकै तो सीयाळै रो काम खराखरी है।

ओ फिरर छोड'र पैली रोटी-पाणी भेळा तो हुवो"—आ कै'र मोती री मा उठी अर बाजरी रा दो मोटा-मोटा सोगरा अर अेक कटोरी मे लूण-मिरचा री चटणी ला'र आगै मेल दी। घासफूस बाळ'र थोडो सेक जगाय दियो। लाई खड़खड़जियोडो तो आयो ई हो, मेर लागो जद जी मे जी आयो। रोटी खावतो-खावतो बोलियो—"सियाळै कोढियै मास नै कुण मान्यो हो? ओ तो भागवाना रै ई काम रो है। कैवत मे ई कैवै है "सीयाळो मेभागिया, दोरो दोजखिया।"

रोटी खा'र घीसू गूदडा मे बड्यो। मोती री मा जागा-जागा सू रूई भेळी हुयोड़ी, जाळी झरोखा आळी झगझगरथा अूपर सू नाख दी। गोडा गळै मे घाल'र घीसू पड़ग्यो।

मोती री मा अेक पाटो गोसूर ओढ'र मेर सनै बैठी-बैठी अून कतरण लागी। भाग री वात, चिमनी नै अबार ई बं'र काढणो हो। घीसू बोलियो— "चिमनी मे दिन थका तेल भरा मांवती•••।"

"भरा कठै सू मावती। गट्टा मागज बोलिया—थागना पईसा दे जावो'र तेल ले आवो।"

"तो मीठै तेल रो दियो ई कर लेती ।"

"मीठै तेल री तो काल पूडी बणाय ली ।"

घीसू दुखी हो'र बोलियो—"काई करा, काई नही करा ? खनै फूटी कोडी कोयनी ।"

मोनी री मा कैयो—मीडा माराज खनै सू खधी कढाय लो ।

"जाणती-बूझती किया अणसमझ वणै है ? गैली बाता करै है ? माराज री आगली खधी तो चूकी ई कोयनी । पचास रै पेटै पाच-पाच री सगळी पाच खध्या अवार ताई पूगी है ।"

"तो चीठी फोराय लो । पाछी पचास री लिख दो ।"

"पण पलै काई पडसी ? लारली वेळा ४०/-दे'र ५०/- री चीठी लिखायी ही । अबकै भळै ५०/-ऊपर १०/-काट लेसी । रुपिया तो गिणती रा १५/-ई हाथ आसी ।"

"परमू मोतीडै री वरसगाठ है । काई घी-गुड तो लावणो ई पडसी । माताजी री पूजा हुसी । जतना रो काम है ।"

"गरीबा रा जतन रामजी करसी । तनै तो पूजा री चिंता है पर मनै ओ फिकर है, कठै ई माराज छाती माथै आय चढिया तो काई करसू ।"

( २ )

अठीनै सी दिन दूणो चमकण लागो बठी नै घीसू नै सी-रखै रै कपडा री चिंता चौगणी लागी, पण खनै अखत रा बीज ई नही । आज कमठाणै री छुट्टी हुयी जद रामूडै कारीगर नै सागै ले'र मनजी माराज रै घरै गयो अर खधी ऊपर रुपिया मागिया । मनजी माराज गोमुखी-मे हाथ घालिया बैठा जप कर रया हा अर सागै-सागै खधीवाळा सू रोड-झोड करता जावता हा । माळा रा मिणिया ई सागै-सागै गुडकता हा । घीसू री बात सुण'र बोलिया—"ना रे भाई ! था सू कुण पानो घालै ! था रा रुपिया आवणा बडा चीडा है ।"

आखर रामूडै री सिफारस माथै कईक ढळ'र बोलिया"—देख भाई ! गोथळी खोलाई रा, वखूतरा रै दाणै रा अर चीठी लिखाई रा लागैला । इस्टाम रा पईसा न्यारा है ।

घीसू बोलियो—"माराज ! गरीब हू, मनै इण तरै तो पोसा ।"

"जणै दौड जा सीधी ई नाक री डाडी । किण तनै पीळा चावळ भेजिया हा । अरे राड रा काचा ! धरम री जड सदा हरी रैवै है । धरम रा पईसा काढ़ता जी ऊपर किया आवै है ? डूबग्यो सनातन धरम ! "

"ठीक माराज ! आप फरमावो ज्यू-ई मजूर है ।"

"पण हू तो तनै जाणू कोयनी । जामनी धलावणी पडैला ।"

"जामनी रामूजी घाल देसी।"

२५/-री चीठी लिखीजी जिकै मे ५/-काटै रा, १/-गोथळी खोलाई रो, आठ ा कबूतरा रै दाणै रा, अर चार आना चीठी लिखाई रा अर इस्टाम रा पइसा :'र कुल जमा १८/-घीसू रै पल्लै पडिया।

( ३ )

ामू घणो ई सोच विचार'र खरच करयो पण तोई वपडा-लत्ता रा १५/- चै हुयग्या। बाकी मोती री बरसगाठ खातर गुड घी लावण मे लागग्या। पाछा ाग्या बावैजी री जात।

मोती री मा माताजी माडी, पखाल करायी, छाटो घालियो, नारेळ धारियो, धूप-दीप कर'र लापसी रो भोग धरियो। हाथ जोड'र अरदास करी ा! मिनखा कुसळ राखे, छोरै नै सोरो राखे, अबकळै आयी जकै सू सवायी ाये। मोती रै लिलाड मे टीको काढियो अर घीसू नै जीमण रो कयो।

घीसू बोलियो—"मनै तो अवार सी-कपा लागै है। गुदडी नाख दे। थे जीम लो। म्हारै तो ताव उतरिया बात।"

मोती री मा घणी कैवा-सुणी करी जद माताजी नै छाटो घाल'र मूडो अैठण ी बैठो ई हो'क इत्तै मे मीडा माराज आ'र घोटो घुमायो ई। गरजना करी—"ला रै ीसूडा! खधी रा रुपिया ला!"

घीसू रै हाथ रो कवो हाथ मे ई रैयग्यो। लाचारी स बोलियो—"अबकळै माफी दो माराज! अगलै महीनै दोनू खधिया सागै ई दे देसू।"

"देसी कठै सू? बाप रै सिर सू! ठाकरद्वारो चवडो घणो! आगलो-पागलो तो हू जाणू कोयनी। दावो ठरकाय दूला। पछै माथै हाथ दे'र रोवैला। झख मार'र कावोजी-काकोजी कै'र रुपिया धरणा पडैला।"

मोती री मा बोली—'माराज! हाथ जोडू हू, अबकळै माफी बगसो। आज टाबर री बरसगाठ··"

"बळगी राड बरसगाठ! बेटा माल उडावै अर लैणायता नै अगूठो बतावै है।"

"माराज! माल कठै पडिया है। टुकडा मिळ जासी तो ई घणा है।"

"ना भाई! कुई होवो, हू तो आज लाखा हाथा ई टळू कोयनी। [illegible] ले'र ई जासू।

"घीसू माराज रा पग झाल'र बोलियो—माराज! अबकळै माफी बगसाय दो। आगलै महीनै ··"

"माफ कुण करै कुट्टण! म्हारै तो आया-गया ई [illegible] राउट मन कर! बेगा रुपिया दे।"

"खनै होता माराज ! तो आपरा अबार ताई काय नै राखता ? खनै तो फूटी कोडी ई कायनी ।"

"तो काई चीज झलाय दे । रुपिया दे'र पाछी ले जायीजै ।" इया कै'र माराज तीना नै सिर सू पगा ताई देख्या पण कई रै सरीर माथै चादी री तीवई को देखी नी । मोती रै हाथा मे दो कडिया चादी रा देखिया ।

"ला ला ! बस अब मोडो मत कर !"

"म्हारै खनै तो चीज न वस्त । आ काया पडी है, ले जावो । आगलै महीनै आप रा काई भाव ई रुपिया राखू कोय नी, अबकळी बार माफ करो, फेर "

"फेर म्हारै करमा रा, जद ई तो तै-सू पानो पडियो । बेटो उळटो रग जमावै है । चीज वस्त किया कोयनी ? साळै री नीयत ई तावो है । देवै कठै सू ।"

आ कै'र झट मोती रा हाथ पकडिया ईज । मोती मा-बाप सामो देख'र रोवण लागो—"मा ! मा ! काका ! काका ! · ओ · म्हारा कडिया ओ·· कडिया·· कडिया रे · ओ मा·· ओयरे···!"

घीसू बैठो-बैठो देखतो रयो । मा मूधो माथो किया जमी माथै पडी ही ।

# विरतेसरी

## मूळचन्द प्राणेश

डोकरडी कदाच् केई ताळ भळै भी उडीकती, पण जेठ रै कळकळतै तावडियै अर बळबळती लू उणरै धीरज रो बधो तोड दियो। उण घणा ही आपरा हाड-गोड काछवो भेळा करै ज्यू कर परा'र ओटलियै री सरण करिया, पण ओटलियो राड-जायो मिनट पाँचेक मे गैली राड गाभा फैंके ज्यू छिया नै फेंक'र नागो-सतूड हुय'र ऊभग्यो। डोकरडी उण टटपूजियै ओटलियै नै छोड छिटकायो अर उठै सू उठ'र ऊभी हुई। उठता ही उणरी मीट सामलै दुकोमियै घोरै ऊपर पडी। डोकरडी नै घोरै री ढाळ सू ढळतो एक आदमी रो झबको गो पडियो। उण झबकै उण री टूट्योडी आसा रा तार साध दिया। वा ओटलियै सू पावडा दसेक अळगलै मूळ री जडा म जाय बैठी। पाणी आळो कुवियो खोल'र उण आपरा सूखता कठ आला करिया।

डोकरडी नै आज-काल री बळगत ऊपर रीस आवण लागी। उण मन मे विचारयो—देखो राडजाया जमानो आयो है! आज म्हनै अठै तपस्या करती नै पूरो अठवाडियो हुवण लाग्यो है, जजमान री बात तो अळगी रैई, केई बेवतै बटाऊ तक रा दरसण नही हुया। जमानो तो वापडो पैला आळो हूतो—जिरै दिना म्हारै वा (पैनई स्वर्गीय पति) नै साम खावण नै भी फुर्मत नहीं मिलती। जजमान ऊपर जजमान! ओटलियै रै ओळो-दोळो मगरियो सो मडियोडो रैवतो। म्हारै सट्टर देखणं रो मोको मैपॅलटो होज हो, पण अळगी गावडियै मे जनमी-उपनी एक छोरो नै अठै आया पछै कदे ही मा-बाप कै बैन भाभा रो रवाड तक नहीं आई। आवती भी क्यू कर! पीहर मे जिकी जिन्सा रा नाव-नाव ही ज सुण्या, उणां नै देखी ही नही, परोटी पण ही। उण घर मे धान-दाणं रा तो किसा बखाण! चावळ-चीणो री भी कोई गिणतवार नहीं ही। लाडू, जळेब्या, पेडा इत्याद मिठाया री भडैळा भरी रैवती। सागरडी रै बूचै अर मीरै रै कवै नै तो पूछो ही कुण! इसी जिन्सा तो गाया रै बाटै मे काम आवती। दूध-दही री नदिया वैवती। पण पेदली रो भाग

तो पुटियै जोगो ! ओ सुख इण काया नै कठै। खेत रै खरकमै मे वै मारीजग्या अर...!

"क्यू सा ! लालै रो ओटलियो ओ हीज है ?"

अचाचूक रै सवाल सू डोकरडी ओझकी अर सावचेत हुय'र आयोडै आदमी रै सामो जोयो। वा लालर रो पल्लो खाचती बोली—"हा, जजमान ! आप नाव लियो, उणा रो ओटलियो ओ हीज है।"

"लालो तो को दीसै नी ?"

इण सवाल डोकरडी रै काळजै नै हलाय नाख्यो अर उण री आख्या सू चौसरा आसू बैवण लागग्या। उण डुसका खावती वतायो के—"काई बताऊ जजमान ! वा (बीजोडै स्वर्गीय पति) नै तो बिलाईज्या नै आज तीन बरसा रै अटै-गडै हुयग्या...!"

"भगवान री मरजी है सा, काई जोर...?"

"जोर काय रो लागतो, जजमान ! घडी मे घडियाळ बाजगी। दोय-तीन लोही री उळटचा हुयी। लोग बापडा हकीम-वैदा नै लेय'र आया जितरै-जितरै तो उणा रो हस ही उडग्यो...!"

"साची वात है, डोकरी ! आ कालै री हीज बात है—म्हारलो भतीजो (बडोडै भाई रो बेटो) राजी-खुसी दिनूगै रो खेत गयो हो अर उठै पहुच्यो ही कोनी, जिकै सू पैला ही मारग मे पान लागग्यो। लवै-ढवै आळा बापडा तुरत-फुरत गाडी ऊपर घाल'र उणनै घरै लेय आया। घणी ही झाड-फूक करवाई, पण उण तो आप री आगलो घर सिवरचो अर म्हे सगळा हाती-हाती करता ही रैया !"

"साची बात है, खूटी नै बूटी कोनी।"

"हुवो सा, वा माया तो मारगा लागी, पण लारला नै तो जमडड भरणा हीज पड़सी। वो लारै एक तूतडो छोडग्यो है। सवारै दिना लाग्या वो भी तो जवान-मोट्यार हुसी अर आज आळो काचो कळियो मार्थ रैया का'नै लोग मेहणा-मौमा देवणा सुरु कर देसी। आ जाण'र एक गेड रा पुंजिया फाडचा है।"

"साची है, जजमान ! आज तो एक गेड रै पुंजिया सू ही बाळक रो मुहडो अजळो हुय जासी, पण दिना लाग्या च्यार गेड करिया भी पिंडो छूटै कोनी।"

"आ बात तो है हीज ! आज तो इण काचै मरणै ऊपर न्यात बिरादरी आळा छोटै-मोटै टाबर-टीगरा नै हीज मेलसी तो मेलसी, पण काल दिना लाग्या बूढा-ठेरा भी जीमण नै आवता सकै कोनी।"

"बस, न्यातडिया रै सगळा सू मोटो दुख ओ हीज है।"

"पण न्यात-बिरादरी नै छोड'र जावा भी तो जावा कठै ? हा, तो क्रिया करा-वण नै कुण हालसी ?"

"और तो कुण हालसी, जजमान ! बसी रा बीजा सगळा लोग तो कुसमै रै

ारण आप रा ढोर-डागरा अर टाबर-टीगरा नै लेय'र पजाब कानी गयोड़ा है, गाव
पकत हू एक जणी, था जजमानारो काम काढण नै रैई हू। थे अठै ओटलियै ऊपर
ामग्री लेय आवता तो हू केई छोरै छीपरै कनै सू सहारो लगाय'र दोय लोटा पाणी
ाणी रै नाव ऊपर ढळवाय देवती, पण···।"

'पण न्यातडिया तो क्रिया आपरै आख्या रै आगै कराया बिना पतीजै
ोनी। जे इणतरै मान लेवता तो म्है किया गगाजी रै घाट ऊपर कराय
ावना···।"

"गगाजी आळी क्रिया तो नाव मात्र री क्रिया है, जजमान! वठै तो ठग बैठा
ै।"—डोकरड़ी गगागुरवा ऊपर रीसा बळती बोली।

"कई हुवो सा', लोगा रै तो चालै है, पण म्हानै तो गाव मे हीज करावणी
पड़सी।"

"मा! आज तो कोई आयो हुसी?"—माचै रै ऊपर सूतै डोकरड़ी रै छोरै
पूछ्यो।

"हा, बेटा! आज भगवान निवाज्या तो है, पण ··?"

"तो ला रोटियै आळो चूरमो। तू कैवती ही नी के जजमान आवता पाण हू
तनै चूरमो खुवासू।"

"पण, बेटा! जजमान तो क्रिया आप रै गाव मे करासी।'

"गाव मे करासी?"—छोरै आख्या मे चमक लाय'र पूछ्यो।

"हा, बेटा! जजमान रै बिरादरी आळा करड़ा आदमी है सो सगळो काम
आप री आख्या रै आगै करसी। थारो बाप भी घणी बार गावा मे जाय'र क्रिया-
कर्म कराया करता। जजमान ऊठ लेय'र आयो है।"

"तो तू गाव जासी?"

'ना रे बेटा! हू राड रूडी कठै जासू? तू थोडी हिम्मत कर लेवै तो काम पार
पड़ जावै।"

"पण, मा! म्हारै सू तो मावळमर उठीजै-बैठीजै ही कोनी, ऊठ ऊपर ठैरीजसी
किया···?"

"आ तो म्हनै ही दीसै है, म्हारा बेटा! पण गया बिना सरै भी तो कोनी।
गाव मे जे कोई बीजो छोरो छापरो हुवतो तो हू आधणै ही भेल देवती, पण गाव
मे तो नर नावै चिडी रो जायो तक रैयो कोनी।"

"म्हारी सरधा तो बिल्कुल नहीं है, पछै तू कैवै है तो दोरो-सोरो जासू परो।"

"ओ कांई क्रियागुरु लाया हो!" गांव आळा गो-गो करी।

"पण यानै काम सू मतलब है कै क्रियागुरु रै ताजै-मोटै डील सू।"—मूतक रै
कारै सफाई पेस करी।

"चोखो, भाई! म्हानें किसी बहस करणी है, काम पार पड जासी जद देख लेसा।"

"हालो-हालो।"—गाव आळा खेजडी कानी टुरिया।

बाप रैं मरण रैं उपरान बिरत रो सगळो छोटो-मोटो काम छोरो हीज करिया करतो, पण करतो आपरैं ओटलियैं ऊपर। कठै ही जे छोटी-मोटी चूक-भूल रो अदेसो हुवतो तो छोरैं री मा पैला सू ही सहारो लगाय देवती। इतरी बडी न्यात बिरादरी रैं बैठा थका, क्रिया करावणरो मौको छोरैं रैं सैंपैलडो ही हो। वा खेजडी रैं हेठैं आमण ऊपर जच'र बैठ तो गयो, पण बैठा पछै उणरैं हाथा-पगा मे कपकपी हुवण लागगी। कईं तो बीमारी रैं कारण छोरैं रो सरीर कटियोडो हो अर कईं घणैं सारैं लोगा रो डर, इण कारण सू उण रो सरीर पसीनैं सू तरातर हुयग्यो। पण फेर भी छोरैं मृतक रैं कार्कै री बात राखण खातर हिम्मत सू काम लियो अर क्रिया री तैयारी मे लागग्यो।

क्रिया रो सगळो सामान उण आप रैं आसण रैं ओळो दोळो जचायो। मृतक रैं छोटकियैं भाई न पिंडदान करावण वास्तै आप रैं सामनैं बैठाय लियो। सैंपैलडो काम हुयो मृतक रैं प्रतिनिधि डाम रैं पूतळैं सू। छोरैं डाम रा दोय तिणकला आडा-ऊभा एक-बीजैं रैं ऊपर मेल'र पूतळैं री धड करी अर उण रैं बिचाळैं तिणकलो ऊभा कर दोय तिणकला हेठैं-ऊपर आडा जचाय'र पूतळैं नैं पूरो करियो। काचैं सूत री जिन्दोई अर कोरपाण पिछोवडी रा गाभा पैराय'र उण पूतळैं नैं आपरैं अर मृतक रैं छोटकियैं भाई रैं बिचाळैं मेल दियो। छोरैं री चतराई अर हाथा री फुर्ती देख'र उठै बैठा जिकै न्यात-बिरादरी आळा आपरैं सागी मुहडैं सू उण री सरावणा करण लागग्या।

छोरैं सगळा काम हुमियारी सू करिया, पण रोटियैं खातर आटो गूदती बेळा उण रो मन डुलग्यो। महीनैं बीस दिना री काढयोडी भूख, आटैं नैं देखता ही चेतन हुय'र लाव लाव करण लागी, पण इतरैं मिनखा रैं बैठा थका आटा क्यूकर फाकीजैं। छोरैं मन काठो कर'र गूदियोडैं आटैं माय सू एक दीयो हुदै जितरो आटो तो राख-लियो अर बाद बाकी सगळैं आटैं रो एक मोटो खारो रोटो बणाय'र पुळपुळ मे भार दियो।

छोरैं मृतक रैं छोटोडैं भाई नैं समझायो कै ज्यू सुभ काम मे सगळा काम जीव-णोडैं हाथ सू हुया करै है, त्यू हीज इण प्रेत कर्म रा सगळा काम डावोडैं हाथ सू करीन्ती। जठै-कठै ही टीकी-टमकी रो काम हुसी, वो सगळो अगली आगळी सू करीजसी। मृतक रैं छोटोडैं भाई उण री बात रो हुकारो भरतो थको आप री घाटकी हलावण लाग्यो।

छोरैं पूतळैं नैं आपरैं हाथ मे उठाय लियो अर मृतक रैं भाई नैं कैयो कै थे

इणनै धीरै-धीरै थारै हाथ सू सिनान करावो। वो सिनान करावण लाग्यो। इण रै बाद पूतळै नै कपडा-लत्ता पैरावणा, पागडी बाधणी, सुख-सेज मे सुवाणणो इत्याद जिका जिका काम छोरो भोळावतो रैयो, मृतक रै छोटोडै भाई पूरा कर दिया। छेवट बात जिन्दोई रै तागै तोडण ऊपर आवती अडी। मृतक रै भायां-भेळप्या पाच रुपिया रो लोट छोरै रै पगा आगै मेल'र तागो तोडणै रो कैयो, पण छोरो अडग्यो। बोल्यो—"म्हारै तो आज मोतिया खेत वूठो है अर थे पाच रूपली फैंक'र टाळणो चावो ?"

"हरे राम-राम! मामलै रो तो घर पाणी रै बाहळै बैयग्यो अर इण रै मोतिया मेत वूठो है।"—कनै बैठा जिकै लोगा खिखर करी।

छोरै हिम्मत को हारी नी। बोल्यो—"थे कैवो जिकी बात तो ठीक है, जजमान! पण म्हानै किसा थे ब्याव मे बुलाय'र सीख-विदागी देवो? म्हारो तो काम ही प्राणी रै लेखै दोय लोटा पाणी ढाळणै रो है।"

लोगा बिचाळै पड-पडाय'र छेवट बीस रुपिया मे तागो तोडायो अर छोरै नै कागोळ घालण वास्तै कैयो। छोरै तागो तोड दियो अर रोटियै नै चूर'र उण माय सू थोडो सो चूरमो अर दही एक आकपनै ऊपर घात'र कागोळ घालण वास्तै मृतक रै छोटोडै भाई नै पकडाय दियो।

मृतक रै भाया भेळप्या आपू आप री तरफ सू प्राणी रै लारै पेटिया दिया। थागो सारो सूको रसोई रो सामान अर मिठाई भेळी हुयगी। मृतक रो छोटोडो भाई जितरै कागोळ घाल'र पाछो आयग्यो। उण आवतै पाण सैंपैलडो क्रियागुरु नै आपरै हाथसू रुको देय'र जीमायो अर पग दाब'र आसीस ली। छोरै री छाती फूली-ज'र भवागज चौडी हुयगी। जिका लोग आडै दिन मुहडो तक नही देखणो चावै, वै हीज माणी लोग काम पडिया हाथा सू रुका देवै अर पगा पड'र आसीस मागै। उण नै आप रो जीवण सार्थक लागण लाग्यो।

छोरा घर मे बडतो ही थाबा खावण लागग्यो। उण री मा, उण नै सहारो देय'र माचै ऊपर लाय सुवाण्यो। वा छयावळी-खयावळी गाठडक्या नै खोल'र सभाळण लागी। एक पल्लै मे आटो बाधियोडो दीस्यो। उण आटै आळी गाठडी पाछी बाधदी अर दूजोडै पल्लै री गाठ खोली। उण मे थुणचेक मिठाई रा दाणा निकळ्या। मा पूछ्यो।—"अै इतरा सा ही मिठाई रा ओरा क्यू कर ?"

' बीजोडा तो हू खायग्यो, मा···?"—छोरो गिरणतो-गिरणतो बोल्यो।

"तू खायग्यो? मिठाई तो अळगी रैई, वैदजी तो धान तक बद कर राख्यो हो। म्हे थनै इतरी भोळावण दी ही कै चेटा खाईजै थई मत···?"—छोरै री मा बिलखी पडती बोली।

"खाय लो गयो, मा ··!—छोरै सू आगली बात पूरी को करीजी नी। उण

रै पेट मे आटा आवण लाग्या। वो माचै ऊपर पडियो ताफडा तोडै। छोरै री मा तीजोडै पल्लै सू खोल'र बीस रुपिया रा लोट अर कई खुदरा पीसा काढ्या। जितरै छोरै नै जोर री उकराड हुई। छोरै री मा रुपिया अर भाज मुट्ठी मे भीच्या हीज उठी अर छोरै नै एकै हाथ सू सहारो देय'र बैठो करियो। उण नै भळै उकराड आवण लागी। छोरो सरीर सू साफ कटियोडो। उल्टी पूरी बाकै सू बाहर आई ही कोनी, जितै सू पैला उण रो हस उडग्यो। उण री आ हालत देख'र डोकरडी रो बाको छूटग्यो। वा जोर-जोर सू कूका करण लागी, पण उण सूनै गाव मे कुण सुणै? बस्ती रा सगळा लोग तो ताती-उपाड बाहर गयोडा। डोकरडी छोरै नै खोळै म लिया बैठी। माचै रै ओळा-दोळा वै बीस रुपिया रा लोट अर खुदरिया पीसा बिखरियोडा पडिया।

•

# चीचड़

## यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

झाझरकै सू ई भागा-नाठी होवण लागगी। गोपाळो काल रात नै घणो सारो दारू पी आयो हो जकै सू उण री मादगी वधगी। डागधर बीनै सफा-सफा कै दियी हो कै दारू थारै वास्ते विस बरोबर है, पण गोपाळो सगळा री आख्या माय धूड घाल-परो सेवट दारू रा घणा सारा गुटका गटकग्यो अर अबै माचै माथै पडियो टसकै।

बी री बडोड़ी बेटी जीवली पागळी ज्यू माथो गोडा रै विचाळै घालनै बैसी, जाणै उण रै डील माय सून वापरगी हुवै, जाणै वा जीवती मरगी हुवै।

उण री साळकी माय मसाणा रो सरणाटो पसरयोडो हो। अेक बास री तणी वणायनै उणरै माथै सीरखा धरियोडी ही। खूट्या माथै गाभा टगियोडा हा। अेक आळै माय चिमनी पडी ही जिकै रै ऊपर धुवै री काळी लीकाट घणी ऊची गयोडी लागती। दूजै कानी एक काच रोप्योडो हो।

जीवली रै असवाडै-पसवाडै चूडीउतार टाबर सूता हा। चार भैणा अर तीन भाई। सात जणा। कनली साळकी मे बी री मा आपरै धणी रै मगरा माथै हाथ फेरती जावनी ही।

मोडो वावो जीवली रै कनै आयो। चोखो पडोसी हो। आय'र बोल्यो, "काना मे डूजा देयनै बैसी है के ? थारै बाप री हगीगत चोखी कोनी।"

बा फाटयोडै ढोल री तरिया फाटगी, "तो हू कर के ? हू डागधर कोनी।"

मोडै वावै इण सू पैली जीवली नै इत्ती बैडी बोलतै कदैई देखी कोनी। वो अचुभै मे पडग्यो। उणनै गडक जेडो घूरण लागग्यो।

जीवली रो उणियारो काळो दराक तो होईज अर अबै खल्ला रो कूटियोडो सो लागण लाग्यो। जाणै मायनै सू वा घणी दुख्यारी हुवै।

"अरै, गैली !" वावो घणो हेताळू होयनै बोल्यो, "तू ई पल्लो खीचनै बैस जावैली जद वै मूरख री कुण सार-सभाळ करैला ? वी रो सुभाव तो गडक री पूछ जिया है। जै वा सीधी हुवै तो वीरो सुभाव सुधरै। फेर भी आपा नै आपा रो धरम निभावणो पडसी।"

जीवली ऊभी हुई, तपेली हाथ मे लिवी अर मा रै गीलै उणियारै नै जोय परी अबोली-अबोली दूध लेवण नै निसरगी।

पण फेर भी उणनै लाग रयो हो के उण रै डील माथै चीचड ई चीचड चिपियोडा है अर उण रो लोई पीवता जावै है।

•

# मेरो दरद न जाणै कोय

## रामनिवास शर्मा

दिनूगै रो वखत हो। जज साहब पढण-लिखण रै कमरै माय बैठा लारलै तीन-च्यार दिना माय आयोड़ी डाक नै देख-देख र'पढै हा। हासियै मायै नान्हा-नान्हा नोट लगाय, इनीशियल करनै तारीख लगावै हा। माथै ऊपर पखो चालै हो। ट्यूब-लाइट चमै ही। छोटा, लाम्बा, एक पेज रा अर दो-च्यार पेज रा भात-भांत रा सरकारी कागज निकळता जावै हा अर जज साहब री निजर जरूरी-जरूरी बाता पर फिरती जावै ही अर बी रै सागै ही आगळ्या माय दब्योड़ी लाल पेन्सिल निसाण लगावती जावै ही। डाक रै पैड रै सागै कई निजू कागज भी निकळता जावै हा। समय भागतो जावै हो, पण डाक रो पैड तो खाली हुवण रो नाव ही कोनी लेवै हो। कचैड़ी रो वखत सामै भागतो आवै हो। आज रै मुकदमा री तारीखा मिसला माय सू मूडो काढनै झाकै ही। केई मुकदमा रा आज फैसला सुणा-वणा हा। वै भी झाक-झाक नै आपरै भाग रो निर्णय लिखण रो तकादो करता जावै हा। जीव अेकलो पण जोखू घणी ही। आ सगळी समस्यावा माय जज साहब रस्तो काढता जावै हा। निजू कागज जणा ही आवता, जज साहब रो मून्डो खिल जावतो। कई कागजा नै देखता ही मून्डै रा भाव उपेक्षा सू भरीज जावता, पण स्याणो आदमी खरी खोटी सगळी बाता नै पीवतो अर वखत रो तकादो मान नै सगळा जरूरी काम सलटावतो रैवै। लिलाड मायै पसीनै री हळकी-हळकी बूदा आगी ही। बार-बार जज साहब बारी माय सू आवतै तावडै रै चिलकै नै देखता हा। कालै री बिरखा रै कारण आज तावडै माय गरमी थोड़ी ही, पण अमूजो घणो हो। थोडा सा कागज रिया जणा एक मैली सी खाम आपरै नाव री थोडै भणियोडै मिनख रै हाथ सू ठिकाणो करयोडो मिली। जज साहब ईं खाम नै दो-तीन बार उलट-पलट नै देखी अर जाणणो चायो कै आ खाम भेजण आळो कुण है, पण ऊपर सू देखण सू की पतो कोनी चालै हो कै इणनै भेजण आळो कुण है। हारनै खाम रो खूणो फाड्यो अर कागज काढिया। बारै सू मधरी चालती पून रो झोको कणा-कणा ही आवै हो। फेर आवण आळी बिरखा रो अमूजो बधतो ही जावै हो। चढतै

पसवाडो फेरण रो जतन करू । इनै आख खुल जावै अर रात रो सागीडो काळो अंधकार खावण नै दोडै है । आपनै के बताऊं ! लुगाई री गत लुगाई समझै है । पौ-मा'री डाफर मनै आखी रात ही कोनी सोवण देवै । पून रै फटकारै सूं बाजता किंवाड भूत रो वैम करावता रैवै ।

श्रीमानजी, आपनै के लिखू ! कपडा फाट्योडा है पण डील बा माय सू ही बिखरतो दीखै । चौमासै माय अकूरडी ही हरी हुय जावै । मिनख री बात ही के कैवणी । जमानो नाजुक है । म्हारी जरूरत समाज री आवश्यकता है । जे म्हारो पग उलटो सीधो पड जावै तो ओ म्हारो कसूर कोनी हुवैलो । मनै सायेरो चाहिजै । मायेरो मारग सू भटकाय भी देवै । धोखो कोनी देवणो चावू । म्हारी आस्था अर विस्वास डिगाणो कोनी चावू हू । इण वास्तै आप सू अरज करू हू के म्हारै सागै न्याय करोला ।

न्याय करणा आळा भगवान रो कोप राखै है ।

आपरी
किसनी
बेवा किसनै री

कागद रै पूरो हुता ही दस रा टणका लाग्या । जज साहब रै लिलाड माथै भावां रा भतूळिया आवा लागग्या । पेसकार रो सदेसो आयोडो हो के बीरी लुगाई री हालत खराब है इण वास्तै आज बो कचैडी आय कोनी सकैलो । जज साहब कागद माथै पी० पी० लगाय नै इनीशियल करिया । सगळी डाक नै भेळी कर नै कचैडी पुगावण रो अरदली नै हुक्म दियो ।

अर वो दिन जज साहब रो बयान लेवण माय फैसला लिखण माय, पेसिया री तारीखा देवण माय अर तहसीला री रिपोर्टा लिखण माय गुजर गयो । सिझया बगलै पूग्या जणा बोळा थकग्या हा । खावणो-पीवणो करनै घूमण नै गया परा । तरो-ताजा हूयनै थोडी रात पडिया पछै पाछा आया । पाछा मिसला निकाळवा लागग्या । काम करता-करता दस बजण लागगी । पाछी थकाण आवा लागगी ही । बारी माय सू अन्धारधुप्प दीखै ही । ध्यान सू देख्यो तो पतो चाल्यो के बिरखा हुवण आळी है । आभो बादळा मू भरियो हो । दूर-दूर ताई विजळी झबका मारै ही । पून ठै'र ठै'र नै चालै ही । वघाउडा आवा लागग्या हा । जज साहब पाछा काम सलटावण नै बैठग्या । जितै किसनू वल्द हेताराम री मिसल सामै आई । दिनूगै आळा सगळा समाचार आख्या आगै फिरवा लागग्या । जज साहब रा विचार पाछा झटका खायनै घूमवा लागग्या ।

काल री ही तो बात है ।

सरकारी गाडी पूगळ रोड पार करनै सिविल लाइन्स माय पूगी जणा रात री

नव बजवा लागगी ही। छाटाछिडको थोडी ताळ पैली ही हुयो हो। सगळी सडक पाणी सू भरी ही। सडक निरजन ही जाणै आधी रात हुयगी है। भूली-भटकी एक दो कार फर्राटै सू निकळ जावै ही। थम्बा री लाइटा माय भूत रो वैम पडतो हो। कठै-कठै ही गाडी रा चक्का छप-छप करै हा। बगलै आगै गाडी खडी हुयनै होर्न दियो। गाडी रै लारै सू पेसकार उतरनै फाटक खोलियो। सामै बरामदै माय लट्टू चसै हो। मोटर री आवाज सुणनै जज साहब री धण कमरै रो बारणो खोलनै बारै आई। सुघड लुगाई ही। बरस कोई ४०-४५ री लागै ही। चाल रो ठसको जुवानी नै ठोकर मारै हो। नौकर नै आवाज देवण नै मूण्डो खोलै ही जतै नै नौकर आयनै गाडी मू सामान उतारवा लागग्यो।

साहब मुळक नै उतरिया। वा ओळमा रै स्वर माय बोली—

"घणो मोडो करियो ?"

"बिरखा रै कारण गाडी स्पीड कोनी पकडी"

"आ देखनै हू सोचै ही के थोडो मोडो वेगो जरूर हुय ज्यासी।" लारै-लारै चालती बोली।

"चाय तो बणाओ।" सोफै माथै बैठता जज साहब बोल्या।

मोटर रो सगळो सामान कमरै माय आयग्यो। चाय री ट्रे आई। धण बणाय नै जज साहब नै दी। फेर आप वास्तै बणावण लागगी। चाय री चुस्की लेवता जज साहब बोल्या "पेसकारजी नै।"

"हा, चाय अर नास्तै रो कहियो पण बा तो चाय ही ली। खाणो खायनै आया है, बतायो," चाय पीवती जज साहबरी धण बोली। जज साहब बोल्या—"तहसीलदार भगवानसिंह बडो स्याणो है। खातरी भी चोखी करी। आपरै वास्तै घी रो पीपो खिनायो है।"

"हा! थानी हाथ त्रिणनै ही आवण ही कोनी देवै। मनै ही कातीमरै रो नूतो दियो है," दोन्यू जणा होळै-होळै चाय पीवै हा। पगा री आवाज सुणनै जज साहब बारणै कानी देख्यो। पेसकार नै देखनै बोल्या—"अबै जावो। काल मिल लिया। गाडी आपनै घर ताई छोड देसी।"

पेसकारजी हकारो भरनै मुडग्या। बगलै माय सू पाछी जावती गाडी रो होर्न सुणीज्यो। बाथरूम कानी जावता जज साहब बोल्या—"हू कपडा पळटनै आऊ।" मेम साहब उठनै कीचन कानी जाय नै दूध ठडो कर साहब रै सोणै रै पलग कनै राख नै बगला रा फाटका ढक्या। इतै नै जज साहब बाथरूम मू आयग्या। धण बोली—"थे चालो। दूध ठडो करनै राख्यो है, हू अबार आऊ हू।" आ कैवनी वा बाथरूम माय बडगी।

जज साहब सोवण आळै कमरै माय जाय नै टेबललैम्प जळायनै दूध पीयनै पलग माथै सोयग्या। अर सूता-सूता लारलै दिना रै अखबारा रा कागज पलटवा

लागग्या । पाना रै सागै नीद आयबा लागगी । आधी घडी मुस्कल सू बीती हुसी । मेम साहब कमरै माय वडनै फाटक ढकियो । खटको सुणनै जज साहब जाग्या । गाउन क्नै राखती बोली, "म्हारो तो बिरखा माय काळजो बैठतो जावै हो"— क्नै सिरकता साहब बोल्या—"जणा ही तो मैं आ जाण गयो हो," कई टटोळता बोल्या । बा भेळी हुयबा लागगी । जज साहब और सकोडीजता जावै हा ।

मम साहब बोल्या—"आज इया किया ।" सभळता जज साहब बोल्या— 'एक ऐडी समस्या है जकी रो मनै कठै ही समाधान कोना दीखै । हू दोन्या कानी पाप रो भागी हू ।" आ कैयनै सगळो कागद पढनै सुणायो । बारै जोर सू बिरखा हुवा लागगी ही । परनाळा पाणी पडबा लागग्यो । हाथ पकडनै उठावती बोली— "हू तो की कोनी जाणू, मनै तो आज भी इया मालम पडै के म्हारो ब्याव तो काल ही हुयो है ।"

थोडी ताळ ताई जज साहब आयटाळै रै धावा नै खोजता रिया । धण बोली 'के खोजो हो"

"धावा नै"

"बै अठै कोनी है, काळजै माय है" आ कैवती सोवण रा जतन करवा लागगी । पण जज साहब री आख्या माय नीद कठै । जणा ही सोचण रा जतन करै सामै खडी लुगाई किरपा मांगती दीखै अर कैवै, जज साहब ! म्हारो भलो कीज्यो । जज साहब वडबडायनै उठ्या । ओ कोई न्याय है, जको इन्सान नै रिमाय-रियास नै मारै । धण हडबडाय नै उठी अर बोली ' कैवो !"

'नीद कोनी आवै"

"अठी नै आवो ।" अर कनै खीचती बोली—' नीद आय ज्यासी ।"

•

# संजीवण

## रामेश्वरदयाल श्रीमाळी

सेठ रिखबचन्द रै टाबरा नै पढाय'र मास्टर किसोरीलाल घरे जावण सारू हवेली सू बारै नीसर्यो, जद अुजाळै मा' मीनै री चोथ रै चदरमा री फूटरी किरणा उण रो घणो स्वागत कीनो। माथै मावटो हो अर हवा बाजै ही। ठाड पडै जाणै हिमाळो हालियो हुवै। बारै नीसरता मौर मास्टर नै धूजणी चढगी। उण दानू हाथा सू छाती ढक लीनी। दाता री किटकिटी बाजण ढूकगी। मास्टर मन म बिचार कीनो के ज्यू-त्यू करनै अैस ऊनी बडी तो लेवणीज पडसी। इयाम तो निमूनियो होवता घडी'क बार ई को लागै नी, अर नमूनियो होया घर री गाडो कीकर चालसी। पैलो सुख निरोगी काया।' दो पग आघा देवता मौर फाटोडै खाडकै माय काकरो घुस पगा मे गडग्यो। मास्टर खाडकै माय सू काकरो काढ्यो अर बिचार करण ढूको के ऊनी कपडो करावणो म्हारै सारै री बात कठै ? घर म नैना-मोटा छै टाबर, दोय मा-बाप अर एक लुगावडी—जिकी नित मादी रैवै। आधी तिनखा तो दवाई-पाणी मे लाग जावै। भगवान गुडावै जित्तै गाडो गुडकै है, छेवट एक दिन फूक निकळ जासी। गरीबी रो नै ग्यान रो कितरो जोरदार सगपण है मास्टर किसोरीलाल जोर सू एक ऊनी निसास लीनी।

सेठ रिखबचन्द दुकान बडी कर नै घरे पधारता हा। तीस-पैंतीस बरस रा रूपाळा आदमी, ठिंगणो डील, गोरा गुगल हुवै जैडा। ऊमर थोडी ही, पण जम घणो हो। तैसीलदार, बी० डी० ओ० बा नै जाणता हा। राज मे पासो हो। बारै बिना गाव री पच-पचायती अधूरी रैवती। घरे घणोई बोपार हालै हो। नुवी दुकान सरू कीनी ही। बडेरा री बोरगत ही। सावू नै बीडिया री एजेन्सी न्यारी हालती ही, नै बीमा रो काम फेर न्यारो ई करता हा। सेठा रै चारू कानी सू नोट बरसता हा। काळी मिरचा माय अिरडकाकडी रा बीज, पिसीजियोडी मिरचा माय राती (गेरू), हळदी माय मेट अर देसी घी माय डालडा भेळ-भेळ नै बेच'र सेठ आपरी मीठी बोली नै लुळताई सू मिनखा माय देवता बाजता हा।

लाडजी कन्दोई री दुकान सू सेठ सेठाणी ताणी कळाकन्द रो डूनो लेय'र

आवता ई हा, के उणा मास्टर किसोरीलाल नैं देख्यो। हाथ जोड'र बोल्या, "माट'सा, राम-राम।"

मास्टर किसोरीलाल जाणैं सरम सूं धरती माय गाबड नाख दीनी। जुलम हुयो। इत्ता मोटा सेठ, अर उणनैं राम-राम करै! दोनूं हाथ जोड, जाणैं माफी मागतो हुवैं ज्यूं घणी लुळनाई सूं बोल्यो—"निमस्कार सेठजी।" की सरदी रै थोळाम सूं अर की अपराध-भावना सूं मास्टर रा दात किटकिटावण ढूका।

सिझ्या पाच-साढी पाच बज्या रा सेठ भाग रो आचमन लेवता। साढी सात-आठ बज्यां तक ठडाई रो रग आवतो। जदै सेठा रो मिनखपणो जागतो। 'मकडध्वज' अर 'सिलाजीत' रै सेवन सूं सेठा नैं की सरदी रो वेगो को लागतो हो नी, पण मास्टर किसोरीलाल नैं दात कटकटावता देख्या, जद बोल्या—"माट'सा, आज तो ठाड घणी पडै।"

"हा, सा! माथै मावटो है। पून घणी वाजै है। बापडा ढाडा घणा मरैला।"

"मिनख पछै किसा बाकी रैवैला।" सेठा मुळक'र कैयो, "म्हनैं तो इसी ठाड मे बूढा-ठाडा जावता ई दीसैं।"

"टेम आया सगळा नैं ई जावणो पडै सा, काई बूढा अर काई जवान।" निरवाळै भाव सूं माट'सा बोल्या—"काई ढाडा नैं काई मिनख। अर मिनख पछै किसा ढाडा सूं चोखा है!" कैवता-कैवता माट'सा एक'र फेर धूज्या।

माट'सा नैं धूजता देख ठडाई री तरग मे सेठ रिखबचन्द नैं दया आयगी। पचास रुपिया री उधारी उगरावण सारू सेठा किसनियै मैंणै नैं अंडो मरवायो हो के सात दिन तक मैंदालकडी पी'र बापडै मैंणकै नैं मरणो पड्यो। पौर हळोतिया री वेळा गोमलै चोधरी रा बळद कुडक कर'र सेठा आपरो ब्याज उगराणियो हो। केई वार सेठ कैवता, "माट'सा, घणी दया करै जिको पछै जावता भिखारी हुवै। विणज करै, जिणनैं दया किया कठै पोसावै।" पण आज माट'सा नैं देख सेठा नैं जाणैं क्यू दया आयगी। बोल्या—"माट'सा, थारै कोट कोनी!"

माथो धुण'र मास्टर कैयो—"सा, अैस सिवाडणो तो हो, पण .." अवै बात कीकर पूरी करणी रैयी? एक घणो जोगो, घणो लायकी ह्वाळो, घणो हुसियार नैं घणो पिडत, पण आपरै आप नैं पिछाणियो मास्टर आपरी गरीबी री बात कीकर कैवै? थोडो ठैर नैं खणेक मे बात फेर नैं कैयो—"सा' यू है, के मनै तो घणी ठड लागै ई कोनी। नैं साची बात तो आ है के अै रोट-फोट पैरणा मनैं तो सुआवै कोनी। परमातमा सगळी रितुआ आरो असली आणद लेवणनै ई बणाई है। कुदरत रै बीच मे पडै जद मिनख रो नुकसाण हुवै। कुदरत रै खिलाफ चालण सूं ई मिनख रै रोग हुवै।" सवदा रै सौदागर मास्टर आ बात मूडै सूं तो कै दीनी, पण सरीर इण कैणै रो साथ को दियो नी। मास्टर ऊभो-ऊभो धूजण लागो नैं उण आपरा दोनूं हाथ घणै जोर सूं छाती रै लगाय लीना। वाणी रै जाळ मे मिनख

आपरी कमजोरी छिपाय नै खुदै नै कितरै इधकै बैम मे राखण रो जतन करै।

सेठ रिखबचन्द घणी दुनिया देखी ही। वै की बोल्या योगी। होळैगी'क मुळकया, जाणै छोटै टाबर नै तोतली बोली मे कूड बोलतो देख मा मुळकती हुवै। पछै झट मास्टर रो हाथ पकड'र पाछा आपरै घरे लाया, अलमारी सू एक जूनो, पण घणो चमकीलो धोबी सू धुपाय रफू करायोडो कोट काढ्यो अर ना-ना करता मुळक'र माड़ाणी ई मास्टरजी नै पैराय दीनो।

बारै आय माट'सा नैचै सू कोट नै निरख्यो। माखण जैडो नरम, कूळी रेसम जैडो ऊन। चमचमाट करतो कोट, सिगडी जैडो गरमास देवै। नुवै जैडो लागै जाणै आज मोल लेय नै आया हुवै। अैडो फिट, जाणै आपरो नाप देय नै सिवडायो हुवै। नुवी फैसन री सोवण देख माट'सा रै हियै री कळी-कळी खिलगी। जापानी कपडे रो कोट घणो मोलो दीसतो हो। लुगाई रै हिवडै जैडी कूळी कोट री गरमास सू माट'सा रै चैरै माथै चमक वधगी। डील मे फुरती वापरी। गरीबी सू लडतो, साकडयास मे बंवतो हर मिनख पीड झेलण रो उपदेस देवै। हीजडो भावै ई विरमचारी! इत्ती दूर माट'मा वस्द खमण रा उपदेस भलै देवै हा, पण कोट पैर्‌या पछै वानै ठा पडचो कै अैडी कडकडाट करती सरदी मे कोट रो हुवणो मिनख ताणी कित्तो जरुरी है।

रात रा नौ बज्या हा। सरदी मे रात रा नौ कितरा मोडा वजै, कितरा दोरा वजै, जिको तो कोई वापडो वोडो ईज बताय सकै। सदाई ज्यू होवतो तो इत्ती ताळ मे मास्टरजी कदे ई घरे पूगग्या हुवता। पण आज घरे जावण री कोई उतावळ को ही नी। माह रै मावटै री वायरो आज माट'सा नै डरावण री हीमत को करी नी। सीरख-पथरणै रो हुज आज मोळो परो पडचो हो। रोज तो इतरी ताळ मे कदे ई आनडा छीलजण ढूकता, पण आज जाणै भूख ई कठैई मूडो लेय नै परी गई ही। आज तो उणा री एक ईज मनसा ही, उण मिनखा रै सामै सू निकळणो, जिका उणा नै सी मे धूजतो देख नै उणा रै उसूला री मसखरिया करता हा।

तडकै दस बजी सू ले नै अबै सुदी बारै पेट मे धान रो दाणो को पूगो हो नी, पण बारै पान खावण री जबरी मन मे आई, जिको वै पनवाडी री दुकान कानी चाल्या। ट्यूबलाइट रै दमकतै उजास मे पनवाडी टापरै मे बीजळी रो चूल्हो सिलगाया पान लगावै हो। मसीन ज्यू बीरा हाथ चालता हा, वो मिनख री सक्ल देख नै पान लगावण मे पाटक हो। बस्ती रा सगळा ई अूजळै गाभा अर पतळै पेट आळा राज रा नौकर—बाबू, मास्टर, पटवारी, ग्रामसेवक नै छोटा-मोटा ओदादार उण री दुकान सू ई पान खावता हा। या दीपता दीसता दीवा मे तेल को हो नी, वो आछी तरै जाणै हो। अैटा ऊजळ धोळिया घणा जणा उण री उधारी खाय लाबा नीसर्‌या हा। उणरी तीखी निजरा माय एकोएक आदमी नागो दीसतो हो। होठा री गैरी लाली अर फीकी मुळक रै नीचै कितरो काळजो दाझै हो, चितावा री

कितरी भट्टिया बळनी ही—ईं रहम रो उण नैं भली विध वेरो हो।

मास्टर किसोरीलाल घणी बार पनवाड़ी कनैं जाय पेसी माय चूनो भरावता हा। मास्टर रैं पतळै डील अर लटूठै रैं मैला गाभा कानी हीर्णी निजर नाख बसी तमोळी ओळमाधोई मूळक सू पेसी माय चूनो भर'र पेसी पाछी देवतां थका मन में जाणैं कैंवतो—माट'सा, यू कितराक दिन चालैला। चूनो किसो फोक्ट में ई आ जावैं? मनडै री बात मूडै सू भन्नी मनी कैंबीजो, पण चैरो गूगो को रैवै नी।

बसी तमोळी रैं चैरें रो गूगी बोली मास्टर किसोरीलाल रैं काना में भोंपू हुवैं ज्यू बाजती। पण तो ई बो निसरमाई सू नाडकी नीची नाख, फीकी मुळक बिखेर आख्या सू माफी माग'र हाथ पसार नैं पेसी ले लेवतो, नैं हतेळी में थासो सारो जरदो ले नैं चूनो लगावण लागतो।

"बसी एक मीठो पत्तो लगाइजै भाई", मास्टर किसोरीलाल थोडै उछाह सू कैंयो, "चूनो डबल, देसी जरदो, मुस्क किमाम।"

बसी रा हाथ मसीन हुवैं ज्यू चालण लाग्या, पण निजरा मास्टरजी रैं चैरें माथै मडगी। माट'सा नैं चिलचिलाट करतो कोट पैरया देख नैं पूछ्यो—"माट'सा, काती बीत्यो, मिगसर बीत्यो, पोह बीत्यो, नैं अब तो माह रा ई गिण्या दिन रैंया है। अबार कोट सिडावण री काई जची।" बीरैं गुर सू अंडो लाग्यो, जाणैं पूछ रैंयो हुवैं कैं अैंम लोटरी आपरैं नाव री खुली है कांई? इतरा दिन ताई तो मूटर ई का पैरया हा नी।

मास्टरजी खणेक थम्या। काई पडूत्तर देवैं। पछै कैंयो, जाणैं कोरट में कोई कदेई नईं आयोडो गवाह कूडी गवाई देवतो हुवैं—'काई करां बसी, म्हैं तो कदेई कोट सिवडावण नैं दियो हो, पण सत्यानास जाज्यो इण भीमलैं दरजी रो, जिण अबैं सीय नैं दियो, जणैं कैं सियाळो ई बीत्यो परो है नैं सिवडाई पण लीनी पूरा ई साठ रूपिया। नुवों सीमो ई ओछो नईं। पण काई करा भाई, गरज बावळी हुवैं।" यू कैंय'र मास्टरजी मुळकण लाग्या। काई ठा इण मुळकण हेठै कित्तो मोटो बिखो छिपावण री कोसीस ही। नित रोज छोरा नैं 'सदा ई साच बोलणो चाइजै' रो उपदेस देवणिया माट'सा अैंडो मफा कूड किया बोल्या हुसी। काई ठा' इण हसण लारैं बारैं कूड बोलण सू कळपतै हिवडै री बिळखण रैंयी हुवैं। मुळक कैंडी मीठी, कैंडी मुधरी, कैंडी मोवणी हुवैं। पण उण रैं लारैं अतस री कितरी उकळास, कितरी दाझ कितरो दरद हुवैं, ओ कुण जाणैं।

'कोई बात नईं मा, अैंस नईं, तो आवतै ई काम आसी"—बीडो बणाय'र देवता बसी बोल्यो। पछै छालिया फेर देवता पूछ्यो—' कपडो काई भाव रो होसी सा?"

कपडै रो भाव पूछता सुण'र मास्टरजी नैं कपकपी चढगी। मन में बैंम हुयो, कठै ई इणनैं ठा'तो कोनी कैं कोट म्हारो कोनी, रिखबैंजी रो है। कदास भाव पूछ नैं

म्हारी तोहीन करणी चावै ! पण मुळक'र आपरो अग्यान छिपावण ताणी घणी मस्ती जतावता थका कैयो—"अबै भाव कुण याद राखै वसी, चार मीना पैली लियोडो कपडो है। म्हारो एक खास दोस्त रैवै है दिल्ली मे, उण सागै मगवायोडो कपडो है। असल वूलन (ऊनी) है। फोरन (परदेस) रो माल है। लाई वसी मैं काईं ठा'कै जठै-जठै मिनख मे खोट हुवै बठै-बठै मोटा सबदा री कारी दे-दे'र मिनख असलियत छिपावण री कोसीस करै। खुद नैं झासो देवै। सबदा रै सोनै रो झोळ लगा पीतळ रै माल नैं भरे बजारा चोडै-धाडै बेचै। काव्य, कळा, दर्सन, सगळा ई थोथै सबदा री जडाऊ थूका-फजीती है। पान मूडै मे दाब, 'पीसा म्हारै नावै लिख दीजै' कैय'र मास्टरजी झट रवानै हुया। बारै झट जावण रै लारै सायद आ भावना रैयी हुवै कै दो चार पेर की सवाल पूछ्या तो पोल खुल जासी। कै ठा' वसी ई उघरत बावत की कै देवै। कूड बोलण रै पिछतावै माह री सूखी वादळिया गिगना सू उतार मास्टरजी रै माथै थरप दीनी ही। कीमती कोट पैरण रै उछाव भाखरा रै बाळै ज्यू झट उतार दीनो हो। मन माय रो माय फिटकारतो हो, "जा रै हींणा, कमीण, थारै मे अर मगतै मे काई फरक है।"

मिलणै सू सगळा नैं ई आणद आवै, ओ जरूरी कोनी। भोळा मना अर सजग आतमा आळा नैं देणो ई आणद देवै। कोट पैर'र मास्टरजी आपरी डीठ मे खुद नैं ई बावना लाग रैया हा। मिनख रो मन जाणै कैडी रसायण सू वण्योडो हुवै है। विचारा रो झटको लागता पाण आणद लुटावणियो इमरत, बाळणियो विसझाळ वण जावै।

घरा पूग्या जद माट'सा मन री मार खाय सतबायरा हुवै ज्यू घोडियै जैडी मचली माय गुडग्या। मन रो सगळो उछाह मारयो गयो हो अर उछाह विना जीवण बोझ टाळ काईं वचै। एकण पसवाडै पडवै मे पथारी जिया टाबर पडया हा। बा रै माथै ओढायोडी गूदड्या बासै ही। झीर-झार हुयोडो पछेवडो माथै ओढ'र मनोरमा उठी। धणी नैं नुवो कोट पैर्या देख'र रगतहीणै पीळै मूडै माथै खणेक मुळक खिवी। आख्या चमकाय बोली—"ओय-होय बुढापै मे सौकीन बणवा रो चसको लाग्यो है। थू-थू, घणो आलीसान कोट सिवडायो है"—पछै आगळिया सू कपडो देख नैं कैयो—"कपडो जोरदार है, काई भाव रो होसी ?"

किसोरीलाल बुझ्योडी आख्या सू उण रै सामी देख्यो। पछै होळैसीक अणमणै भाव सू कैयो—"सस्तो ई है"—अर कोट उतार'र खूटी माथै लटकाय दीनो।

"तबियत ठीक कोनी ? रोटी खाय लो।"

"भूख कोनी।"

"चाय बणाय दू ?' ताव तो कोनी ?"—मनोरमा धणी रो पुणचो पकड'र देख्यो, "नईं हुवै तो माथै री गोळी लेवो परी।"

किसोरीलाल नाडकी हिलाय'र 'ना' दे दियो। मूडै सू हरफ ई कोनी बोल्यो।

धणी नैं अणूतो ई बेराजी जाण मनोरमा मूंडो चढाय टाबरां भेळी सोयगी। दो-एक वळनी निमासा लेय ओढणं रो पल्लो आख्यां रै लगायो अर रजाई सूं मूंडो ढक लीनो। छै टाबरां री मा रै इण सूं वेसो उछाह कोनी रैवै।

नींदरडो में नक्की कोई-न-कोई जादू होवै जिको मिनख री सगळी चिन्तावां नैं दूर कर सकै। रात खामी जेज तक पसवाडो बदळ्यां पछै माट'सा नैं घणी दोरी नींद आई ही। दिनूगै उठ्या जद मन उछाह सूं भर्‌योडो हो। रात रा की छाटा आई ही। ओळा भी पड्या हुसी। सवार रा तीर जैडी तीखी हवा चालती ही, जाणै हमाळो हाल्यो हुवै। कोट पैर्‌यां सूं माट'सा रै दांता री किटकिटाट आधी हुई। हमता-बोलता खाय-पीय पोसाळ गया जद वै ई वै दीसै हा।

"अरे किसोरीलालजी! आज तो भायला बींद हुवै ज्यूं लागै है।"

"प्यारा, अैम तो मास्टरपीस कपडो मोलायो है।"

"जिगर, काईं भाव रा कपडो है? डी० सी० एम० री वूलन टैरैलिन दीसै।"

"अरे बगना, डी० सी० एम० रो कठै, ओ तो मफतलाल ग्रुप रो लागै है।"

"कठै सिवडायो किसोरीलालजी सा? इणनैं कैवै सिलाई!"

"थू-थू! थुथुकारो नाखू भाईडा, काईं ठा' निजर लाग जावै तो।"

"सामरै सूं आयो दीसै, इतरो मूंघो कपडो मोल लैवै जैडो तो तनैं मा जण्यो ई कोनी।"

पोसाळ रा सगळा ई साथी कोट री तारीफ करै हा। कपडो अैडो चमकै हो के माथै आख ई को टिकनी ही नीं। केई जोडी ललचाई निजरां कोट माथै टिकी ही। किसोरीलाल हमूं-हमूं नैं भाव-ताव अर सिलाई रै सवाला रो जवाब देवतो हो। रात रो कमकतो-तडपतो मन जाणै ओळा री मार सूं मरग्यो हो। जे थाडो घणो जीवै ई हो तो मुधरी बातां अर विखरती हसी रैं सामी उण बायरै रैं झीणै सुर नैं कुण सुणै? वेळा रैं आतरै में मन रा घाव भरण री अणूती ई खमता हुवै है।

सांझ रा माट'सा सेठ रिखबचन्द रै अठै टाबर पढावण नैं गया जद कोट ठठायोडो हो। रिखबोजो रा तीन टाबर माट'सा कनै भणता हा। वडोडो माधू सातवीं में हो, छोटोडो अमियो तीजी में। एक छोरी ही हेमलता, बा पाचवी में भणती ही। टाबर माट'सा रै मूडै लाग्या हा, जिको गुरु-भाव की ओछो ई रैवतो हो। मास्टरजी नैं देखता पाण हेमलता कैयो—"ओ हो जी माट'सा, आज तो कोट पैर नै पधार्‌या हो। इण में तो आप घणा फूटरा दीसो हो सा।"

अमियै कैयो, "ओ तो पापाजी रो जूनोडो कोट दीसै, काईं सा?" फेर थोडो थम नै कैयो—"रातै तो आप ठड में धूजता हा सा। पापा घणो आछो काम कियो है, सा।"

माट'सा नैं लाग्यो, जाणै किण ई बा नैं भिरै बाजार में नागा कर दिया हुवै। कोट रो कूळो कपडो लोह ज्यूं करडो पड'र खुबण लाग्यो। बो साकडो पड'र माट'

सा नै कसण लाग्यो। माट'सा रो जीव घुटै, जाणै सास हमैं नीसरै के हमैं नीसरै। उणा नैं लाग्यो के जे बा डण कोट नैं झट सू उतार नैं नईं नाख्यो तो वा रो जीव निकळ जावैलो। कोट सिकुड़तो जावै हो अर उण री कसण जोरदार हुवती जावै ही, जाणै कोट नईं कोई राखस रो पजो हुवै। बा नै लाग्यो, जाणै टाबरा री निजरा में निरादर री जैर झरतो हुवै। घणी दोरी बारैं मूडै सू बोली नीमरी—"किताबा काढो।"

टाबर सदा ई ज्यू माट'सा रै कैणै माथै कोई तवज्जा कोय दीनी नी। बस्तै में हाथ हिलावती हेमलता कैयो—"बाई रै, कितरी ठड पडै है। माधू भा, आज पापा घरे आवै जरै कैजो जिको मोटा भाई रो एक ऊनी पैंट भी माट'सा नैं देय देवै। देखो कोनी, लाई ठड मरै है।"

किसोरीलाल नैं लाग्यो जाणै टाबरा उण रै गाल माथै कस नैं थप्पड मारी हुवै। बो गळगळो हुयग्यो। मूडै सू की बोल ई निकळ्यो कोनी। नित ज्यू टाबरा नैं छाना रैवण सारू धमकावण री उणरी हिम्मत कोय पडी नी। उण रै हियैं रा किंवाड उघडग्या। मायलो मन धिरकार देवण लाग्यो—"फिट तनैं, हीणा, कमीण, थारैं अर मगतै मे काई फरक!"

बो मार खायोडै, विसहीण, डोकरै साप दाईं कूद अर उठ्यो। कोट उतार' र खूटी माथै लटकायो अर टाबरा नैं कैयो—"काल सू हू भणावण को आऊ नी, थारा पापा घरे आवै जद कै दीजो।" अर तुरत घर सू बारै निकळग्यो।

बारैं सणसणाट करती उतराधी हवा बाजै ही। बी हवा सू सरीर बीधीज रैयो हो, पण माट'सा नैं लाग्यो, जाणै कोई जग जीत'र आय रैया हुवै। जाणैं कोई घणमोली गमीज्योडी चीज पाछी परी लाधी हुवै। सरीर ठड सू कापै हो, पण माट'सा रा हाथ छाती कानी को गया नी। तन-मन नैं धुजावण आळी हवा खुद रै आपै मे आवण सू बानै फागण री हवा जैडी मुधरी-मीठी लागै ही, जाणै सजीवण हुवै।

•

# रजपूताणी

## लक्ष्मीकुमारी चूडावत

रेत रा टीबा बळ रिया। ऊनी-ऊनी लू असी चाल री जो काना रा वेमा नै बाळती नीसर जावै। नीचै धरती तपरी, ऊचो अकास बळ रियो। खेजडा री छाया मे बैठ्यो सोढो जवान भीतर सू अर बाहर सू दोनू कानी सू दाझ रियो। बारला ताप सू बत्ती हिया मे सळगती होळी री झाळा बाळ री। दुपैरी रा सूरज री सूधी मूडा माम्ही किरणा आख्या मे गबेडा पाड री। पण वी नै ईं री सुध नी। वो तो ऊडा विचार मे अस्यो डूब रियो के चारू दिसा एक सी लाग री। आज वी रै होवण वाळा सासरा सू सुसरा रो सनेसो ले आदमी आयो—

"परणणो व्है तो पनरासौ रिपिया तीन दिना मे आय गिणा जावो, नी तो आखातीज नै थारी माग रो दूजा रै सागै वियाव करदाला।"

सुणता ही सोढा जवान री आख्या मे झाळा उठी। अपणै आप ही हाथ तरवार री मूठ पै पडग्यो। दाता सू होठा नै काट रैग्यो। वी री माग दूसरा री हो जासी, जीरी खोळ वीरी मा रिपियो-नारेळ धाल आज सू दस बरसा पै'ला भरी अर वारो वियाव कर देणै रा मनसूबा करता-करता मा-बाप दोई मरग्या। घर मे नैंन-पण पडगी। कुण खेती बाडी, गाय-भैस सम्हाळतो। अबै पनरासौ रिपिया कठा सू लावै? अै रिपिया दीधा विना वीरी माग दूसरा री होजासी, जीरा सपना दस-दस बरसा सू वो देखतो आयो, वो माग नै ईज आखातीज नै दूजा रै लारै कर देला।

सोढा जवान री आख्या मे खून उतर आयो। आज तक कदे ही असी व्ही है? माग रै वास्तै तो माथा कट जावै, म्हू जीवतो फिरू अर म्हारी माग नै दूजो परणै, हरगिज नी, हरगिज नी।

"बोहरा काका, म्हारी लाज थारै हाथा है।"

"लाज तो म्हे घणी ही राखी है। थू बता कम्या सेता पै पनरासौ गिण दू? अडाणै काई राखेला?"

"म्हारै कनै है ही काई? रजपूत री आबरू एक तरवार रो खापो म्हारै कनै बच्यो है।"

"तो भाई, की दूजा वोहरा रो वारणो देख।"

सोढो तडफग्यो, "देख काका, थैं म्हारा घर री सळी-सळी, म्हारा नैनपण मे झूठा-साचा खत माड माड लेय लीधी। म्हारा घर मे ठीकरो तक नी छोडियो। म्हे थनैं सारो दीधो, अर जो ही मागतो व्है देवण नैं त्यार हू। पण ईं वगत म्हारी, म्हारा घराणा री लाज राखलैं। जीरी माग दूजा रैं लारैं परी जावैं वो जीवतो ही मरया बरोबर है। ईं तरवार, जगदम्बा नैं माथैं मेल सोगन खावू, थारो पीसो र दूध सू धोयनैं चुकावू। थारैं दाय आवैं जतरो ब्याज माडलैं। ईं वेळा म्हनैं रिपिया गिण दे।"

"रजपूत रो जायो व्है तो ये अस्या कोल करजे। म्हू खत पैं जो माड दू वी पैं थू दसगत कर देवैंला के?"

"माथो चावैं तो दे दू पण अबार म्हारी लाज राखलैं।"

वाणियैं खत माड'र आगो कीधो। कान पैं मेली लगी कलम नैं उठाय हाथ मे झेलाई।

"बाचलैं खत नैं, छाती व्है अर असल रजपूत व्है तो दसगत करजे।"

खत बाच्यो, माड राख्यो "ये रिपिया ब्याज सूधी नी चुकावू जतरैं म्हारी परणी नगी नैं वैंन ज्यूं समझूला।"

होठा नैं दाता बीचैं दबाय, राती राती झाळा निकळती आख्या सू झाकतो दसगत कर दीधा।

बरसा मू सोढा रो सूनो घर आज बस्यो। आज वीरी मेडी म दीवो बळ्यो। दीमका लाग्गो, लेवडा पड्यो घर लीप्यो-चूप्यो हस रियो। घणा बरसा पछैं आज वीरैं घर म घूघरा री छम-छम व्ही। पीयर सू डायजा मे आयोडा गाडो भर्या असबाब सू गिरस्थी जमाई। सोढो जीमबा बैठ्यो, बीनणी हाथ सू पोयोडी चीडा री वीझणी ले पवन घालवा लागी। दात रो चूडो पैंर्या हाथा सू परस री। सारो घर आज काई रो काई सोढा नैं लाग रियो। रजपूताणी री आख्या मे नेह उझळ रियो पण सोढा री आख्या गम्भीर। वा परूसती री, यो जीमतो रियो। सोढो बोलणो चावैं पण बोलणी आवैं नी, वा तो आगैं व्है बोलैं ही किण तरह? खाय, चळू करण लागो, रजपूताणी झट ऊठ लोटा सू हाथा पैं पाणी नूढवा लागी, सोढा री नजर घूघटा मे पसीना री बूदा सू चमकता मूडा पैं पडी, वीरी आख्या रैं आगैं वाणिया रो खत भाटा री चट्टान ज्यू आय ऊभो व्हैग्यो, वीरा हाथ कापग्या। लोटा सू पडती पाणी री धार जमी पैं पड वैंगी। रात पडी, सोणैं री वेळा आई। सासरा सू आयोडा ढोल्या पैं सूता। झट म्यान सू तरवार काढ दोय जणा रैं बीच मे मेल, मूडो फेर सोयग्यो।

रजपूताणी सहमगी। "यू क्यू, म्हारा सू काई नाराजी है?"

एक, दो, तीन, दस, पनरा राता बीतगी। या हीज तरवार काळी नागण ज्यू

रोज दीवा रै बीचै। दिन मे बोलै, बात करै जद तो जाणै सोढा रै मूडा सू अमरत झरै, आख्या मू नेह टपकै, पण रात पडता ही बीज मूडा सू एक बोल नी निकळै वै हीज आख्या साम्ही तक नी झाकै। रात भर अतरा नजीक रैवता थका ही घणा दूरा। दिन मे घणा दूरा रैवता थका ही घणा नजीक।

रजपूताणी बारीकी सू सोढा रो ढग देखै, गैराई सू सोचै। वी सू रियो नी गियो। ज्यू ही तरवार काढ ढोल्या पै सोवा लाग्यो, झुक पग पकड लीधा,

"म्हारो काई दोस है? म्हारा पै नाराज क्यू? गळती कीधी तो म्हारा मा-बाप जो थानै रिपिया सारू फोडा पाड्या।" टळ-टळ करता आसू सोढा रै पगा पै जाय पड्या।

"कुण कैवै म्हू थारा पै नाराज हू। थू म्हारी, म्हारा घर री धणियाणी है।" आपरा हाथ सू वीरा हाथा नै पगा सू दूरा करतो सोढो बोल्यो।

"तो अतरा नजीक रैवता लगा, म्हासू अतरा दूरा क्यू?" सोढा रै ललाट पै दो सळ पडग्या।

"थू जाणणो ही चावै?"

"हा।"

"तो ले बाच ई खत नै।"

दीवा री बाती ऊची कर टमटम करता दीवा रा चानणा मे खत बाचवा लागी।

ज्यू बाचती गी ज्यू-ज्यू वी रा मूडा पै जोत सी जागती गी। आजस अर सतोस सू वीरो मूडो चमकवा लाग्यो। खत झेलाती लगी, बेफिकी री सास लेती बोली, "ई री कोई चिता नी, म्हनै तो डर हो थारी नाराजगी रो। वरत पालणो तो घणो सोरो।"

दिन ऊगता ही आपरो छोटोमोटो गैणोगाठो, माल असबाब रो ढिगलो सोढा रै मूडा आगै जाय कीधो,

"ई नै बेच घोडा लावो, करजो उतारणो सबसू पैलो धरम है। घरै बैठ्या तो करमा चोखा लागै। रजपूत चाकरी सू सोभा देवै। कोई राजा री जाय चाकरी करा।"

"थनै पीयर छोड दू? थू कठै रैवैला?"

"पीयर क्यू? जठै था वठै ही म्हू, दो घोडा ले आवो।"

*"पण, पण थू साथै निभैला कस्या?"*

"क्यू नी, म्हू किसी रजपूत री जायोडी नी कै रजपूताणी रा चूख्या नी? म्हनै ही थारी नाई तरवार बायणो आवै, म्हे ही म्हारा बाप रा घोडा दौडाया है।"

"थारो मन, सोचले।"

"सोच्योडो है।"

तेज सू चमकतो मूडो सोढो देखतो रैग्यो ।

सवा हाथ सूरज आकास मे ऊचो चढ्यो व्हैगा । चित्तौड री तळेटी सू कोस दो एक पै दो घोडा एकीविकी करता चित्तोड साम्हा जाय रिया । दोई जवान सवार एक सी उमर, एक सी पोसाक पैर्या, घोडा नै राना नीचै दवाया दौडाया जाय रिया ।

हाथ रा भाला, ऊगता मूरज री किरणा सू चमक-चमक कर रिया । कमर मे वधी तरवारा घोडा रै दौडवा रै साथै रगडो खाय री । वा नै देख कुण कैवै के या मे एक स्त्री है । रजपूताणी ईं वगत एक सूरापण भर्या जवान सी लाग री । दात री चूडो पैर्या कवळी कळाया नी री । मजवूत हाथ भाला नै गाढो पकड्या लगा । लाजती-लाजती धीरै-धीरै कोयल री सी वोली री जगा अवै भेरी रो सो कण्ठ सुर वणाय लीधो । घूघटा मे ही सरम सू लाल-लाल पडजावा वाळा कपोल नी रिया । मूरज री किरणां री नाईं मूडा सू तेज फूट रियो । लाली लीधा लोयणा सू नेहचो ऊफण रियो । जाणै सागी दुरगा रो सरूप व्है ।

घोडा दौडाता, एक झपाटा म चित्तोड री तळेटी मे जाय पूग्या । वठी नै राणाजी दरवाजा बारै निकळ्या । नजर सूधी वारा पै पडी, दो पळ वी जोडी पै नजर रूकगी । घोडा री लगाम खैंच पूछ्यो—

"कस्या रजपूत ?"

"सोढा ।"

"अठी नै किस तरै आया ?"

"सेर बाजरी सारू, अन्नदाता ।"

"सिकार मे साथै हाजर व्है जावो ।"

मुजरो कर दोई जवाना घोडा री वाग मोड, लारै घोडा कीधा ।

सूरा रै लारै घुडदौड व्ही । आगै-आगै मूर भाग रियो, वीरै लारै हाथ मे भाला लीधा सिरदार घोडा नै सटाटूट फैंक रिया । एकल सूर टूड री मारतो विकराळ रूप कर्या घोडा रा घेरा नै चीरतो वारै निकळ्यो । चारू कानी हाको व्हियो, "एकल गियो, गियो, जावा नी पावै, मारो, मारो ।"

सगळा ही घोडा री रासा एकल कानी मुडी, जतराक मे तो एक घोडो वीजळी री नाई आगै आयो । सवार भाला रो वार कीधो जो पेट नै फाडतो, आतडा रो ढिगलो करतो आर-पार जाय निकळयो । राणाजी दूरा सू देखता ही सावासी दीधी ।

पसीनो पूछतो लगो सवार नीचै उतर मुजरो कर घोडा री पूठ पै पाछो जाय वैठ्यो । कुण सोच सकै के भाला रा एक हाथ मे एकल सूर नै धूळ भेळै करवा वाळी लुगाई है ।

राणाजी राजी व्है हुकम दीधौ "थे वीर हो, आज सू था दोई भाई म्हारा ढोल्या रा पै'रा री चाकरी दो ।"

"खम्मा अन्नदाता" कर चाकरी झेली।

सावण रो मीं'नो, खळ-खळ करता खाळ बैय रिया। तळाव चादर डाव रिया। डेडका हाका कर रिया। एक तो अंधारो पख, ऊपरै चौमासा री काळी रात, काळा-काळा बादळा छाय रिया। बीजा मळाका लेवै तो असी के आंख्या मिच जावै, खोल्या खुलै नी। इन्दर गाजै तो अस्यो के जाणै परथी नै ही पीस दू। अंधारी भयावणी रात हाथ सू हाथ नी सूझै। राणाजी तो पोढ्या, दोई रजपूत पैं'रो देवै।

हाथ मे नागी तरवारा लेय राखी। बिजळी चमकै जो यारी नागी तरवारा वी चमक मे झलमळ करै। आधी रात रो वगत, राणाजी नै तो नींद आयगी पण राणी री आंख्या मे नींद नी। सूती-सूती कुदरत रा रूप रा अदभुत मेळ नै देख री।

बेई रजपूत तरवारा काढ्या मैं'ला रै बारणा आगै ऊभा।

उत्तर मे बिजळी चमकी। रजपूताणी नै याद आई म्हारा देस कानी चमक री है। ईं याद रै लारै री लारै केई बाता याद आयगी। आज कमावा खातर यो मरदानो भेस कर्या बिदेस मे आधी रात रा पैंरो देयरी हू। दूजी अस्त्रिया घरा मे आडा बन्द कर सोय री है। म्हू नागी तरवार लीधा ऊभी-ऊभी राता काटू। अतराक मे कनै ही पपैयो बोल्यो 'पी पी'। नारी हिरदै री दुरबळता जागी। "पी कठै?" घणोई खनै है पण काई ह्वै? म्हारी गिणती नी तो सजोगण म है, नी विजोगण मे। म्हासू तो चकवा चकवी चोखा जो दूरा-दूरा बैठ विजोग काढै। म्हू तो रात दिन साथै रैवती लगी ही विजोगण सू भूंडी। वीरो बाध टूट गियो। जाय'र सोढा रा कांधा पै हाथ मेल्यो, जाणै बीजळी पड़ी व्है। दोई जणा कांपग्या। सोढो चेत्यो, "चेतो कर रजपूताणी।" "रजपूताणी सम्हळी। एक निसासो न्हाकती बोली,

देस बिया घर पारका, पिव बाधव रै भेस।<br>जिण दिन जास्या देस मे बाधव पीव करेस।।

देस छूटग्यो, परदेस मे हा। पति है वो भाई रा रूप मे है। कदे ही देस मे जावाला जद ईं नै पति बणावाला।

राणी सूती-सूती या लीला देख री। दिन ऊगता ही राणी राणाजी नै कह्यो, "या सोढा भाइया बीचै तो कोई भेद है।"

"क्यू काई बात है? माथो तोड दू?"

"तोडणै री नी जोडणै री बात है। या मे एक लुगाई है।"

"राणी भोळी बात मत करो। या सूरता, यो आख रो तौर, या मरदानगी, लुगाई मे व्है कदी?"

"आप मानो भले ही मत मानो। या मे एक लुगाई है अर कोई आफत मे है।"

"या री पतो कस्या लगावा ?"

"ईं री परीक्षा म्हू करू। आप मै'ला मे विराज जावो, जाळी मे सू झावता रीजो, वा दोई भाइया नै बुलावू।"

चूल्हा पै दूध चढाय दीधो, डावडी नै इसारो कीधो, वा बारै निकळगी। दूध उफणतो देख्यो तो रजपूताणी हाको कर दीधो, "दूध उफणै, दूध उफणै।" सोढो आख री इसारो करै जतरै तो राणीजी बारै निकळ पूछ्यो, "बेटा, साच बता थू कुण है ? म्हारा सू छिपा मती।" रजपूताणी आख्या आगै हाथ दे राणीजी री छाती में मूडो घाल दीधो।

सोढै सारी वात सुणाई। राणाजी घणा राजी व्हिया।

"थारा करजा रा रिपिया ब्याज सूधा म्हू साडणी सवार रै साथै थारै गाव भेजू। था अठै रैवो, गिरस्थी वसाओ।"

सोढै हाथ जोडया, "अन्नदाता रो हुक्म माथा पै, पण जुठा ताई म्हू जाय म्हारा हाथ सू रिण चुकाय खत फाड नी न्हाकू जतरै हुक्म री तामील किया व्है। म्हानै सीख बगसावो।"

राणाजी करजा रा रिपिया अर गिरस्थी वसाणै रो घणो सारो सामान दे वानै सीख दीधी।

वी पडवा री रात रा आणद रो विचार ही कतरो मीठो है।

•

# अलेखू हिटलर

## विजयदान देथा

वै पाचू ई मिनख हा। कोई ऊमर म छोटो तो कोई मोटो। तीम अर पचास वरसा रै बिचाळै सगळा री ऊमर ही। सबसू लाठोडा रै माथा मे कठै ई कठै धोळा झाकण लागग्या हा। बाकी सगळा रा ई माथा काळा-भवर। उणियारा मिनखा जैडा ई हा। आख्या री ठौड आख्या। नाक री ठौड नाक। दाता री ठौड दात। हाथ-पगा री ठौड हाथ-पग। तावावरणो रग। सगळा रै माथै धोळा पोत्या। किणी रै नवा। किणी रै जूना। लट्ठा रा धोळा झब्बा अर धोळी ई धोतिया। काना निगोट सोना री साकळिया अर मुरकिया। तीन जणा रै गळै काळै डोरा पोयोडा सोना रा फूल। सगळा ई मिनखा री बोली बोलता अर मिनखा री ई हाली हालता।

सगळा रै ई खेती रो हलीलो। खेत कमावता अर साखा निपजावता। गवू, जीरो, मिरचा, राई, विराळी के मेथी इत्याद भात भात री साखा रै मिस सूत्री धरती री कूख सरसावता। देस री आजादी रै उपरात लूठा करसा रै फाचे रै आई पण आई। आधा होय धूळ मे बीच बूरता अर जाणै जित्ती कमाई बीणता।

आ पाचू मिनखा रै ढग-ढाळा सू अैडो लखावतो के किणी मा री कूख सू जलम नी होय आ सगळा रो धरती री कूख सू ई जलम व्हियो। कैर आक, खेजडी अर फोगडा फळै ज्य ई अै तर-तर बधिया अर फळिया। जाणै कुदरत री बनापती ई आरो भाईपो व्है।

पाचू ई आगा- नैडा कडूबै भाई हा। सीर म ट्रैक्टर मोलावण सारू गाव सू जोधाणै जावै हा। झब्बा रै हेटै वडिया रै ऊडै खीसा मे नोटा रो सावळ जाब्तो कर्‌योडो हो। सगळा रै ई मूडै रिपिया री झीणी आब झबूका भरती ही। धन री जड व्है ता काळजा म ठेट ऊडी पण उणरै अदीठा फळा री आब उणियारा माथै झळकै।

मोटर सू उतरता ई वै खीसा माथै हाथ फेरता पाधरा ट्रैक्टरा री धारचोडी दुकान कानी खाथा-खाथा वहीर व्हिया। सडक माथै पग टिकता ई पाछा अजेज उठ जाता। वारै बस री बात व्हैती तो काळूटी सडक माथै पग टेकता ई नी।

नाळ रो अेक पगोथियो चढता ई काच रै माय दुकान रै धणी रो माथो सुभट निगै आयो। पळकती टाट माथै निजर पडता ई सगळा अेकण सागै बोल्या—सुगना री वात ! खुदोखुद ओमजी ई माय बैठा है।

फड़को उघाडता ई हेम री जात ठाडी हवा रो लैरको आयो। पाचू ई अेकण सागै ऊडा-ऊडा निस्कारा खाविया। अेक जणो बोल्यो—सुरग री मोजा तो अै लोग माणै। अपा तो ढोर-डागरा री जूण भुगता।

ओमजी मुळकता थका झीणा अर गळगच सुर मे बोल्या—थारी सेती-पाती सू म्हारी दूकान रो आटो-साटो करता व्हो तो ना कोनी।

"देखो पिछतावोला।"

"छो पिछतावतो।"

सबसू लाठोडो भाई बोल्यो—विपता ई आ पिछतावा री वात काई छेडी। अै तो आप-आपरा करम अर आप-आपरा काम है। करै जिणनै ई छाजै।

गुदगुदा रवड री कुरसिया माथै बैठता ई अैडो लखायो जाणै वै बैठा ई नी व्है। पतियावण सारू रवड मे तीन-चार वळा आगळिया खमोली तद वानै बैठण रो पतियारो व्हियो। पछै कुरसिया रै हत्था माथै खूणिया टेक नचीता व्हैगा।

रामा-मामा करचा उपरात अेक जणो कह्यो—सेवट खपता-खपता म्हारो ई नम्बर आयग्यो। आज रो आज ट्रैक्टर खैचावो जकी बात करो। सातरो वार अर सातरी तिथ रो मौरत कढाय घर सू बहीर व्हिया सदियै-सदियै पाछा गाव बडता व्हैणी चावा। म्हे जाणाला कै ट्रैक्टर सारू दो दिन ई सबर नी व्है।

छोटकियो भाई बोल्यो—दो दिन री भला कही, म्हानै तो दो घडी री ई सबर नी व्है। लुगाया तो म्हारै वहीर व्हैता ई मोडा माथै ट्रैक्टर वधावण सारू ऊभगी व्हैला। सौ रिपिया वत्ता लागै जिणरी आट नी, पण ट्रैक्टर तो आपनै अबारू खैचावणो पडसी।

वारी खतावळ देख ओमजी मुळकिया। कैवण लागा—म्है था गाव वाळा री आदत पिछाणू। ट्रैक्टर वालै ई रेडी-रेट कर दियो ! मरजी व्है जणा ट्रैक्टर खाच लीजो।

पाचा रै ई खुसी अर हरख रो पार नी रह्यो। जाणै आखी दुनिया रो राज हाथै लागग्यो व्है। विचेटियो भाई ओमजी री पळका पाडती टाट साम्ही देखतो बोल्यो—वडभागिया रै हाथ भर रो लिलाड—पछै काई ढील। जीवना रो।

ओमजी सगळै भाया नै ओळखता हा। नम्बर री तपास करण सारू सैग दो दो तीन-तीन वळा अठै आयोडा हा। घधा-परवाण पूजनी ओळखाण ही। दीखतो मळियो सुभाव। मीठी बोली। झीणो मुळक। डील री बणगट सू अैडो लखावतो जाणै ट्रैक्टर रै पुरजा री गळाई किणी कारखाना मे ई सरूप रो निरमाण व्हियो। मसीना रै उनमान ई वारी काया घडीजी। टाट री ठौड टाट। हेटै तीन वानी

डलेवर हा।

वहीर व्हैता ई खासो दिन ढळग्यो। सूरज आयूण दिस रै ओलै लुक्ण री त्यारी मे इज हो। अजमेर-जैपर सड़क आळी चुंगी-चौकी मू धकै निकळना ई खुली सड़क ही। फरफराती माळावा सू सिणगारियोड़ो ट्रैक्टर धरर-धरर चालतो हो। माथै पाचू भाया नै अैंडो लखायो जाणै सड़क री ठौड़ आभो ई वारै ट्रैक्टर रै तळै पाथरग्यो व्है। अर साम्हली धरती वानै नारेळी सू ई छोटी साव लखाई। आथमतो सूरज जाणै वारा ट्रैक्टर नै निरखण सारू अेक ठौड़ रुपग्यो व्है। सूसाड करती हवा जाणै वारा ई वारणा लेवती व्है। आखी दुनिया रो हरख वारै हिवड़ै भरण लागो। सोना रै फूला रो परस करनै जाणै ढळता सूरज री किरण सारथक व्ही। रूख-बाटका मे चापळियोडा पछी ट्रैक्टर री धरधराहट सुणनै कानी-कानी उडता तद वानै अैंडो लखावतो जाणै वारै अतस रो आणद ई आ पखेरवा रो रूप धरनै कानी-कानी उडै।

कै इत्ता मे सू-सू करतो तीखो सरणाटो वारै काना खणक्यो। झिझकनै अठी-उठी जोयो। पाखा थाम्योडो अेक बाज नीचो उतर्‌यो अर देखता देखता सिणतरा रै पाखती चापळियोडा अेक धोळा सुसिया नै आपरै पजा मे झाप पाछो उडग्यो। पाचू ई अेक्ण सागै हसनै अेक दूजा रै साम्ही जोयो। बडोडो भाई बोल्यो—जोग किणी भाव नी टळै। इणी सिणतरा रै पसवाडै बाज रै पजा इण सुसिया री मौत लिख्योडी ही।

बाज अदीठ व्हियो जित्तै वै उठी देखता रह्या। ट्रैक्टर री धरधराहट चालू ही। नाळा री ढळात रै बीचोबीच पूगता ई चोथोडो भाई बोल्यो—नी-नी करता ई खासो अबेळो व्हैगो। पण तो ई सातरै मौरत रो टाणो सजग्यो। गाव सू वहीर व्हैता सुगन ई टाळवा व्हिया हा।

चढात ढळता ई वानै दो-अेक खेतवा धकै साइकिल चढया अेक मोटचार निगै आयो। अर उठी मोटचार नै की धरधराहट सुणीजी तो वो लारै मुडनै जोयो—कोई ट्रैक्टर आवै दीसै। वो तुरन्त पाछो मुड परो नै खाथा-खाथा पैडल दाबिया। ट्रैक्टर वाळा सू उण री वा खथावळ छानी नी री। छेती बधता ई वै आ बात लखग्या। ट्रैक्टर चलावतो भाई बोल्यो—कालो कठा रो ई! कित्ता ई आचै पैंडल मारै तो काई व्है। ट्रैक्टर मू धकै जायनै कित्तोक जावैला!

वो थोडी-सी रेस वळै वधाई। ट्रैक्टर री धरधराहट ई वत्ती व्ही। साइकिल वाळा रै काना ई इण बात रो बेरो पडग्यो। वो वळै आयै-आयै पैडल दाब्या। की छेती वळै वधगी।

तर-तर वधती छेती ट्रैक्टर चलावता भाई रै हीये झरी कोनी! वो वळै की रेस खाची। छोटकियो भाई बोल्यो—मा रो माटी, सेवट तो थाकैला। थोडी ताळ राजी व्है तो छो व्हैलो।

बिचेटियो भाई बोल्यो—उघाडमाथ्या छोरा री अंडी इज अवळी बुध व्है !

धरधरातो ट्रैक्टर सडक नै सवेटता दोडतो हो। सुरगी माळावा हवा मे वत्ती फरफरावण लागी। बडोडो भाई बोल्यो—मतै ई आहळैला। क्यू बिरथा रेस खावै ! ट्रैक्टर आगं बापडी साइक्लि री काई जिनात।

ची-ची करती अेक तीखी चीचाट अणछक बारै काना सुणीजी। बिल मे बडता-बडता ऊदरा नै अेक चील हाकरता झाप लियो। वा ची-ची उण मरता ऊदरा री ही। थोडी ताळ मे ची-ची री आवाज इण दुनिया सू बिलायगी।

सूरज री आधी कोर डूबगी ही। अबै वो ई रात भर ताई बिलाय जावैला। डूबता सूरज रै ओळू-दोळू गुलाल ई गुलाल पाथरग्यो। जाणै ट्रैक्टर रै कसूबल रग रो ई उण ठौड प्रतम पडै।

डलेवर रै आळ च्यारू भाई डूबता सूरज सू मीट हटाय धकै जोयो—अरै ! साइक्लि अर ट्रैक्टर री छेती तो तर-तर बधती ई जावै ! सगळा रै मन मे अेकण सागै अेक बात ई रडकी—सौ-दोसौ रिपल्ली री साइक्लि अर साठ हजार रिपिया रो ट्रैक्टर। आ कोई होड मे होड ! ऊदरो हाथी सू अटथडै !

दूजोडो भाई बोल्यो—फीपरो फाटनै मरग्यो तो घरवाळा सू छेती पड जावैला।

चोथोडो भाई बोल्यो—राम जाणै घरवाळा सू छेती कद पडै, पण अपारै ट्रैक्टर सू तो छेती बधती ई जावै है।

छोटकियो भाई थोडी रेस वळै खाची। नवो अटग ट्रैक्टर हो। पूरी रेस खाचणी साबळ कोनी।

साइक्लि वाळो लारै मुडनै जोयो। साचाणी वो खासो आगै निकळग्यो हो। वो जोस अर हूस मे वळै जोर सू पैडल दाब्या। पग तो जाणै भरणाटै चढग्या व्है। डूगर सू खळकता झरणा रै वेग साइकिल सडक माथै रळकती ही। जाणै कोई वतूळियो साइक्लि रो रूप धारण कर लियो व्है अर के वो मोटचार वतूळिया माथै सवार व्हैगो व्है।

ट्रैक्टर माथै वैठा सगळा भाई ध्यान सू देख्यो। साचाणी छेती खासी बधगी ही। अर तर-तर बधती ई जावै। माळावा सू सिणगारियोडो बिलायती ट्रैक्टर ! पचास घोडा री ताकत रो ! साठ हजार रिपिया री लागत रो ! अर आ दोसौ रिपल्ली री साइकिल ! अर ओ कॉलेजियो छोरो ! उघाडै माथै ! नेकर पैर्योडो।

हवा रो जोर सू फटकारो लाग्यो तो अेक माळा रो डोरो तूटग्यो वा चारू कानी अठी-अठी फरफरावण लागी। कदे ई दोवडी व्है जाती। कदे ई पाधरी व्है जाती। अेक माळा रो डोरो वळै तूटग्यो।

ट्रैक्टर चलावता छोटकिया भाई रै काळजै फरफरावनी माळावा रै मिस जाणै झाटी रा सडिदा लागा। वो दात पीसतो-पीसतो ई पूरी रेस खाची ! तोप सू छूट्या

गोळा रै वेग ट्रैक्टर दौड़ण लागो। हवा मे चारूं-मेर धरधराहट ई धराधराहट गूंजण लागी! ट्रैक्टर तळै पाथरयोडो आभो पाछो पैला सू ई ऊंचो—घणो ऊंचो चढग्यो हो।

की छेती कम पड़ी! वळै कम पड़ी! हा, अबै तो खासी कम पड़गी।

टोपसी रै उनमान छोटी लागती दुनिया फगत दो ठौड सिवटनै निखरगी ही। ट्रैक्टर अर साइकिल-सवार टाळ वानै दुनिया री किणी तीजी बात रो ध्यान नीं हो। साठ हजार रिपिया रो ट्रैक्टर अर दो सौ रिपल्ली रो खीलो!

जोग री बात कै सगती दो मिलटरी री गाडिया साम्ही आई तो ट्रैक्टर री रेस धीमी करणी पडी। बाईसिकल वाळो मोटयार ओ तावो राख खागो आगै निकळग्यो।

बिचेटियो भाई बोल्यो—ओ उघाडमाथ्या छोरा किता ओटाळ व्है! गाडिया रो उकरास लगाय सपाक आगै बधग्यो।

बडोडो भाई बोल्यो—बापडो थोडी ताळ मोदीजै तो छो' मोदीजतो! कित्तोक आगै जावैला। सेवट तो सास तूटैला ई। बावळो, आपरी जवानी गाळै! नमा ढीली पड़गी तो लुगाई रै काम रो ई नी रैवैला। आ जवानी कोई साइकिल माथै उतारण सारू नी व्है।

खुली सड़क मिळता ई छोटकियो भाई पाछी पूरी रेस खावली। जाणै सोर नै बत्ती बनाई! हवा नै अपड़ण सारू झापळिया भरतो ट्रैक्टर जाणै आंधी रो इज रूप बणग्यो! अर तर-तर छेती भागती ई गी!

ट्रैक्टर री धरधराहट सलबै सुणी तो वो अेकर वळै लारै मुडनै जोयो। रीस मे तणकारो देय पाछो मुड़ग्यो। फिटकती रै उनमान उणरा दोनू पग चकरी चढिया सो चढता ई गिया। अबै उणनै थोडो-थोडो परसेवो होवण लागो हो। वो राजस्थान रो सबसू तेज साइकिल चलावणियो हो। हा, वो ई अेक मिनख हो। बूकिया री ठौड बूकिया। पगा री ठौड पग। अर सास री ठौड सास! सपना री ठौड सपना।

वो नित साठ-सित्तर मील साइकिल बगडावण करतो। लारला दो महीना सू अभ्यास करै। धकलै महीनै अखिल भारतीय साइकिल दौड मे अगवाणी रैगो तो कदास पैरिस जावण री बारी आ सकै। आज इण ट्रैक्टर री होड मे उणरी परख व्है जाणी है। दात पीसनै आपरै करार सू ई सवाया पैडल दाब्या।

साइकिल चलावण री लकब अर आट देख उणरै साथै भणती अेक साथण पैलपोत चिपता ई सीधो ब्याव रो प्रस्ताव धरग्यो! वो पाछो मुभट हां ना रो की पडूतर नी दे सक्यो! थोडा दिन साथै रह्या, माहोमाह वतळ करया, अेक दूजा रै अतस नै सावळ ओळखिया मतै ई सगळी बाता सुभट व्हैगी। अखिल भारतीय साइकिल दौड सू निवडया उपरात ब्याव रो कौल कर लियो! वो विखा मे पळयोडो हो। वा आसूदा घर मे रम्योडी ही। पण दोनू ई अेक-दूजा माथै जीव

दता। अेक दान रोटी टूटती ! ब्याव री लाखीणी रात वारी सेजा चाद उतरैला !

अणछक वाहेली री उणियारो उणरी आख्या साम्ही भळक्यो ! जाणै वा हवा रै मिस आज री आ होड निरखै। उणरो करार दस गुणा बधग्यो ! पगा रै जाणै पाखा लागगी। भला वाहेली री अदीठ निजर सू बत्ती इण निरजीव ट्रैक्टर री काई जिनान ! छेती बधण लागी सो तर-तर बधती ई गी ! देखता-देखता पैला सू ई डोढी छेती पडगी। ट्रैक्टर री रेस पूरम पूर खाच्योडी ही। इण सू आगै किणी रो को जोर नी हो ! पाचू ई भाया रो मन मठोठी खावण लागो। चारू मेर री सूसाडा भरती हवा धरधराहट रा पळेटा म अळूझगी ही ! आखी दुनिया रो राज हाथा मे आयोडो देखता-देखता ग्रुम जावैला !

ताप रै गोळा रै वेग ट्रैक्टर मलपतो हो। साइकिल वाळा उघाड-माथ्या छोरा रै पगा मे जाणै कोई वतूळियो सरण लेली व्है ! वाहेली रो उणियारो उणरी आख्या साम्ही झबूका भरतो हो। छेती तर-तर बधण लागी। नी तो उणरो फीफरो फाटग्यो अर नी उणरो सास तूटो।

आधी माळावा तूट-तूटनै हेटै खिरगी। ट्रैक्टर माथै बैठा वै काटी दूजो जोर ई काई करता।

पण अदीठ रै जोर अर जोग रो किणी नै की वेरो नी हो ! वतूळियो वणियोडा पग अणछक खाली घूमण लागा। साइकिल री चैन उतरगी ही। तो ई वो की हावगाव नी व्हियो। ट्रैक्टर रै वेग रो कूतो उणरा पग मतै ई कर लियो हो। वाहेली रो उणियारो च्यारू कानी दीप-दीप करण लागो। इण ताकत सू ऊची तो दुनिया म दूजी की ताकत नी। वो तुरत साइकिल थाम फूदी रै उनमान हेटै उतरग्यो। स्टैंड माथै ऊभी करनै वो निरात सू चैन चाढ़ण लागो।

तर-तर छेती कम पडती गी ! ट्रैक्टर री धरधराहट अर पाचू भाया री खुसी हवा म मावती नी ही। भला जोग रा जोर नै कुण पूगै ! साठ हजार रिपिया री लाज रै ढाका-ढूमी व्हैगो। इण भात रै झूठा सतोख सू कोई आपरो मन पोखै तो उणरो कुण काई करै !

ट्रैक्टर री धरधराहट साव मलवै सुणीजण लागी। चैन चाढण री हळफळाई खथावळ म साम्ही बत्तो मोडो व्हैतो गियो ! अर देखता-देखता ट्रैक्टर तो साव पाखती आयग्यो ! पण उणनै तो आपरै करार अर वाहेली रै अदीठ उणियारा रो अजस हो।

धरधरातो ट्रैक्टर अडोअड आयनै धकै निकळग्यो। पाचू भाई मिनखा री बोली मे की जोर सू अेकण सागै वडवडाया। उण वेळा ई कागला री जान कांव-कांव करती माथा कर निकळगी। ट्रैक्टर री धरधराहट अर कागला री कांव कांव रै बिचाळै मिनखा री बोली सावळ उघडी कोनी।

वो चैन चाढ साइकिल माथै चढ्यो जणा ट्रैक्टर दो अेक खेतवा धवै

निकळग्यो हो। च्यारू भाई लारै मुड़नै देखण लागा। सोचण लागा के मेलो चैन चाढण रो मिस करै। कदास अबै होड करण री हूस ठाडी पड़गी दीसै।

पण वो तो साइकिल माथै चढता ई पाछो कठूळियो बणग्यो। अर छेली तर-तर कम होवण लागी सो क्ट्रैनी ई गी।

मगसा-मगसा अंधियारा में कुदरत कूरीजण लागी ही। च्यारू भाई आख्या फाड़-फाड़ देखण लागा। आ साइकिल तो कठै धकै निकळ जावैला।

रेग पूरमपूर गाच्योड़ी ही। ट्रैक्टर रै वेग मू आगै कारो की जोर नी हो। गगळा ई दान पीसण लागा।

ट्रैक्टर रा कमूवल रग माथै मगसी झांई घिरण लागी। छोटकियो भाई पूछ्यो—उघाड माथ्यो कठैक आवै?

च्यारू भाई दान पीसता थका बोल्या—ओ तो कठै हावरता ट्रैक्टर सू धकै निकळ जावैला।

"अबै तो दणरो बाप ई नी निकळ सकै।" आ बात कैता ई छोटकिया भाई रै *काना बाज वाळो सरणाटो अर ऊदरा वाळी-वाळी ची-ची बारी-बारी सू गूंजण* लागी। थोडी ताळ उपरान अेक कान मे ची-ची अर दूजा कान में सरणाटो ढबियो ई नी। विरमाड री हवा जाणै इण गूंज मू चीरीज जावैला। ट्रैक्टर रो धरधराटो ई इण गूंज में डूबग्यो हो।

अर उठी साइकिल वाळा उघाडमाथ्या री आख्या साम्ही अेक दूजो ई विरमाड पळकतो हो। ठौड़-ठौड़ वाहेली रा उणियारा झमका भरण लागा—छिड़्या-विछड़्या तारा में, रूख-झाटका में, धोरा में अर साम्ही जावता ट्रैक्टर में, ट्रॉली में। आज उणरी परख व्है जाणी है। जे ट्रैक्टर सू धकै निकळग्यो तो वेगो ई ब्याव कर लेला। वा मान जावै तो काले। नीतर परसू। परलै रोज। जद-कद ई उणरो मन व्है।

अबै तो धकै निकळण मे कारो ई काई। आखी दुनिया उणरा हथळेवा री मूठी में समाय जावैला। आख्या साम्ही सोवन सपना रो वेजो बुणीजण लागो।

अर उठी जाणै बाज रै सरणाटा अर ची-ची री गूंज सू हवा रो रेसो-रेसो टूपीजण लागो हो।

च्यारू भाई किडकिडिया चावता अेकण सागै बोल्या—अधवेरडो उघाड-माथ्यो छोरो तो आज अपारै पोत्या री जबरी सान बिगाडी।

पछै वै छोटकिया भाई नै अेक जुगत बताई—पाखती आता ई ट्रैक्टर आडो कर द। ओ ओटाळ ई काई जाणैला के...।

बाज रा सरणाटा अर ऊदरा री ची-ची नै मिनखा री वाणी रो अरथ मिळग्यो।

अर उठी उणरी वाहेली रा उणियारा रो उजास ई खासो बधग्यो हो। अेक-

अेक उणियारो साव सुभट दीखण लागो।

अबै तो ट्रॉली रै माव अडोअड पूगग्यो। वाज रै सरणाटा अर ऊदरा री चो-चो छोटकिया भाई रै माथा मे चापळनै मून धारली ही।

वतूलिया रै वेग सू दौडती साइकिल अणछक ट्रैक्टर सू टकराई। अेकर आख्या साम्ही बीजळी पळकी। पछै दीप-दीप करतो अेक-अेक उणियारो बडो व्हैतो गियो। ट्रैक्टर रै लारलो काळो टायर माथा रो गिरडको काढ दियो। सगळा उणियारा अेकदम वडा व्हैगा।

हवा मे वळै मिनखा री बोली गुणमुणाई—मा रो माटी, ट्रैक्टर सू धवै जावण री हूस राखै।

छोटकियो भाई की भणियोडो हो। तुरन्त अेक जुगत विचारी। थोडी अळगी भाय जाय ट्रैक्टर ढाब्यो। थैला माय सू बोतल काढतो बोल्यो—बापडा नै थोडी रम तो पावा।

पछै मिनख रै पगा—पगा वो धवै बधियो। साइकिल वाळा रै पाखती जाय बोतल रो ढक खोल्यो। उणरै मूडा मे आधी बोतल दारू ऊधायो। पछै माथा रै पाखती बोतल फोड वो दौडतो-दौडतो ट्रैक्टर माथै चढग्यो। धरधरातो ट्रैक्टर धकै वधग्यो। मोडा माथै ऊभी लुगाया बाट निहारती व्हैला। घरै गिया वानै कोड सू बधावैला।

हवा मे मिनखा री हसी रो ठहाको गूज्यो।

अर उठी काळी सडक रै माथै अेक चित्राम किणी उम्दा पारखी नै उडीकतो हो। लाल रगत रै बिचाळै मिनख रो धोळो भेजो। फूटोडी बोतल रा टुकडा। किणी मोटयार री ल्हास। धोळो नेकर। ठौड-ठौड रगत रा छाबका। सोसनी बडी। सपना रो किचडको। मोह-प्रीत रा रेळा। चित्राम की बेजा नी हो।

पण दोनू महाजुद्धा रा चित्राम, हिरोसिमा, नागासाकी रा चित्राम अर बगलादेस रा बेजोड चित्राम—इण नाकुछ चित्राम सू घणा-घणा ऊचा हा। घणा-घणा रूडा रूपाळा हा। ओ चित्राम वारी होड तो नी कर सकै। पण गिवारू हाथा कोर्‌योडो वो छोटो चित्राम ई की बेजा नी हो।

हा, तो वै पाचू ई मिनख हा। मिनखा री बोली बोलता अर मिनखा री ई हाली हालता।

# चुप्पी

## विनोद सोमाणी 'हंस'

आज पैलो दिन हो। म्हैं बडा बाबू री टेबल रै सामैं ऊभो हो। बाबू थोडी देर गू फाइला सू माथो ऊंचो कर्यो अर म्हनै बैठ जावणै रो इसारो कर्यो। वै पाछा फाइला मे गुमग्या। फेरू भी म्हारा सूं आ बात छानी नी रैयी कै वै म्हनै चोर-निजर सूं देखै हा—कस्या जगळ सूं उठनै आयो है।

"आप ही नूवा बाबू हो ?" निजर्या हाल भी फाइल मे ही।

"जी !" धीमै-मी म्हारी आवाज ही।

"बी० ऐ० कद करी ?" अबकै वारी आख्या म्हारा पै जम्योडी ही।

'जी, इण साल ही।" म्हैं उथळो दियो।

इणरै पछै वारा केई सवाला रो सिलसिलो चालतो रैयो अर म्हैं जवाब देवतो रैयो। म्हारी पारिवारिक, सिक्सा सम्बन्धी अर दीगर जाणकारी वै पूछता रैया। म्हैं बिना हिल्या-डुल्या सब रो उत्तर देवतो रैयो।

वैं सुन्ट हुयग्या तो माथो हिलायो अर चपडासी नैं आवाज दी—"दयाराम ! बाबू राधारमण नैं·ˑ।"

लगन सू काम कर्या जावो, कोई दिक्कत आवै तो कैयज्यो ! वै म्हनै राधारमण रै सुपर्दै कर दियो।

हाल म्हनै राधारमण रै साथै ही काम करणो हो। वै बडा हेत सू आपरी फाइला म्हारी आडी सिरकाई अर कुछेक आदेस दिया। पछै सिगरेट रो पाकिट खूझ्या सू निकाळता म्हनै पूछ्यो—"सिगरेट चालैली ?"

म्हैं नकारात्मक माथो हिलायो।

"बुरी बात है, पीवांला नी तो पिलावोला कै ?" वैं जबरदस्ती हसता थका बोल्या। आफिस मे वांरो हसणै रो तरीको देख नैं म्हैं अनुमान लगायो कै बडा बाबू बाकई नरम दिल मिनख है। थोडो परचो तो पैली भेट मे हुयग्यो हो।

साम रा चार बज्या दयाराम आयो अर बोल्यो कै बडा बाबू याद करै है। म्हैं बेगो ही वारै कनै जाय पूग्यो।

वै म्हनै सामैं बैठायो। म्हैं सोचणं लागो, अुमर कोई पचास री हुवैली। माथै रा केस कुछ छीदा-छादा पण, गजा भी नी। दूबळो डील, मुरींदार चैरो, जिण पै प्रेस नी हुय सकती ही।

वा पूछ्यो—"काम मे कोई दिक्कत तो नी आई?"

"जी नही।" म्हैं सालीनता सू बोल्यो।

"अच्छा!" थोडी ताळ मू फेरू बोल्या—"दफ्तर बन्द हुवण आळो है थारै खावणै-पीवण रो···? थे म्हारै घरा ही चालो!"

"जी नही। आप क्यू तक्लीफ देखो?" म्हैं सकोच सू कैयो।

वै नी मान्या।

थोडी ही बेळ्या मे वारै घरा पूगग्या। दूजी मजल पै वारो रैवास हो। घर कम यू जूना टाइप रो घरूदो मात्र। अठीनै-वठीनै लटकी ऊटपटाग तसवीरा आवर्सण री ठौड भद्दापणो जणावै ही। अेक चरमर करती कुरसी पै म्हनै बैठायो अर जोर सू चिल्लाया—"शरण!"

अेक सोडसी आय ऊभी हुई अर चुपचाप बावूजी नै देखण लागी। बडा बाबू वीनै चाय रै वास्तै कैयो।

म्हैं नटतो ही रैयग्यो।

चाय रै पछै घडी देखी तो साढी छै बजग्या हा। सायत् वै म्हारो मक्सद जाणग्या हा। बोल्या—"हाल रुकणो है—भोजन करनै जावज्यो।"

वा रै कैवणै सू शरण दो थाळ्या परूस नै ले आई। फरस पै दरी माथै ही म्हे बैठग्या। शरण चुपचाप भोजन परूस रैयी ही। म्हैं आ नी समझ पायो कै वा बडा बाबू सू भी नी बोलै ही—क्यू? सायत् म्हारै कारण सरमावै ही, फेरू भी वा मौन आग्रह सू परूसै ही। म्हारो ध्यान वी मे लाग्योडो हो। बडा बाबू री निजर्या चुराय नै वी नै देख लेवतो—वीरो सुघड डील, सौन्दर्य रो फूठरो सयोजण।

बडा बाबू जाण नै भी अणजाण बण्या रैया।

वारो वैवार म्हनै घणो हेताळू लाग्यो। वी दिन रै पछै केई बार वारै घरे आवणो-जावणो रैयो—अक्सर रोजीना ही। वारा परिवार मे कुल तीन मिनख हा—वै, माताजी अर शरण।

माताजी भी घणी बेगी म्हारै प्रत हेताळू हुयगी ही। बावूजी नी हुवता तो भी वासू बातचीत हुवती ही। परिवार रा किरसा रै सागै वारी वात शरण री सगाई पै आय'र अटक जावती। वानै दरद हो कै कोई ओपतो डावडो मिलै नी है।

अर म्हैं सोचतो हो कै म्हारा मे काई खामी है?

अणजाण्या ही म्हैं शरण नै चावण लागो हो। वीरी झाकती आख्या भी म्हनै स्वीकृति देय दी ही।

अेक दिन म्हनै विस्वास नी हुयो कै बाबूजी शरण रा ब्याव रो प्रस्ताव

राखैला। म्हैं काई सोच भी नी पायो—नी जाणै म्है क्यान कैय दियो—"आप पिताजी सू बात कर लेवो।"

"वो सब हुयग्यो है, थानै तो अेतराज नी है ?" वै बोल्या।

"जी नही।" म्हारो नान्हो-सो उत्तर हो।

वै पुमब री दाई खिलग्या। म्हारी पीठ थपथपावता बोल्या—"बेटा, म्हारो बोझो हळको कर दियो। अेक मोटी समस्या सुळझती जाय रैयी है।"

जावती वेळ्या म्है शरण नै देखी। वा लजावै ही, सायत् वीनै ओ सब मालूम हो। मौको देखनै म्हैं बोल्यो—"अबै तो राजी हो ?"

वा लजावती भागगी।

बावूजी म्हारा पै घणा महरबान हा। वी दिन राधारमण पूछ ही लियो—"काई भाई, कस्यो जादू कर्‌यो है।"

म्हैं धीमें-सी मुळकतो बोल्यो—"काई भी तो नी।"

"कुछ तो है ही" वै माथो हिलावता बोल्या—"रोजीना घरे भी तो जावो हा ?"

"यू ही जाण-पिछाण राखणो बुरो नी है।" म्हनै वारो सवाल बुरो लाग्यो।

"हा, पण निजर कुण पै है—गूगी पै ?" भद्दापणा सू दांत निकाळता वै बोल्या।

"गूगी कुण ?' म्हैं इचरज सू पूछ्यो।

"अरै थे नी जाणो ?" वै भी इचरज कर्‌यो—"भाई, बावूजी री इकलौती बेटी, बापडी सुन्दर है, सुसील है, पण ।"

"कुण शरण ?" म्हनै विस्वास नी हुयो।

'हा, सायत् शरण ही है वीरो नाव !" वै कैयो अर अजीब सी निजर सू देखण लागया।

म्हारा सू नी कैंवता बण्यो अर नी सुणता। म्हैं खामोसी री सीव नै पार करग्यो हो। म्हारा हिड्दा मे अन्तरद्वन्द्व रुकै नी हो। माथा मे हथोडा री दाई राधारमण रा सबद गूजै हा—गूगी !

बावूजी रो उदास अर उतर्‌योडो चैरो आख्या रै सामी आयग्यो। वारा बोल भी—"बेटा, म्हारो बोझो हळको कर दियो। अेक मोटी समस्या सुळझती जाय रैयी है।"

म्है समझ नी पावै हो के म्है वा समस्या सुळझा भी सकूला या नी···बावूजी रो विस्वास· ·वारो हेत···शरण···वीरी आख्या री वा ···म्हैं नी जाणै काई सोचै हो।

सिझ्या रा दयाराम नै भेज नै बावूजी बुलायो। म्हारो मूडो देखनै बोल्या—"उदास हो ?"

'जी नही ।" म्हैं सभळनो थको बोल्यो ।

शरण चाय ले आई । म्हैं घणी-घणी बाता कैंवणी चावै हो पण काई भी नी
य पायो । अेक अणजाणी-सी चुप्पी म्हनै घेर ली ही । म्हारा होठ सिलग्या हा—
रण री मासूम सूरत म्हारी आख्या मे घूमै ही । बाबूजी नी जाणै काई-काई कैवै
ा पण, म्हारै चारूमेर अेक चुप्पी मडरावै ही ।

शरण री पर्याय चुप्पी !

●

# डाळ सूं छूट्या पंछी

## शचीन्द्र उपाध्याय

मुरमई साझ रो हळको परकास'''अधेरो गहरो नी होयो हो। तळाव री पाळ पै उग्या लावा अर घणा पेडा री काळी छाया पाणी मे डूबगी ही अर पिछम रै क्षितिज म सूरज री थोडी-थोडी रोसनी बाकी ही।

आज नरोत्तम अठी वेगो ई आ गयो हो। तीसरै पहर सू भी पहला। आखरी मछली पकड'र उण बसी री डोरी समेटी अर गोडै पडी मछलिया री आडी देखतो हुयो बा रो अन्दाज लगायो—सबसू पाछै फसी मछली घणी मोटी ही। होगी कोई एक किलो'''। आज मछल्या घणी होगी ही।

मछल्या री पोटली बाध'र उण चैन री सास ली अर बाद मे आपरा बूढा हाथा सू काटै री डोरी बाधवा लाग्यो। ई बीच ई एक पळ सारू पाळ रै नीचै उगी घास मे टिटोडी बोली अर उण री अवाज तळाव री खामोसी मे उतरगी। नरोत्तम जठी टिटोडी बोली ही, उठी री आडी देख्यो—मार्थ-मार्थ घास रै बीच गाव री आडी जाती पगडडी दीख री ही। उण सू आगै गाव रा पेड दीख रया हा। साझ रै धुअें मे डूब्या हा। गाव मे आता ढोरा रो सोर उठी ताई आ रयो हो।

अचाणक ई आथूणी आडी सारस कूक उठ्या। नरोत्तम चिमक'र उणा री आडी देख्यो—तळाब रै आखरी छोर पै उग्या ताड रा पेडा रै ऊपर सू उडता सारस उण नै नी जाणै की अतीत मे लेग्या।

ठीक बिसो ई धीरां-धीरा उतरतो अधेरो। घमासाण पेडा रो कदी न खतम होवा आळो सिलमिलो ''मेघना रै किनारै-किनारै उग्या नारेळ जिसा ताड रा लावा-लाबा पेड।

नरोत्तम धीरा सू सास भरी अर घर जाबा सारू उठ रयो हो, जदी पाछै सू बूढो समद आतो दीख गयो। ममद रै माथै पै सूखी लाकड्या री बडी सी मोळी ही। नरोत्तम पाछो ई आप री ठोर पै बैठ गयो अर उण री आख्या समद री देह मू चिपकगी।

हळकी छडछडी देह ''धोळी डाढी, माथै पै छितराया हुया छोटा-छोटा वेस

अर ढोली-ढाणी लुगी रै ऊपर दियो हुयो कुरतो···बुढापै मे भी समद खूब तेज चाल ले है। थोडो भी न थाकै।

एक पळ सारू समद रै ऊपर उणनै गुस्सो हो आयो। नरोत्तम घणो नटै है कै समद गाव मे ई घरे बैठ्यो रैवै। उण नै बो बेटै री नाई मानै है। किरण भी उण नै बेटै री नाई मानै है। बा भी या ई चावै है कै समद अर जुलेखा दोनी उण रै गोडै ई रैवै। समद दोनी टेम भात खावै अर भगवान रो नाम ले, पण समद रा पगा मे न जाणै काई है। बो थोडी देर भी एक जगा नी बैठ पावै। नरोत्तम रै अठी-बठी होता ई बो गाव सू चल दे है—कदे घास काटवा, कदे मोळी लेवा अर कदी-कदी ढोर ढूढवा।

"क्यू रै, समद ! कठी गयो हो रै", समद रै गोडै आता ई उण पूछ्यो। उण री आख्या मे भरयो लाड रो गुस्सो समद समझग्यो।

"ही ही ही···दादा।" समद मोळी धरती पै पटक दी अर अपराधी सो उण रै आगै खड्यो होग्यो। पण आज तो नरोत्तम न जाणै की अतीत मे डूब्यो हो। ऊ री आख्या ताड रा पेडा पै टिकी ही।

"देख रै, समद ! ताड रै आगै वो काई है ?" समद रै ताई बो दिखातो हुयो बोल्यो। नरोत्तम री आगळी री दिसा मे समद देख्यो—ठीक मेघना रै किनारै उग्या नारेळा सो घणो-घणो अधेरो। बिसा ई गोडै-गोडै उग्या पेड अर सझचा समैं बिसा ई बसेरो ढूढता पछिया रा अणगिणत झुण्ड।

एक पळ समद रो दिल भी हिलग्यो। उण रै गाव इच्छापाडा रो दिरस आख्या रै सामनै देख उण री आख्या भर आई। नरोत्तम री पीडा बो जाणै है। न जाणै कित्ती बार नरोत्तम आपरै गाव री याद कर रो पडै है। आ सोचकै के नरोत्तम अबार भी रोवा लाग जावैलो, बो वेगो सो बोल्यो—"अधेरो होग्यो है। वेगा सा घरनै चालो, दादा। मा वाट देख री होसी।"

'हा रै ! किरण बाट देख री होसी। चाल भाई, चालू हू। घर नै तो चालणो ई है।" नरोत्तम या कहता वखत जिया समाध सू निकळ आयो अर गोडै पडी मछलिया री पोटळी उठाकै गाव री पगडडी पै हो लियो।

चारूमेर जगळ री खसबू भरी ही। जगळी पेड-पौधा महक रया हा। पण नरोत्तम न जाणै किण यादा मे खोयो, काई भी महसूस नी कर पारयो। चौबीस बरस पैला रो अतीत उण री आख्या मे घुमड आयो हो। मेघना रै किनारै बस्यो उण रो गाव उण रै सामनै घूमरयो।

उण स्याम भी नरोत्तम इया ई मछलिया मार कै तळाव सू घरनै जावा री तैयारी कर रयो हो। काचा केळा रा गाछ तोडकै बो ढोरा रै आगै पटक दिया हा। इया ई सूरज डूबग्यो हो अर तळाव री पाळ पै उग्या नारेळा पै सूरज री किरणा अटकी ही।

यो ई समद दौडतो दौडतो गाव री आडी सू आयो हो । बा दिना समद चोखो जवान हो । जनम सू ई समद बा रै अठै पळ्यो हो। वा रै अठै ई बडो हुयो हो। समद रो ब्याव भी नरोत्तम रो बाप ई करयो हो। दोनी लाडा लाडी नरोत्तम रै अठै ई काम करै हा । दोनी ई परवार रा अग समझीजै हा । किरण भी समद नै बेटै री नाई मानै ही । उण री लाडी नै ई बेटी कहकै बुलावै ही अर उणनै कोराणी री तरा राखै ही ।

*नरोत्तम काई समझ पातो । समद सू आगै कुछ पूछ पातो उणरै पैल्या ई समद* रै पाछै भागती आली किरण उण नै दीखगी । उण दिन रो किरण रो रूप याद कर आज भी नरोत्तम डरग्यो । उण रो चहरो पसीनै सू भीग रयो हो अर वा बुरी तरह सू घबरारी ही ।

समद उण रा पगा मे पडग्यो अर रोतो रोतो बोल्यो—'सब कुछ स्वाहा होग्यो दादा ! सब कुछ मिटग्यो ! मा जाणै कुण रा भाग सू बचगी है। मा रै साथ तुरत नाव बैठ जावो । मेघना रै किनारै नाव बाध आयो हू ।"

नरोत्तम कई दिना सू ईं बात री आसका कर रयो हो । सारो बगाल बा दिना धू-धू करकै बळ रयो हो । *चारूमेर कटो माच रयो हो । दूर बळती आग आज उण* रै गाव म भी आ पूगी, ईं री आसा उण नी करी ही ।

नरोत्तम उण उखत काई न समझ सक्यो । समझबा लायक काई रयो भी नी हो । देखता-देखता ई सारो गाव धबळ धबळ बळबा लाग्यो अर आग री लपटा अकास छूवा लागी ही ।

भाठै री मूरत सी किरण बतायो हो के बा रा दोनी बच्चा-राधे अर मणी दगाइया मार नाख्या हा। गाव मे बारै सू आई भीड एक एक हिन्दू नै मार री ही ।

*गाव री आडी सू कई जणा खून मे भीग्या अठी आ रया हा—राखाल हीरेन,* विपिन, सावित्री अर सब सू पाछै-पाछै बूढो चोधरी ।

उण रात समद वां नै नाव मे बिठाया हा अर पगा री धूळ माथै सू लगातो हुयो बोल्यो हो—"सरकार दा। ईं जनम मे आपसू दुबारा भेंट कद होसी, नी जाणू । अल्लाह आपनै खुस राखै । मा रो घ्यान राखज्यो ।"

समद बाळक री नाई रोबा लाग्यो हो । अर जद ताईं नाव आख्या सू ओझल नी होगी नदी रै किनारै खड्यो-खड्यो रोतो रयो हो ।

नरोत्तम अर किरण गाव रा दूसरा लोगा रै साथ साथ न जाणै किण किण *कैम्पा मे भटक्या हा । अन्त म वै विलास आग्या हा ।*

थोडी सी धरती छोटो सो तळाव अर फूस री छोटी सी टापरी । ई गाव नै ई नरोत्तम इच्छापाडो समझ लियो हो । विलास सू ई टूट्यो मोह जोड लियो हो । पण किरण जरा भी न सभळ पाई । राधे अर मणी बार-बार याद आता अर बा टूट

जाती। जद-तद समद अर उण री लाडी नैं याद करकै रोवा लाग जाती। कई बार नरोत्तम इच्छापाडा जावा री सोची। कलकत्ता ताईं बो गयो भी, पण वठै सू आगै जाबा रो कोई गैलो उणनै नजर नी आयो।

समद रा कागद उण रैं पास बरोबर आवैं हा। एक बार समद लिख्यो हो के उण रा बच्चा बडा होता जा रया है। एक बच्ची रो वो ब्याव कर दियो है। सबमू छोटी जुलेखा नरोत्तम अर किरण नै घणी घणी याद करै है।

पण इतिहास अपणै आपनै दुहरा रयो हो। बगला देस मे पाक फोजा छागी ही। चारूमेर मारकाट लूट-खोस मची ही। समद भी एक रात गाव सू भाग पड्यो, आपरी आख्या मे दुनिया भर रो दर्द लेकै। उणरा बच्चा खोग्या हा। जुलेखा नै छाती सू चिपकाया बो भी एक रात मेघना मे नाव मे बैठ चल दियो हो। थोडा दिन वो भी कलकत्तै रैं कैम्प म रयो। ईं बखत उण नैं नरोत्तम री याद आई अर एकदम जुलेखा नै लेकै चुपचाप विलास कानी चाल पड्यो। जद बो नरोत्तम रैं गोडै आयो तो नरोत्तम उण नै देखकै रो पड्यो। समद नैं पाकै जिया उण री जिन्दगी लोट आई। चोबीस बरस पैल्या रो समद अब हाडा रो ढाचो मात्र लागै हो। जुलेखा नै पा कै किरण बचगी। बा रात दिन उणनैं आपरैं गोडैं राखती। थोडी देर खातर भी उण नैं नी छोडती।

मार्थं मार्थं घास रैं बीच सू चालता हुया दोनी गाव रैं गोरवै आ पूग्या। गाव म अधेरो छाग्यो हो। सामनैं ई हाथ म माळा फेरता बूढा चोधरीजी मिलग्या। नरोत्तम नै देखता वै ठहरग्या अर बोल्या—' मैं थारी ई बाट देख रयो हो, सरकार ! तू काई सुण्यो के नईं।"

नरोतम चोधरी री बात काई नी समझ पायो। थोडा दिन पैल्या समद नै ढूढतो एक सिपाही थाणै सू आयो हो। सिपाही कही ही के समद नैं कैम्प म जाणो पडैलो। बगाल सू आया सरणार्थी अठी-बठी नी रह सकै। बगला देम बणवा रैं बाद सरकार बानैं पाछा खदावैली। उण बखत तो नरोत्तम सिपाही नैं दे दाकै पाछो कर दियो हा।

' बगला देस बण गयो रै !" चोधरी आपरी अधूरी बात पूरी करी। नरोत्तम रो हाथ मछलिया रैं बोझ सू टूट्यो जा रयो हो। उण मछल्या री पोटळी धरती पै धरदी अर जेब सू बीडी काढकै सिलगाली। चोधरी री बात सू सामनैं फैल्यो अधेरो उणनैं ओर गाढो लागबा लाग्यो। बो भी चावै हो के समद उण रैं गोडै सू अलग होवैं। गाव हाळा दूसरा लोग भी समद नैं छोडबो नी चावैं हा। आपणै समद रो काई होवैलो ? नरोत्तम डरता-डरता चोधरी सू पूछ्यो।

"या ई बात मैं भी सोच रयो हू। आज स्याम की फेर सिपाही आयो हो। अब वो तडकै आवैलो। वह रयो हो के समद नै लेकै ई तडकै गाव सू जावैलो।" आखरी बात चोधरी निरासा म डूबता हुया कही।

नरोत्तम अर चोधरी काई भी निर्णय न कर पा रया। दोनी खामोस हुया बैठ्या बीडी पी रया हा। उणी वखत सामनै सू रवीन्द्र री कविता रा बोल वा रा काना मे पड्या। दोनी आगै री आडी देख्यो। ममद गी लडकी जुलेखा ही जो गानी हुई आरी ही।

> कोथा रे तीर फुल्ल पल्लव पुंजित
> कोथा रे नीड कोथा आश्रय शाखा
> तू विहग ओ रे विहग मोर
> एखिन बध बध कोरो ना पाखा॥

नरोत्तम अर चोधरी दोना री आख्या भीगगी। रवीन्द्र री कविता छोरी चोखी बोलै है।

"बाबा !" जुलेखा दोना नै प्रणाम कियो अर नरोत्तम सू बोली—"मा कद सू आपरी बाट देख री है, चालो नी, बाबा। अब्बा तो कदी रा घरा पुगग्या।"

"हा बेटी। चालू हू।" नरोत्तम उठवा लाग्यो, पण चोधरी उण नै रोक लियो। नरोत्तम मछली री पोटळी जुलेखा नै ई दे दी अर बोल्यो—"तू चाल बेटी। मैं दादा रै साथ एक चिलम तमाखू पी अर रयो हू।" जुलेखा कविता रा बोल दुहराती पाछी ई चली गी।

"समद नै कैम्प जाणो ई होगो, सरकार! बठै सू बगला देस। आज ई कोई नेता रो भासण रेडियो पै सुण्यो है। सरणार्थी पाछा आपरै देस लोट रया है।" चोधरी बम सो फोडयो। पण ऊ बात सुण नरोत्तम बिखरग्यो। समद अर जुलेखा नै पावै वै दोनी ई जिया नयो जीवण पाग्या हा। किरण कहती रैवै ही के जुलेखा रो ब्याव वा अठी ई कर देसी। अपणी जमीन, आयदाद सब वा नै सूप देसी। अब किरण रो काई होवैलो, नरोत्तम नी समझ पायो।

अंधेरो ओर गाढो हो आयो हो। रात धीरा-धीरा सरक री ही। बूढा चोधरी कद उण री आडी चिलम बढा दी, वो नी देख पायो। अचाणचक ई नरोत्तम बोल्यो—

"दादा, इसो इन्तजाम नी हो सकै के म्हे लोग भी पाछा जा सका।"

ओ इसो प्रश्न हो जी रो उत्तर चोधरी रै गोडै भी कोनी हो। उण री बूढी आख्या मे आपरै गाव रा दिरस घूम रया हा। चोधरी भी भीतर ई भीतर चाह रयो हो के सैताळीस मे आया लोग भी आप आपरै घरा जा सकै। उण री देह रो रोम-रोम नी जाणै की सुख सू भीग आयो। वो काई बोलवा जा रयो हो, तदी समद सामनै आग्यो।

"चालो नी, दादा। मा कद सू आपरी बाट देख री है।"

"चालू हू, रै।" नरोत्तम उठ खडो हुयो। चोधरी भी उणरै साथ उठग्यो। पण दोना रा ई पग काप रया हा। दोना रा सरीरा मे चालवा री थोडी भी सगती नी बची ही।

●

# अमर मिनख

श्रीलाल नथमलजी जोशी

अदीतवार नैं काम-काज री छुट्टी रेवै। म्हैं तोळियामर भैरूंजी जावण रो नेम बणाय राख्यो हो। बूढी पूजारण सूं गपसप लागै। आखै जग्त री बाता सुणावै। इण सूं भी वडो फायदो ओ के घडी-आध घडी बैठ् जिकै मे मागीडो सिरावण मिल जावै। घर म लूखै फलका अर दाळ रै पाणी सू माथो लगावणो पडै, भैरूनाथ रै अठै ग्मगुरला, खीरमोवन, जामपळ, पेडा, पेठा, भात-भात री मिठाया आवै। माजी म्हारै माथै सनेव राखै—हू वेटै री बऊ री चुगत्या कान देय'र सुणू, इण कारण माजी मनै आपरो तन्न् समझै।

मारग री साकडी गळी मे नुक्कड माथै अेक छोटो सो नामपट देख्या कह—गिरजाशकर दत्त, साहित्यकार।" आज जची वै साहित्यकारजी सू इन्टरव्यू लवणा चाईजे।

किवाड माथै घटी रो वटण लाग्योडो हो, दवावता ई झट बारणो खुल्यो—खोलण आळा साहित्यकारजी हा। हू बोल्यो—आपरा दरसण करण नै आयग्यो। बा पूछयो—आप ? म्हैं आम्प्या ओढाळना कैयो साहित्य म रुचि राखू हू।

आवो, आपरो स्वागत है, पण भायद थे जाणो कोनी के म्हारो टैम इत्ती आक्पाइड रैवै, अॅगेजमेट इत्ता कै अेक मिन्ट री फुरमत लाधै कोनी। थे आयग्या, तो खैर पाच मिन्ट तो थारै खातर खैच-ताण'र काढ लेसू।

म्हैं कैयो—

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अग।
तूल न ताही सकल मिलि, जो सुख लव सतसग ॥

आपरै सागै तो पाच मिन्ट मोवळा। म्हारा वडा भाग के आप पाच मिटा रो हकारो भर लियो।

दत्तजी बात्या—हकारो भरणो म्हारो फरज है। इण विसय म हू टॉल्टॉय अर रोमारोला नै म्हारा गुरु मानू। अै दोनू साहित्यकार कदेई छोटै साहित्यकारा नै निराम करता कोनी। मारग भटक्योडा नै चानणो देखाळ'र आगै वधण म मायता

करता।

जद म्हे दोनू खुरस्या माथै बैठग्या, तो दत्तजी कैयो—हा तो फरमावो, थे किया पधार्‌या ? आपरा पाच मिट अवार खतम हुवण आळा है। पाच रै बाद हू मवा पाच मिट भी नईं दे सकूलो। हू थोडो स्पष्टवक्ता हू पण म्हारी बात री थे रीस नईं करोला।

म्हैं कैयो—आयो तो आपरा दरसणा खातर ई हो, आ भी सोची के आपसू कोई-न-कोई प्रेरणा मिलसी।

दत्तजी बोल्या—दरसण तो हुग्या। अर प्रेरणा आ ई है के खूब पढो अर खब लिखो। अेक दिन आपेई लोग थानैं पूजण लाग जासी। म्हारै कनैं थे इटरव्यू खातर आया हो, ज्यू थारै कनैं भी लोग आवण लाग जासी। अच्छा, पाच मिनट खतम।

इत्तै मे एक छोरो चाय री ट्रे लेय'र आयग्यो। दत्तजी चकराया। म्हैं कैयो—कोई बात कोनी, आपरै सागै चाय पीवण रै ख्याल सू म्हैं इं नै ट्रे लावण रो कैयो हो। पण खैर, पाच मिन्ट हुयग्या, हू तो आप सू छुट्टी लेऊ, आप चाय अरोगो।

चाय पिया सू पैली ई दत्तजी रै डील मे फुरती आयगी। जीभ माथै सूगर पॉट री खाड रो मिठास भी आयग्यो। बोल्या—कोई बात नी, चाय तो पीय'र जावणो पडसी। अर देखो, इण री दुकान रा जामफळ (गुलाब जामुन) घणा नामी है। हू आपनैं नमूनो देखाळणो चाऊ, पण एक बात है, पइसा थे नईं देवो तो मगवाऊ।

म्हैं कैयो—मनैं आपरी सेवा रो मौको कद-कद मिलै ? आगै आपरी मरजी।

दत्तजी कैयो—नईं, थानैं नाराज करणा चाऊ कोनी। अच्छा भई देख, आधा किलो जामफळ ला, फटाफट !

म्हारै कनैं अेक रुपियो अर पैंतीस पइसा हा। इण माय सू अस्सी पइसा तो चाय-नमकीन रा देवणा हा। लारै रैया पचावन पइसा। आधै किलो गुलाबजामुन रा लागसी रुपिया तीन। आसी कठै सू ? पण खैर, अेकर सीक म्हैं वो फिकर छोड दियो।

हू बोल्यो आपरो प्रोग्राम अपसेट हुजासी।

दत्तजी बोल्या—बात तो ठीक है पण इण रो इलाज भी मनैं आवै है। नावपट माथै अवार तो है—'गिरिजाशकर दत्त साहित्यकार—भीतर' अर है' लो, 'भीतर' सू 'बाहर'। अबै आसी जिका आपेई पाछा जासी परा। साहित्य खातर थारै मन मे इत्तो लगाव देख'र ई म्हैं माय रैवता थका 'बाहर' करचो है।

म्हैं हाथ जोड'र कैयो—आपरी किरपा है आ तो। दत्तजी कैयो—म्हारी आ नेचर (सुभाव) ई है के छोटै साहित्यकारा नै आगै लाऊ। दूजै दिग्गजा ज्यू म्हारै मन मे ईसको कोनी के जे अै दो आखर सीखग्या, तो म्हारी पूजा कुण करसी ? पूजा आदमी री नईं गुणा री हुवै।

दत्तजी जामफळा नै अडीकता हा। हू बोल्यो—चाय लेय लेवा नईं तो ठडी

हुया अक्यारथ जामी। बा आपरी खुरसी चाय री मेज रै नेडी सिरकायली। म्हैं पूछ्यो—खाड आपरै ? वै बोल्या—मनै फीकी चाय आछी को लागै नी। चाय फीकी हुसी तो साहित्य मे मिठास कठै सू आसी ?

म्हैं म्हारै प्याले मे अेक चमचो खाड घाल'र बाकी सगळी दत्तजी रै प्याले मे ऊधाय दी। वै चुस्की भरता बोल्या—चाय काई, सरवत है, इळायची भी घाली दीसै। है दुकान पेटैंट ई री।

हू कचोडी रो टुकडो तोडतो बोल्यो—आपरी घणी रुचि कठी नै है ? वै चाय रो प्यालो मेज माथै राखता बोल्या—अगरेजी शब्द है नी—पेन। पी-ई-एन यानी कलम। पेन रो अरथ समझाऊ। 'पी' रो अरथ है पोयट्री यानी कविता। 'ई' रो अरथ ऐसे यानी निबध, 'एन' रो अरथ है नॉवेल यानी उपन्यास अथवा कथा-साहित्य। 'पेन' मे सगळो साहित्य आयग्यो। म्हे तो कलमघणी हा। च्यारूमेर म्हारी कलम चालै। ज्यू घर री लुगाई रसोई करै, जीमावै भी है, बासण चौका भी करै, घर मे पूम-बुआरी काढै, कपडा-लत्ता धोवै, टाबरा नै न्हुवावै अर कनै बैठ'र बातचीत भी करै, कोई भी काम खातर नटणो जाणै कोनी, इण तरै म्हारी कलम म्हारी मरजी माफक चालै, बापडी नटणो तो जाणैई कोनी।

उपन्याम आपनै किसै लिखार रा दाय आवै, म्है पूछ्यो। वै बोल्या—मनै पोथ्या बाचण मे रुचि कोनी। पोथ्या पढ-पढ'र चोरी करणी ठीक कोनी। आम तौर सू लोग च्यार-पाच पोथ्या नै बाच'र खीचडी करनै एक नवो उपन्यास घड लेवै। एमर्सन रा बोल इण बाबत हू याद राखू—जिकी चीज थे, खाली थे ई जाणो, वा लिखो, कित्ती मारकै री बात है ! पीस्योडो पीसण सू फायदो ?

म्हैं पूछ्यो—एमर्सन रूसी लिखार है ?

वै हस्या—थारी साहित्यिक पृष्ठभूमि हाल वणी कोनी दीसै। एमर्सन अमरीका रो नामी लिखार हुयो है। डा० जे० टी० सडरलैंड लिख्यो है—जे थे पिच्छम रै अेक लिखार नै पढणो चावो हो तो हू कैऊ एमर्सन पढो।

म्हैं चाय री ट्रे मेज सू हेटी मेल दी। फेर हू बोल्यो—मनै भी लिखणै रो सोख है, इण कारण आप सू मारग दरसण चाऊ हू।

वै बोल्या—हू तो थारै जिसा साहित्यानुरागी लोग चाऊ हू। गळी मे पगा री आवाज आई। दत्तजी वारणो खोल्यो—सायद गुलाबजामुन आळो आयो हुवैलो। पण मारग वैवतो बटाऊ देख'र बा पाछो आडो जड लियो।

मैं पूछ्यो—फेर भी आप सरू-सरू मे तो उपन्यास बाच्या हुवैला ? बा कैयो, बगला मे शरत, गुजराती मे मुशी, तेलगू मे विश्वनाथ सत्यनारायण अर हिन्दी मे प्रेमचन्द नै म्हैं थोडा-थोडा बाच्या, पण रूसी उपन्यासकार तुर्गनेव मनै सगळा सू आछो लाग्यो। तुर्गनेव भी दूजी पोथ्या नई पढ्या करतो। आख्या देखी बात नै ई लिख्या करतो।

म्है सकतै पूछ्यो—आपरा उपन्यास ?

वा चस्मो आख्या सू उतारनै मेज माथै राख दियो, अर आख्या मसळण लागग्या। फेर चस्मो पाछो लगावता बोल्या—म्हैं कम-सू-कम बीस उपन्यास लिख्या है, अर अेक-अेक सू सवायो।

मनै हरख हुयो के आज इत्तै नामी उपन्यासकार सू इत्ती ताळ ताईं बात करण रो मौको मिल रैयो है। म्हैं पूछ्यो किसा किसा है आपरा उपन्यास ?

उथळो दियो—सगळा रा नाव तो काई गिणाऊ पण अबार रो नवो उपन्यास है—'अमर मिनख'

"हू देख सकू ?" म्हैं पूछ्यो।

"हा, नईं क्यू, थानै जरूर देखाळसू।"

"प्रकाशक कुण है ?" म्है पूछ्यो।

"अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रकासन गृह, बम्बई।"

"उपन्यास तो काफी बडो हुवणो चाईजै ?"

"पूरा एक हजार पेज।"

फेर छोटा-मोटा प्रकासक तो इत्ती बडी किताब छापण री हीमत ई कर सकै कोनी।

दत्तजी कैयो—वारै बस रो रोग कोनी। चाळीस रुपिया कीमत है। म्हैं कैयो—इत्ती बडी किताब रा चाळीस रुपिया घणा कोनी। प्रकासक सू अँग्रीमेन्ट काईं कर्‌यो है ?

वा चस्मो उतार्‌यो। आवती उवासी रोकी अर मूडै री बाफ सू चस्मै रा काच सोला करनै कुडतै सू पूछ्या। फेर म्हारै सामनै निजर जमाय'र बोल्या—दस हजार रुपिया ता लिया है अगाऊ, अर फेर हरेक महनै पाच सौ रुपिया, जीऊ जित्तै ताईं।

हू बोल्यो—आप ठगीजग्या। इण पोथी सू तो सात पीढी री रोटी बण जावती।

दत्तजी बोल्या—म्हारी किसी एक किताब है ? जिको आदमी मैकडू पोथ्या रो लिखार है, बो इत्ता लाबा लेख करै कोनी। टाबरा रा भाग टाबरा सागै है। साहित्यकार स्वच्छन्द प्राणी हुवै। वो इत्तै जाळ मे फसै कोनी। वै बारणै खानी झाक्या, पण मसाण जामफळ आळो हाल आयो कोनी।

म्है पूछ्यो—ओ उपन्यास किसै साल छाप्यो हो ?

वा कैयो—अरे भई, हाल छाप्यो कठै ? छप्या पछै हू इसै घर मे थोडो ई रैसू। फेर म्हारै सू टुच्चा मुच्चा आदमी मिल भी सकै कोनी। किताब काईं एक चीज है। हिन्दुस्तानी लिखार तो बापडा आगै ई काईं है, तुर्गनेव रा उपन्यास भी उणरै आगै टिकै कोनी। मनै आपनै ठा'कोनी के इसी ऊचै दरजै री पोथी किया लिखीजगी।

कोई मा सरसुती आय'र कठा मे बैठगी के लिखती वेळा गणेस भगवान कलम साभ लेवता, हू काईं कैय सकू कोनी !

म्हैं कैयो—आपरी साधना भी तो है ! "साधना तो है ई। साधना विना साहित्य थोडो ई रचीजै। जे बिना साधना पोथ्या लिखतो, तो आज मनै कुण गिणतो ? मनै आ चीज चोखी को लागै नी के पोथ्या तो हाल अधूरी है अर पैली छपण रो फिकर करणो। छपण री उतावळ करण आळां री रचनावा मे निखार आवै कोनी। निखार-बायरी रचना मनै खारी जैर लागै। इणी कारण हू एक-एक आखर तोल-जोख'र माडू," कैय'र दत्तजी अलमारी माय सू एक किताब काढी। बोल्या—अेक नमूनो बताऊ—इण पोथी रै लिखार उपन्यास विधा माथै आपरा विचार छाटया है—"अेक लिखार री भासा चुस्त कोनी, दूजै री सैली आछी कोनी, तीजै म मनोविग्यानी विश्लेषण कोनी, चौथै मे लोकल कलर कोनी, पाचवै मे स्वाभाविकता कोनी अर इणी तरै सगळा मे कोई-न-कोई कसर है। इण पोथी रो लिखार अपणै आप नै सग्ब गुण सम्पन्न बतावै। अर हू कैऊ के इण रा उपन्यास घासलेट नाख'र बाळै जिसा है। आपरै मूडै सू आपरी बडाई करण री फैसन-सीक चालगी, लोगा नै सरम भी आवै कोनी।"

हू बोल्यो—आपेई बडाई सू काई फायदो ?

दत्तजी कैयो—थे म्हारै बारै मे जाणो कोनी इण कारण थोडो परचो तो अण-जाण आदमी नै देवणो पडै, पण म्हैं जठै दस बाता कैवणी ही बठै एक बात कैई है। आपरा गुण आपेई गावणिया नै हू मूरख तो समझू ई हू, इण रै सागै आतम प्रमसा नै हू पाप भी मानू हू।

म्हे कैयो—आपरी सादगी दूजै लिखारा मे कठै ? आजकल साधना री ठौड देखापै अर तडक भडक लेयली।

दत्तजी पैली आळी किताब अल्मारी मे राखता बोल्या—साधना नै तो साधना री मा ई जाणै। इण साधना रो परताप है के जे म्हारै इण उपन्यास 'अमर मिनख' नै जूनै कागद माथै बोदी रोसनाई सू रूसी भासा मे माड'र तुर्गनेव री अलमारी म राख देवै तो लोग तुर्गनेव री सगळी रचनावा नै भूल जावै, अर 'अमर मिनख' उणरी सरव-श्रेष्ठ कृति गिणीजण लाग जावै अर दस लाख कापी इण री हाथोंहाथ बिक जावै। अर जे तुर्गनेव कायम हुवै, पर इण उपन्यास नै रूसी मे छप्योडो देख लेवै, तो बो सगळा काम-धधा छोडनै उपन्यास कळा सीखण खातर पक्कायत म्हारै कनै आवै। विदेसी लोग कळा रा पारखी हुवै।

म्हैं पूछयो—"आपरी छप्योडी पोथ्या किसी किसी है।" "हाल री घडी तो अेक ई कोनी, पण जद म्हारी पोथ्या छपसी तो बरनार्ड शा अर रवीन्द्रनाथ री पोथ्या भी म्हारी पोथ्या सू कम पडसी", बै बोल्या।

मनै एकाएक चक्कर आयग्यो। कुरसी हेटै सू खिसकण लागगी। डर लाग्यो—

वठै ई जामफळा आळो आय नईं जावै।

हू कृतज्ञता दरसाय'र उठग्यो, अर म्हैं ऊपरलै मन सू जामफळा आळै माथै रोस देखाळी।

दुकान माथै जाय'र म्हैं अस्सी पईसा दिया अर टुरग्यो। बो जद चाय रा बासण लावण नैं गयो तो दत्तजी पूछ्यो—अरै जामफळ लायो कोनी?

लायो तो हो माब, पण आपरै नाव-पट माथै लिख्योडो हो 'बाहर', इण कारण पाछो गयो परो।

दत्तजी चाय रा बासण झलाय नैं जोर सू बारणो ढक लियो। मनै चाय री दुकान आळै बाबै बतायो कै नम गीध जिसी लाबी हुवण रै कारण घर आळा अिण नै 'गिरझडो-गिरझडो' कैया करता। अबै लाई भणीजग्यो जद बणग्यो—गिरिजाशंकर दत्त!

•

# सुकड़ीजता आंगणा

## सावर दइया

जीसा !

हा, ओ ई अेक चैंहरो है जिकै नै ईं घर माय सगळा सू पुराणो कैयो जा सकै है। ओ घर, ईं घर री भीता, डागळा माथै बण्योडा कमरा···आ सगळा री अेक-अेक ईंट आ री ई आख्या आगै चिणीजी ही। सरू मे तो ओ घर छोटो ई हो। ईं घर माय कमरा कोनी हा। पण थोडै दिना पछै ईं घर मे छोटा-छोटा दो कमरा बणग्या। जिया-जिया घर मे मिनख वधता गया, घर भी वधतो गयो।

जीसा री आख्या आगै सू वो वगत भी निकळ चुक्यो हो, जद ओ घर छोटो हो, पण ईं घर माय रैवणिया बडा हा। बा रा विचार ऊचा हा। हिळ-मिळ'र रैवण रो पाठ बचपण मे ई लिखा दियो जावतो हो। बो वगत कपूर दाईं उडग्यो। अवै ओ वगत भी जीसा देख रैया है। आज घर वडो है। घर रा डागळा लम्बा-चवडा। डागळा माथै चिणीज्योडा कमरा भी पैला सू बडा है। पण अवै ईं घर माय रैवणिया छोटा हुयग्या है।

सगळा आपोआप री सोचै। जिकै काम माय खुद रो स्वारथ हुवै, बी काम माय ई जी लगावै।

पण मैं देखू के जीसा सगळा रै काम माय रुचि लेवै। वै सगळा रो भलो चावै है। वै पैला भी राजी हा। अवै भी (सायद) राजी है। जीसा रै चैंहरै माथै खुसी री रेखावा तो रैवै पण पतो नी क्यू, मनै लागै के जीसा माय-ई-माय भोत दुखी है। वा रै हिरदै रा टुकडा-टुकडा हुय रैया है—ओ स्वारथ अर सकीर्णता देख'र वै माय-रा-माय घुटै है। वै सायद एकलपणै माय रोवता भी हुवैला।

जीसा रै भाई बारै सागै दगो कर्‌यो। काको आयै दिन जीसा रै हाथ सू चिठ्या लिखवा लिखवाय'र रिपिया-पीसा उधार लेवतो रैयो। जीसा माथै करजो चढतो गयो। काको मजै सू जिनगाणी काटतो रैयो। जद दस हजार रिपिया माथै हुयग्या तो लोगा तगादा सरू कर्‌या। जीसा काकै कनै गया। काको साफ नटग्यो। बोल्यो के बिण तो फूटी कोडी ई उधार कोनी लीवी। बी बेळा जीसा नै आपरी मूरखता

वे दिनूगै वेगो उठणो है। अचाणचक मनै हसी आ जावै। कारण के दिनूगै वेगो उठावण खातर जिकी आवाज गूजैला, बा आवाज तो जीसा री ई हुवैला।···
मा !

हाऽ, आ ई अेक इसी सक्ल है जिण नै ममता अर स्नेह री मूरती कैयी जा सकै है। मा री याद आवता ई जिको चैहरो आख्या आगै उभरै, बो इण तरह रो है—गऊ बरणो रग ''खीचडी दाई केस'' नी खटरी नो लाम्बी हळकी झुर्‌या भर्‌यो सरीर। सरू म तो मा चस्मो कोनी लगाया करती ही, पण निजर कमजोर हुया पछै बा आ दिना चस्मो लगावण लागगी ही। सोनलिया रग रै फ्रेम आळो चस्मो मा रै मूण्डै माथै घणो फबै है।

मा रो सुभाव अजीव है। विया तो वा हसमुख ई रैवै। पण जद तग हुयोडी हुवै, तो *विना बात ई आपरी झूझळ काढै। जिको मिल जावै, बी पर ई। बी री* झूझळ इया उतर्‌या करै है—या तो किणी रै दो च्यार थप्पड मार देवै या पछै चप्पल खोल'र सागीडी मरम्मत करै।

मैं जद छोटो हो—ओ ई—बारै चवदै रै बीच ताई, तो मनै केई दफै मार्‌यो। अेक दफै तो इत्तो मारयो इत्तो मार्‌यो के मैं बेहोस हुयग्यो। घर आळा कैवै है—के म्हारै बेहोस हुवताई मा मनै छाती सू चिपा'र रोवण लागगी। म्हारै मूडै माथै पाणी रा छाटा मार्‌या। म्हारा कान खाच्या। छाती माथै हाथ फेर्‌या। हथेळ्या मसळी। तळवा रगड्‌या। थोडी ताळ पछै जद मनै होस आयो तो मा घणै ई लाड सू म्हारा बुक्का लीना। म्हारै केसा अर पीठ माथै हाथ फेरती बोली—अबै तनै कदेई कोनी मारू, समर ! अबै तनै कदेई कोनी मारू···!

पण मनै सावळ याद है के बी दिन पछै भी मा मनै केई दफै मार्‌यो। हाऽ अेक बात जरूर ही के अबै मार थोडी कम पडती। बस, अेक-दो थप्पडा सू ई काम चाल जावतो।

थप्पड खाया पछै मैं मा सू बोलणो बद कर देवतो। जिकै दिन पाछो हेत हुवतो बी दिन म्हारी जेब मे पीसा अर मूडै मे मीठी चीज हुवती।

उमर रै सागै इछावा भी बधै। किशोरावस्था माय तो मनस्यावा इत्ती ऊची हुय जाया करै है के बै आभो छूवण लागै है। भरम इत्तो बध जावै के हर बगत आ ई लखावै के जिको भी है बस, मैं ई हू। काच रै आगै ऊभ'र केम बावण आळी टेम लागै के म्हारी सूरत सनीमा रै एक्टरा दाई है। मैं खुद नै एक्टर समझतो।

हाऽ, तो आ बा ई दिना री बात है, जद मैं किशोरावस्था सू निकळ रैयो हो। सुपना रै गळत रथ माथै चढ'र मै उडधो फिरतो। अचाणचक मनै अर म्हारै दो-च्यार भायला नै लखायो के ई सहर मे म्हारी हुसियारगी गोबर हुय रैयी है। म्हानै अठै सू भाग जावणो चाईजै। दिल्ली या बम्बई जेडै बडै सहरा माय ई म्हारी प्रतिभा रो साचो रूप निखरैला।

मैं घर सू भागग्यो । ..

घर सू भाग्यां पछै मनै लखायो के मैं खराब काम कर बैठ्यो हूं । बम्बई पूग्या तो लाग्यो के म्हारी जागा कुत्ता रै बरोबर ई कोनी । सेठा रै कुत्ता रै मूतण री जागा रा खूणा तकात म्हारै वास्तै खाली कोनी हा । भायला री जेबा रै सागै म्हारी जेबा भी खाली हुयगी । मैं रोवतो धोवतो पाछो बळ्या । घरे आय'र मा सू चिप र रोवण लाग्यो । मैं बोल्यो—मा ऽ मनै माफ कर दे मैं अबै इसा काम कोनी करू ।

मैं म्हारी आख्या ऊंची कर'र मा री आख्या माय देखण लाग्यो । मा री आख्या रा डोरा लाल हा । बा मनै उडीकती-उडीकती जागी हुवैला—सारी-सारी रात ताईं ।

बी दिन मा मनै इत्तो ई कैयो—ममर काम चावै जिको कर, पण करचा पैली इत्तो जरूर साच लिया कर के तू काईं करै है । जे तू खराब काम करण री सोचैला तो थारो मन खुद ई ना कर देवैला । अेक लम्बी निसास छोड'र—पण दुख ता इण बात रो है के आज रै जुग माय लोग हिरदै नै छोड'र बुद्धि नै प्रधानता देवै । हिरदै री मना कग्योडी बात नै बुद्धि सू तरक देय देय'र धीगाणै मानण री कोसीस करै अर ईं कोसीस लारै दुनिया बरबाद हुय रैयी है ।

मा कैवती रैयी । मैं डुसका भर भर'र रोवतो रैयो ।

मा री सबसू बडी खासियत सायद आ है के वा केई अतोळा अेकै सागै सह लेवै । मा की कोनी कैवै । पण बी टैम मा रै चैहरै सू सगळी बाता मालूम हुय जावै । बी टैम लागै के जाणै मा रै हिरदै रै माय कोई ज्वाळामुखी फाटण री तैयारी कर रैयो हुवै अर मा बी ज्वाळामुखी रै लावै नै रोकण री कोसीस मे हुवै ।

बी दिन जद सगळा न्यारा हुया हा, मा री हालत इसीज ही । मा म्हारै सागै रैवण रो फैसलो करयो हो ।

सगळा न्यारा हुयग्या । घर तो अेक ई रैयो, पण चूल्हा वधग्या । बी दिन दिनूगै घर माय च्यार चूल्हा जग्या । चूल्हा माय लकडया सिनगै ही । सिलगती लकडया रो धूवो घर माय भरीजतो जा रैयो हो । मनै लाग्यो के धूवो चूल्हा माय सू नी, मा रै हिरदै माय सू निकळ रैयो है ।

बी दिन मैं गौर कर'र देख्यो के मा री आख्या माय लाल-लाल डोरा रो जाळ गुथग्या हो । आख्या डबडबाईजगी ही । आसू पलका री कोर माथै ठैरघोडा हा । बी टैम मनै लाग्यो क मा माय री माय घुट रैयी है । मूडो फाड'र रोवणो घणो सोरो है पण इयां घुट-घुट'र रोवणो माय रो-माय ई मसळीजणो भौत दोरो है । बी दिन मनै पैली दफै आ बात समझ म आयी के मूडा फाड'र रोवणिया रो दुख नकली हुया करै है । असली दुख हुवै तद आदमी इया ई रोया करै है, जिया के मा रोवै है—चुप-चाप घुट घुट'र ।

बगत गुजरतो जा रैयो है। •

मा मनै समझावै—देख समर, थोडा ध्यान राख्या कर। दिनूगै-सिंझया निक-रमै भायला सागै बगत खराब मत करया कर। अबार सू सम्भळ'र चालैला तो आगै सुख पावैला ! ट्यूसन रा चाळीस रिपिया चाया-सिगरेटा मे मत उडाया कर। बीस-पच्चीस रिपिया बचाय'र जमा करया कर। चार-पाच बरसा मे थोडा घणा रिपिया जुड जावैला। पछै बीनणी खातर कोई गैणो-गाठो वणवा लिये। अर रिपिया किसी टैम आडा कोनी आवै ! रिपिया री जरूरत तो पडती ई रैवै। घर मे हारी-बेमारी भी आवै। ब्याव-सगाया रा खरचा आवै। टीगरा री पढाई-लिखाई माथै भी खरच करणो पडै। रिपिया कनै हुवै तो जरूरत री टेम कोई रो मूडो ताकणो कोनी पडै।

मा मनै घणोई समझावै। मैं वी री थोडी घणी बाता मानू भी। थोडी म्हारी मनजची भी कर लिया करू। जद मा उपदेस देवण लागै तो मैं सोचू के सायद आ बुढापै री आदत है। पण ईं रै सागै आ भी सोचू के मा आखिर म्हारै भलै नै ई तो कैवै है। मनै वी री बात मानणी चाइजै।

दिनूगै री टैम है।

मा पूजाघर माय ऊभी है। वी रै हाथ म धूपियो है। धूपियै सू धूवो उठ रैयो है। उण री सुगन्ध पूजाघर सू निकळ'र बारै ताईं आवै है। बी सुगन्ध सू अजीब-सी-क शान्ति महसूस हुवै। मैं नास्तिक हुवण रै बावजूद भी पूजाघर म थरप्योडी मूरती आगै माथो झुका लेवू। सायद ई कारण के पूजाघर माय मा ऊभी है अर मा खुद ममता री मूरती है—जीवती-जागती मूरती !

वी सूटकेस नैं काम मे लेवता। बडोडा भाईजी रा उतारचोडा कपडा म्हे सब पैंरता। आ बात तद री है जद ओ घर छोटो हो, घर माय बण्योडा कमरा छोटा हा, पण माय रैवणिया लोग वडा हा। होळैं-होळैं वो वगत मरग्यो। वी री लोथ राखण री कोमीस करी तो वास आवण लागी। अेक नैं दूजो भार लागण लाग्यो। पण पछैं वो भार भी हळको हुयग्यो। सगळा आपोआप रा घर सम्भाळ लिया। आपोआप रो न्यारो इन्तजाम कर लियो। वी इन्तजाम माय आपरी लुगाई अर टीगरा रैं अलावा कोई दूजो कोनी हो। सगळा आप-आप री जुगाड माय लागग्या।

घर मे नूवो समान अवै भी आया करैं है, पण वी पर सगळा रो हक कोनी हुवै। जिको मोल लेय'र आवै, बो ई वी रो मालिक हुवै। वी रो उपयोग भी खाली वो खुद ई करचा करै। पैली जिकी बाता पर ध्यान ई कोनी जावतो, अवै वै ई बाता घणी दफै कळह रो मूळ वण जावै।

वी दिन म्हारी चप्पल री पट्टी टूटचोडी ही। मनैं ट्यूसन पढावण खातर जावणो हो। मैं मोच्यो कै जयदेव री चप्पल पैर जाव। दिनूगै नूवी पट्टी घलवा लेवूगा। मनैं चोखी तरह मालूम हो कै जयदेय चप्पल पैर'र बारै कोनी जावै। वी रैं कनैं वाटा री सैंण्डल है। वो सैण्डल ई पैरया करैं है। मैं वी री चप्पल पैर'र ट्यूसन पढावण नैं निकळग्यो।

मैं ट्यूसन पढाय'र पाछो आयो तद घर माय झिकाळ चालू हो। जयदेव आगणैं मे ऊभो हो। मनैं देखता ई जोर सू बोल्यो—लो, अै आयग्या कमाय'र! दिन-रात रिपिया लारैं पागल हुया घूमैं है, "इत्ता पीसा कमावैं है, पण नूवी चप्पल लावण री मरधा कोनी। लावण री जरूरत ई काई है? दूसरा री चप्पला घसावण नैं लाध जावैं है नी!" "पछैं अै खरीद'र दोरा क्यू हुवै!

मनैं गुस्सो आयो, पण मैं चुप रैयो, मनैं म्हारी भूल महसूस हुई। मै जयदेव री चप्पल पैर'र गयो ई क्यू? उवराणैं पगा जावतो तो ई इत्ती वेइज्जती कोनी हुवती। वठै कोई देखतो ई कोनी कै मैं उवराणैं पगा आयो हू। वी दिन रोटी खावती वगत जी खराब रैयो। रात रा सूतो तद भी काना माय वै ई तीखा बोल गूजता रैया।

अेक घटणा और है—इसी ज!

मनैं जयपुर जावणो हो। कपडा घालण खातर सूटकेस री जरूरत ही। नूवो सूटकेस खरीदण री हालत मे मैं हो कोनी। मै सूटकेस मागण खातर आनन्द कनैं गयो। विण आपरो पुराणियो सूटकेस झला दियो। मैं थोडो राजी हुयो। चालो, आपणो काम तो बण्यो।

जयपुर सू पाछो आय'र सूटकेस आनन्द रैं कमरैं माय पूगा दियो। मैं हाथ-मूडो धोवतो हो कै आनन्द वो सूटकेस लेय'र आगणैं मे आय धमक्यो। सूटकेस आगणैं मे फैंक बोल्यो—सित्यानास कर नाख्यो सूटकेस रो…

—काई हुयो…काई हुयो…? कैवतो मैं आगणै मे पूग्यो।

—तनै सूटकेस काई ई खातर दियो हो के तू बी री खोळी फाड लावै ?

—कठै सू फाटगी खोळी…।

—तनै कोनी दीखै…मैं दिखावू…ले देख ..आ री । अबै तो दिखगी नी…?

मैं शाति सू बोल्यो—भाईजी, आ खोळी पुराणी है। थोडी-सी फाटगी तो अबै किसी आफत आयगी !

आनन्द नै रीस चढी। वो बोल्यो—अेक तो सूटकेस री सत्यनास कर नाख्यो अर ऊपर सू जबान और लडावै—आ खोळी तो पुराणी है । आनन्द म्हारी नकल कर'र बोल्यो—*फाटगी तो अबै किसी आफत आयगी। अरै, म्हारो तो इत्ती हस्ती* कोनी के खोळी नूवी बणवा सका ।

झगडो बध्यो तो इत्तो बध्यो के तू-तू मैं मैं पछै हाथापाई री नौबत आवण-लागी के फैसलो हुयग्यो। फैसलो ओ हो के मैं बी सूटकेस री खोळी नूवी बणवाय'र देवू। मनै भी लाग्यो के अबै ओ ई रस्तो है।

सागर भाई जी सागै इण कदर रा झगडा कोनी हुवै। पण बा रै व्यवहार रो ठण्डोपणो हिरदै रा टुकडा-टुकडा कर नाखै।

कदेई-कदेई मनै छटपटाहट महसूस हुवै। मैं सोचू के इसो कुण है जिको म्हारै बिचाळै भींत बण'र ऊभग्यो है। खून रो नातो इत्तो ठण्डो पडग्यो के अेक नै दूजै रै नुकसाण री थोडी घणी ई परवाह कोनी रैयी। अेक री तरक्की देख'र दूजो भळसीजै। जद कदेई च्यार आदम्या रै माय बैठणो पडै तो इया लखावै के जाणै म्हे खुद भी पैली दफै मिल रैया हुवा। बात करती बगत होठा माथै हसी तो हुवै, पण बा हसी कित्ती खोखळी हुवै, मैं चोखी तरह जाणू हू। अटूट मून रा साप कुण्डाळो मार'र बैठ जावै। बी बगत सगळै डील माय सुइया सी खुभण लागै। खून रो रिस्तो सड्योडी लोय दाई लागै, जिण री बास कोई भी सूघणी कोनी चावै।

ओफ्फ ! म्हारै बिचाळै कित्ती ऊडी खाया है ?

मून री अै मिलावा किया तोडू ?

भोजाया !

सगळ्या सू बडोडी भौजाई रो नाव मालती, बीचलोडी रो आशा अर छोटोडी रो नाव रेखा है। मनै सावळ याद है, सरू, सरू मे तो अै सब म्हारो लाड राखती ही। घणी दफै फिरचा, खाटै री गोळचा अर चाकलेटा दिया करती ही। जद मैं कॉलिज सू आवतो तद ऊनाळै मे जळजीरो अर सीयाळै मे चाय बणाय'र लावती। मैं म्हारा कपडा बदळतो तद ताई जळजीरो का चाय हाजर लाधती।

पण पछै मनै महसूस हुयो के ई घर मे बटवारै री लाय आ रै ई हाया सू

लगाईजी ही। घर मे च्यार चूल्हा बणावण री साजिस करण आळी अं भौजाया ई ही।

वी दिन आधी आयी। गळी रो फ्यूज उडग्यो। घर मे अधारो हो। मैं डागळै माथै फिरतो हो। कनलै कमरै माय मालती, आशा अर रेखा बैठी ही। घर री बाता चाल रैयी ही।

वा री बाता मे म्हारै खातर जहर बरसै हो। आशा कैवती ही—अरै, आज-कळै तो वगत ई इसो आयग्यो के जदताई कोई खवावणियो बैठो रैवै तद ताई खावणिया कमावण रो नाव ई कोनी लेवै। खाली बैठ्या-बैठ्या दिनूगै-सिझ्या टुकडा तोडता रैवै।

—मैं थारी बात रो मतलब कोनी समझी ! रेखा पूछ्यो।

मालती सगळा सू वडी ही। बोली—थारै भेजै मे तो गोवर भरयोडो है। देखै कोनी के आपा रा धणी तो दिन-रात कमावै, पण समर फालतू बैठ्यो मुफ्त री रोटया निगळै'' बी री बहू मुफ्त रा टुकडा तोडै ! पण ई समर री बेसरमी तो देखो, कमावै-धमावै तो कोडी ई कोनी अर घोडै दाई नस उठाया घर मे घूमतो रैवै।

—ई री लुगाई रो मिजाज तो सातवै आसमान माथै चढचोडो रैवै। किणी रै ई सागै सीधै मूडै बात तक कोनी करै !

रेखा बात सावळ समझगी। वा बोनी—हा ऽ ऽ, अबै समझी मैं। मामूजी भी बारी ई भीड बोलै'''।

आशा बोली—अरै, बी री भीड क्यू कोनी बोलैला ? विद्या सगळा सू छोटी अर लाडली बीनणी जिकी ठैरी ! आपा तो ई घर मे दास्या वण'र आयी हा। वा तो म्हाराणी है, म्हाराणी ! बी रै बाप दायजै मे पिलग अर रेडियो काई दे दियो, बस आफत हुयगी। खुद नै लाट साब समझै। सगळा जणा माडी पाच बजी उठै, पण वा म्हाराणी री वच्ची माड़ी सात सू पैली कोनी उठै। जाणै जवानी तो आ रै माथै ई चढी हुवै ! हुह !

—समर नै भी आपरी लुगाई रै रूप रो घमण्ड है। रेखा तीर छोड्यो।

आशा री भुळभीज्योडी आवाज सुणीजी—इत्ती फूटरी तो कोनी के बी रै रूप माथै घमड करयो जा सकै। अर जवानी मे गधी किसी फूटरी कोनी लागै'''?

तीनू जण्या अबै मागै हूसी।

मैं हाल ताई अधारै मे ई ऊभो हो। मनै लाग्यो के अधारो विकराळ हुयग्यो है। ई डरावणी रात माय दूर कठैई बैठी भूतण्या कूकै है। बी टेम भोजाया री सकला भूतण्या सू मिलती-जुलती-सी-क लागी।

मैं अचाणचक चिमक उठ्यो। पूरो मोहल्लो रोसणी सू जगमगा उठ्यो। रोसणी आवता ई वै तीनू जणी कमरै सू बारै निकळी। मनै डागळै ऊभो देख'र

बा रै मूडा रो रग उडग्यो । बा नै लाग्यो के मैं वा री बाता सुण चुक्यो हू । वै तीन बारी-बारी सू म्हारै कानी देख्यो अर नीचै गयी परी । बा रै होठा माथै जह भरघोडी मुळक ही ।

मैं वा दिना नोकरी कोनी करतो हो ।···

दीयाळी आवण आळी ही । म्हारी जेब मे मुसकल सू दस रिपिया हा ।

मैं म्हारी जरूरता पूरी कोनी कर सक्तो हो ।···

मैं रेखा कनै पूग्यो । बा काच आगै ऊभी केस सुळझावती ही । मै बी रै कमरै माय घुस्यो । बा बिया ई ऊभी पट्टा बावती रैयी । थोडी ताळ ताई कोई बात कोनी हुई ।

—किया आया समरजी···?

—बा···। आगै री बात म्हारै गळै माय अटकगी ।

—कीं चाईजै है काईं ··?

—हा ऽऽ···।

—काईं ?

—अेक साडी री जरूरत है·· ।

रेखा रै होठा माथै मुळक बिछगी। बी मुळक माय लुक्योडी मजाक मैं भापग्यो ।

—विद्या रै खातर चाईजै···?

—हा ऽऽ · ।

—अबै थानै काईं दैवू समरजी !·· म्हारै कनै तो अेक ई साडी नूवी कोनी । विद्या खातर पुराणी साडी देवता मनै सरम-सी-क आवै । म्हारै ख्याल सू आशा या मालती कनै नूवी साडी मिल जावणी चाईजै । थे माग'र देखो तो सरी · ।

मैं बठै सू चुपचाप पाछो आयग्यो ।

मैं म्हारै कमरै मे आय'र सूयग्यो । सोचण लाग्यो के आशा या मालती कनै सू मागू भी या नी मागू ? मैं उळझण मे फस्यो रैयो। पतो नी पछै काईं सूझी के मालती कनै जाय पूग्यो ।

मालती आपरै कमरै माय ई ही । बोली के बी रै कनै तो खाली अेक साडी नूवी है, जिकी वा खुद दीयाळी माथै पैरैली । बिण भेद री अेक बात आ भी बतायी के च्यार दिना पैला रेखा बजार सू च्यार नूवी साड्या लायी ही ।

—हू ऽऽ···। तो रेखा झूठ बोली ही । खैर, कोई बात कोनी । वा री चीज है, देवै, नईं देवै·· मैं काईं कर सकू हू ?

मैं आशा कनै कोनी गयो । सोच्यो के बी रै कनै जावूला तो बा भी रेखा या मालती रो नाव बताय देवैलो । ईं रै सागै एकाध भेद भी बतावैला के फलाणकी काईं-काईं खरीद'र लायी ही !

मनै अचम्भो तो बी वगत हुयो जद आशा खुद म्हारै कमरै माय आय'र बोली—समर जी, थानै साडी री जरूरत ही तो मनै क्यू कोनी कैयो ? बै दोनू जण्या तो कोई नै आपरै दात रो मैल ई कोनी देवै !

मैं बी कोनी बोल्यो।

मैं अेक निजर भौजाई माथै नाखी। बी रै हाथ मे अेक बण्डल हो। बण्डल मनै झलावती बोली—ईं माय अेक नूवी साडी है। परसू ई खरीदी है। आ साडी बिया नै दे दिया। अबार मनै ईं री जरूरत कोनी।

मैं बो बण्डल ले लियो। बी टेम मनै लाग्यो के मैं साव ई बापडो हुयग्यो हू। हीणता री भावना म्हारै जी नै बाळण लागी। मनै लाग्यो के आ साडी देय'र आशा म्हारो अपमान कर रैयी है। बा गळी-मोहल्लै मे ईं बात रो ढिंढोरो पीटती फिरैला के बिण समर री लुगाई नै नूवी साडी दी है। बापडो समर कठै सू लावै ? बी मे कमावण री पोच कठै ?

आश गयी परी।

मैं बी बण्डल नै केई ताळ ताईं देखतो रैयो। नी मालूम पछै मनै काईं सूझयो के मैं कमरै माय सू वेगो-सी-क निकळ'र बारै आयो। पगोथिया चढ'र डागळै पूग्यो।

सीधो आशा रै कमरै माय पूग्यो। बा आपरी सिन्दूक बन्द करती ही। मैं मोडै माथै सू ई साडी रो बण्डल फैंक नाख्यो। आशा मनै देखती रैयी। मैं बी री मीट सहन कोनी कर सक्यो। मैं बठै सू चुपचाप पाछो आयग्यो।

बीती बाता याद आवै तो लागै के मैं भौत ई गळत सोच्या करतो हो। जिकै लोगा रो सोचणो खुद ताईं सीमित हुय चुक्यो हो, बा सू बिणी बात री उम्मीद राखणी मूरखपणो हो। अबै भी कोई उम्मीद राखूला तो बा भी मूरखता ई हुवैला !

लुगाई !

थोडाक बरसा पैली री सक्ल याद करण री कोसीस करू तो इण तरह री प्रतिमा उजागर हुवै—गोरो रग, भरथोडो डील, तीखा नाक-नक्स अर माथै पर सिन्दूरी टीको। कुल मिला'र अेक अदद फूटरी फर्री लुगाई रो ताजो मास ! सरू-सरू मे तो म्हे दोनू अेक-दूजै कानी खासा खिचता रैया। पण अबै वै बाता पागलपणो लागै। वा बीतै दिना री याद करा तो खिलखिलाय'र हस पडा।

लुगाई झाझरकै साढी पाच बजी उठ जाया करै। नीचै जावण री तैयारी करै। जिकी टैम वा नीचै पूगै, बी टैम घडी मे छव रा टणका बाजै। मैं सात-सवा सात ताईं नीचै पूगू। बी टैम चाय अर सिरावणो तैयार लाधै !

लुगाई री आदत है के वा केई दफै हठ कर्या करै। पछै पछतावै। अेक

अणसमझ, टीगरी दाई। बी दिन साडी खातर जिद करी। मैं भी जाणतो हो के बी नै साडी री जरूरत तो है। मैं भौजाया कनै गयो। बा रा जवाब सुण'र म्हारो जी भारी हुयग्यो। लुगाई नै भी ईं बात री खबर पडगी। रात नै जद म्हे सोवण लाग्या तद वा पगा मायँ मायो टेक'र सुबकण लागी। बा बोली—चूल्हे मे जावै इसी साडी ''। मैं आ कोनी सह सकू के कोई थारो अपमान करै''''''। मनै माफ कर दो। मैं अबै कदेई जिद कोनी करू। फाटी-पुराणी साडी ई पैर लेवूला'' लूखो सूखो जिसो भी मिलसी, खा लेवूला ''।

—मनै माफ कोनी करो''' ?

—थारी गळती ई काई है ?

—ओ सब म्हारै कारण ई तो हुयो !

—ऊ हू ऽऽ ! की कोनी। भौजाया रो घमड भी टूट जावैला ''सगळा रा सब दिन अेक सरीखा कोनी रैवै।

पछै म्हे दोनू चुप हुयग्या।

वगत गुजरतो जा रैयो है।'''

हा ऽ ऽ, सायद दिसम्बर रा ई दिन हा। बी दिन मैं सनीमा देख'र आयो हो। मैं सीधो कमरै माय पूग्यो। बत्ती जगायी। पिलग कानी देख्यो। पिलग खाली हो। मैं लुगाई रै बारै मे सोचण लाग्यो—कठै गयी बा ? बी नै पतो हो के मैं मोडो आवूला। मैं माथो खुचरतो डागळै जावण लाग्यो। च्यार पग धरया के मैं चिमक्यो। सरीर रो रू-रू खडो हुयग्यो। अेक-अेक बोटी कापण लागी। हिरदै माय धुकधुकी मचगी। अेक खूणै माय धोळा कपडा पैरया आ कुण बैठी है ? कठैई कोई भूतणी प्रेतणी तो कोनी ? ईं कडाकै री सरदी माय आधी रात रा अठै क्या वास्तै आयी है ? मैं हडमानचाळीसो जपण री सोचू। कारण के लोगा सू सुण राख्यो हो के ईं रै जाप सू भूत-प्रेत भाग जावै। पण म्हारी हालत खराब हुयगी। हडमान-चाळीसो तो दूर रैयो, मनै किणी देवी-देवता रो नाव तक याद कोनी आयो ?

म्हारी जीभ तळवै सू चिपण लागी।

हे भगवान ! आ काई लीला है। थारी माया भेळी कर !

अचाणक सिसकण री आवाज आयी। मैं आवाज पिछाणग्यो। आ कोई भूतणी प्रेतणी कोनी ही। लुगाई ई ही। बी री सिसक्या पिछाण्या पछै भी मैं हिम्मत कर'र आगै बध्यो। कनै पूग्या पछै वैम दूर हुयो।

मैं पूछू—आधी रात रा अठै काई करै है ?

'' '' '''''' ''।

मैं बी रो मुरचो पकड'र उठावू। बी रै आसू भरयोडै चैहरै कानी देख'र कैवू—अठै काई करै'''?

बा कोई उथळो कोनी देवै। बा और जोर सू सुबकण लागै। बी री हिचक्या

वध जावै। मैं सोच्यो के वा खासा ताळ सू सिसकती हुवैला।

मै कमरै माय लाय'र बी नै रोवण रो कारण पूछ्यो। वा बोली—मनै कोई सुख कोनी। दिन भर काम करु, पण सगळा मैणा मारै के मैं निकमी बैठी रैवू।

—कुण कैवै ...? म्हारी आवाज गरम हुवै।

—थारी भौजाया कैवै...।

—वै सब कुतड्या है। हाऊ-हाऊ करणो वा री आदत है। काम-काज तो की हुवै कोनी... बस, खाली पडी टीगर जणबो करै। सम्भळो भलै ई मती।

—हुह! सम्भळै तो है कोनी, खाली जण-जण'र फैक्यो करै...।—लुगाई कैयो।

—तू अेकदम ठीक कैवै है...। मैं बी नै राजी करण री कोसीस करी।

—मनै महसूस हुवै के लुगाई री गुस्सो कम हुवतो जाय रैयो है। बी रा ओळभा भौजाया सू मरू हुय'र मा ताई पूग'र पाछा भौजाया रै टीगरा माथै आय र ठैर जावै।

वा आखरी मे कैवै—अरे काई पड्यो है सागै रैवण मे...? कोई एक दूजै नै चावै तो है कोनी! सगळा जणा लोक दिखावो करै ई मू तो चोखो के आपा न्यारा हुय जावा। वै आपरो कमावै-खावै... आपा आपा रो कमावा-खावा...। वै आपरा मस्त, आपा आपा रा मस्त!

मै चुप रैवू।

लागै के ई घर री नीव माय बारूद विछायो जा रैयो है। बस, थोडी सी-क आग दिखावण री देर है। आग दिखावता ई विस्फोट हुवैला। ई घर री भीता काप'र पड जावैला। सहयोग अर प्रेम री लोथ मळबै नीचै दब्योडी देख'र मोहल्लै आळा हसैला, ताळ्या पीटैला।

म्हारै दिमाग मे आवै के लुगाई रै गाल माथै खाच'र अेक थप्पड जड दू। पण म्हारो हाथ कोनी उठै। ई टैम मनै खुद नै वै बाता याद आ जावै, जिकया सू ऊथप'र मैं खुद केई दफै सोचू के अबै भेळा रैवण मे की भदरक कोनी। जद आपरा आदमी ई भार लागण लागै तो पछै भार हळको कर लेवणो ई ठीक रैवै। सम्बन्ध कोई कपडा तो है कोनी, जिका नै पैरणा ई पडै। सम्बन्ध तो मन रा हुवै। कोरै लोक-दिखावै मे काई धरयो है?

पतो नी काई हुवै के लुगाई पाछी मुबकण लागै। मैं बी नै पूछू—क्यू, अबै काई हुयो ?

—काई कोनी...। वा मुबकती-मुबकती कैवै।

—काई कोनी तो पछै रोवै क्यू...? मनै झूझळ चढै।

—म्हारी वात था नै चोखी नी लागी हुवै तो मनै माफ कर देया। मैं अबै कदेई कोनी कैवू कै थे न्यारा हुय जावो। था नै दुख सैवण माय आनन्द आवै तो मैं

सह लेवूला । दासी दाई सगळा रा काम करती रैवूला अर गोली दाई आं रा मैणा-मोसा सुणती रैवूला ।

या म्हारै सरीर सू चिपगी । बी रा आसू पूछ'र मैं बी नै कस'र बाथा मे भर लेवू ।

बी टेम मनै लागै के न्यारा हुवण माय ई फायदो है । नई तो म्हारी आजादी माथै आ री आख्यां रो पौरो लागतो रैवैला ।

रात बीती । दिन हूयो ।

मैं चाय पी चुक्यो हो । मनै लागै के मैं रात भर गळत बाता सोचतो रैयो हू । इण कदर रै ओछै-विचारां सू मनै अळगो रैवणो चाईजे । म्हे जिया भी रैवा, मिल'र रैवा तो चोखो है । आरो बरताव चावै जित्तो ठंडो क्यू नी हुयग्यो हुवै...पण आपरा आखिर आपरा ई हुवै ।

कलण्डर रा पाना उथळीजता जा रैया है । ..

अर अेक दिन सगळा न्यारा हुय जावै । बी दिन घर माय न्यारा-न्यारा चूल्हा जगै । रोटी जीम'र मैं कमरै माय आवू । पछै लुगाई भी आवै । आज बा न्हायोडी-धोयोडी है । साडी माय हळको-मो-क सैण्ट भी लगाय राख्यो दीखै ।

कमरै माय सैण्ट री सुगन्ध भरीज जावै । मैं बी नै बाथा मे भर लेवू । बा राजी हुवै । लाड-कोड पछै घर री बाता सरू हुवै ।

—आज माजी धाप'र कोनी जीम्या... । बा मनै कैवै ।

—क्यू...?

—सायद की उदास है...

—हा ऽ, आ बात तो मनै भी लागी । मा री आख्यां मे लाल डोरा हा । बा भोत दुखी लागै ही । मैं मा री बै आख्यां याद करण लाग्यो जिक्या मे आसू भरीज्योडा हा, पण ढळकता कोनी हा । बै डबडबाईज्योडी आख्यां बीरै दुख री कहाणी कैवै ही ।

—ओ चोखो कोनी हुयो...। मैं कैवू ।

—बगत बतावैला...। लुगाई गम्भीर हुवती बोलै ।

—सागै गुजरयोडा अै दिन तो याद आवैला ई...।

—हा ऽ यादा चावै चोखी हुवै या भूडी, हरमेस जीवती रैवै । अर पछै सोरो जीमायोडो अर दोरो कूटयोडो कुण भूल सकै है ?

मनै लागै के बा दार्शनिक बणती जा रैयी है ।

धीरै-धीरै सब मामलो जम जावै । मैं नूवै साचै मे ढळ जावू ।

बै आपरी लुगाया सागै राजी है मैं म्हारी लुगाई सागै । लुगाई री सिकायता भी कम हुयगी है । बा भी राजी है ।

म्हे डागळै सूता हा। झाझरकै री पाच बजी है। मैं पाणी पी'र सोवण री कोसीस करू। लुगाई नै उबक्या आवण लागै।

अर थोडै दिना पछै मनै ठा'पडै बा मा बणण आळी है। मैं राजी होवू के अबै म्हारी भी इकाई बण जावैला। हा5, म्हे सगळा जणा इसी ई छोटी छोटी इकाइया मे बटग्या हा—खुद, लुगाई अर आपरा टीगर।

मैं लुगाई रै मूडै कानी देखू। बी रै गाला माथै लाली पुत जावै। वा आपरी साडी ठीक कर'र रसोईघर मे जावण री तैयारी करै। कमरै सू बारै जाया पैली पाछी मुड'र म्हारै कानी देखै···पछै मुळकै अर मुळक्ती-मुळक्ती नीचै जावै।

कमरै माय सूरज री किरणा री आडी तिरछी रेखावा रो जाळ फैल जावै।

मैं कमरै माय अेकलो ई रैयग्यो हू। दिनूगै सू सिझ्या ताई रो कार्यक्रम वणावू। पसवाडो बदळ'र पिलग सू उठू। कमरै आळी खिडकी कनै जाय'र ऊभ जावू।

घर रै आगै नीम रो पेड है। मैं जाणू हू के ओ नीमडै रो पेड ई घर रो पूरो इतिहास जाणै है। ओ नीमडो ईं घर रै सुख-दुख रो गवाहीदार है। ओ वी बगत भी अठैई ऊभो हो, जद ओ घर भौत छोटो हो, घर माय बण्योडा कमरा छोटा हा, पण ईं घर माय रैवणिया लोग बडा हा।···बा रा विचार व्यापक हा।

ईं घर रो अेक-अेक बदळाव ईं पेड री आख्या आगै हुयो हो।

नीमडै नीचै तीन च्यार गाया ऊभी है। कठैई-कठैई गोबर पड्यो है। जूजळा गोबर माय घुसण री कोसीस करै। मनै जूजळा रै अस्तित्व माथै हसी आवै, अर दूजै ई पळ मनै म्हारी अकारथता रो अदाज हुवै। मैं सोचू के मनै आत्महत्या कर लेवणी चाईजै।

जूजळा गोबर माय घुसण री कोसीस कर रैया है।

मैं उदास हुय'र देख्या जावू···देख्या जावू···देख्या ई जावू।

●

# कंवर रामसिंघ मीठड़ी रो

## सोभागसिंघ सेखावत

मरुदेश रै माय गौडाटी परगनो जिणरै माय मेडतिया राठोडा रा ठिकाणा। मेडतिया गौडाटी रा राजा बाजै। मीठडी ठिकाणो। गौडाटी रै माय जालमसिंघोता रो सिरायत। कुचामण, श्यामगढ, वैराप पाटवी। जीवका छोटी पण कुरब कायदो मोटो।

जोधपुर रा राजा अभैसिघजी अर जैपुर ईसरीसिंघजी देह छोडियो। राजस्थान रै माय दोनू मोटा रजवाडा। जैपुर तो बादशाही खजानो कहीजै। जोधपुर खगपति बाजै। अेक कछावा रो पाटवी नै बीजो राठोडा रो टीकाई। जैपुर रै वसमौर, अलवर, सीकर, खेतडी जेहडा भाई। जोधपुर रै बीकानेर, किसनगढ रतलाम, झाबुवो, सीतामऊ जेहडा भाई। दोनू ही ठाडी रियासता। पण दोना रै माय ही पाट रा सवाल नैं लेय नैं भाया भाया रै अणवण। जैपुर रै माय उदैपुर रा भाणेज माधोसिंघजी अर जोधपुर रै माय अभैसिंघजी रा भाई बखतसिंघजी नागौर रा राव गोधम घाल मेलियो। महाराज ईसरीसिंघजी री गादी माधोसिघजी नै अभैसिघजी री रामसिंघजी विराजिया। पेशवा होल्कर सिंधिया राजस्थान रै माय घणी गोधम धाड करै। बखतसिंघजी मोको टटोळै। औसर नैं उडीकै। मारवाड रा उमरावा रै माय झोड हुवो। अेको बिखरियो। एक मेडतिया सरसिंघ रो, बीजो चापावत कुसळसिंघ रो। अेक दळ रामसिंघजी री सारै। बीजो बखतसिंघजी री पख खीचै। इण भात घर री हाण हुवै। लोक री हासी हुवै। दोनू कानी रो खिचाव घणो बधियो। तणाव सिमटाणै रो कोई गैलो दीसै नही। जद झगडै रो दिन ठाणियो। मेडता रै पाहडै आलणास कनै रण मडियो। कैरू पाडवा री भान आखा मारवाड रा सरदारा रा दळ अेक दूजा रा प्राणा रा लोभी, लोही रा तिसाया समियोडा ऊभा। लडाई चालू हुई। राठौडा रो घणो विणास हुवो। मोटा-मोटा माटी साथरै पोढिया। सेरसिंघजी नै कुशळसिंघजी दोनू खडगा सू लडै। जबरो जग जुडियो।

रामसिंघजी मीठडी रो पाटवी कवर। अठारा बरस रो जवान। उणियारा

रो फूटरो। चौडो लिलाड। मोटी-मोटी काचरा सी आख्या। दाड़ू रा दाणा सा दात। सूवा री चूच सी नाक। सोवणा कान जिण रै माय सोना वाळा। ठोस पीडी। चौडी छाती। सारो डील-डोळ मोवणो। कंवर घोडा रो सोखीन। सिकारा रो सौखीन। नित रा घोडला नै दोडावै। हरिया जूण रा भाखरा रै माय जावै। कटारिया सू सिकार रमै। सूर मारै। नाहर मारै। हिरण मारै, पण सब कटारा सू। इण भात दिन बीतै। कंवर दिन दूणो नै रात चोगुणो बढ़ै।

अलवर रजवाडा रो ठिकाणो बीजवाड। अलवर रा राजा नरूका। बावन गढ़ा रा राव कहीजै। बीजवाड छोटा भाई कहीजै। बीजवाड रै माय बाईजी घणा फूटरा। सीळ सुभाव रा। चाद जेहडो मुखडो। मृग जेहडा नैण। गज जेहडी चाल। सिंह जेहडी कमर। सूरज जेहडो सतेज। 13 बरस री उमर पण 18 बरस जेहडा लागै। बीजवाड रा ठाकर बाई ताईं ठिकाणो जोवण नै आपरा मोतमिद पिरोयजी नै बीजा ठावा स्याणा पुरख भेजिया। झाला, हाडा, तवर, चौहाण, भाटी, देवळ, देवडा, चूडावत, सक्तावत, राणावत, बीदा, बीका, काधळ, घाघळ, आदू, जाडेचा, सेडेचा, जोदा, कूपा, चापा, मेडतिया रा सगळा ठिकाणा देखिया। पण बाईजी रै जोडाया, उणियारा नै सुभाव रो टावर मिलियो नही। छै महना ठिकाणा रै माय घूमिया। मीठडी पूगिया। कंवरजी नै देखिया। कंवरजी मन जचियो। सगाई रो दस्तूर कीधो। अमलडा गळाया। पतासा बाटिया। टीको दीधो नै ब्याव रो मुदो दीधो। ब्याव माडियो। जान री त्यारिया कीधी। भला-चगा छाटवा घोडा लीधा। सखरा सखरा जनेती लीधा। साथी सायना नै सागै कीधा नै बीजवाड कूच कीधो। काकड मार्थ पूगिया। जाजमा ढळीजी। अमलडा गळीज्या। सगा सू रामास्यामा हुया। हसी-ठठा हुया। मनवारा होई। सामेळो-हुवो। जान डेरा कीधा। गूधळक रा फेरा रो समूरतो जोसी काढियो। तोरण सियावो कीधो। नेगचार चुकिया। गीत-गाळा री रमझोळ हुई। बिरदा रा कवियण बाखाण कीधा। बनडो माडै पधारियो। थाम हेटै चवरी बिराजियो। फेरा हुया। फेरा सू उठ नै डेरै आयो। छोळ रो दस्तूर हुवो। उणी बखत पाछा सू आयोडा जनेतिया माय सू अेक मिनख कंवरजी कनै आयो। कान रै माय मेडता रै झगडा रो जिकरो कीधो। कंवरजी घोडला री बाग सारी। बिचार कीधो मेडतो 160 कोस नै झगडा रै दोय दिन आडा। बिण ही घडी मेडता रो मारग पकडियो। दर कूचा दर मजला घोडा नै खडियो नै दूजै दिन मेडतै पूगियो। झगडो चाल रयो। रिया ठाकर नै आहुवै ठाकर लडै। दोना पासा रा घणा मिनखा री लासा रा ढेर पडिया। माथा रा झूळा चुणीजियोडा। लोया सू धरती लाल व्है रयी। गीध, कावळा, लूकटी गादडा गूद खावै। घायल पडिया गरणावै। घोडा री टापा सू चढियोडी गरद सू आकास छाय रयो। सूरज रो तेज मादळ पड रयो। कंवरजी नै घोडो पसेवा सू भीगियोडा। मारग सू थकियोडा। भूखा-तिसाया, उणीदा मैदान रै माय उतरिया। झगडो

# कंवर रामसिंघ मीठड़ी रो

## सोभागसिंघ सेखावत

मरुदेश रै माय गोडाटी परगनो जिणरै माय मेड़तिया राठोड़ा रा ठिकाणा। मेड़तिया गोडाटी रा राजा बाजै। मीठड़ी ठिकाणो। गोडाटी रै माय जालमसिंघोता रो सिरायत। कुचामण, श्यामगढ़, बैराप पाटवी। जीवका छोटी पण कुरब कायदो मोटो।

जोधपुर रा राजा अभैसिंघजी अर जैपुर ईसरीसिंहजी देह छोडियो। राजस्थान रै माय दोनू मोटा रजवाड़ा। जैपुर तो बादशाही खजानो कहीजै। जोधपुर खगपति बाजै। अेक कछावा रो पाटवी नै बीजो राठोड़ा रो टीकाई। जैपुर रै कसमीर, अलवर सीकर, खेतड़ी जेहड़ा भाई। जोधपुर रै बीकानेर, किसनगढ़, रतलाम, झाबुवो, सीतामऊ जेहड़ा भाई। दोनू ही ठाडी रियासता। पण दोना रै माय ही पाट रा सवाल नै लेय नै भाया भाया रै अणबण। जैपुर रै माय उदैपुर रा भाणेज माधोसिंघजी, अर जोधपुर रै माय अभैसिंघजी रा भाई बखतसिंघजी नागोर रा राव गोधम घाल मेलियो। महाराज ईसरीसिंघजी री गादी माधोसिंघजी नै अभैसिंघजी री रामसिंघजी बिराजिया। पेशवा, होल्कर सिंधिया राजस्थान रै माय घणी गोधम धाड़ करै। बखतसिंघजी मोको टटोळै। ओसर नै उडीकै। मारवाड़ रा उमरावा रै माय झोड़ हुवो। अेको बिखरियो। एक मेड़तिया सेरसिंघ रो, बीजो चापावत कुसळसिंघ रो। अेक दळ रामसिंघजी री सारै। बीजो बखतसिंघजी री पख खांचै। इण भात घर री हाण हुवै। लोक री हासी हुवै। दोनू कानी रो खिचाव घणो वधियो। तणाव सिमटाणै रो कोई गैला दीसै नही। जद झगडै रो दिन ठाणियो। मेड़ता रै पाहडै आलणास कनै रण मंडियो। कैरू पाडवा री भात आखा मारवाड़ रा सरदारा रा दळ अेक दूजा रा प्राणा रा लोभी, लोही रा तिसाया समियोड़ा ऊभा। लड़ाई चालू हुई। राठोड़ा रो घणो विणास हुवो। माटा मोटा माटी साथरै पोढिया। सेरसिंघजी नै कुशळसिंघजी दोनू खड़गा सू लड़ै। जबरो जग जुडियो।

रामसिंघजी मीठडी रो पाटवी कवर। अठारा बरस रो जवान। उणियारा

रो फूटरो। चौडो लिलाड। मोटी-मोटी काचरा सी आख्या। दाड़ू रा दाणा सा दात। मूवा री चूच सी नाक। सोवणा कान जिण रै माय सोना वाळा। ठोस पीडी। चौडी छाती। सारो डील-डोळ सोवणो। कवर घोडा रो सोखीन। सिकारा रो सोखीन। नित रा घोडला नै दोडावै। हरिया जूण रा भाखरा रै माय जावै। कटारिया सू सिकार रमै। सूर मारै। नाहर मारै। हिरण मारै, पण सब कटारा सू। इण भात दिन बीतै। कवर दिन दूणो नै रात चोगुणो बढै।

अलवर रजवाडा रो ठिकाणो बीजवाड। अलवर रा राजा नरूका। बावन गढा रा राव कहीजै। बीजवाड छोटा भाई कहीजै। बीजवाड रै माय बाईजी घणा फूटरा। मीठ सुभाव रा। चाद जेहडो मुखडो। मृग जेहडा नैण। गज जेहडी चाल। सिंह जेहडी कमर। सूरज जेहडो सतेज। 13 बरस री उमर पण 18 बरस जेहडा लागै। बीजवाड रा ठाकर बाई ताई ठिकाणो जोवण नै आपरा मोतमिंद पिरोयजी नै बीजा ठावा स्याणा पुरख भेजिया। झाला, हाडा, तवर, चौहाण, भाटी, देवळ, देवडा, चूडावत, सकतावत, राणावत, बीदा, बीका, बाधळ, धाधळ, आदू, जाडेचा, सेडेचा, जोंदा, कूपा, चापा, मेडतिया रा सगळा ठिकाणा देखिया। पण बाईजी रै जोडाय, उणियारा नै सुभाव रो टावर मिलियो नही। छै महना ठिकाणा रै माय घूमिया। मीठडी पूगिया। कवरजी नै देखिया। कवरजी मन जचियो। सगाई रो दस्तूर कीधो। अमलडा गळाया। पतासा बाटिया। टीको दीधो नै ब्याव रो सुदो दीधो। ब्याव माडियो। जान री त्यारिया कीधी। भला-चगा छाटवा घोडा लीधा। सखरा सखरा जनेती लीधा। साथी सायना नै सागै कीधा नै बीजवाड कूच कीधो। बाकड साथै पूगिया। जाजमा ढळीजी। अमलडा गळीज्या। सगा सू रामास्यामा हुया। हसी-ठठा हुया। मनवारा होई। सामेळो हुवो। जान डेरा कीधा। गूधळक रा फेरा रो सभूरतो जोसी काढियो। तोरण सिंयावो कीधो। नेगचार चुकिया। गीत-गाळा री रमझोळ हुई। विरदा रा कवियण बाखाण कीधा। बनडो माडे पधारियो। थाम हेटै चवरी विराजियो। फेरा हुया। फेरा सू उठ नै डेरै आयो। छोळ रो दस्तूर हुवो। उणी बगत पाछा सू आयोडा जनैतिया माय सू अेक मिनख कवरजी कनै आयो। कान रै माय मेडता रै झगडा रो जिकरो कीधो। कवरजी घोडला री वाग सारी। विचार कीधो मेडतो 160 कोस नै झगडा रै दोय दिन आडा। जिण ही घडी मेडता रो मारग पकडियो। दर कूचा दर मजला घोडा नै खडियो नै दूजै दिन मेडतै पूगियो। झगडो चाल रयो। रिया ठाकर नै आहुवै ठाकर लडै। दोना पासा रा घणा मिनखा री लासा रा ढेर पडिया। माथा रा झूळा घुमीजियोडा। लोया सू धरती लाल व्है रयी। गीध, कावळा, सुकडी-गादडा गूद खावै। पाखल पडिया तरणावै। घोडा री टापा सू चढियोडी गरद सू आकास छाय रयो। सूरज री तेज माटळ पड रयो। कवरजी नै घोडो पसेवा स भीगियोडा। मारग सू थकियोडा। भूखा तिसाया, उनीदा मैदान रै माय उतरिया। झगडो

माडियो। रणरोही रै माय भगोळ री भात सगळा नै हूलाय दीधा। तरवारा सू बटका-बटका हुय नै रणरोज पोढिया। अमर नाम कीधो। बाप-दादा रो बिड़द उजाळियो। जस रा कळस चाडिया। अपछरा उछाव कीधो। चारणा सुजस बाखाणियो—

काना मोनी झळहळै, गळ सोनै री माळ।
असी कोस रो खडियो आयो, कवर मीठडी वाळ॥

कवरजी री जोड़ायत नरूकीजी रथ जुताडियो। बीजै दिन मीठडी पधारिया। सारी बिगत सुणी। कवरजी री लास मगाडी। गढ रै बारै डेरा कीधा। लास सार्थं सती हुई। अमर सुहाग पायो। "रावत जायी डीकरी सदा सुहागण होय" रो सबूत दीधो।

पाबूजी री सोढी राणी तो बागा रै माय पाबूजी नै निरखिया। उणा रो रूप-सरूप दीठो, पण नरूकी दीठो तक नही। इण भात कवर-कवराणी सागो कीधो। जद हीज कहीजै—

गुरपुर तक निभ जावसी, या जोडी या प्रीत।
सखी पीव रै देसडै, सग बळबा री रीत॥

पण आज तो बाता ही बाकी है। पुराणी चरचा परिया री काणुया रही धर्का।

# कहाणीकारां री ओळखाण

**अन्नाराम 'सुदामा', एम० ए०**

जनम—१९२३ ई०, बीकानेर, सेवा निवृत्त अध्यापक, रचनावां—मैकती काया मुळकती धरती (उपन्यास), मवैं रा रूख (उपन्यास)-पुरस्कृत, पिरोळ मे कुत्ती ब्याही (कवितावां) पुरस्कृत, आधै नैं आख्या (कहाणियां), दूर-दिसावर (यात्रा-वर्णन), बधती अवळाई (नाटक), डकीजता मानवी (उपन्यास), व्यथा कथा अर दूजी कवितावां, घर मसार (उपन्यास)। ठिकाणो—गगाशहर (बीकानेर—राजस्थान)

**अमोलकचन्द जागिड, एम० ए०,**

जनम—१९३३ ई०, बिसाऊ (झूंझणू-राजस्थान), अध्यापक। कहाणिया लिखै, रचनावां—मेखावाटी री आंचाळिक कहाणिया। ठिकाणो—नाथजी रै मिंदर कनै, बिसाऊ (झूंझणू-राजस्थान)।

**करणीदान बारहठ, एम० ए०,**

जनम—१९२५ ई०, पेंपाणो (गगानगर-राजस्थान), सेवा निवृत्त अध्यापक। रचनावां—आदमी रो सींग (कहाणियां), शकुन्तला (खंड काव्य), झिंडियो (बाल कथा), झरझर कथा (बाल कथा)। ठिकाणो—गांव पोस्ट पेंपाणो, (जिलो गगानगर-राजस्थान)।

**किशोर कल्पनाकांत**

जनम—१९३० ई० रतनगढ़ (चूरू-राजस्थान), सपादक 'ओळमो' पाक्षिक। रचनावां—रतमहार (अनुवाद), कूंपळ अर फूल, नरसनीड (अनुवाद), कवितावां अर कहाणियां लिखै। ठिकाणो—कल्पना लोक, रतनगढ़ (चूरू-राजस्थान)

## चन्द्रसिंह, वी० ए०

**जनम**—बिरकाळी (नोहर-गगानगर-राजस्थान), खेती रो धधो । **रचनावां**—लू (काव्य), बादळी (काव्य)-पुरस्कृत, बाळसाद (फुटकर), दिलीप (अनुवाद), काळजै री कोर (अनुवाद), कहमुकरणी (काव्य)। **ठिकाणो**—बिरकाळी (नोहर-गगानगर-राजस्थान)।

## दामोदर प्रसाद, एम० ए०

**जनम**—१६३८ ई०, सीकर (राजस्थान), अध्यापक। **रचनावां**—प्रेतात्मा री प्रीत (कहाणिया)। **ठिकाणो**—जळधारिया री गळी, नयो सहर, सीकर (राजस्थान)।

## धनराज चौधरी, एम० एस-सी०

राजस्थान विश्वविद्यालय मे अध्यापक।
हाल कोई राजस्थानी पोथी कोनी छपी।
**ठिकाणो**—राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

## नानूराम सस्कर्ता, प्रभाकर

**जनम**—१६१६ ई०, खारी (बीकानेर-राजस्थान), सेवा निवृत्त अध्यापक। **रचनावा**—ल्होयी (कहाणिया), घर की रेल (कहाणिया), घर की गाय (कहाणिया), कळायण (काव्य), समयबायरो (काव्य), दसदोख, दसदेव (काव्य), छप्पय सतसई (काव्य)-पुरस्कृत, राजस्थान का लोक साहित्य (सोध ग्रथ), गाव गिगरथ (गद्य)। **ठिकाणो**—गाव पोस्ट काळू (बीकानेर)।

## नृसिंह राजपुरोहित, एम० ए०, पी-एच० डी०

**जनम**—१६२४ ई०, खाडप (बाडमेर-राजस्थान), सेवानिवृत्त अध्यापक। **रचनावा**—रातवासो (कहाणिया)-पुरस्कृत, अमर चूनडी (कहाणिया), मऊ चाली माळवै (कहाणिया), मिनखपणा रो मोल (अनुवाद), राम राज्य (अनुवाद), महावीर (उपन्यास), परभातियो तारो (कहाणिया)-पुरस्कृत। **ठिकाणो**—पुरोहित कुटीर, खाडप (बाडमेर—राजस्थान)।

## नेमनारायण जोशी, एम० ए०, पी-एच० डी०

**जनम**—१६२५ ई०, डोडियाणो (नागौर-राज०)। उदयपुर विश्वविद्यालय मे हिन्दी प्रोफेसर अर मीरा पीठ रा अध्यक्ष। **ठिकाणो**—विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)।

**प्रेमजी 'प्रेम', एम० ए०**

**जनम**—१६४३ ई०, घघटाणा (लाडपुरो—कोटो—राजस्थान), केन्द्रीय प्रतिष्ठान री सेवा। **रचनावां**—चमचो (हास्य काव्य), सावळो साच (गजला), सेळी छाव खज्यूर की (उपन्यास), रामचन्द्रा की रामकथा (कहाणी), सूरज (काव्य)-पुरस्कृत, मरवर, सूरज अर सझ्या (काव्य)-पुरस्कृत। **ठिकाणो**—भवर भवन, करवला, लाडपुरो, कोटो (राज०)।

**बी० एल० माळी, 'अशात', एम० ए०**

**जनम**—१६४८ ई०, लक्ष्मणगढ (सीकर-राजस्थान), केन्द्र सरकार री नौकरी। **रचनावां**—किली किली कटको (कहाणी)-पुरस्कृत, मिनख रा खोज (निबध), बोलता आखर (नाटक), बाल साहित्य री कई पोथ्या। **ठिकाणो**—लक्ष्मणगढ (सीकर-राज०)।

**बैजनाथ पवार**

**जनम**—१६२४ ई०, रतननगर, सेवा निवृत्त राज्य कर्मचारी। **रचनावा**—अक्ल बिना ऊट उभाणो (प्रौढ-पोथी), लाडेसर (कहाणी)-पुरस्कृत, नैणा खूट्यो नीर (कहाणी)-पुरस्कृत। **ठिकाणो**—वार्ड सख्या २३, चूरू (बीकानेर)।

**भवरलाल सुथार 'भ्रमर', एम० ए०**

**जनम**—१६४६ ई०, बीकानेर, अध्यापक। सपादक 'मनवार'। **रचनावा**—तगादो (कहाणिया), अमूझो कद ताई (कहाणिया) भोर रा पगलिया (उपन्यास)। **ठिकाणो**—ईदगाह बारी, बीकानेर (राजस्थान)।

**मनोहर शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०**

**जनम**—बिसाऊ (झूझणू-राजस्थान), सेवा निवृत्त अध्यापक। **रचनावा**—*कन्यादान (कहाणिया), सोनल भीग (गद्य काव्य)-पुरस्कृत, नैणसी रो साको* (एकाकी), रोहीडै रा फूल (लघु कथावा), अरावली की आत्मा (काव्य), गीत कथा (काव्य), धोरा रो सगीत (काव्य)-पुरस्कृत, बाल वाडी (बाल कथावां)-पुरस्कृत, राजस्थानी बात साहित्य (सोध ग्रथ), लोक साहित्य की सास्कृतिक परम्परा (निबन्ध), मेघदूत (अनुवाद), उमर खैयाम (अनुवाद)। सम्पादक 'वरदा' (सोध पत्रिका)। **ठिकाणो**—१६, कृष्ण कुज, राणी बाजार, बीकानेर (राजस्थान)।

## मनोहरसिंह राठौड

**जनम**—१६४८ ई०, तिलाणेस (नागौर-राजस्थान) केन्द्र सरकार री सेवा। **रचनावां**—रोसनी रा जीव (कहाणिया)। **ठिकाणो**—जी-५१, सीरी कालोनी, पिलाणी (राजस्थान)।

## मुरलीधर व्यास, 'विसारद'

जनम—१८६८ ई०, सुरगवासी बीकानेर, सेवा निवृत्त राज्य कर्मचारी। **रचनावां**—बरसगाठ (कहाणिया), इक्कै वाळो (लघु कथावा), जूना जीवता चितराम (रेखाचित्र), राजस्थानी घूमरं (लोक साहित्य समीक्षा)। **ठिकाणो**—कीकाणी व्यासा रो चौक, बीकानेर (राजस्थान।

## मूळचन्द प्राणेश, 'प्रभाकर', 'साहित्यरत्न'

**जनम**—१६२५ ई०, झझू (बीकानेर-राजस्थान)। सेवा निवृत्त। **रचनावां**—चसमदीठ गवाह (कहाणिया) - पुरस्कृत, उकळता आतरा सीळा सास (कहाणिया) नागदमण (सपादन), रणमल्ल छद (सपादन), हियै तणा उपाव, अेकलगिड डाढाळै री बात (सपादन)। **ठिकाणो**—गाव पोस्ट—झझू (बीकानेर-राजस्थान)।

## यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

**जनम**—१६३२ ई०, बीकानेर, लेखन। **रचनावां**—हू गोरी किण पीवरी (उपन्यास)-पुरस्कृत, जोग सजोग (उपन्यास), तासरो घर (नाटक)। **ठिकाणो**—मालै री होळी, बीकानेर (राजस्थान)।

## रामनिवास शर्मा, एम० ए०

**जनम**—लाडनू (नागौर-राजस्थान) सोध सस्था मे कार्यरत। **रचनावां**—काळ भैरवी (उपन्याम)-पुरस्कृत। **ठिकाणो**—सोनगिरी रो कूवा, बीकानेर (राजस्थान)।

## रामेश्वर दयाल श्रीमाळी, एम० ए०,

**जनम**—कराची (पाकिस्तान), १६३८ ई०, उपजिला शिक्षाधिकारी। **रचनावां**—हाडीराणी (काव्य), बावनो हिमाळो (काव्य), म्हारो गाव (काव्य) - पुरस्कृत, सळवटां (कहाणिया)-पुरस्कृत, जनकवि उस्ताद (सपादन), आज रा कहाणीकार (सपादन)। **ठिकाणो**—पोस्ट साचोर (जालोर-राजस्थान)।

लक्ष्मीकुमारी चूडावत

**जनम-स्थान**—देवगढ (उदयपुर)। **रचनावां**—मांझल रात (कहाणिया), रवि ठाकर री वाता (अनुवाद), अमोलक वाता (अनुवाद), ससार री नामी का'णिया (अनुवाद), गिर ऊचा ऊचा गढा, कह रै चकवा बात (कहाणिया), मूमल (कहाणिया), राजस्थानी लोक गीत (सपादन), गजबण (अनुवाद)। **ठिकाणो**—जगदीश मार्ग, बनीपार्क, जयपुर।

विजयदान देथा, बी० ए०

**जनम**—१६२६ ई०, बोरूदा (जोधपुर)। **रचनावां**—तीडोराव (उपन्यास) बाता री फुलवाडी भाग—१-१२ (कहाणिया)-पुरस्कृत, अलेखू हिटलर (कहाणिया)। **ठिकाणो**—रूपायन सस्थान, बोरूदो (पीपाड-जोधपुर)।

विनोद सोमाणी 'हस', एम० ए०

**जनम**—१६३८ ई०, महेन्द्रगढ (भीलवाडो-राजस्थान), जीवन बीमा कर्मचारी। हाल पोथी कोनी छपी। **ठिकाणो**—४२, ४३ मानसरोवर, जीवन विहार, आनासागर सर्क्यूलर रोड, अजमेर-३०५००१

शचीन्द्र उपाध्याय, बी० ए०

**जनम**—१६३३ ई०, अटरू (कोटो)। राज्य सेवा (रेलवे)। हाल पोथी कोनी छपी। **ठिकाणो**—पोस्ट ऑफीस रोड, भीम मण्डी, कोटो (राजस्थान)।

श्रीलाल नथमलजी जोशी, बी० ए०

**जनम**—१६२१ ई०, बीकानेर, सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारी (रेलवे)। **रचनावां**—आभै पटकी (उपन्यास), सबडका (रेखाचित्र), धोरा री धोरी (उपन्यास), आपणा बापूजी (बालकथा)-पुरस्कृत, परण्योडी कवारी (कहाणिया), एक बीनणी दो बीन (उपन्यास), सूरज बाप रा बेटी जवाई (बालकथा)। **ठिकाणो**—मोनगिरी रो कूवो, बीकानेर (राजस्थान)।

सावर दइया, एम० ए०

**जनम**—१६४८ ई०, बीकानेर, अध्यापक। **रचनावां**—असवाडै-पसवाडै-पुरस्कृत, धरती कदताई घूमैली (कहाणिया), हाईकू। **ठिकाणो**—राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नोखो (बीकानेर राजस्थान)।